प्रकाशक :—
लालचन्द कोठारी
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

मुद्रक :—
सुराना प्रिन्टिंग वर्क्स
४ २ अपर चितपुर रोड
कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एव विशेषत राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारभ से ही मिलता रहा है ।

सस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सबध में विभिन्न स्रोतों से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशा के ढंग पर, लबे समय से प्रारभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं । यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारभ करना सभव हो सकेगा ।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है । अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी मे उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य। ले. श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले. श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले. श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है जिसमें भी राजस्थानी कविताएं कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क १-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ का सचित्र और वृहद् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्ताओं के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहद् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यों की ओर से निरतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अ क मे प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निवध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९ मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाऐं सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जसवंत उद्योत 'मुंहता नैणसी री ख्यात' और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १ शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा. लुइजि पिओ टैस्सिटोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध लेख कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा. वासुदेवशरण अग्रवाल, डा. कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा. जी. रामचन्द्रन्, डा. सत्यप्रकाश, डा. डब्लू. एलेन, डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा. तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हू डलोद, थे ।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है। आर्थिक सकट से ग्रस्त इस सस्या के लिये यह सभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की वाघाओ के वावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हे सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कायक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ११ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा. शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५ पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६ दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत—	,, ,,
८ पंवार वंश दर्पण—	डा. दशरथ शर्मा
९ पृथ्वीराज राठौड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१० हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो. मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७ विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२० वीर रस रा दूहा—	,, ,,
२१ राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,,
२४ चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भडुली— श्री अगरचन्द नाहटा
म विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथो का विवरण ,, ,,
२८ दम्पति विनोद ,, ,,
२९ हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य ,, ,,
३० समयसुन्दर रासत्रय श्री भंवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रथावली श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक सावन सग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी -जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया; जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत. हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता जैन भवन संग्रह कलकत्ता महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजांची ग्रन्थालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा मुनि पुण्यविजयजी मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस श्री रविशंकर देराश्री पं. हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वापि भवत्येव प्रमादतः हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

लालचन्द कोठारी

प्रधान-मंत्री

सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

बीकानेर

मार्गशीर्ष शुक्ला १५

सं. २०१७

दिसम्बर १९६०

सम्पादकीय

महोपाध्याय कविवर समयसुन्दर सतरहवीं शती के महान् विद्वान और सुकवि थे। प्राकृत, संस्कृत, राजस्थानी, गुजराती और हिन्दी मे निर्मित आपका साहित्य बहुत विशाल है। इधर कुछ वर्षों मे उसके अनुसन्धान व प्रकाशन का प्रयत्न भी अच्छे रूप मे हुआ है। मौलिक ग्रन्थों के साथ साथ इन्होने बहुत से महत्व-पूर्ण एव विविध विषयक ग्रन्थों पर टीकाएं भी रची है। राजस्थानी भाषा मे रचित इनकी रास चौपाई, स्तवन, सज्झायादि अनेकों पद्यबद्ध रचनाएँ तो है ही पर साथ ही षडावश्यक बालावबोध जैसी गद्य रचनाएँ भी प्राप्त हैं। आपकी पद्य रचनाओं मे सीताराम चौपाई सबसे बडी रचना है इसका परिमाण ३७०० श्लोक परिमित है। जैन परम्परा की रामकथा को इस काव्य मे गुम्फित किया है। कई वर्षों से इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रकाशन का प्रयत्न चल रहा था और अनूप संस्कृत पुस्तकालय की सादूल ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित करने के लिए लगभग १५ वर्ष पूर्व इसकी प्रेसकापी भी वहीं की एक प्रति से करवा ली गई थी पर उक्त ग्रन्थमाला का प्रकाशन स्थगित हो जाने से वह प्रेसकापी योंही पडी रही, जिसे अब सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रस्तुत जैन रामायण (काव्य) का अनेक दृष्टियों से महत्व है। इसका मूलाधार प्राकृत भाषा का सीता चरित्र है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाया है। जैन राम कथा का सबसे

पहला ग्रन्थ विमलसूरि का पउमचरियं हिन्दी अनुवाद के साथ प्राकृत ग्रन्थमाला से प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ का भी उल्लेख प्रस्तुत सीताराम चौ० में भी किया गया है पर सीता चरित्र—जिसके आधार से इस चौपाइ की रचना हुई—का प्रकाशन होना भी अत्यावश्यक है। दोनों ग्रन्थ प्राकृत भाषा में और प्राचीन हैं पर कथा एव नामों में कहीं कहीं अन्तर भी है।

प्रस्तुत सीताराम चौ की कथा का सर्व साधारण समझ सके इसलिए उसका संक्षिप्त सार भी ग्रन्थ के प्रारम्भ में दे दिया गया है। प्रो फूलसिंह और डा० कन्हैयालाल सहल के प्रस्तुत ग्रन्थ सम्बन्धी प्रकाशित लेखों को इस ग्रन्थ में देने के साथ साथ राजस्थानी भाषा की रामचरित सम्बन्धी रचनाएं और कविवर समयसुन्दर का विस्तृत परिचय भी भूमिका में दिया गया है। अन्त में चौपाइ में प्रयुक्त देशी-सूची भी दे दी गई है। शब्दकोष देने का विचार था पर ग्रन्थ बड़ा हो जाने से वह विचार स्थगित रखना पड़ा है। यों कथासार दे देने से ग्रन्थ को समझने में कोई कठिनाइ नहीं रहेगी।

अनूप संस्कृत लाइब्ररी की जिस प्रति से पहले नकल करवायी थी उसमें लेखन प्रशस्ति नहीं थी। फिर हमारे संग्रह की सं १७११ की लिखित प्रति से प्रेसकापी का मिलान किया गया। अन्त में अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में ही कवि के स्वयं लिखित प्रस्तुत चौपाई की एक और प्रति प्राप्त हुई, सरसरी तौर से उससे भी मिलान कर लिया गया है। एवं स्व० पूरणचन्दजी नाहर के संग्रह की प्रति का भी इसके संपादन में उपयोग किया गया है।

इस तरह अपनी चिरकालीन इच्छा को फलवती होते देखकर हमे बडी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजस्थानी शब्दकोष के निर्माण एवं प्रकाशन का प्रयत्न कई स्थानों मे काफी वर्षों से हो रहा है पर उसमें राजस्थानी जैन रचनाओ के शब्दों का उपयोग जहाँ तक नहीं होगा, वहाँ तक वह कार्य अधूरा ही रहेगा इसलिए ऐसे ग्रन्थों का प्रकाशन बहुत ही आवश्यक है।

जैनेतर राजस्थानी राम काव्यों मे चारण कवि माधोदास का राम रासो विशेष महत्व का है। उसे भी इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित करने की योजना थी और डॉ० गोवर्द्धन शर्मा को उसके सम्पादन का काम भी सौंप दिया गया था पर वह समय पर पूरा नहीं हो सका इसलिए उसे प्रकाशित नहीं किया जा सका है। अगली योजना में इन्स्टीट्यूट को सरकार से प्रकाशन सहायता मिली तो उसे भी पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत किया जायगा।

प्रस्तुत ग्रंथ सम्पादन मे जिन संग्रहालयों की प्रतियों का व जिन विद्वानों के लेखों का उपयोग किया गया है उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना हमारा कर्तव्य समझते हैं।

अगरचन्द नाहटा
भँवरलाल नाहटा

अनुक्रमणिका

राजस्थानी का एक रामचरित काव्य

समयसुंदर रचित सीताराम चौपाई

(प्रो० फूलसिंह "हिमांशु")

कविवर समयसुदर का यह राजस्थानी रामकाव्य सं० १६७७ से ८३ के बीच रचा गया है इसका कथासार इस प्रकार है .—

राजा श्रेणिक के पूछने पर गौतम मुनि उन्हें कथा कहते हैं—वेगवती एव मधुपिंगल के जीव रानी वैदेही के गभ से क्रमश· सीता और भामंडल के नाम से उत्पन्न हुये। अयोध्या के राजा दसरथ की रानी अपराजिता से पद्म (राम) सुमित्रा से लक्ष्मण तथा कैकेयी से भरत और शत्रुघ्न उत्पन्न हुए। राम एवं सीता का परिणय। राम को राज्य दे दशरथ द्वारा जिन दीक्षा ग्रहण के निश्चय पर अपने स्वयम्वर मे राजा दशरथ का कौशल से रथ हाँकने पर कैकेयी द्वारा प्राप्त वर को भरत के राज्यतिलक के रूप मे माँगना। राम लक्ष्मण का सीता सहित बनवास गमन। दशरथ द्वारा दीक्षा ग्रहण। कैकेयी द्वारा ग्लानि अनुभव। भरत को भेज राम को लौटाने का प्रयत्न। कैकेयी का भी राम के पास प्रायश्चित करने हेतु पहुँचना। किन्तु राम द्वारा समझा कर वहीं भरत का राजतिलक।

बनवास —काल में कई कथा-प्रसंग। लक्ष्मण द्वारा कई विवाह। नन्दावर्त्त के राजा अतिवीर्य और भरत के बीच होने वाले युद्ध में राम-लक्ष्मण द्वारा नट वेश वना, अतिवीर्य को बन्दी बनाना दण्ड-

कारण्य में जटायु मिलाप। किसी नदी तट पर स्थायी निवास। लक्ष्मण द्वारा शम्बुक वध। रावण की बहिन चन्द्रनखा (शम्बुक की माता) द्वारा पुत्र शोक भूल कर राम-लक्ष्मण से प्रणय निवेदन। खरदूषण (चन्द्रनखा का पति) लक्ष्मण के बीच युद्ध। लक्ष्मण द्वारा विपत्ति का निर्धारित संकेत सिंहनाद रावण द्वारा छल से कर दिये जाने पर राम की अनुपस्थित में सीता-हरण। जटायु युद्ध। नकली सुग्रीव 'सहसगति का राम द्वारा वध। राम सुग्रीव मैत्री। हनुमान द्वारा सीता के पास लंका पहुँच राम का सन्देश लेना व लंका उजाड़ना। लक्ष्मण द्वारा कोटिशिला उठाना, नारायण के अवतार की पुष्टि। राम रावण युद्ध में लक्ष्मण की मूर्छा का विशल्या द्वारा मोचन। इसी बीच रावण द्वारा बहुरूपणी विद्या सिद्ध करना। रावण के चक्र से ही लक्ष्मण द्वारा रावण वध। मन्दोदरी चन्द्रनखा आदि का जिन दीक्षा ग्रहण करना। विभीषण का राज्याभिषेक। अयोध्या आगमन भरत द्वारा दीक्षा ग्रहण।

सीता के सम्बन्ध में लोकापवाद को सुन कर राम द्वारा गर्भवती सीता को वनवास। वज्रजंघ द्वारा बहिन मानकर सीता का स्वागत। लव कुश का जन्म। दोनों का विवाह, दोनों का अयोध्या पर आक्रमण। पिता पुत्रों का मिलन। सीता द्वारा अग्निपरीक्षा में सफल होने पर जिन दीक्षा-ग्रहण। इन्द्र की प्रशंसा पर दो देवों द्वारा राम लक्ष्मण के भ्रातृ प्रेम की परीक्षा में लक्ष्मण की मृत्यु। आगे चल कर राम द्वारा दीक्षाग्रहण तथा कैवल्य प्राप्त कर मोक्ष गमन। ग्रन्थान्त में ग्रन्थ महिमा एवं कवि परिचय 'सीताराम चउपई' की राम कथा संक्षेप में यही है। राम कथा से जुड़ी हुई और घटनायें भी ग्रन्थ में

वहुत है सम्पूर्ण रचना नौ खण्डों मे विभक्त है। जिनका नामकरण कवि ने प्रत्येक खण्ड के अन्त मे किया है।

महाकाव्य सर्ग वद्ध किया जाता है। यह रचना अनेक खंडों मे लिखी गई है और वहुत वडी है। जीवन का सर्वांगीण चित्रण हमें इसमे मिलता है। नायक स्वयं राम है जिनके वीरत्व में धीरत्व में सन्देह का कोई स्थान नहीं। वृत ऐतिहासिक है ही जिसमें पीछे कवि का महद्दुद्देश्य राम गुणगान स्पष्ट है। छन्द की विविधता, रसों का पूर्ण परिपाक, यह सब इस रचना को प्रवन्ध काव्य की कोटी में ला खड़ा करते है। कवि ने स्वय इस ओर सर्गान्त मे संकेत कर दिया है—इति श्री सीता राम प्रवन्धे।" इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ एक चरि-तात्मक प्रवन्ध काव्य सिद्ध होता है जिसमे अनेक का सम्वन्ध सूत्र नायक (राम) की कथा से जोड़ दिया गया है। चौपाई छन्द की अधिकता के साथ-साथ अन्य छन्द भी प्रयुक्त किये गये हैं अत. चौपाई की प्रधानता होने पर भी एवं 'प्रवन्ध' के पर्याय के रूप में भी 'चउपई' नाम रखा गया है।

ग्रन्थ का प्रारम्भ—ग्रन्थ का प्रारम्भ कवि ने परम्परानुसार मगलाचरण से किया है।

स्वस्तिश्री सुख सम्पदा, दायक अरिहत देव

× × ×

निज गुरुचरण कमल नमु, त्रिण्ह तत्व दातार

× × ×

समरू सरसति सामिनी, एक करूँ अरदास।

भाषा विचार—प्रस्तुत ग्रन्थ की भाषा शुद्ध मध्य युगीन राजस्थानी है। कवि की भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण बीच-बीच में गुजराती शब्दों का बहुल प्रयोग एवं सिंधी उर्दू फारसी आदि के शब्द भी स्वभावतः आ गये हैं पश्चिमी बोलचाल की भाषा होने के कारण ग्रन्थ अधिक सरस एवं मधुर हो गया है। शब्दों में रूप का उत्क्षेप है रूप कटुता नहीं। अकारान्त एवं इकारान्त शब्दों का बहुल प्रयोग है यथा—सीधउ पामउ, कालउ, साबउ, चालउ सोहइ, मांगइ आदि। विभक्तियाँ भी लुप्त ही रही हैं यथा—लगि, करि करे आदि।

फारसी आदि के विदेशी शब्द भी आ गये हैं यथा—फौज बकिस दिलगीर। सम्भवतः कवि के सिन्ध प्रवास का यह प्रभाव है।

वर्णन के अनुकूल शब्दावली का निर्माण कवि की अपनी विशेषता है। अनुकरण मूलक शब्द द्वारा भयानकता और भी बढ़ गई है

'पड़तइ सुवन भरा पिय काँपी सेपनाग सलसलिया
लंका लोक ठगल खलभलिया उदधि नीर ऊछलिया।

शैली—कवि कवि की शैली सरल है। कथा की दीर्घता के कारण सरल, सीधी सादी पद्धति में कवि कथा को कहता चला गया है। हाँ, जहाँ उसे वर्णन का थोड़ा भी अवकाश मिला है वहाँ बहुत लाघव से कुछेक शब्दों में वर्णन द्वारा चित्र खड़ा किया गया है जो अपने आप में पूर्ण है आकर्षक है।

कहावत एवं मुहावरों के प्रयोग से शैली और भी आकर्षक बन गई है। सीता के प्रति लोकापवाद के वज्रपात के मूल में कवि ने

सहज तर्क पद्धति का आश्रय लिया है जिसकी सत्यता में स्वयं राम भी सन्देह न कर सके थे।

भूखो भोजन खीर, विण जिम्या
छोडइ नहीं, इम जाणइ सही रे
तरस्यो चातक नीर, सुपडित
सुभाषित रसियो किम तजइ रे
दरिद्र लाधो निधान, किम छोडइ
जाणइ इम वलि नहिं सपजइ रे
तिण तु निश्चय जाणि, भोगविनइ
मुकी परी सीता रावणइ रे

और तब किसीके द्वारा सीता के सौन्दर्य के कारण राम द्वारा उसको रख लेने की बात कही जाती है तो दूसरा तर्क और भी प्रबल हो सम्मुख आता हैं।

'पेटइ को घालइ नहीं अति वाल्ही छुरी रे लो।'

और सीता को बनवास दे दिया गया।

'आपदा पड्या न को आपणो, रे लाल
कुण गिणइ सगपण घणो, रे लाल

कहावत एवं मुहावरों की इस तर्क-पद्धति द्वारा कवि स्वाभाविकता का स्पष्ट स्वरूप खडा करने मे सफल हुआ है जो इनकी शैली का सहज गुण बन गया है।

वर्णन—वर्णनों का बाहुल्य नहीं है। जहां कहीं वर्णन किया है, वहां बिलकुल नपे तुले शब्दों मे ही कवि एक चित्र खडा कर गया है। एक, दो वर्णन देखिये जो कितने स्वाभाविक बन पड़े हैं—

सुने नगर का वर्णन।

'गाइ भैंसि छुटी भमइ, धान चून मरया ठाम
गोहनी गोरस सू भरी फल फूल मरया ठाम
मारिय मामा माछली, सूदूना पड़या बजार
ठामि ठामि दीसइ मढा, पणि नहिं मनुष सचार

पुत्र जन्मोत्सव वर्णन

'घर बारि बन्दरमाल बाँधी, फूलना हाथा भरइ
कुंभ गुड़ गरमा गोरडी ए, पुत्र वाघउ इम कहइ
सहु मिली सुभ गीत गावइ हीयड हरखइ गहगहइ।'

प्रकृति-वर्णन—प्रकृति वर्णन में कवि ने कहीं रस नहीं लिया है। दण्डकारण्य वन का वर्णन केवल इन्हीं पंक्तियों में समाप्त कर दिया है।

'गिरी बहु रवमे भर्‌यो नदी है निरमल नीर
तरुवर फल फूले भर्‌या जहाँ बहु सुख सरीर।

भाव व्यंजना—कवि की पैनी दृष्टि सभी रसों पर गई है। वस्तुतः घटनाओं का इतना विस्तृत धरातल मिल जाने पर ही कवि की प्रतिभा खुल कर ग्रन्थ में आद्यान्त बिखर सकी है रसों का परिपाक देखिये कितना स्वाभाविक प्रतीत होता है।

शृङ्गार—शृङ्गार के दोनों पक्षों संयोग एवं विप्रलम्भ के बहुत ही आकर्षक एवं मार्मिक चित्र सहज रूप से अंकित हो गये हैं। परम्परागत सीता का नख सिख वर्णन तो शृङ्गार का एक संयत रूप लिए हुए है ही पर गर्भवती सीता का यह चित्र तो अपने आप में पूर्ण सजीव है, स्वाभाविक है—

'वज्रजघ राजा घरे, रहती सीता नारि
गर्भ लिंग परगट थयो, पांडुर गाल प्रकारि
थणमुख श्यामपणो थयो, गुरु नितम्ब गति मद
नयन सनेहाला थया, मुखि अमृत रसबिंद ।,

लंका में राम के विरह मे राक्षसों से घिरी सीता की अवस्था मे कितनी दयनीयता है—

'जेहवी कमलनी हिम वली, तेहवी तनु विछाय
आँखे आँसू नाखती, धरती दृष्टी लगाय
केस पास छूटइ थकइ, डावइ गाल दे हाथ
नीसासां मुख नांखती, दीठी दुख भर साथ ।'

वियोग की दसों दशाओं का चित्रण हमें ग्रन्थ मे मिलता है निर्वासित सीता के गुणों का स्मरण कर राम विलाप करने लग जाते हैं—

'प्रिय भाषिणी, प्रीतम अनुरागिनी
सघउ घणु सुविनीत
नाटक गीत विनोद सह मुझ
तुझ विण नावइ चीत
सयने रम्भा विलास गृह काम-काज
दासी माता अविहड़ नेह
मंत्रिवी बुद्धि निधान धरित्री क्षमा निधान
सकल कला गुण नेह

ऐसी निर्दोषिता होते हुए भी बनवास दे देने के कृत्य पर राम को आत्म ग्लानि हो उठती है—

धिग-धिग मुझ सिरोमणी हूँ भयो पुत्र तणी महा खाणि
दुरजन लोकि तणी दुरजने हुइ हांसी भर हाणि।

वात्सल्य—विप्रलंभ का एक मार्मिक प्रसंग देखिये। रानी वैदेही का, पुत्र भामण्डल के हरण पर यह विलाप मातृ हृदय की घनीभूत वेदना को हमारे अन्तरतम में स्थापित करता गया है।—

वीररस—राम रावण युद्ध का एक सजीव चित्र।

'सरणाइ वाजइ सिन्धूडइ, मदन भेरि पणि वाजइ
ढोल दमामा एकल माई नाजइ अम्बर गाजइ
सिंहनाद करई रणसूरा हाक बुंब हुंकारा
कायर सबर पड़्यो मुचिमइ नहीं, कौवा रड़ अपारा
मुह मांहोमांहि सबलो लागो वीर सड़ावड़ि वागी
जोर करीनइ दे मारता सुभटे तरवारि भागी

और भीषण युद्ध के बाद रक्तकी नदी बह गई।

'मद्दा रुधिर प्रवाह। पू मारूया हो।
मारूया भाषस सिरबंध मजुसरी हो॥'

भयानक—राम द्वारा धनुर्भंग होने पर।

धरणी धूजी पर्वत कांप्या शेषनाग सलसलिया
गज मदजरत चीत्कर दिग्गज जलनिधि जल झलझलिया
अपछर बीहती जइ आलिंग्या आप आपणा भरतार
राखि राखि प्रीतम इम कहती भमकह तु भाकार

करुण—लक्ष्मण की मृत्यु पर रानियों का विलाप शम्बुक-वध पर

चन्द्रनखा विलाप, रावण की मृत्यु पर मन्दोदरी आदि रानियो का विलाप वहुत ही करुण वन गया। लक्ष्मण की रानियों का यह रुला देनेवाला विलाप घनीभूत वेदना का एक अतिक्रमण हैं।

पोकार करता हीयो फाटइ', हार त्रोड़इ आपणा
आभरण देह थकी उतारइ, झरइ' आँसू अति घणा

और तव इस तरह की अश्रुधारा मे कवि निर्वेद की एक धारा और मिला देता है।

शान्त रस—लक्ष्मण पर चक्र व्यर्थ जाने पर रावण आत्मग्लानि के साथ ससार की निस्सारता का समर्थन करने लगता है।

'धिग मुझ विद्या तेज प्रतापा
रावण इण परि करइ पछतापा
हा हा ए ससार असारा,
वहुविध दुख तणा भण्डारा
हा हा राज रमणी पणि चचल,
जोवन उलर्‌यो जाय नदी जल
सोलइ रोग समाकुल देहा,
कारमा कुटुम्ब सम्वन्ध सनेहा

अलंकार योजना—अलकारों की ओर कवि का आग्रह नहीं हुआ करता, कविवर समयसुन्दरका भी नहीं है। भाषा और शब्दावली ही ऐसी है कि जब कवि भाव विभोर हो उठता है तो अनुप्रास तथा अलंकार स्वय खिचे चले जाते हैं। अस्तु, यह अलंकरण विलकुल स्वाभाविक हुआ है देखिये—

अनुप्रास—

(क) "रात सेज मिलि रामठा, तउ समता सुख होय
छिन कारणि कहुँ रातमो, लख सुखो नहु कोय।"

(ख) "हिय भीमच लख मोहस्यूँ, जिहुँ नायक बहु प्रेम"

(ग) 'पीवानी परि सुख लहण रामच लील विलाव।"

उपमा—

(क) केहरी कमलनी हिमवती, तेहरी तनु विलाप

परम्परागत उपमानों के साथ साथ नये उपमानों का प्रयोग कवि की सूझ है—

(ख) झालि पगे पखाखिस्, यस्त्र चोबी चोपड़ पेम

(ग) मत पावसी सरिखा होस्यो रे

उत्प्रेक्षा—युद्धभूमी में मरता हुआ रावण ऐसा लगा।

जाणे प्रबल पवन करि मायो
रावण ताल ज्युं दीपिका आयो
जाणे मेरु मह उपरवी
जिमा गुडि पड़ी प धरती

अतिशयोक्ति (क) हनुमान द्वारा लंका विध्वस—

पखाड़ सुपन धरा पिप कांपी
शेषनाग सलसलिया
लका लोक सबल खलभलिया
रवणि नीर छलछलिया

दृष्टान्त तथा उदाहरण—

(क) नजरि नजरि विहुँनी मिली, जिमि साकर सु दूध
मन मन सु विहुनउ मिल्यउ, दूध पाणी जिम सूध

सन्देह (क) के देवी के किन्नरी, के विद्याधर काइ

इसी तरह संपूर्ण ग्रन्थ मे अलंकारों का समावेश प्रयत्न नहीं, वल्कि स्पष्टतः स्वाभाविक है।

छन्द योजना—हमारे आलोच्य ग्रन्थ मे अनुष्टुप छन्दों की गणनानुसार कुल ३७०० श्लोक है जिसकी ओर कवि ने स्वयं सकेत किया है—

त्रिण्ह हजारनइ सातसइ, माजनइ ग्रन्थनो मानो रे

सम्पूर्ण ग्रन्थ राजस्थानी लोक गीतों की विभिन्न ढाल राग-रागनियों की तर्ज पर अधिकाशत. चौपाई छन्द में लिखा गया है ग्रन्थ मे लगभग ५० देशियाँ हैं जिनको प्रत्येक नये पद के प्रारम्भ मे कवि ने स्पष्ट कर दिया है एक उदाहण देखिये—

प्रथम खण्ड की तीसरी ढाल के प्रारम्भ मे कवि लिखता है।

ढ़ाल त्रीजी सोरठ देस सोहामणउ, साहेलड़ी ए देवा तणउ निवास गय सुकुमालनी, चउढालियानी अथवा सोभागी सुन्दर तुम्ह विन घडीय न जाय, ए देशी गीत एनी ढाल।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में मगलाचरण दूहा छन्दमें है और उसके वाद एक ढाल है जिसके वाद पुन दोहा छन्द प्रयुक्त है। इस तरह ग्रन्थ मे आद्यन्त एक दूहा छन्द के वाद एक ढाल और फिर दूहा छन्द फिर ढाल यह क्रम चलता रहता है प्रत्येक नये खण्ड का प्रारम्भ दूहा छन्द से तथा अन्त सप्तम ढ़ाल के साथ होता है। इस प्रकार नौ खण्डों

के इस ग्रन्थ में कुल ६३ ढालें हैं ग्रन्थ का अन्त क्रमानुसार ६३वीं ढाल के साथ होता है।

कवि ने अनेक दैवी शक्तियों का सहारा लेकर अतिप्राकृत तत्व का भी समावेश किया है। अनेक विद्याओं आदि के प्रयोग से कवि ने मन्त्रमुग्ध की भाँति स्तंभित करना स्वेच्छानुसार वेश बना लेना जैसे विद्याधरों के मायावी कौतुकों का वर्णन किया है इस अतिप्राकृत तत्व ने घटनाओं में कौतूहल की पर्याप्त वृद्धि की है।

वस्तुत कवि की प्रतिभा ने जानी पहचानी जैन राम कथा को भी एक नये आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी महान गीतकार समयसुन्दर ने अनेक विषयों पर लिखा है जिसमें लगभग दश हजार रास साहित्य ग्रन्थों में से हमारा यह आलोच्य ग्रन्थ अपने विराट् रूप मार्मिक प्रसंग एवं सहज सरसता के कारण अपना महान अस्तित्व रखता है सरस सरल भाषा के साँचे में राम कथा को ढाल गाकर सुनाने का कवि का यह प्रयास अनेक दृष्टि कोणों से स्तुत्य है। [मरु भारती वर्ष ७ अंक १ से]

भूमिका

राजस्थानी भाषा में रामचरित सम्बन्धी रचनाएँ

पुरुषोत्तम राम और कृष्ण भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। दो तीन हजार वर्षों से इनके आदर्श चरित्रों ने भारतीय जनता के जीवनस्तर को प्रगतिमान बनाने मे महत्व का काम किया है। इनके सम्बन्ध मे विभिन्न प्रकार के साहित्य का निर्माण हुआ। जिनमे से रामायण और महाभारत भारतीय साहित्य मे बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन ग्रंथों मे वर्णित कथाओं एवं प्रसंगों पर और भी छोटे-बड़े सैकड़ों ग्रंथ रचे गये, प्रत्येक भारतीय भाषा में राम और कृष्ण चरित्र पाए जाते हैं। आगे चलकर तो ये महापुरुष, अवतार के रूप में प्रसिद्ध हुए और इनकी भक्ति ने करोडों मानवो को आप्लावित किया। भक्तों के हृदयोद्गार के रूप मे जो भक्तिकाव्य व गीत प्रगटित हुए उनकी संख्या भी बहुत विशाल है। पुरुषोत्तम श्री कृष्ण से मर्यादापुरुषोत्तम राम का चरित्र मानव के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने मे अधिक सहायक हुआ है। श्री कृष्ण की लीलाओं से कुछ खराबियाँ भी आईं, पर राम चरित के आदर्शों ने वैसी कोई विकृति नहीं की*। इसीलिए हमारी दृष्टि मे राम कथा को आदरणीय

---

* प० शिवपूजनसिंह, सिद्धान्तशास्त्री, विद्यावाचस्पति, कानपुर वेदवाणी वर्ष १३ अंक ४ में प्रकाशित कृष्णावतार की कल्पना' नामक लेख में लिखते हैं—"राम व कृष्ण की पूजा सर्वत्र भारतवर्ष में प्रचलित है। रामचन्द्र जी को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है क्योंकि वे सर्वत्र मर्यादाओं का पालन करते थे। अपने जीवन में उन्होंने कभी बुरा कर्म नहीं किया। कृष्णजी के

व ऊँचा स्थान मिलना चाहिये। राम राज्य एक आदर्श राज्य माना माना जाता है उसका बखान हर व्यक्ति करता है। महात्मा गांधी ने भी अपने स्वराज्य का आदर्श रामराज्य ही रखा था। उन्होंने राम नाम की महिमा को भी अद्भुत माना है। गांधीजी और विनोबा जैसे सब सब रोगों के निवारण का इसे अमोघ उपाय मानते हैं। साधारणतया जनरुचि भोग विलास की ओर अधिक आकर्षित नजर आती है और उसमें कृष्ण की लीलाओं से बहुत स्फूर्ति और प्रेरणा मिलने से विगत कुछ शताब्दियों से कृष्ण-भक्ति का प्रचार अधिक बढ़ा है। पर इधर ३०० वर्षों में तुलसीदास की रामायण ने जनता को बहुत बड़ी नैतिक प्रेरणा दी है। राम-भक्ति के प्रचार में इस राम चरित का बहुत बड़ा हाथ है।

राम कथा का प्रचार भी बहुत ही व्यापक एवं विस्तृत रहा है। इस कथा के अनेक रूप विविध धर्म, सम्प्रदायों एवं देश विदेशों में प्राप्त हैं। भारत के सभी भाषाओं के प्रारंभिक काव्य प्रायः राम चरित्र को लेकर बनाए गए हैं। वाल्मीकि का रामायण संस्कृत का आदि काव्य माना जाता है। इसी प्रकार विमलसूरि का पउम चरियं भी प्राकृत भाषा का आदि काव्य माना जा सकता है। जैन-धर्मों

नाम पर काम कितना अनाचार फैला हुआ है। इसे सभी जानते हैं। जिसको धनोपार्जन करना होता है और अपनी काम पिपासा शांत करनी होती है वह अपने को कृष्णावतार घोषित कर देता है। कृष्णजी को योगीराज कहा जाता है। वे वेदधर्म के प्रचारक राजनीतिज्ञ कूटनीतिज्ञ और ज्ञानी थे। पर श्रीमद् भागवत एकादश स्कंध में उनका जीवन-चरित्र कुछ विकृत रूप में दिया गया है।"

में राम का अपर नाम "पउम" या पद्म पाया जाता है और यह काव्य उनके सम्बन्धी होने से ही उसका नाम 'पउम चरियं' है। इसी प्रकार अपभ्रंश का उपलब्ध पहला काव्य भी महाकवि स्वयंभू का 'पउम-चरिउ' है। कन्नड आदि अन्य भारतीय भाषाओं मे भी रामकथा की प्रधानता मिलती है। तामिल, तेलुगु, मलयालम, सिंहली, कश्मीरी, बंगाली, हिन्दी, उडिया, मराठी, राजस्थानी, गुजराती, आसामी, के अतिरिक्त विदेश—तिब्बत, खोतान, हिन्देशिया, हिन्द-चीन, स्याम, ब्रह्मदेश आदि देशों की भाषाओं में रामकथा पाई जाती है। धर्म सम्प्रदाओं को लें तो हिन्दू धर्म मे तो इसकी प्रधानता है ही पर जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों मे भी रामकथा पाई जाती है। जैनों में तो रामचरित्र मानस सम्बन्धी पचासों ग्रंथ हैं। हिन्दू धर्म सम्प्रदायों में तो शैव एवं शाक्त आदि सम्प्रदायों का प्रभाव रामकथा पर पड़ा है। राम कथा की इतनी व्यापकता का कारण उसकी आदर्श प्रेरणा-त्मकता है। देश विदेश मे स्थान स्थान पर प्रचारित हो जाने से इस कथा के अनेक रूप प्रचलित हो गए और प्राचीन कथा के साथ बहुत सी नई बातें जुडती गईं। बौद्ध-दशरथ जातक आदि में वर्णित राम कथा, जैन परम्परा की राम कथा आदि से हिन्दू धर्म में प्रच-लित राम कथा का तुलनात्मक अध्ययन करने से बहुत से नए तथ्य प्रकाश मे आते हैं। इन सब बातों की छान-बीन सन् १९५० मे भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग से प्रकाशित रेवरेन्ड फादर कामिल बुल्के लिखित रामकथा (उत्पत्ति और विकाश) में भली भाँति की जा चुकी है। सुयोग्य लेखक ने प्रस्तुत शोध प्रवंध की तैयारी में बड़ा भारी श्रम किया है। अन्य शोध प्रबन्धों से इसकी तुलना करने पर, दूसरे

निर्बंध इसके सामने फीके मालूम पड़ते हैं। एक विदेशी व्यक्ति द्वारा भारतीय रामचरित पर इतना विशद प्रकाश डालना वास्तव में बहुत ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है। इस ग्रन्थ का अभी परिवर्द्धित संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है। राम भक्ति-सम्प्रदायों व उनके साहित्य के सम्बन्ध में दो तीन महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

वाल्मीकि रामायण भारत के सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जोधपुर के डा० शांतिस्वरूप व्यास ने वाल्मीकि' रामायण में भारतीय संस्कृति शीर्षक थीसिस लिखकर सराहनीय कार्य किया है। इस सम्बन्ध में उनके दो महत्वपूर्ण ग्रंथ सस्ता-साहित्य मंडल नई दिल्ली से प्रकाशित हो चुके हैं। मैंने कामिल बुल्के के उक्त ग्रन्थ को भी पढ़ा तो देखा कि उसमें गुजराती के एक-दो साधारण रामचरित्र सम्बन्धी ग्रन्थों का उल्लेख आया है पर राज स्थानी भाषा के रामचरित सम्बन्धी ग्रन्थ उनकी जानकारी में नहीं आए। अतः मैंने इस विषय को अपने शोध का विषय बनाया और हर्ष की बात है कि मुझे अच्छी सामग्री प्राप्त हुई। मैं अपने शोध के परिणाम को विद्वानों के सम्मुख उपस्थित कर रहा हूं। यह लेख 'राज स्थानी भाषा में राम चरित' की सामग्री का परिचय देने वाला ही होगा। उन ग्रन्थों का स्वतन्त्र अध्ययन करके विशद विवेचन करना तो एक शोध प्रबन्ध का ही विषय है। डा० कन्हैयालाल सहल ने प्रो० फूलसिंह चौधरी को इस विषय में मार्ग दर्शन लेने के लिए मेरे पास भेजा था और कुछ काम उन्होंने किया भी था पर वे अपना शोध प्रबंध पूरा नहीं कर पाये।

राजस्थानी भाषा की सर्वाधिक सेवा चारणों और जैन यतियों ने की है। इसके पश्चात् ब्राह्मण आदि वैदिक विद्वानों का स्थान आता है। हिन्दी भाषा मे भी राजस्थान मे रामचरित्र सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ रचे गये है। राजस्थानी भाषा के रामचरित्र ग्रन्थों का आधार वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण और जैन रामायण हैं। तुलसीदास की रामायण से भी उन्हें प्रेरणा अवश्य मिली होगी, पर उन रचनाओं मे उसका उल्लेख नहीं पाया जाता है। राजस्थान मे सन्त कवियों आदि द्वारा जो हिन्दी मे रामचरित्र लिखे गए हैं उन पर तुलसी रामायण का प्रभाव अधिक होना सम्भव है।

राजस्थान मे गत कई शताब्दियों से रामभक्ति, कृष्ण भक्ति, शैव उपासना और शक्ति साधना का प्रचार कभी कहीं अधिक, कहीं न्यून रूप में चलता रहा है। इसमे राज्याश्रय का भी प्रधान हाथ रहा है। जब जहाँ के राजाओं ने जिस उपासना को अपनाया व बल दिया तो वहाँ की प्रजा में भी उसने जोर पकड लिया, क्योंकि यथा राजा तथा प्रजा उक्ति के अनुसार खास तौर से राज्याश्रित हजारों व्यक्ति तो राजाओं की प्रसन्नता पर ही आश्रित थे। अतः राजस्थान में राजाओं मे रामभक्त अधिक नहीं हुए पर कई सन्त सम्प्रदायों के ही कारण रामभक्ति का प्रचार हो सका है।

रामभक्ति का प्रचार भक्तों एवं संतों के द्वारा ही अधिक हुआ और सन्तों का प्रचार कार्य साधारण जनता में ही अधिक रहा। इसलिए राजाओं में रामभक्त विशेष उल्लेखनीय जानने मे नहीं आए। शैव और शाक्त ये राजस्थान के प्राचीन और मान्य सम्प्रदाय हैं। क्षत्रिय लोक शक्ति के उपासक तो होते ही है। योग माया करणीजी की

प्रसिद्धि के बाद शक्ति उपासना का स्वरूप ही कुछ बदल गया। प्राचीन शक्ति रूपिणी देवी सुडा, चामुंडा आदि के प्राचीन मन्दिर जोधपुर राज्य में प्राप्त हैं। विशेषतः सुडा नामक पर्वत और ओसियां सोजत आदि के मन्दिर उल्लेख योग्य हैं। ओसियां की चामुंडा जैन श्रावकों में सच्चिका देवी के रूप में मान्य हुई। कृष्ण भक्ति का भी राजस्थान में अच्छा प्रचार रहा है राजघरानों व विलासप्रिय जनता की रुचि तो उस ओर होना स्वाभाविक ही थी।

राजस्थान के अनेक क्षत्रिय राजवंश अपने को रामचन्द्रजी के वंशज मानते हैं। सुप्रसिद्ध राठौर सीसोदिया आदि सूर्यवंशी राम चन्द्रजी से अपनी वंशावली जोड़ते हैं। राजस्थान का प्रसिद्ध प्रतिहार वंश अपने को रामचन्द्रजी के अनुज लक्ष्मण का वंशज मानता है। इस रूप में तो राजस्थान में मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचंद्र का महत्व बहुत अधिक होना ही चाहिये। किराडू आदि स्थानों में रामावतार की मूर्तियाँ ११वीं १४वीं शताब्दी की मिली है। और ११वीं १२ शताब्दी के देवालयों में भी रामायण सम्बन्धी घटनाएँ उत्कीर्णित मिलती है और उन से राजस्थान में राम कथा के प्रचार व लोक प्रियता का पता चल जाता है।

राजस्थान के लोक गीतों में जो राम कथा सम्बन्धी अनेक गीत मिलते हैं उनसे भी रामकथा की लोकप्रियता का परिचय मिलने के साथ-साथ कुछ नए तथ्य भी प्रकाश में आते हैं। उदाहरणार्थ— सीता के वनवास में उसकी ननद कारणभूत हुई इस प्रसंग के गीत जैसे अन्य प्रान्तों में मिलते हैं वैसे ही राजस्थान में भी प्राप्त है।

राजस्थानी भाषा मे रामचरित सम्बन्धी रचनाओं का प्रारम्भ १६वीं शताब्दी से होने लगता है और २०वीं तक उसकी परम्परा निरन्तर चलती रही है। उपलब्ध राजस्थानी भाषा के रामचरित्र गद्य और पद्य दोनों प्रकार के है। इसी प्रकार जैन और जैनेतर भेद से भी इन्हें दो विभागों मे बांटा जा सकता है। इनमें जैन रचनाओं की प्राचीनता व प्रधानता उल्लेखनीय है।

रामचरित्र सम्बन्धी राजस्थानी जैन रचनाओंमे से कुछ तो सीता के चरित्र को प्रधानता देती हैं कुछ रामचरित्र को पूर्णरूप मे विस्तार से उपस्थित करती है तो कुछ प्रसंग विशेष को संक्षिप्त रूप मे।

१—दि० ब्रह्म जिनदास रचित रामचरित्र काव्य ही राजस्थानी का सबसे पहिला राम काव्य है। इस रामायण की रचना सं० १५०८ में हुई, इसकी हस्तलिखित प्रति डुगरपुर के लैन मन्दिर के भण्डार में है।

२—इसके बाद जैन गुर्जर कविओ भाग १ के पृष्ठ १६६ में उपकेश गच्छ के उपाध्याय विनयसमुद्र रचित पद्मचरित का उल्लेख पाया जाता है। यह रामचरित्र काव्य जो सं० १६०४ के फाल्गुनमे बीकानेर मे रचा गया है। दोनों अभिन्न ही है। पद्मचरित के आधार से बनाया गया। विनयसमुद्र के पद्मचरित की प्रति गौडीजी भंडार उदयपुर में हैं।

३—पिंगल शिरोमणि—सुप्रसिद्ध कवि कुशललाभने जेसलमेर के महाराजकुमार हरराजके नाम से यह मारवाडी भाषा का सर्व प्रथम छंद ग्रथ बनाया है उदाहरण रूप मे राम कथा वर्णित है। राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर से प्रकाशित हो चुका है।

प्रसिद्धि के बाद शक्ति उपासना का स्वरूप ही कुछ बदल गया। प्राचीन शक्ति रूपिणी देवी सुडा चामुंडा आदि के प्राचीन मन्दिर जोधपुर राज्य में प्राप्त हैं। विशेषतः सुडा नामक पर्वत और ओसियां सोजत आदि के मन्दिर उल्लेख योग्य हैं। ओसियां की चामुंडा जैन श्रावकों में सच्चिका देवी के रूप में मान्य हुई। कृष्ण भक्ति का भी राजस्थान में अच्छा प्रचार रहा है राजघरानों व विलासप्रिय जनता की रुचि तो इस ओर होना स्वाभाविक ही थी।

राजस्थान के अनेक क्षत्रिय राजवंश अपने को रामचन्द्रजी के वंशज मानते हैं। सुप्रसिद्ध राठौर सीसोदिया आदि सूर्यवंशी रामचन्द्रजी से अपनी वंशावली जोड़ते हैं। राजस्थान का प्रसिद्ध प्रतिहार वंश अपने को रामचन्द्रजी के अनुज लक्ष्मण का वंशज मानता है। इस रूप में तो राजस्थान में मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचंद्र का महत्व बहुत अधिक होना ही चाहिये। किराडू आदि स्थानों में रामावतार की मूर्तियाँ १३वीं १४वीं शताब्दी की मिली है। और ११वीं १२ शताब्दी के देवालयों में भी रामायण सम्बन्धी घटनाएँ उत्कीर्णित मिलती है और इन से राजस्थान में राम कथा के प्रचार व लोक प्रियता का पता चल जाता है।

राजस्थान के लोक गीतों में जो राम कथा सम्बन्धी अनेक गीत मिलते हैं उनसे भी रामकथा की लोकप्रियता का परिचय मिलने के साथ-साथ कुछ नए तथ्य भी प्रकाश में आते हैं। उदाहरणार्थ— सीता के वनवास में उसकी ननद कारणभूत हुई इस प्रसंग के गीत जैसे अन्य प्रान्तों में मिलते हैं वैसे ही राजस्थान में भी प्राप्त है।

राजस्थानी भाषा मे रामचरित सम्बन्धी रचनाओं का प्रारम्भ १६वीं शताब्दी से होने लगता है और २०वीं तक उसकी परम्परा निरन्तर चलती रही है। उपलब्ध राजस्थानी भाषा के रामचरित्र गद्य और पद्य दोनों प्रकार के है। इसी प्रकार जैन और जैनेतर भेद से भी इन्हें दो विभागों मे बाँटा जा सकता है। इनमे जैन रचनाओं की प्राचीनता व प्रधानता उल्लेखनीय है।

रामचरित्र सम्बन्धी राजस्थानी जैन रचनाओंमें से कुछ तो सीता के चरित्र को प्रधानता देती हैं कुछ रामचरित्र को पूर्णरूप मे विस्तार से उपस्थित करती है तो कुछ प्रसंग विशेष को संक्षिप्त रूप मे।

१—दि० ब्रह्म जिनदास रचित रामचरित्र काव्य ही राजस्थानी का सबसे पहिला राम काव्य है। इस रामायण की रचना सं० १५०८ में हुई, इसकी हस्तलिखित प्रति डुगरपुर के जैन मन्दिर के भण्डार मे है।

२—इसके बाद जैन गुर्जर कविओ भाग १ के पृष्ठ १६६ में उपकेश गच्छ के उपाध्याय विनयसमुद्र रचित पद्मचरित का उल्लेख पाया जाता है। यह रामचरित्र काव्य जो सं० १६०४ के फाल्गुनमे बीकानेर मे रचा गया है। दोनों अभिन्न ही है। पद्मचरित के आधार से बनाया गया। विनयसमुद्र के पद्मचरित की प्रति गौडीजी भंडार उदयपुर मे है।

३—पिंगल शिरोमणि—सुप्रसिद्ध कवि कुशललाभने जैसलमेर के महाराजकुमार हरराजके नाम से यह मारवाडी भाषा का सर्व प्रथम छंद ग्रथ बनाया है उदाहरण रूप मे राम कथा वर्णित है। राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर से प्रकाशित हो चुका है।

४—सीता चउपई—यह ३२७ पद्यों की छोटी रचना है। इसमें सीता के चरित्र की प्रधानता है, खरतर गच्छ के जिनप्रभसूरि शाखा के आचार्य जिनभद्रसूरि के समय में सागरतिलक के शिष्य समय ध्वज ने इसकी रचना संवत् १६११ में की। श्रीमाल मरहुला और गूजरवंशीय गहमल के पुत्र भीवण और वरगहमल के लिए इसकी रचना हुई। इसकी संवत् १७०२ में लिखित १६ पत्र की प्रति हसविजय लाइब्रेरी, बड़ौदा में है।

५—सीता प्रबन्ध—यह ३४६ पद्यों में है। संवत् १६२८ रणथम्मोर में शाह चोखा के कहने से यह रचा गया। 'जैन गूर्जर कविओ' भाग ३ पृष्ठ ७३३ में इसका विवरण मिलता है। प्रति नाहटाजी के संग्रह (कलकत्ते) में है।

६—सीता चरित्र—यह सात सर्गों का काव्य पूर्णिमा गच्छीय हेमरत्नसूरि रचित है। महावीर जैन विद्यालय, तथा अनंतनाथ भंडार बम्बई एवं बड़ौदा में इसकी प्रतियाँ हैं। पद्मचरित्र के आधार से इसकी रचना हुई। रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया पर हेमरत्न सूरि के अन्य ग्रंथ सं० १६३६—४५ में मारवाड़ में रचित मिलते हैं अत यह भी इसके आस पास की ही रचना है।

७—राम सीता रास—तपागच्छीय कुशलवर्द्धन के शिष्य नगर्षि ने इसकी रचना १६४९ में की। डाकामाई भंडार, पाटण में इसकी प्रति है और जैन गुजर कविओ भाग १ पृष्ठ २६० में इसकी केवल एक ही पंक्ति उद्धृत होने से ग्रन्थ की पद्य संख्यादि परिमाण का पता नहीं चलता।

८—जैन रामायण—राजस्थानी भाषा के विशिष्ठ कवि जिनराज सूरिजी ने आचार्य पद प्राप्ति से पूर्व (राजसमुद्र नाम था, सं० १६७४ मे आचार्य पद) इस रामचरित कथा की संक्षेप मे रचना की। इसकी एक मात्र समकालीन लिखित २८ पत्रों की प्रति कोटा के खरतर गच्छीय ज्ञानभडार मे है, पर उसमें प्रशस्ति का अंतिम पद्य नहीं है।

९—लव कुश रास—पीपल गच्छ के राजसागर रचित, इस रास मे राम के पुत्र लव कुश का चरित वर्णित है। पद्य संख्या ५७५ (ग्रंथाग्रन्थ ६००) है। संवत् १६७२ के जेठ सुदि ३ बुधवार को थिरपुर मे इसकी रचना हुई। उपर्युक्त पाटण भंडार मे इसकी १२ पत्रों की प्रति है।

१०—सीता विरह लेख—इसमे ६१ पद्यों मे सीता के विरह का वर्णन पत्र प्रेषण के रूप में किया गया है। संवत् १६७१ की द्वितीय आसाढ पूर्णिमा को कवि अमरचन्द ने इसकी रचना की। जन गूर्जर कविओ भाग १ पृष्ठ ५०८ मे इसका विवरण मिलता है।

११—सीताराम चौपई—महाकवि समयसुन्दर की यह विशिष्ट कृति है। रचनाकाल व स्थान का निर्देश नहीं है पर इसके प्रारम्भ में कवि ने अपनी पूर्व रचनाओं का उल्लेख करते हुए नल दमयंती रास का उल्लेख किया है जो संवत् १६७३ मेडते मे रायमल के पुत्र अमीपाल, खेतसी, नेतसी, तेजसी और राजसी के आग्रह से रचा गया। अत सीताराम चउपइ संवत १६७३ के वाद (इन्हीं राजसी आदि के आग्रह से रचित होने से) रची गई। इसके छठे खण्ड की तीसरी ढाल मे कवि ने अपने जन्म स्थान साचोर में बनाने का उल्लेख किया है। कविवर के रचित साचौर का महावीर स्तवन संवत् १६७७ के

माघ में रचा गया। सम्भव है कि इसीके आस पास सीताराम चउपई की उक्त ढाल भी वहाँ रची गई हो। इस सीताराम चउपई की संवत् १६८३ की लिखित तो प्रति ही मिलती है, अतः इसका रचनाकाल संवत् १६७३ से ८३ के बीच का निश्चित है।

प्रस्तुत चउपई नव खण्ड का महाकाव्य है। नवों रसों का पोषण इसमें किए जाने का उल्लेख कवि ने स्वयं किया है। प्रसिद्ध लोक गीतों की देशियों (चाल) में इस ग्रंथ की ढालें बनाई गई, उनका निर्देश करते हुए कवि ने कौनसा लोक गीत कहाँ कहाँ प्रसिद्ध है, उल्लेख किया है। जैसे—

(१) मोला रा गीत—मारूआड़ि ढूढाड़ि माहि प्रसिद्ध छै।

(२) सूमरा रा गीत—जोधपुर, मेड़ता नागौर, नगरे प्रसिद्ध छै।

(३) तिल्ली रा गीत—मेड़तादिक देशे प्रसिद्ध छै।

(४) इसी प्रकार "जैसलमेर के जादवा" आदि गीतों की चाल में भी ढाले बनाई गई।

प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकों के समक्ष उपस्थित है अतः विशेष परिचय ग्रंथ को पढ़कर स्वयं प्राप्त करें।

१२—राम यशो रसायन—विजयगच्छ के मुनि केसराज ने संवत् १६८३ के आश्विन त्रयोदशी को अन्तरपुर में इसकी रचना की। ग्रंथ चार खण्डों में विभक्त है। ढालें ६२ हैं। इसका स्थानकवासी और तेरापंथी सम्प्रदाय में बहुत प्रचार रहा है। उन्होंने अपनी मान्यता के अनुसार इसके पाठ में रद्दो-बदल भी किया है। स्थानकवासी समाज की ओर से इसके दो तीन संस्करण छप चुके हैं। पर मूल पाठ जामंद काव्य महोदधि के द्वितीय भाग में ठीक से छपा है। इसका

परिमाण समयसुन्दर के सीताराम चौपाई के करीव का है। इसकी २ हस्तलिखित प्रतियाँ हमारे संग्रह में है।

१३—रामचन्द्र चरित्र—लोंका गच्छीय त्रिविक्रम कवि ने संवत् १६९९ सावण सुदि ५ को हिसार पिरोजा द्रंग मे इसकी रचना की। 'त्रिसष्टि शलाका पुरुष चरित्र' के आधार से नव खण्डों एवं १३५ ढालों मे यह रचा गया है। इसकी १३० पत्रों की प्रति श्री मोतीचन्द जी के संग्रह मे है। जिसके प्रारम्भ के ७५ पत्र न मिलने से तीस ढालें प्राप्त नहीं है। इस शताब्दी के प्राप्त ग्रन्थों मे यह सवसे वडा है।

१८वीं शताब्दी

१४—रामायण—खरतरगच्छीय चारित्रधर्म और विद्याकुशल ने सवत् १७२१ के विजयदशमी को सवालक्ष देस के लवणसर में इसकी रचना की। प्राप्त जैन राजस्थानी रचनाओं में इसकी यह निराली विशेषता है कि कवि ने जैन होने पर भी इसकी रचना जैन ग्रन्थों के अनुसार न करके वाल्मीकि रामायण आदि के अनुसार की है —

वाल्मीक वाशिष्टरिसि कथा कही सुभ जेह।
तिण अनुसारे राम जस, कहिये घणो सनेह॥

सुप्रसिद्ध वाल्मीकि—रामायण के अनुसार इसमे वालकाण्ड उत्तरकाण्ड आदि सात काण्ड है। रचना ढालवद्ध है। ग्रन्थ का परिमाण चार हजार श्लोक से भी अधिक का है। सीरोही से प्राप्त इसकी एक प्रति हमारे संग्रह में है।

१५—सीता आलोयणा—लोंका गच्छीय कुशल कवि ने ९३ पद्यों मे सीता के वनवास समय में किए गए आत्म विचारणा का इसमे

गुम्फन किया है। कवि की अन्य रचनाएं संवत् १७४६—८६ की प्राप्त होने से इसका रचनाकाल १८वीं शताब्दी निश्चित है।

१६—सीताहरण चौढालिया—तपागच्छीय दौलतकीर्ति ने ४६ पद्यों व ४ ढाल में सीता हरण के प्रसंग का वर्णन किया है। रचना बीकानेर में संवत् १७८४ में बनाई गई है। इसकी दो पत्रों की प्रति हमारे संग्रह में है।

१७—रामचन्द्र आख्यान—इसमें धर्मविजय ने ५५ छप्पय कवित्तों में रामकथा संक्षेप में वर्णन की है। इसकी पांच पत्रों की प्रति (१९वीं शताब्दी के प्रारम्भ की लिखित) मोतीचन्दजी खजांची के संग्रह में है, अतः रचना १८वीं शताब्दी की होना सम्भव है।

ब्र० जिनदास के रामचरित को छोड़ कर उपर्युक्त सभी रचनाएं श्वेताम्बर विद्वानों की हैं दिगम्बर रचनाओं में संवत् १७१३ में रचित।

१८—सीता चरित्र हिन्दी में है जो कवि रामचन्द्र के रचित है। उसकी १३४ पत्रों की प्रति आमेर भण्डार में है। गोविन्द पुस्तकालय, बीकानेर म भी इसकी एक प्रति प्राप्त है।

१९—सीताहरण—दि० जयसागर ने सं० १७३२ में धंभात नगर में इसकी रचना की भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। उसकी ११४ पत्रों की प्रति उपर्युक्त आमेर भण्डार में है।

१९वीं शताब्दी

२०—राम मजरी—राम रास-तपागच्छीय सुज्ञानसागर कवि ने संवत् १८२२ मिगसर सुदी १० रविवार को इसकी उदयपुर में रचना की। भाषा में हिन्दी का प्रभाव भी है। चरित्र काफी विस्तार से

वर्णित है। ग्रन्थ ६ खण्डों मे विभक्त है। इसकी प्रति लींबडी के ज्ञान-भण्डार मे १८१ पत्रों की है। सम्भवतः राजस्थानी जैन रामचरित ग्रन्थों में यह सवसे वडा है। ग्रन्थकार बड़े वरागी एवं संयमी थे। इनकी चौवीसी आदि रचनाए सभी प्राप्त है।

२१—सीता चउपई—तपागच्छीय चेतनविजय ने संवत् १८५१ के वैसाख सुदि १३ को वगाल के अजीमगंज में इसकी रचना की। इनके अन्य रचनाओं की भाषा हिन्दी प्रधान है। प्रस्तुत चउपई की १८ पत्रों की प्रति वीकानेर के उ० जयचन्दजी के भंडार व कलकत्ते के श्री पूर्णचन्द नाहर के संग्रह मे है। परिमाण मध्यम है।

२२—रामचरित—ऋषि चौथमल ने इस विस्तृत ग्रन्थ की रचना की। श्री मोतीचन्दजी के संग्रह मे इसकी दो प्रतिया पत्र ६५ व ८४ की है। जिनमें से एक मे अंत के कुछ पत्र नहीं है और दूसरी मे अंत का पत्र होने पर भी चिपक जाने से पाठ नष्ट हो गया है इसका रचनाकाल सं० १८६२ जोधपुर है। इनकी अन्य रचना ऋषिदत्ता चौपाई संवत् १८६४ देवगढ (मेवाड) मे रचित है। प्रारम्भिक कुछ पद्यों को पढने पर ज्ञात हुआ कि समयसुन्दर के सीताराम चौपाई के कुछ पद्य तो इसमें ज्यों के त्यों अपना लिये हैं।

२३—राम रासो—लक्ष्मण सीता बनवास चौपाई—ऋषि शिव-लाल ने संवत् १८८२ के माघ वदि १ को बीकानेर की नाहटों की बगीची में इसकी रचना की, इसमें कथा संक्षिप्त है। १२ पत्रों की प्रति यति मुकनजी के संग्रह में हैं।

२० वीं शताब्दी

२४—राम सीता ढालीया—तपागच्छीय ऋषभविजय ने सवत्

१६०३ मिगसर वदि २ बुध को सात ढालों में संक्षिप्त चरित्र वर्णन किया है। भाषा गुजराती प्रधान है।

२५—बीसवीं के उत्तरार्द्ध में अमोलक ऋषि ने सीता चरित्र बनाया है वह मैंने देखा नहीं है उसकी भाषा हिन्दी प्रधान होगी।

बीसवीं शती में (२६) शुक्ल जैन रामायण—शुक्लचन्दजी (२७) सरल जैन रामायण—कस्तूरचन्दजी (२८) आदर्श जैन रामायण—चौथमलजी ने निर्माण की है।

फुटकर सती सीता गीत आदि तो कई मिलते हैं। गद्य में कई बालावबोध ग्रंथों में 'सीता चरित्र' संक्षेप में मिलता है उनका यहां उल्लेख नहीं किया जा रहा है। केवल एक मौलिक सीता चरित्र की की अपूर्ण प्राचीन प्रति हमारे संग्रह में है, उसीका कुछ विवरण आगे दिया जा रहा है।

गद्य

२६—सीता चरित्र भाषा—इसकी १८ पत्रों की अपूर्ण प्रति हमारे संग्रह में है, जो १६ १७वीं शताब्दी की लिखित है अतः इसकी रचना १६वीं शताब्दी की होनी सम्भव है। इसी तरह का एक अन्य संक्षिप्त सीता चरित्र (गद्य) मुनि जिनविजयजी संग्रह (भारतीय विद्या भवन बम्बई) में है।

इस प्रकार तथा ज्ञात जैन रचनाओं का परिचय देकर अब जैनेतर गद्य और पद्य रचनाओं (रामचरित्र सम्बन्धी ग्रन्थों) का परिचय दिया जा रहा है।

१७वीं शताब्दी

१ रामरासो—माधवदास दधवाड़िया रचित यह काव्य खूब

प्रसिद्ध रहा है। प्रारम्भिक मंगलाचरण मे कवि ने मुनि कर्माणद को नमस्कार किया है पता नहीं वे कौन थे? अन्तिम पद्यों मे 'राज हुकम जगतेस रे' शब्दों द्वारा जगतसिंह राजा का उल्लेख किया है वे भी कहाँ के राजा थे? निश्चित ज्ञात नहीं हुआ। इसकी पद्य संख्या प्रशस्ति के अनुसार ११३८ है। हमारे सग्रह मे भी इसकी कई प्रतियाँ हैं।

डा० मोतीलाल मेनारिया ने माधोदास का कविताकाल १६६४ निश्चय किया है। राम रासो की पद्य संख्या १६०१ और उदयपुर की प्रति का लेखन समय १६६७ दिया है। इनके उद्धृत पद वास्तव मे मूल ग्रन्थ के समाप्त होने के बाद लिखा गया है। उदयपुर प्रति मे राज्याभिषेक का वर्णन अधिक है।

१८वीं शताब्दी

२—रुघरासो सं० १७२५ के मिगसर मे मारवाड़ के वालरवे मे इसकी रचना रूघपति (रुघनाथ) ने की। इसकी प्रति कोटा भंडार में है।

३ राघव सीता रास—इस २२५ पद्योंवाली रचना की प्रति संवत् १७३५ की लिखी मिली है। इसकी भाषा व शैली बीसलदेव रासो की तरह है। राम रासो डिंगल शैली का ग्रन्थ है, तो यह बोलचाल की भाषा मे लोकगीत की शैली का। इसकी प्रति बीकानेर के बड़े ज्ञानभंडार में हैं।

४ राम सीता रास—३४ पद्यों की इस लघु रास की दो पत्रों की संवत् १७३३ लिखित प्रति हमारे संग्रह मे है।

सूरज प्रकाश (कविया करणीदान रचित) इस काव्य में राठोड़ों के के पूर्वज के रूप में राम का चरित दिया है।

१९वीं शताब्दी

रघुनाथरूपक—सेवग कवि मंछ ने संवत् १८६३ में इसे रचा है। राजस्थानी गीतों का यह प्रसिद्ध ग्रन्थ शास्त्र है। उदाहरण में कवि ने रामचरित्र को लिया है। इसीलिए इसका नाम रघुनाथ रूपक रखा है। नागरी प्रचारिणी सभा से यह छप भी चुका है।

६ रघुवर जस प्रकाश—यह भी राजस्थानी ग्रन्थ शास्त्र है। रच यिता किसनजी आढ़ा है। संवत् १७८१ में इसकी रचना हुई। कविता प्रौढ़ और भाषा शैली सरस है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से यह प्रकाशित हो चुका है।

२०वीं शताब्दी

(७) गीत रामायण—जोधपुर के स्व० कविवर बख्तावरलाल माथुर ने सम्वत् १९५५ में यहीं के प्रचलित मारवाड़ी लोकगीतों की चाल में बनाई। इसमें प्रसिद्ध रामायण की भाँति सात काण्ड हैं और क्रमश ६१ ३८ १३ ४ १६, २ और ११ कुल १३६ गीत हैं। बाल-काण्ड, अवध काण्ड अरण्य-काण्ड किष्किन्धा-काण्ड सुन्दर-काण्ड, लंकाकांड और उत्तरकांड में राम के राज्य तक की कथा आई है। सीता वनवास का प्रसंग नहीं दिया गया। लोक गीतों की चाल में इसके गीत होने से स्त्रियों में इसका प्रचार बहुत अधिक हुआ। रचना बहुत सुन्दर है। पॉकेट साईज के २१२ पृष्ठों में छप चुकी है।

गद्य रामायण

(८) रामचरित्र बालावबोध—अध्यात्म रामायण के ६ अध्यायों का यह राजस्थानी अनुवाद है। सम्वत् १७४७ की लिखित प्रति प्राप्त होने से रचना इससे पूर्व की निश्चित है पर अनुवादक का नाम नहीं पाया जाता। भाषा सरल है। इसकी एक शुद्ध प्रति बीकानेर के बृहद् ज्ञान-भण्डार मे ५८ पत्रो की है। जो १८वीं शताब्दी की लिखी प्रतीत होती हैं। अनूप संस्कृत लायब्रेरी के गुटके नं० २४० के पत्राक १८० से २७० मे यह बालावबोध लिखित मिलता है। वह प्रति सम्वत् १७४७ मे लिखी गई है।

(६) रामचरित्र—अनूप संस्कृत लायब्रेरी मे एक अन्य गद्य रामचरित्र भी है जिसकी प्रति के प्रारम्भिक पाँच पत्र नहीं है और पत्राक १२५ मे कथा पूर्ण होती है। पर अन्त का उपसंहार बाकी रह जाता है।

(१०) रामचरित्र—श्री मोतीचन्दजी खजाची के संग्रह में सम्वत् १८३२ जोधपुर में लिखित प्रति मे यह गद्य रामचरित्र मिलता है। जिसमे ब्रह्माड पुराण के उल्लेख हैं। इसमें रामकथा बहुत विस्तार से चार हजार श्लोक परिमित हैं।

(११) रामचरित्र गद्य की एक सचित्र प्रति खजाचीजी के संग्रह मे है।

(१२) गद्य रामायण की एक प्रति जोधपुर के कविया बद्रीदानजी के संग्रह में प्राप्त हुई है।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के संग्रह में राजस्थानी गद्य रामायण की सचित्र प्रति है।

(१३) मानव मित्र रामचरित्र—इसके लेखक स्व० महाराज साहब चतुरसिंहजी हैं। भाषा मेवाड़ी है। इसकी द्वितीय आवृत्ति मनोहर लाल शर्मा संस्कृत ग्रन्थागार चांद पोल, उदयपुर से २०३ पृष्ठों में प्रकाशित हुई है। पृष्ठ १६१ तक (विजय तक) का वृत्तान्त चतुर सिंहजी ने वाल्मीकि रामायण योग वशिष्ठ, तुलसी रामायण और महावीर चतुर के आधार से उपन्यास की भाँति लिखा है। उत्तर का चरित्र भी गिरधरलाल शास्त्री ने लिखकर ग्रन्थ को पूर्णता दी है।

(१४) बाल रामायण—सुप्रसिद्ध ब्रजलालजी बियानी ने विद्यार्थी अवस्था में इसे लिखा वह छप भी चुका है।

इस प्रकार जैन और जैनेतर राजस्थानी रामचरित्र ग्रन्थों का परिचय यहाँ दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि जैन विद्वानों की रचनाएँ ज्यादा हैं और १६वीं शताब्दी से गद्य और पद्य में मिलने लगती हैं। जैनेतर रचनाओं का प्रारम्भ १७वीं के उत्तरार्द्ध से होता है, जो २०वीं तक निरन्तर चलता रहता है।

राजस्थान में हिन्दी भाषा का प्रचार भी १७वीं शताब्दी से प्रारम्भ हो गया और १८वीं से सैकड़ों ग्रन्थ रचे गये अतः हिन्दीभाषा के रामचरित्र ग्रन्थों की संख्या भी अच्छी होनी चाहिये। भक्त एवं सन्त कवियों ने भी कई रामचरित्र हिन्दी में लिखें हैं इनमें से सन्त कवि जगन्नाथ रचित रामकथाका परिचय मैं प्रकाशित कर चुका हूँ। यों नरहरिदास के अवतार चरित्र में भी रामचरित्र मिलता है।

रामचरित्र सम्वन्धी राजस्थानी साहित्य की जानकारी कराने के पश्चात् इस प्रकाश्यमान सीताराम चौपई के निर्माता महाकवि समयसुन्दर का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

कविवर समयसुंदर

राजस्थान की पवित्र भूमि अपनी युद्धवीरता के लिये विश्व-विख्यात है। पग-पग पर हजारों स्मारक आज भी अपनी मातृभूमि पर प्राण निछावर करनेवाले वीरों और वीरांगनाओं की अमर कीर्ति की याद दिला रहे हैं। इसी प्रकार अपनी दानवीरता के लिये भी राजस्थान प्रसिद्ध है। आज भी भारत की अधिकांश पारमार्थिक संस्थाएँ यहीं के दानवीरों की सहायता से जन-कल्याण कर रही हैं। यहाँ के चारण सुकवियों की ख्याति भी कम नहीं है। उनके वीर-काव्यों ने यहाँ के पुरुषों में जिस प्रचंड वीरता का संचार किया उसे सुनकर आज भी कायर हृदयों में वीरोचित उत्साह उमड पडता है। परन्तु सच्चा मानव वनने के लिये वीरता के साथ-साथ विश्वप्रेम, भक्ति, सदाचार, परोपकार आदि सद्गुणों का विकास भी परमावश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति संतों ने की, जिनमे जैन विद्वान् संतों का स्थान सर्वोत्कृष्ट है। जैन विद्वानों ने अहिंसा का प्रचार तो किया ही, राजस्थान की व्यापारिक उन्नति के मूल कारण प्रामाणिकता पर भी उन्होंने वहुत जोर दिया। इन मुनियों के उपदेशों ने जनता मे वैराग्य, धर्म, नीति आदि आध्यात्मिक संस्कारों का विकास किया। कवि समयसुदरोपाध्याय भी उन्हीं जैन मुनियों मे एक प्रधान कवि हैं।

समयसुदर की कविता वडी ही सरल एवं ओजपूर्ण है। इनके

पांडित्य और इनकी प्रतिभा का विकास व्याकरण, अलंकार, छंद, ज्योतिष, जैन साहित्य, अनेकार्थ आदि अनेक विषयों में दिखाई पड़ता है और प्राकृत, संस्कृत राजस्थानी, गुजराती, हिंदी, सिंधी तथा पारसी तक में इनकी लेखनी समान रूप से चलती है। इन्होंने अनेक ग्रंथ रचकर भारतीय वाङ्मय की वृद्धि की। साहित्य के ये अप्रतिम सेवक थे।

जन्मभूमि—कवि की मातृभूमि होने का गौरव मारवाड़ प्रान्त के साँचोर स्थान को प्राप्त है। यह साँचोर भगवान् महावीर के तीर्थ-रूप में जैन साहित्य में प्रसिद्ध है।[1] कवि ने स्वयं अपनी जन्मभूमि का उल्लेख अपनी विशिष्ट भाषा-कृति सीताराम-चौपाई' में इन शब्दों में किया है—

मुझ जन्म श्री साचोर मांहि तिहां च्यार मास रह्या उच्छाहि।

तिहां ढाल ए कीधी एकेज, कहै समयसुंदर धरी हेज।

कवि-रचित साचोर-मंडन-महावीर-स्तवन' का रचनाकाल सं० १६७७ है। यह ढाल भी सम्भवतः उसी समय रची गई होगी। इनके शिष्य वादी हर्षनंदन और देवीदास ने भी गुरुगीतों में कवि की जन्म भूमि का वर्णन इस प्रकार किया है—

साच साचोरे सद्गुरु जनमिया रे। (हर्षनंदन)

जन्मभूमि साचोरे जेहनी रे। (देवीदास)

वंश—जैनों में तीन प्रसिद्ध जातियाँ हैं—श्रीमाल, ओसवाल, पोरवाड़। पुराने कवियों में इनकी विशेषताओं का वर्णन करते हुए

१—प्रथम—जैन-साहित्य-संशोधक खंड १ अंक १

पोरवाड जाति के बुद्धि-वैभव की विशेषता 'प्रज्ञाप्रकर्ष प्राग्वाटे' वाक्य द्वारा वतलाई है। विमल-प्रबंध मे पोरवाड जाति के सात गुणों में चौथा गुण "चतुः प्रज्ञाप्रकर्षवान्" लिखा है जो प्राचीन इतिहास के अवलोकन से सार्थक ही सिद्ध होता है। गुजरात के महामन्त्री वस्तु-पाल, तेजपाल ने अरिसिंह आदि कितने ही कवियों को आश्रय दिया, उत्साहित किया और स्वय वस्तुपाल ने भी 'वसंतविलास'[२] नामक सुन्दर काव्य की रचना कर अपने अन्य सुकृत्यों पर कलश चढ़ा दिया। इससे पूर्व महाकवि-चक्रवर्ती श्रीपाल ने भी शतार्थी[३], सहस्र-लिंग सरोवर, दुर्लभ सरोवर, रुद्रमाला की प्रशस्ति महाराज सिद्धराज के समय मे और वडनगर-प्रशस्ति तथा कई स्तवनादि महाराज कुमार-पाल के समय मे सं० १२०८ मे वनाए। इनका पौत्र विजयपाल भी अच्छा कवि था। इसका रचा द्रौपदी-स्वयंवर नाटक जैन-आत्मानंद सभा, भावनगर से प्रकाशित है। सतरहवीं शती में इसी वंश में श्रावक महाकवि ऋषभदास[४] हुए, जो कवि के समकालीन थे। प्राग्वाट (पोरवाड) जाति की प्रज्ञाप्रकर्षता के ये उदाहरण हैं। इसी पोरवाड[५]

२—वडोदा ओरियटल सीरीज से प्रकाशित। सबंधित कवियों के विषय में द्रष्टव्य-डा० भोगीलाल साडेसरा कृत 'वस्तुपाल का विद्यामडल' (जैन-सस्कृति-सशोधक-मंडल, वनारस)।

३—'जैन-सत्य-प्रकाश', वर्ष ११ अक १०

४—'आनद-काव्य-महोदधि', मौक्तिक ८

५—'अनेकात', वर्ष ४ अक ६ एव 'ओसवाल', वर्ष १२ अंक ८ १० में प्रकाशित लेखक के लेख।

वंश में महाकवि समयसुंदर का जन्म हुआ था जिसका उल्लेख उनके शिष्यवादी हर्षनंदन ने इस प्रकार किया है—

प्राग्वाट्यं प्राग्वाटे इति सत्य व्यापारि यः (मध्याह्न व्याख्यान पद्धति)
प्राग्वाट-वंश-रत्ना धर्मश्री मणिकासुत । (ऋषिमंडल वृत्ति)
प्राग्वाट ज्ञातवंश पद्मापा गीतिकाव्यकर्त्तारः । (उत्तराध्ययन वृत्ति)
परगड़ वंश पोरवाड़ । (श्री समयसुंदरोपाध्यायानां गीतम्)

देवीदास ने भी अपने गीत में 'वंश पोरवाड़ विख्यातो जी' लिखा है।

माता पिता और दीक्षा—कवि के पिता का नाम रूपसी और माता का लीलादे या धर्मश्री था जिनका उल्लेख वादी हर्षनंदन ने "रूपसी जो रा नंद" और देवीदास ने 'मात लीलादे रूपसी जन मिया" शब्दों द्वारा किया है। कवि के जन्म अथवा दीक्षा का समय अद्यावधि अज्ञात है। परन्तु इनकी प्रथम कृति 'भावशतक' के रचना काल के आधार पर श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने उस समय इनकी आयु २०—२१ वर्ष अनुमानित कर जन्म-काल वि० १६२० होने की संभावना की है जो समीचीन जान पड़ती है। वादी हर्षनंदन के "नव यौवन भर संयम संग्रह्यो जो, सई हथे श्री जिनचंद" इस उल्लेख के अनुसार दीक्षा के समय इनकी अवस्था कम से कम १५ वर्ष होनी चाहिए। इस अनुमान से दीक्षा-काल वि० १६३५ के लगभग बैठता है। इनकी दीक्षा श्रीजिनचंद्रसूरि[१] के करकमलों से होना सिद्ध है। सूरिजी

१—द्रष्ट हमारा 'युगप्रधान जिनचंद्रसूरि ग्रंथ'। इन्होंने सम्राट् अकबर को जैन धर्म का बोध दिया था और सम्राट् जहाँगीर तथा अन्य राजाओं पर भी इनका अच्छा प्रभाव था।

ने इन्हें अपने प्रथम शिष्य रीहड़-गोत्रीय श्री सकलचंद्र गणि[७] के शिष्य रूप मे दीक्षित किया था।

विद्याध्ययन—इनके गुरु श्री सकलचंद्र जी इनकी दीक्षा के कुछ ही वर्षों बाद स्वर्गवासी हुए, अतः इनका विद्याध्ययन सूरिजी के प्रधान शिष्य महिमराज और समयराज के तत्त्वावधान में हुआ। इसका उल्लेख कवि ने स्वयं इस प्रकार किया है—

> श्री महिमराज वाचक वाचकवर समयराज गुण्यानां
> मद्विद्यैकगुरूणा प्रसादतो सूत्रशतकमिदम् ॥ (भावशतक, १।१)
> श्री जिनसिंह मुनीश्वर वाचकवर समयराज गणिराजाम्
> मद्विद्यैकगुरूणामनुग्रहो मेऽत्र विज्ञेयः ॥ (अष्टलक्षी, २८)

संघपति सोमजी के संघ के साथ शत्रुंजय-यात्रा—

सं० १६४४ में श्री जिनचन्द्रसूरि खंभात मे चातुर्मास्य कर अहमदाबाद आए। उनके उपदेश से शत्रुंजय का माहात्म्य श्रवण कर पोरवाड-ज्ञातीय सोमजी[८] और उनके भाई शिवा ने शत्रुंजय का संघ निकाला, जिसमें मालव, गुजरात, सिंधु, सिरोही आदि नाना स्थानों के यात्री-संघ आकर सम्मिलित हुए थे। इस संघ मे कवि समयसुंदर भी अपने दादा-गुरु और विद्यागुरु आदि के साथ शत्रुंजय गए और चैत्र बदी ४ बुधवार को महातीर्थ शत्रुंजय गिरिराज की यात्रा की। इसका उल्लेख कवि ने अपने 'शत्रुंजय भासद्वय' मे इस प्रकार किया है—

७—खरतरगच्छ पट्टावली के अनुसार इनकी दीक्षा वि० १६१२ में बीकानेर में हुई थी।

८—द्रष्ट० 'युगप्रधान जिनचंद्रसूरि', पृ० २४०

संवत सोल चिमाल मह रे, चैत्र मास वदि अरय शुक्रवार रे।
जिनचन्द्रसूरि यात्रा करी रे, चतुर्विध श्रीसंघ परिवार रे॥ ८॥

अकबर के आमन्त्रण पर लाहोर-यात्रा—वि० १६४७
सम्राट् अकबर ने जैन धर्म का विशेष बोध प्राप्त करने के उद्देश्य
मन्त्री कर्मचंद्र द्वारा जिनचन्द्रसूरि का कड़ी धूप में आना कष्ट
जान उनके मुख्य शिष्य वाचक महिमराज को बुलाने के निमित्त
शाही पुरुषों को विज्ञप्तिपत्र देकर सूरिजी के पास भेजा। उन्हें
विज्ञप्तिपत्र पाते ही महिमराज को अ॰ अन्य साधुओं के साथ लाह
भेजा। इनमें हमारे कवि समयसुंदर भी एक थे, जिन्होंने श्री जि
सिंहसूरि अष्टक में इस यात्रा का वर्णन किया है—

> एह अवस्था श्री शांतिनाथ गुरु थिर थर्यो हाथ
> समयसुंदर साथ चाले नीकी गतियाँ।
> अनुक्रमि चलि आए सीरोही में सुख पाए
> मुलताण मनि आए देखत अँखियाँ।
> जालोर मेदिनातट पदधारत जिमपत प्रकट
> बीकानेर नीति मठ जयशिरि गतियाँ।
> रिणी तह सरसपुर आवत फिरोजपुर
> संपत मरी स्वपुर मानु आरती हरियाँ। २॥
> पत्तु आवत सुरोम लीनी लाहोर बधाई दीनी
> मगी क माहिम कीनी कहइ पसाउ पतियाँ।
> मानसिंह गुरु आए पातसाह कं सुहाए
> वाजिन दिए बजाए राग दीवह दुखियाँ।

समयसुंदर मायउ पद्ममारउ नीकउ वणायउ
श्री संघ साम्हउं आयउ सज्जकरि हथियाँ।
गावत मधुर सर रूपइ मानु अपछर
सुंदर सूहव करइ गुरु आगइ सथियाँ॥३॥

इसके पश्चात् अकबर और जहाँगीर की श्रद्धा वा० महिमराज के प्रति उत्तरोत्तर बढती गई और जब अकबर ने सं० १६४६ मे काश्मीर-विजय के लिये स्वयं जाना निश्चित किया तो उसने श्री जिनचंद्रसूरि से वा० महिमराज को धर्मोपदेश के लिये अपने साथ भेजने की विज्ञप्ति की। तदनुसार श्रावण सुदी १३ को संध्या समय काश्मीर-विजय के उद्देश्य से प्रयाण कर सब लोग राजा श्रीरामदास की वाटिका मे ठहरे। उस समय अनेक सामंतों, मंडलीकों तथा विद्वानों की सभा में कवि समयसुन्दर ने अपने अद्वितीय ग्रंथ 'अष्टलक्षी' को पढकर सुनाया। इसे सुन सम्राट् बहुत चमत्कृत हुआ और भूरि-भूरि प्रशंसा करके 'इसका सर्वत्र प्रचार हो' कहते हुए उसने अपने हाथ से उस ग्रंथरत्न को ग्रहण कर उसे कवि के हाथों मे समर्पित किया।

इस अभूतपूर्व ग्रंथ मे "राजानो ददते सौख्यं" इस आठ अक्षर वाले वाक्य के १०२२४०७ अर्थ किए गए हैं। कहा जाता है कि किसी समय एक जैनेतर विद्वान् ने जैन धर्म के "एगस्स सुत्तस्स अनंतो अत्थो" वाक्य पर उपहास किया था, उसी के प्रत्युत्तर मे कवि ने यह ग्रंथ रच डाला।[१]

१—यह ग्रंथ देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, सूरत से प्रकाशित हुआ है। इसमें कवि ने स्वयं उपर्युक्त वृत्तांत लिखा है।

संवत सोल छिमाल मइ रे चैत्र मास वदि पञ्चम बुधवार रे।
जिनचन्द्रसूरि यात्रा करी रे, चतुर्विध श्रीसंघ परिवार रे॥ ८॥

अकबर के आमन्त्रण पर लाहोर-यात्रा—वि० १६४८ में सम्राट् अकबर ने जैन धर्म का विशेष बोध प्राप्त करने के उद्देश्य से मन्त्री कर्मचंद्र द्वारा जिनचन्द्रसूरि का बड़ी धूप में आना कष्टकर जान उनके मुख्य शिष्य वाचक महिमराज को बुलाने के निमित्त दो शाही पुरुषों को विज्ञप्तिपत्र देकर सूरिजी के पास भेजा। उन्होंने विज्ञप्तिपत्र पाते ही महिमराज को छः अन्य साधुओं के साथ लाहोर भेजा। इनमें हमारे कवि समयसुन्दर भी एक थे जिन्होंने 'श्री जिन सिंहसूरि अष्टक' में इस यात्रा का वर्णन किया है—

एह समय्यां श्री शान्तिनाथ गुरु शिर धर्यो हाथ
समयसुन्दर साथ चाले नीकी परियाँ।
अनुक्रमि चलि आए सीरोही में सुख पाए
सुलतान मनि भाए देखत वैखरियाँ।
जालोर मेदिनीतट पइसारउ किया प्रकट
बीकानयर बीते मह जयसिरि वरियाँ।
रिणी हइ सरसपुर आयउ फिरोजपुर
संघउ नदी कच्छू मानु बहती दरियाँ।२॥
पछइ आयउ सुयोग कीनी लाहोर बधाई दीनी
मंत्री कु मालिम कीनी करइ एलाज पैमियाँ।
मानसिंह गुरु आए पातसाह कु सुणाए
वाजित्र मिलें बजाए दान दीयइ दुखियाँ।

समयसुंदर भायउ पइसारउ नीकउ वणायउ
श्री संघ साम्हउं आयउ सजकरि हथियाँ।
गावत मधुर सर रूपइ मानु अपछर
सुंदर सूहव करइ गुरु आगइ सथियाँ ॥३॥

इसके पश्चात् अकबर और जहाँगीर की श्रद्धा वा० महिमराज के प्रति उत्तरोत्तर बढती गई और जब अकबर ने सं० १६४६ में काश्मीर-विजय के लिये स्वयं जाना निश्चित किया तो उसने श्री जिनचंद्रसूरि से वा० महिमराज को धर्मोपदेश के लिये अपने साथ भेजने की विज्ञप्ति की। तदनुसार श्रावण सुदी १३ को संध्या समय काश्मीर-विजय के उद्देश्य से प्रयाण कर सब लोग राजा श्रीरामदास की वाटिका में ठहरे। उस समय अनेक सामंतों, मंडलीकों तथा विद्वानों की सभा में कवि समयसुन्दर ने अपने अद्वितीय ग्रंथ 'अष्टलक्षी' को पढकर सुनाया। इसे सुन सम्राट् बहुत चमत्कृत हुआ और भूरि-भूरि प्रशंसा करके 'इसका सर्वत्र प्रचार हो' कहते हुए उसने अपने हाथ से उस ग्रंथरत्न को ग्रहण कर उसे कवि के हाथों मे समर्पित किया।

इस अभूतपूर्व ग्रंथ मे "राजानो ददते सौख्यं" इस आठ अक्षर वाले वाक्य के १०२२४०७ अर्थ किए गए हैं। कहा जाता है कि किसी समय एक जैनेतर विद्वान् ने जेन धर्म के "एगस्स सुत्तस्स अनंतो अत्थो" वाक्य पर उपहास किया था, उसी के प्रत्युत्तर मे कवि ने यह ग्रंथ रच डाला।[१]

१—यह ग्रंथ देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, सूरत से प्रकाशित हुआ है। इसमें कवि ने स्वयं उपर्युक्त वृत्तांत लिखा है।

'वाचक'-पद—कश्मीर विजय कर लाहौर वापस आने पर सम्राट् ने श्रीजिनचन्द्रसूरि से वा० महिमराज को 'आचार्य' पद देने का अनुरोध किया। सं० १६४६ फाल्गुन कृष्ण १० से अष्टाह्निका महोत्सव आरम्भ हुआ और उसमें फाल्गुन शुक्ल २ को वा० महिमराज को 'आचार्य' पद देकर उनका नाम 'जिनसिंहसूरि' प्रसिद्ध किया गया। इसी महोत्सव में श्री जिनचन्द्रसूरि ने जयसोम तथा रत्ननिधान को 'उपाध्याय' एवं समयसुन्दर तथा गुणविनय[१०] को वाचक' पद से अलंकृत किया। इसका उल्लेख 'कर्मचन्द्र-वंश प्रबंध'[११] और 'चौपाई'[१२] में इस प्रकार पाया जाता है—

> तेषु च गणि जयसोमा रत्ननिधानाश्च पाठका विहिता।
> गुणविनय समयसुंदर गणि कृतौ वाचनाचार्यौ॥ ६२॥
> वाचक पद गुणविनय नइ समयसुंदर नइ दीधउ रे।
> पुण्यप्रधान जी नइ करइ आणि रसायण सीधउ रे॥

ग्रन्थ-रचना और विहार—सं० १६५१ में गड़ाला (माल)-मंडन श्री जिनकुशलसूरि के दर्शन कर उनका भक्तिगर्भित अष्टक द्रुतविलंबित छन्द में बनाया और इसी वर्ष 'स्तम्भन पार्श्वनाथ-स्तव' की

१०—द्रष्ट नेमिदूत काव्यवृत्ति की प्रस्तावना।

११—इसका मूल ओझाजी ने हिन्दी अनुवाद सहित आर्टपेपर पर छपवाया था पर वह प्रकाशित न हो सका। मुनि जिनविजय ने इसे वृत्ति के साथ छपवाया है।

१२—जैन रासंग्रह भाग १ तथा ऐतिहासिक जैन गुर्जर काव्य-संचय में प्रकाशित।

रचना की जिसमें चौबीस तीर्थङ्करों और चौबीस गुरुओं के नाम समाविष्ट हैं। सं० १६५२ का चौमासा खंभात मे किया और विजयदशमी के दिन 'श्रीजिनचन्द्रसूरि गीत' बनाया, जिसकी कार्तिक शुक्ल ४ की स्वयं कवि द्वारा लिखित प्रति उपलब्ध है। सं० १६५३ मे आषाढ शुक्ल १० को इलादुर्ग में रचित एवं कवि को स्वलिखित 'मंगलवाद' की तीन पन्ने की प्रति जैसलमेर के खरतरगच्छ पंचायती भंडार मे विद्यमान है। सं० १६५६ मे वे जैसलमेर आए और वहाँ अक्षय-तृतीया के दिन सतरह रागों मे 'पार्श्वजिनस्तवन' की रचना की। सं० १६५७ मे श्री जिनसिंहसूरि के साथ चैत्र कृष्ण ४ को आबू और अचलगढ गए। वहाँ से शत्रुंजय और फिर अहमदावाद आए। सं० १६५८ का चातुर्मास्य यहीं किया और विजयदशमी के दिन यहीं 'चौबीसी' की रचना की। इसी वर्ष मनजी साह ने यहाँ अष्टापद तीर्थ की रचना कराई, जिसका उल्लेख कवि ने 'अष्टापद-स्तवन" मे किया हैं। यहाँ से पाटण आए। यहाँ सं० १६५६, चैत्र पूर्णिमा को इनके हाथ की लिखी नरसिंहभट्ट-कृत 'श्रवण-भूषण ग्रंथ की प्रति हमने यति चुन्नीलाल के संग्रह मे ३०-३५ वर्ष पूर्व देखी थी। अब यह प्रति श्री मोतीचन्द खजानची के सग्रह में है।

सं० १६५६ का चातुर्मास्य खंभात मे हुआ और वहाँ विजयदशमी के दिन 'शाव प्रद्युम्न चौपाई' की जो इनकी 'रास चौपाई' आदि बडी भाषाकृतियों मे सर्वप्रथम रचना है। इन्होंने इस चौपाई मे इसे प्रथम अभ्यास रूप रचना वतलायी है—

> सगति नही मुझ तेहवी, बुद्धि नहीं सुप्रकास।
> वचन विलास नहीं तिस्यउ, ए पणि प्रथम अभ्यास ॥

'वाचक'-पद—कश्मीर विजय कर लाहोर वापस आने पर सम्राट् ने श्रीजिनचन्द्रसूरि से वा० महिमराज को 'आचार्य' पद देने का अनुरोध किया। सं० १६४६ फाल्गुन कृष्ण १० से अष्टाह्निका महोत्सव आरम्भ हुआ और उसमें फाल्गुन शुक्ल २ को वा० महिमराज को 'आचार्य' पद देकर उनका नाम 'जिनसिंहसूरि' प्रसिद्ध किया गया। इसी महोत्सव में श्री जिनचन्द्रसूरि ने जयसोम तथा रत्ननिधान को 'उपाध्याय' एवं समयसुन्दर तथा गुणविनय[1] को 'वाचक' पद से अलंकृत किया। इसका उल्लेख 'कर्मचन्द्र वंश प्रबंध[1] और चौपाई'[2] में इस प्रकार पाया जाता है—

> तेषु च गणि जयसोमा रत्ननिधानाश्च पाठका विहिता।
> गुणविनय समयसुन्दर गणि कृतौ वाचनाचार्यौ॥ ६२॥
> वाचक पद गुणविनय नइ समयसुन्दर नइ दीधउ रे।
> पुण्यवान वी नइ करइ जाणि रसायण सीधउ रे॥

ग्रन्थ-रचना और विहार—सं० १६५१ में गंधाला (नाल)-मंडन श्री जिनकुशलसूरि के दर्शन कर उनका भक्तिगर्भित अष्टक तुवविर्ध विध छन्द में बनाया और इसी वर्ष 'स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तव' की

१०—द्रष्टव्य नेमिदूत काव्यवृत्ति की प्रस्तावना।

११—इसका मूल ओझाजी ने हिन्दी अनुवाद सहित आर्टपेपर पर छप वाया था पर वह प्रकाशित न हो सका। मुनि जिनविजय ने इसे वृत्ति के साथ छपवाया है।

१२—जैन रासंग्रह भाग १ तथा ऐतिहासिक जैन गुर्जर काव्य-संचय में प्रकाशित।

रचना की जिसमें चौवीस तीर्थङ्करों और चौवीस गुरुओं के नाम समाविष्ट हैं। सं० १६५२ का चौमासा खंभात मे किया और विजयदशमी के दिन 'श्रीजिनचन्द्रसूरि गीत' बनाया, जिसकी कार्तिक शुक्ल ४ की स्वयं कवि द्वारा लिखित प्रति उपलब्ध है। सं० १६५३ मे आषाढ शुक्ल १० को इलादुर्ग में रचित एवं कवि की स्वलिखित 'मंगलवाद' की तीन पन्ने की प्रति जैसलमेर के खरतरगच्छ पंचायती भंडार मे विद्यमान है। सं० १६५६ मे वे जैसलमेर आए और वहाँ अक्षय-तृतीया के दिन सतरह रागों मे 'पार्श्वजिनस्तवन' की रचना की। सं० १६५७ में श्री जिनसिंहसूरि के साथ चैत्र कृष्ण ४ को आबू और अचलगढ गए। वहाँ से शत्रुंजय और फिर अहमदाबाद आए। सं० १६५८ का चातुर्मास्य यहीं किया और विजयदशमी के दिन यहीं 'चौबीसी' की रचना की। इसी वर्ष मनजी साह ने यहाँ अष्टापद तीर्थ की रचना कराई, जिसका उल्लेख कवि ने 'अष्टापद-स्तवन" मे किया हैं। यहाँ से पाटण आए। यहाँ सं० १६५६, चैत्र पूर्णिमा की इनके हाथ की लिखी नरसिंहभट्ट-कृत 'श्रवण-भूषण ग्रंथ की प्रति हमने यति चुन्नीलाल के संग्रह में ३०-३५ वर्ष पूर्व देखी थी। अब यह प्रति श्री मोतीचन्द खजानची के संग्रह में है।

सं० १६५६ का चातुर्मास्य खंभात मे हुआ और वहाँ विजयदशमी के दिन 'शाव प्रद्युम्न चौपाई' की जो इनकी 'रास चौपाई' आदि बडी भाषाकृतियों मे सर्वप्रथम रचना है। इन्होंने इस चौपाई मे इसे प्रथम अभ्यास रूप रचना वतलायी है—

सगति नही मुझ तेहवी, बुद्धि नहीं सुप्रकास।
वचन विलास नही तिस्यउ, ए पणि प्रथम अभ्यास॥

'वाचक'-पद—कश्मीर विजय कर लाहौर वापस आने पर सम्राट् ने श्रीजिनचन्द्रसूरि से वा० महिमराज को 'आचार्य' पद देने का अनुरोध किया। सं० १६४९ फाल्गुन कृष्ण १० से अष्टाह्निका महोत्सव आरम्भ हुआ और उसमें फाल्गुन शुक्ल २ को वा० महिमराज को 'आचार्य' पद देकर उनका नाम 'जिनसिंहसूरि' प्रसिद्ध किया गया। इसी महोत्सव में श्री जिनचन्द्रसूरि ने जयसोम तथा रत्ननिधान को 'उपाध्याय एवं समयसुन्दर तथा गुणविनय'[१] को वाचक' पद से अलंकृत किया। इसका उल्लेख 'कर्मचन्द्र वंश प्रबंध'[११] और चौपाई'[१२] में इस प्रकार पाया जाता है—

> तेषु च गणि जयसोमा रत्ननिधानाश्च पाठका विहिता।
> गुणविनय समयसुंदर गणि कृतौ वाचनाचार्यौ॥ ६२॥
> वाचक पद गुणविनय नइ समयसुंदर नइ दीधउ रे।
> पुण्यप्रधान श्री नइ करइ वाचि रसायण पीधउ रे॥

ग्रन्थ-रचना और विहार—स० १६५१ में गच्छाधिप (नाल)-मंडन श्री जिनकुशलसूरि के दर्शन कर उनका भक्तिगर्भित अष्टक द्रुतविलंबित छन्द में बनाया और इसी वर्ष 'स्तम्भन पार्श्वनाथ-स्तव' की

---

१ —द्रष्ट नैमिदूत काव्यवृत्ति की प्रस्तावना।

११—इसका मूल ओझाजी ने हिन्दी अनुवाद सहित आर्टपेपर पर छप वाया था पर वह प्रकाशित न हो सका। मुनि जिनविजय ने इसे वृत्ति के साथ छपवाया है।

१२—जैन राससंग्रह भाग ३ तथा ऐतिहासिक जैन गुर्जर काव्य-संचय में प्रकाशित।

संवत् १६६१ में चैत्र कृष्ण ५ को भगवान् पार्श्वनाथ का स्तवन बनाया। १६६२ में सांगानेर आए और दान-शील-तप-भावना संवाद[13] की रचना की। इस ग्रन्थ में धर्म के इन चार प्रकारों से होनेवाले लाभों और दृष्टांतों का संवाद रूप में वर्णन करते हुए अन्त में भगवान् महावीर के मुख से चारों का समझौता कराया गया है। यह रचना सुन्दर और कवित्वपूर्ण है।

सं० १६६२ में घंघाणी तीर्थ में बहुत सी प्राचीन प्रतिमाएँ प्रकट हुईं जिनका माघ मास में दर्शन कर इन्होंने एक ऐतिहासिक स्तवन[14] बनाया। इसका सार नीचे दिया जाता है—

'सं० १६६२ ज्येष्ठ शुक्ल ११ को दूधेला तालाब के पास खोखर के पीछे भूमि की खुदाई करते समय भूमिगृह निकला। जिसमें जैन

१३—जैन-स्तवन आदि के कई संग्रहात्मक ग्रंथों में यह प्रकाशित हो चुका है। ऐसी संवाद-संज्ञक अन्य रचनाओं के विषय में लेखक का 'जैन-सत्य प्रकाश' वर्ष १२ अंक १ में प्रकाशित लेख द्रष्टव्य है।

१४—यह स्तवन घंघाणी तीर्थ-समिति की ओर से मुनि ज्ञानसुन्दरजी के प्राचीन जैन इतिहास में प्रकाशित हुआ था। घंघाणी जोधपुर रियासत में प्राचीन स्थान है। किसी समय यह बड़ा समृद्धिशाली नगर रहा होगा, जिसके भग्नावशेष आज तक भी यहाँ विद्यमान हैं। समयसुन्दरजी द्वारा उल्लिखित प्रतिमाएँ अब प्राप्य नहीं हैं किन्तु दसवीं शती की एक विशाल धातु-मूर्ति अब भी उल्लेखनीय है। कुछ वर्ष पूर्व इस स्थान की खुदाई में पंद्रहवीं शती की एक जैन प्रतिमा निकली थी जो जैन उपाश्रय में रखी हुई है। अन्वेषण करने पर यहाँ प्राचीन शिलालेख आदि प्राप्त होने की संभावना है।

और शिव की ६५ प्रतिमाएँ प्राप्त हुईं। इनमे मूलनायक पद्मप्रभु, पार्श्वनाथ, चौवीसटा, चौमुखजी, २३ अन्य पार्श्वनाथजी की प्रतिमाएँ जिनमें दो कायोत्सर्ग मुद्रा की थीं, एवं १६ अन्य तीर्थंकरों की—कुल ४६ जन तीर्थंकर प्रतिमाएँ थीं। इनके अतिरिक्त इंद्र, ब्रह्मा, ईश्वर, चक्रेश्वरी, अंबिका, कालिका, अर्धनारीश्वर, विनायक, योगिनी, शासन-देवता और प्रतिमाओ बनवानेवाले चंद्रगुप्त, संप्रति, बिन्दुसार, अशोकचन्द्र तथा कुणाल, इन पांच नृपतियों की प्रतिमाएँ एवं कंसाल जोडी, धूपदान, घण्ट, शंख, भृंगार, उस समय के मोटे त्रिसटिए आदि प्राचीन वस्तुएँ निकलीं। इनमे पद्मप्रभु की सपरिकर सुन्दर मूर्ति महाराज संप्रति की बनवाई हुई और आर्य सुहस्तिसूरि द्वारा प्रतिष्ठित थी। दूसरी, अर्जुन पार्श्वनाथ की, प्रतिमा श्वेत सोने (प्लाटिनम) की थी, जिसे वीर सं० १७० मे सम्राट् चंद्रगुप्त ने बनवाकर चौदह पूर्वधर श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु से प्रतिष्ठित कराया था।'

स० १६६३ का चातुर्मास्य बीकानेर मे हुआ। यहाँ कार्तिक शुक्ल १० को 'रूपकमाला' नामक भाषा-काव्य पर संस्कृत मे चूर्णि बनाई, जिसका संशोधन श्रीजिनचन्द्रसूरि के शिष्य श्री रत्ननिधान ने किया। इनके द्वारा चाटसु में चैत्र पूर्णिमा १६६४ की लिखी इस चूर्णि की प्रति पूना के भण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट में हैं। सं० १६६४ में ये आगरा आए और 'च्यार प्रत्येकबुद्ध चौपाई'[१५] की रचना की। इनका रचा आगरा के श्री विमलनाथ का स्तवन भी उपलब्ध है।

१५—यह पहले भीमसी माणक की ओर से प्रकाशित हुई थी, फिर 'आनंद काव्य-महोदधि' के सातवें मौक्तिक में श्री देसाई के लेख के साथ प्रकाशित हुई है।

सं० १६६५, चैत्र शुक्ल १० को अमरसर[११] में इन्होंने 'चातुर्मासिक व्याख्यान पद्धति', नामक ग्रन्थ बनाया। वहाँ के भी शीतलनाथ स्वामी का स्तवन भी उपलब्ध है। १६६६ में ये वीरमपुर आए और वहाँ 'श्री कालिकाचार्य कथा' की रचना की।

सं० १६६७ में इन्होंने सिंध प्रान्त में विहार किया और मार्ग शीर्ष शुक्ल १० गुरुवार को मरोट में जेसलमेरी संघ के लिये 'पौषध विधि स्तवन' बनाया। इसी वर्ष ये उच्चनगर आए और अपने शिष्य महिमसमुद्र के आग्रह से 'श्रावकाराधना' बनाई। १६६८ में मुलतान आए और वहाँ प्रातःकाल के व्याख्यान में 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' बाँचा। इस ग्रन्थ की उक्त प्रति बीकानेर के राज्य-पुस्तकालय में है। यहीं 'सती मृगावती रास' भी रचा। इस समय सिंधी भाषा पर इनका अच्छा अधिकार हो गया था। मृगावती रास की एक ढाल और दो स्तवन इन्होंने सिंधी भाषा में बनाए। चैत्र कृष्ण १० को मुलतान में इनकी लिखाई हुई 'निरयावली सूत्र' की प्रति हमने यति चुन्नीलाल के संग्रह में देखी थी। माघ शुक्ल ६ का यहीं जैसलमेरी और सिंधी श्रावकों के लिये 'कर्मछत्तीसी' बनाई। सं १६६९ में ये सिद्धपुर (सीतपुर) आए और मखनूम मुहम्मद शेख काजी को उपदेश देकर सिंध प्रान्त में गोजाति की रक्षा करवाई और पंचनदी के जलचर जीवों की हिंसा बंद कराई। अन्य जीवों के लिये भी इन्होंने अमारि पटह बजवाकर पुण्यार्जन के साथ-साथ विमल कीर्ति प्राप्त की।

११—यह स्थान शेखावाटी में है। द्रष्ट 'जैन-सत्य-प्रकाश' वर्ष ८, अंक १ इस विषय पर हमारा लेख।

शीतपुर माहें जिण समझावियउ, मखनूम महमद सेखो जी।
जीवदया पड़ह फेरावियो, राखी चिहुँ खड रेखो जी ॥ ३ ॥
(देवीदास, समयसुदर गीत)

सिंधु विहारे लाभ लियो घणो रे, रजी मखनूम सेख।
पांचे नदिया जीवदया भरी रे, वलि धेनु विशेष ॥ ५ ॥
(वादी हर्षनदन, समयसुदर गीत)

सिंध प्रांत में ये लगभग दो-ढाई वर्ष विचरे थे। इनकी विशिष्ट कृति 'समाचारी शतक'[१७] का प्रारम्भ सिद्धपुर मे होकर कुछ भाग मुलतान में रचा गया। सिंध[१८] में ही विहार के समय एक बार ये नौका में बैठकर उच्चनगर जा रहे थे। अँधेरी रात में अकस्मात् भयानक तूफान और वर्षा के कारण नदी के वेग से नौका खतरे मे पड गई। उस समय इनकी भक्ति से आकर्षित हो दादागुरु श्री जिनकुशलसूरि ने तत्काल देरावर से आकर उस संकट मे इनकी सहायता की। उस घटना का वर्णन इन्होंने 'आयो आयो री समरंता दादो जी आयो' इत्यादि पद मे स्वयं किया है। श्री जिनकुशलसूरि मे इनकी अटूट श्रद्धा थी[१९] और उनका स्मरण इन्होंने 'रास चौपाई' आदि कृतियों मे बड़ी भक्ति के साथ किया है।

सिंध प्रात से ये मारवाड आए। उसी समय बिलाडा मे श्री जिनचन्द्रसूरि का स्वर्गवास हो गया। दूर होने के कारण ये अपने

१७—'श्री जिनदत्तसूरि पुस्तकोद्धार फंड', सूरत से प्रकाशित।

१८—द्रष्ट० 'वर्णी अभिनंदन ग्रथ' में 'सिंध प्रांत तथा खरतरगच्छ' शीर्षक लेख।

१९—द्रष्ट० हमारी 'दादा श्री जिनकुशलसूरि' पुस्तक।

सं० १६६६, चैत्र शुक्ल १० को अमरसर[११] में इन्होंने 'चातुर्मासिक व्याख्यान पद्धति' नामक ग्रन्थ बनाया। यहाँ के श्री शीतलनाथ स्वामी का स्तवन भी उपलब्ध है। १६६६ में ये वीरमपुर आए और वहाँ 'श्री कालिकाचार्य कथा' की रचना की।

सं० १६६७ में इन्होंने सिंध प्रान्त में विहार किया और मार्ग शीर्ष शुक्ल १० गुरुवार को मरोट में जेसलमेरी संघ के लिये 'पौषध विधि स्तवन' बनाया। इसी वर्ष ये लवनगर आए और अपने शिष्य महिमसमुद्र के आग्रह से 'श्रावकाराधना' बनाई। १६६८ में मुलतान आए और वहाँ प्रातःकाल के व्याख्यान में 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' बाँचा। इस ग्रन्थ की एक प्रति बीकानेर के राज्य-पुस्तकालय में है। यहीं 'सती मृगावती रास' भी रचा। इस समय सिंधी भाषा पर इनका अच्छा अधिकार हो गया था। मृगावती रास की एक ढाल और दो स्तवन इन्होंने सिंधी भाषा में बनाए। चैत्र कृष्ण १० को मुलतान में इनकी लिखाई हुई 'निरयावली सूत्र' की प्रति हमने यति चुन्नीलाल के संग्रह में देखी थी। माघ शुक्ल ६ का यहीं जेसलमेरी और सिंधी श्रावकों के लिये 'कर्मछत्तीसी' बनाई। सं १६६९ में ये सिद्धपुर (सीतपुर) आए और मखनूम मुहम्मद शेख काजी को उपदेश देकर सिंध प्रान्त में गोजाति की रक्षा करवाई और पंचनदी के जलचर जीवों की हिंसा बंद कराई। अन्य जीवों के लिये भी इन्होंने अमारि पटह बजवाकर पुण्यार्जन के साथ-साथ विमल कीर्ति प्राप्त की।

११—यह स्थान शेखावाटी में है। द्रष्टव्य 'जैन-सत्य-प्रकाश', वर्ष ८, अंक इस विषय पर हमारा लेख।

शीतपुर माहें जिण समझावियउ, मखनूम महमद शेख जी।
जीवदया पडह फेरावियो, राखी चिहुँ खंड रेख जी॥ ६॥

(देवीदास, समयसुन्दर गीत)

सिंधु विहारे लाभ लियो घणो रे, रंजी मखनूम नूर।
पाचे नदिया जीवदया भरी रे, प्रगटि पुन्य विशाल॥ ५॥

(वादी हर्षनंदन, समयसुन्दर गीत)

सिंध प्रात में ये लगभग दो-ढाई वर्ष विचरे थे। इनकी विशिष्ट कृति 'समाचारी शतक'[१७] का प्रारम्भ सिद्धपुर में होकर कुछ भाग मुलतान में रचा गया। सिंध[१८] में ही विहार के समय एक बार ये नौका में बैठकर उच्चनगर जा रहे थे। अँधेरी रात में अकस्मात भयानक तूफान और वर्षा के कारण नदी के वेग से नौका खतरे में पड गई। उस समय इनकी भक्ति से आकर्षित हो दादागुरु श्री जिनकुशलसूरि ने तत्काल देवलोक से आकर उस सकट मे इनकी सहायता की। उस घटना का वर्णन इन्होंने 'आयो आयो री समरंता दादो जी आयो' इत्यादि पद में स्वयं किया है। श्री जिनकुशलसूरि में इनकी अटूट श्रद्धा थी[१९] और उनका स्मरण इन्होंने 'रास चौपाई' आदि कृतियों मे बडी भक्ति के साथ किया है।

सिंध प्रात से ये मारवाड आए। इसी समय बिलाडा मे श्री जिनचन्द्रसूरि का स्वर्गवास हो गया। दूर होने के कारण ये अपने

१७—'श्री जिनदत्तसूरि पुस्तकोद्धार फंड', सूरत से प्रकाशित।

१८—द्रष्ट० 'वर्णी अभिनंदन ग्रथ' में 'सिंध प्रांत तथा खरतरगच्छ' शीर्षक लेख।

१९—द्रष्ट० हमारी 'दादा श्री जिनकुशलसूरि' पुस्तक।

गुरुदेव के अंतिम दर्शन न कर सके, जिसका इन्हें बड़ा खेद रहा। आठिआ गीत में इन्होंने अपने गुरु-विरहको व्यक्त किया है। यथा—

> आसू मास वलि आवियो पूनम थी, आयौ दीवाली पर्व।
> काती चौमासो आवियउ पूनम थी आया अवसर सर्व॥
> तुम आवो हो धीरियाके का नंदन, तुम बिन घड़िय न जाय।
> × × ×
> आठिओ मिलवा अति घणउ, आवउ लिंग थी एम।
> नयर ग्राम बहु निरखिया, कहो किम न दीसइ पूज्य केम॥
> × × ×
> सूधउ कहइ ते मूढ नर जीवइ जिनचंद्रसूरि।
> मन मांहइ वस तेहनउ हो, पूज्यमी कीरति पडूरि॥
> चतुर्विध संघ विचारस्यइ, ना जीवस्यइ ते धीन।
> जीवावौं किम जीवरइ हो जिमता थप तप नीम॥

सं० १६७१ का चातुर्मास्य इन्होंने बीकानेर में किया और यहीं 'अनुयोग द्वार' एवं 'प्रश्नव्याकरण' की प्रतियाँ अपने प्रशिष्य जयकीर्ति को पठनार्थ अर्पित की जिनके पुष्पिका-लेखों में इसका उल्लेख है। मेड़ता (जोधपुर) में श्री जिनसिंहसूरि ने इन्हें 'उपाध्याय पद' से अलंकृत किया था, जिसका उल्लेख राजसोम गणि ने अपने गुरुगीत में किया है—"श्री जिनसिंहसूरिंद सहर मेड़ता हो पाठक पद दीयउ"। इसमें संवत का उल्लेख नहीं है परन्तु 'अनुयोगद्वार' (१६७१) की पुष्पिका में 'वाचक' और 'सुपरिमंडल वृत्ति' (१६७२) की पुष्पिका में 'उपाध्याय' पद उल्लिखित होने से इसी बीच इनका

'उपाध्याय' पद पाना निश्चित है। पद्ममंदिर कृत 'ऋषिमंडल वृत्ति' इन्हें १६७२ मे बीकानेर-निवासिनी श्राविका रेखा ने समर्पित की थी। इसकी प्रति जयपुर के पंचायती भंडार मे है।

बीकानेर से ये मेडता आए। यहाँ सं० १६७२ मे 'समाचारी शतक' तथा 'विशेष शतक'[२०] ग्रंथों की रचना समाप्त हुई। 'प्रियमेलक चउपई'[२१] तथा सम्भवत. 'पुण्यसार चौपई' की रचना भी यहीं इसी वर्ष हुई। सं० १६७२ का चातुर्मास्य इन्होंने मेडता मे ही किया और कार्तिक शुक्ल ५ को यहाँ के ज्ञानभण्डार को 'जम्बू-स्वामी चरित्र' प्रदान किया, जिसकी प्रति आजकल बीकानेर के श्री क्षमाकल्याण ज्ञानभंडार मे। यहाँ सं० १६७३ मे वा० हर्षनन्दन के साहाय्य से 'गाथालक्षण' ग्रन्थ लिखा, जिसकी प्रतिलिपि हंसविजयजी फ्री लाय-ब्रेरी, वडोदा मे है। इसी वर्ष यहाँ वसन्त ऋतु मे 'नल-दमयन्ती चउ-पई' भी वनाई। स० १६७४ मे यहीं 'विचार-शतक' भी वनाया। इस प्रकार मेडता के चार चौमासों मे ये निरन्तर साहित्य-निर्माण करते रहे।

सं० १६७५ मे इन्होंने जालोर मे दादा श्रीजिनकुशलसूरि की चरण-पादुकाओं की प्रतिष्ठा करवाई, जिसका उल्लेख पादुकाओं के अभि-लेख मे है। १६७६ में राणकपुर तीर्थ की यात्रा की और १६७७ में पुन॰ मेडता आए। इस वर्ष चातुर्मास्य अपनी जन्मभूमि साँचोर मे किया। यहीं 'सीताराम चौपाई' की ढाल बनाई और 'निरयावली

२०—इस ग्रथ में १०० सैद्धातिक प्रश्नों के उत्तर हैं। यह प्रकाशित है।

२१—इसकी कई सचित्र प्रतियाँ भी मिलती हैं।

सूत्र' का बीजक लिखा जो बाड़मेर के यति श्री नेमिचन्द्र के पास है। १५७८ में आबू तीर्थ की यात्रा की। १५७९ में पाटण गए, किन्तु वहाँ मुगलों का उपद्रव होने से पालनपुर आए और वहीं चातुर्मास किया। इनका सहजविमल के पठनार्थ सं० १५७९ भाद्रपद कृष्ण ११ का लिखा 'पट्टावली पत्र' हमारे संग्रह (बीकानेर) में है।

१५८१ का चातुर्मास जैसलमेर में हुआ और वहाँ इन्होंने 'पल्लव चौरी चउपई' रची और 'मौनेकादशी स्तवन'[२२] आदि जिन-स्तवन[२३] बनाए। इसी वर्ष कार्तिक शुक्ल १५ को लौद्रवा की यात्रा की और संघपति थाहरूशाह[२४] द्वारा निकाले गए शत्रुंजय संघ में सम्मिलित हुए। सं० १५८२ में नागोर आए और 'शत्रुंजय रास'[२५] बनाया तथा तिवरी में 'वस्तुपाल-तेजपाल रास'[२६] रचा। १५८३ में जैसलमेर में 'षडावश्यक बालावबोध' बनाया। इसी वर्ष में इनके रचे हुए दो अष्टक 'बीकानेर आदिनाथ स्तवन और 'श्रावक व्रत कुलक' उपलब्ध हैं।

१५८४ का चातुर्मास लूणकरणसर में किया और 'दुरियर वृत्ति'[२७] की रचना की। वहाँ के संघ में पाँच वर्षों से मनोमालिन्य था।

२२—समयरत्नसार, समयसुन्दरकृति कुसुमांजलि आदि में प्रकाशित।

२३—जैन-लेख-संग्रह भाग ३

२४—इनका पुस्तक भंडार अब भी जैसलमेर में विद्यमान है। इनके सम्बन्ध में एक गीत और दो प्रशस्तियाँ प्राप्त हैं।

२५—समयरत्नसार समयसुन्दर कृ कु में आदि में प्रकाशित।

२६— जैनयुग' (मासिक, जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस बम्बई)।

इन्होंने 'सन्तोपछत्तीसी' की रचना कर संघ के समक्ष उपदेश दिया, जिससे संघ मे ऐक्य और प्रेम स्थापित हो गया। यहीं इन्होंने 'कल्पसूत्र पर 'कल्पलता'[२८] नामक टीका प्रारम्भ की तथा १६८५ मे जयकीर्ति गणि की सहायता से 'दीक्षा-प्रतिष्ठा-शुद्धि' नामक ज्योतिप ग्रन्थ रचा। उसी वर्प यहाँ 'विशेप संग्रह', 'विसंवाद शतक' और 'वारह व्रत रास' ग्रन्थ वनाए। 'यति-आराधना' तथा 'कल्पलता' की रचना इसी वर्प रिणी मे समाप्त की।

सं० १६८६ मे 'गाथासहस्त्री' नामक संग्रह-ग्रन्थ तैयार किया। १६८७ मे पाटण आए और 'जयतिहुअण वृत्ति' तथा 'भक्तामर स्तोत्र' पर 'सुवोधिका' वृत्ति वनाई। यहाँ से ये अहमदावाद आए।

१६८७ में गुजरात मे भयंकर दुष्काल पड़ा था, जिसका सजीव एवं हृदय-द्रावक वर्णन कवि ने 'विशेपशतक' की प्रशस्ति (श्लोक ७) तथा 'चंपकश्रेष्ठि चौपाई' मे संक्षेप में एवं 'सत्यासिया दुष्काल वर्णन छत्तीसी'[२९] मे विस्तार के साथ किया है। १६८८ का चातुर्मास्य इन्होंने अहमदावाद में किया और वहाँ 'नवतत्व-वृत्ति वनाई। १६८९ का चातुर्मास्य भी यहीं किया और 'स्थूलिभद्र सज्झाय' की रचना की। १६९० मे खंभात गए और वहाँ 'सवैया छत्तीसी', 'स्तंभन पार्श्व स्तवन' तथा 'खरतरगच्छ पट्टावली' की रचना की। १६९१ का चातुर्मास्य खम्भात के खारवापाडा स्थान मे किया और वहाँ 'थावच्चा चउपई', 'सैंतालीस दोष सज्झाय' तथा दशवैकालिक सूत्रवृत्ति' की रचना की।

२७-२८—'जिनदत्तसूरि पुस्तकोद्धार फंड, सूरत से प्रकाशित।
२९—'भारतीय विद्या,' वर्प १ अंक २

१६६२ में भी ये खंभात ही में रहे और वैशाख मास में अपने शिष्य मेघविजय-सहजविमल के लिये 'रघुवंश' काव्य पर अर्थलापनिका वृत्ति' बनाई। १६६३ में अहमदाबाद में सहजविमल लिखित 'सन्देह दोलावली' के पाठ पर संस्कृत पर्याय लिखे। इसी वर्ष यहीं 'विहरमान बीसी' के पदों की रचना की।

१६६४ का चातुर्मास्य जालोर में हुआ। वहाँ इनका आषाढ़ सुदी १० का लिखा 'श्री जिनचन्द्रसूरि गीत' हमारे संग्रह में है। इसी वर्ष वहाँ इन्होंने 'वृत्तरत्नाकर' छन्द-ग्रन्थ पर वृत्ति तथा 'थुल्लककुमार चउपई' की रचना की। १६६५ में 'चंपक श्रेष्ठि चउपइ' बनाई और 'समवसरण' पर 'सुखबोधिका' वृत्ति लिखी जिसका संशोधन इनके शिष्य वा० हर्षनन्दन ने किया। इसके बाद अजिमगंज ग्राम (पाल्हनपुर से पाँच कोस) आए, वहाँ 'गौतमपृच्छा चौपाई' की रचना की। यहाँ से 'मल्हारनपुर' आकर 'कल्याणमन्दिर वृत्ति' लिखी।

शेष जीवन—वृद्धावस्था एवं तज्जन्य अशक्ति के कारण विहार करते रहना संभव न था, अतः १६६६ में ये अहमदाबाद गए और वहीं शेष जीवन व्यतीत किया, पर साहित्य-रचना पूर्ववत् करते रहे। सं० १६६६ में इन्होंने 'दंडकवृत्ति' और व्यवहार-शुद्धि पर 'धनदत्त चौपई' की रचना की। पैंतालीस आगमों में जिन जिन साधुओं के नाम पाए जाते हैं उनकी वंदना के रूप में १६६७ में साधु-वंदना' बनाई और इसी समय ऐरवत क्षेत्र के चौबीस तीर्थंकरों के स्तवन रचे। इसी संवत् में फा० सु० ११ को वहीं संखवाल नाथा भार्या धन्नाई ने परिमाण व्रत ग्रहण किये।

इस टिप्पनक की प्रति कविवर के स्वय लिखित प्राप्त है जिसकी प्रशस्ति :—सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ११ गुरुवारे श्री अहमदावाद नगरे श्री खरतरगच्छे भट्टारक श्रीजिनसागरसूरि विजयराज्ये संखवाल गोत्रे स० नाथा भार्या सुश्राविका पुण्यप्रभाविका श्रा० धन्नादे सा० करमसी माता महोपाध्याय श्री समयसुन्दर पार्श्वे इच्छापरिमाण कीधा छै। श्रीरस्तु। कल्याणमस्तु ॥

कविवर बड़े गुणानुरागी थे। अपने से अवस्था, ज्ञान, पद आदि में छोटे तथा भिन्न-गच्छीय पुंजाऋृषि की उत्कट तपश्चर्या की प्रशंसा में उन्होने १६६८ मे 'पुजा ऋृषि रास' बनाया। इसी वर्ष 'आलोयणा छत्तीसी' भी बनाई। इनके रचे 'केशी-प्रदेशी-प्रवन्ध' की सं० १६६६ चैत्र शुक्ल २ की हर्षकुशल की सहायता से लिखी प्रति हमारे संग्रह में है। आषाढ कृष्ण १, सं० १७०० की इनकी लिखी 'तीर्थभास छत्तीसी' की प्रति बम्बई-स्थित रायल एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में है। १७०० के माघ मे लिखी इनकी अन्तिम रचना 'द्रोपदी' चौपाई' उपलब्ध है। इसमें अपनी पूर्व रचनाओं का निर्देश करते हुए इन्होंने वृद्धावस्था मे इसकी रचना का हेतु सूत्र, सती और साधु के प्रति अपना अनन्य भक्तिराग बतलाया है—

पहिलु साधु सती तणा, कीधा घणा प्रवन्ध।
हिव वलि सूत्र थकी कहुँ, द्रोपदी नउ सम्बन्ध ॥

× × ×

वृद्धपणइ मइ चउपइ, करिवा माडी एह।
सूत्र सती नइ साधु स्युँ, मुझ मनि अधिक सनेह ॥

अन्त में लिखा है—

> द्रौपदी नी ए अधिकार मैं, हुलसपणइ पणि कीधी रे।
> शिष्य तणइ आग्रह करी, मइ काम ऊपरि मति दीधी रे॥
> एक सती वलि साधवी, ए वात बेऊ पणु मोटी रे।
> द्रुपदी नाम लेता थकां, तिण कर्म नी तूटइ कोटी रे॥

इस चौपाई के लेखन और संशोधन में इनकी वृद्धावस्था के कारण हर्षनन्दन और हर्षकुशल से सहायता मिली थी, इसका इन्होंने स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है—

> वाचक हर्षनन्दन वलि, हर्षकुशलइ सानिध कीधी रे।
> लिखन शोधन साहाय्य थकी, तिण दुरव पूरी करि दीधी रे॥

अपने शिष्य-प्रशिष्यों के प्रोत्साहन के लिये तथा कृतज्ञता ज्ञापन की अपनी सहज वृत्ति के कारण उनसे थोड़ा भी सहयोग किसी कार्य में प्राप्त करने पर इन्होंने उसका निस्संकोच उल्लेख कई अवसरों पर किया है। पर ये बड़े स्पष्टवक्ता भी थे। दुष्काल के समय जिन शिष्यों ने इनकी सेवा की थी उनकी इन्होंने प्रशंसा की है परन्तु उसके पश्चात् शिष्यों के यथाविध सेवा-शुश्रूषा न करने का इन्हें मार्मिक दुःख था। इस विषय में अपने स्पष्ट उद्गार इन्होंने 'दुःखित-गुरु वचनम्' के श्लोकों में प्रकट किए हैं।

मृत्यु—'द्रौपदी चौपाई' के बाद की इनकी कोई रचना उपलब्ध नहीं है। इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य-साधना एवं धर्म-प्रचार में बिताया। सं० १७०२ में चैत्र शुक्ल १३ (भगवान् महावीर के जन्म दिन) के दिन ये अहमदाबाद में अनशन-आराधनापूर्वक स्वर्गवासी हुए जिसका उल्लेख राजसोम कृत गीत में है—

अणमण करि अणगार, संवत सतरें सय वीड़ोत्तरे ।
अहमदावाद मझार, परलोक पहुँता हो चैत सुदि तेरसै ॥

अहमदावाद मे इनके स्वर्गवास के स्थान तथा पादुकाओ का अभी तक पता नहीं चला, पर बीकानेर के निकटवर्ती नाल एव जैसलमेर मे दो पादुकाओं के दर्शन हमने किए हैं।

शिष्य-परम्परा—एक प्राचीन पत्र के अनुसार इनके शिष्यो की संख्या बयालीस थी, जिनमे वादी हर्पनन्दन प्रधान थे। न्यायशास्त्र के 'चितामणि' ग्रंथ तक के अध्येता के रूप मे इनका उल्लेख कवि ने स्वयं किया है। इनके रचे तीन विशाल टीका-ग्रंथ (ऋपिमंडल वृत्ति, उत्तराध्ययन वृत्ति, स्थानाग गाथागत वृत्ति) तथा कई अन्य ग्रन्थ हैं। हर्पनन्दन के शिष्य जयकीर्ति द्वारा विरचित सुप्रसिद्ध राजस्थानी भक्तिकाव्य 'कृष्ण रुक्मिणी वेलि वालाववोध' उपलब्ध है। जयकीर्ति के शिष्य राजसोम की भी 'पारसी-भापा-स्तवन' तथा गुरुगीतादि रचनाएँ मिलती है। हर्पनन्दन के दयाविजय नामक शिष्य थे, जिनके लिये 'ऋपिमण्डल वृत्ति' की रचना हुई और जिन्होंने 'उत्तराध्ययन वृत्ति' का प्रथमादर्श लिखा।

समयसुदरजी के मेघविजय नामक एक विद्वान् शिष्य थे, जिनके शिष्य हर्पकुशल की 'वीसी' आदि कृतियाँ मिलती हैं। इनके शिष्य हर्पनिधान के शिष्य ज्ञानतिलक के शिष्य विनयचन्द्र अठारहवीं शती के प्रमुख कवि थे, जिनकी 'उत्तमकुमार चौपई', 'चौवीसी' आदि सभी रचनाएँ विनयचन्द्र कृति कुसुमाजलि मे प्रकाशित हैं।

कवि के अपर शिष्य मेघकीर्ति की परम्परा मे आसकरण के

शिष्य आलमचन्द की भी कृतियाँ मिलती हैं। आसकरण की परम्परा में कस्तूरचन्द गणि की रची 'ज्ञातासूत्र वृत्ति' उपलब्ध है।

कवि के अन्य शिष्यों में सहजविमल महिमासमुद्र सुमतिकीर्ति माईदास आदि का उल्लेख प्रशस्तियों में पाया जाता है। आलम चन्द की परम्परा में यति मुन्नीलाल कुछ वर्ष पूर्व बीकानेर में विद्य मान थे। हैदराबाद राज्य के सेवली स्थान में रामपाल नामक यति समयसुन्दरजी की परम्परा में अब भी विद्यमान हैं। इनका शिष्य परिवार खूब विस्तृत होकर फूला-फला। उसमें सैकड़ों साधु यति हो गए, जिनमें कई अच्छे गुणी व्यक्ति थे। भारत के सभी प्राचीन जैन ज्ञान-भण्डारों में इनकी कृतियाँ पाई जाती हैं और जहाँ भी इनकी शिष्य-सतति रही हो वहाँ अनुसंधान करने पर भी नवीन कृतियाँ उपलब्ध होने की सभावना है।

साहित्य—उपयुक्त चर्चा के अन्तर्गत कवि की रचनाकाल उल्लिखित प्रमुख रचनाओं का यथास्थान निर्देश किया गया है। इन्होंने साठ वर्ष निरन्तर साहित्य-साधना करते हुए भारतीय वाङ्मय को समृद्ध बनाया। स्तवन गीत आदि इनकी लघु कृतियाँ सैकड़ों की संख्या में हैं जो जहाँ कहीं भी खोज की जाय मिलती ही रहती हैं। इसी से लोकोक्ति है कि समयसुन्दर रा गीतड़ा कुंभे राणे रा भीतड़ा, (अथवा भीतों का चीतड़ा) अर्थात् कविवर की रचनाएँ अपरिमित हैं। इनकी समस्त ज्ञात रचनाओं की सूची यहाँ एकत्र दी जाती है पुस्तक के आगे जहाँ ज्ञात है उसकी रचना का विक्रमीय संवत् और रचना-स्थान तथा वर्त्तमान प्राप्ति-स्थान दे दिया गया है—

संस्कृत

मौलिक

१—भावशतक, सं० १६४१, प्रेस-कापी नाहटा-संग्रह, बीकानेर में वर्तमान।

२—अष्टलक्षी, १६४६, लाहोर, दे० ला० पु० फंड, सूरत से प्रकाशित।

३—चातुर्मासिक व्याख्यान, १६६५, अमरसर, प्रकाशित।

४—कालिकाचार्य कथा, १६६६, वीरमपुर, श्री जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार, सूरत से प्रकाशित।

५—श्रावकाराधना, १६६७, उच्चनगर, कोटा से प्रकाशित।

६—समाचारी शतक, १६६६—७२, सिद्धपुर-मेडता, जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार से प्रकाशित।

७—विशेष शतक, १६७२, मेड़ता, जिनदत्तसूरि प्रा० पु० फंड से प्रकाशित।

८—विचार शतक १६७४, मेड़ता, बड़ा ज्ञानभण्डार, बीकानेर में।

९—यति आराधना, १६८५, हमारे संग्रह में।

१०—विशेष संग्रह, १६८५, हमारे संग्रह में।

११—दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि, १६८५ लूणकरणसर, प्रेस-कापी हमारे संग्रह में।

१२—विसंवाद शतक, १६८५, हमारे संग्रह में।

१३—खरतरगच्छ पट्टावली, १६९०, खंभात, प्रेस-कापी हमारे संग्रह में।

१४—कथाकोश, (अपूर्ण दे० ला० पु० फंड सूरत प्रेस-कापी) पूर्ण प्रति जिनऋद्धिसूरि संग्रह, स्वयं लिखित अपूर्ण प्रति विनयसागरजी सं०।

१५—सारस्वत रहस्य, प्रेस-कापी हमारे संग्रह में।

१६—प्रश्नोत्तर २८७, अप्राप्य (सूची का अन्तिम पत्र ही प्राप्त)।

१७—प्रश्नोत्तर-सार-संग्रह, हंसविजय लाइब्रेरी, वडोदा।

१८—अनुपम भक्तामर प्र समयसुन्दर कृति कुसुमांजली।

१९—वीर २७ भव ,

२ —संसारदाव ,, ,

२१—श्री जिनसिंहसूरि पदोत्सव (रघुवंश तृतीय सर्ग पादपूर्ति), प्रेस-कापी हमारे संग्रह में।

२२—द्रोपदी-संहरण।

२३—कल्याणकुलपर्भितस्तव स्वोपज्ञ वृत्ति आत्मानंद सभा भावनगर से प्रकाशित।

२४—२४ जिन-गुरु नामगर्भित स्तोत्र स्वोपज्ञ वृत्ति प्र स कु कु ।

२५—स्तोत्र संग्रह।

संग्रह ग्रन्थ

१—गाथासहस्री सं १६८६; जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार, सूरत से प्रकाशित।

टीकायें

१—रूपकमाला वृत्ति, सं १६६३ बीकानेर; प्रेस कापी हमारे संग्रह।

२—चुरिवर स्तोत्र वृत्ति १६८४ लूणकरणसर; जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार से प्र

३—कल्पसूत्र वृत्ति, (कल्पलता), १६८४—८५ रिणी

४—नवतिद्वमन वृत्ति १६८७ पाटण;

५—भक्तामर सुबोधिनी वृत्ति, १६८७ हमारे संग्रह में।

६—नवतत्त्व शब्दार्थ वृत्ति १६८८ अहमदाबाद; हमारे संग्रह में।

७—दशवैकालिक वृत्ति १६९१ खंभात।

८—रघुवंश वृत्ति, १६९२ खंभात बड़ा ज्ञानभंडार।

९—संदेह दोलावली पर्याय १६९३।

१ —वृत्तरत्नाकर वृत्ति, १६९४ जालोर; हमारे संग्रह।

११—सप्तस्मरण वृत्ति, १६६५, जिनदत्तसूरि पु० फंड से प्रकाशित ।

१२—कल्याणमंदिर वृत्ति, १६६५, प्रल्हादनपुर, „ „

१३—दंडक वृत्ति, १६६६, अहमदावाद, हमारे संग्रह में ।

१४—वाग्भट्टालंकार वृत्ति (अपूर्ण बीकानेर ज्ञानभंडार) पूर्ण प्रति एसियाटिक सो० बम्बई, सं० १६६२ अहमदावाद, हरिराम के लिये रचित ।

१५—विमलस्तुति वृत्ति, प्रेसकापी हमारे संग्रह में ।

१६—चत्तारि परमंगाणि व्याख्या, हमारे संग्रह में ।

१७—मेघदूत प्रथम श्लोक (तीन अर्थ), हमारे संग्रह में ।

१८—माघ-काव्य वृत्ति, तृतीय सर्ग की प्रति सुराणा पुस्तकालय, चूरू में ।

१६—लिंगानुशासन चूर्णि । अनिट् कारिका ।

२०—ऋषिमंडल टिप्पण सं० १६६२, आश्विन संग्रामपुर में लिखित ।

२१—वेरथय वृत्ति, विवेचन स० १६८४ अक्षयतृतीया विक्रमपुरे पत्र २ स्वय लि० ।

२२—मेघदूत वृत्ति ।

२३—कुमारसम्भव वृत्ति ।

बालावबोध

१—षडावश्यक बालावबोध, १६८३, जैसलमेर, बालोतरा भंडार, आचार्य-शाखा भंडार, तथा हमारे संग्रह में ।

२—दीवालीकल्प बालावबोध स० १६८२ सूरत पत्र १६ ।

भाषा कृतियाँ (रास, चौपाई आदि)

१—चौबीसी, १६५८ अहमदावाद, पूजा संग्रह, स० कु० कु० में प्रकाशित ।

२—शांब प्रद्युम्न चोपई, १६५६, खंभात, हमारे संग्रह ।

३—दानादि चौढालिया, १६६२, सांगानेर, स० कु० कु० में प्रकाशित ।

४—चार प्रत्येकबुद्ध रास १६६४—६५ आगरा; आनन्द-काव्य महोदधि में प्रकाशित।

५—मृगावती रास, १६६८, मुलतान; हमारे संग्रह में।

६—सिंहलसुत प्रियमेलक रास १६७२ हमारे संग्रह। प्र समयसुंदर रास पंचक।

७—पुण्यसार रास १६७२ हमारे संग्रह में।

८—नल-दमयन्ती चौपाई, १६७३ मेड़ता; हमारे संग्रह में।

९—सीताराम चौपाई १६७७ साँचोर आदि प्रस्तुत ग्रन्थ में प्र।

१०—वल्कलचीरी रास १६८१ जैसलमेर समयसुंदर रासपंचक में प्र।

११—शत्रुंजय रास १६८२; नागोर प्रकाशित। समय कृ कु

१२—वस्तुपाल-तेजपाल रास १६८२ तिमरीपुर; जैन-युग में प्रकाशित। ,,

१३—थावच्चा चौपाई, १६९१ खंभात हमारा संग्रह।

१४—विहरमान बीसी स्तवन १६९३ अहमदाबाद प्र समय कृ कु

१५—क्षुल्लककुमार रास १६९४ जालोर ,,

१६—चंपकश्रेष्ठि चौपाई १६९५, जालोर; प्र समय रास पंचक।

१७—गौतमपृच्छा चौपाई १६९५, सचिह; हमारे संग्रह में।

१८—व्यवहारशुद्धि धनदत्त चौपाई प्र समय रास पंचक।

१९—साधुवंदना १६९७ अहमदाबाद हमारे संग्रह में।

२०—ऐरवत क्षेत्र चौबीसी १६९७ अहमदाबाद। प्र स कृ कु

२१—पुंजा (रत्न) ऋषि रास १६९८, ,, ,,

२२—केशी प्रदेशी प्रबन्ध १६९८ अहमदाबाद ,

२३—द्रौपदी चौपाई १७०० अहमदाबाद हमारे संग्रह में।

छत्तीसी साहित्य

१—क्षमा छत्तीसी, नागोर, प्रकाशित। २—कर्म छत्तीसी, १६६८, मुलतान। ३—पुण्य छत्तीसी, १६६६, सिद्धपुर। ४—सन्तोष छत्तीसी, १६८४ लूणकरणसर। ५—दुष्काल वर्णन छत्तीसी, १६८८। ६—सवैया छत्तीसी, १६६०, खंभात। ७—आलोयणा छत्तीसी, १६६८ अहमदावाद। सभी स० कृ० कु० में प्रकाशित।

इनके अतिरिक्त तीर्थभास छत्तीसी, साधुगीत छत्तीसी आदि कई संग्रह है। हमने ५०० के लगभग स्तवन, गीत, पदादि संगृहीत किए हैं। जो समयसुन्दर कृति कुसुमाजली में प्रकाशित है।

कुछ विद्वानों ने कविवर की कई अन्य रचनाओं का उल्लेख किया है, पर उनमे अधिकाश संदिग्ध प्रतीत होती है। यहा उनका निर्देश किया जाता है—

१—देसाई जी—(१) पुण्याढ्य रास, (२) संवादसुन्दर, (३) गुणरत्नाकर छन्द, (४) गाथालक्षण, (५) रेवती सभाय, (६) बीकानेर आदिनाथ वीनति आदि।

२—लालचन्द भ० गाधी—(१) शील छत्तीसी, (२) बारह व्रत रास, (३) श्रीपाल रास, (४) प्रश्नोत्तर चौपाई, (५) हंसराज-बच्छराज रास, (६) जम्बूरास, (७) नेमि राजिमती रास, (८) अंतरिक्ष गौडी छन्द।

३—हीरालाल रसिकदास—जीवविचार वृत्ति।

४—पूरणचन्द नाहर . जिनदत्तर्षि कथा।

कवि की स्वलिखित प्रतियाँ

कविवर ने केवल ग्रन्थों की रचना ही नहीं की, स्व-रचित एवं अन्य-रचित अनेक ग्रन्थों की स्वयं प्रतिलिपियाँ भी कीं, जिनमें कई एक उपलब्ध हैं। कई ग्रन्थों की इनके द्वारा संशोधित प्रतियां भी मिली हैं। इनके स्वलिखित ज्ञात ग्रन्थों की सूची यहां दी जाती है—

गाहटा संग्रह में—(१) करकण्डु चौपाई (८ पत्र), १६६४, आगरा (२) फुटकर गीत (२७ पत्र) १६७६; (३) खण्डित प्रति, १६८८, (४) जिनचन्द्रसूरि रागमाला, १६६४ जालोर; (५) प्रस्ताविक सवैया छत्तीसी (४ पत्र) १६६८, पार्श्वचंद्र उपाश्रय अहमदपुर; (६) केशी प्रदेशी प्रबन्ध (४ पत्र) १६६६ अहमदाबाद; (७) रात्रिजागरण गीत (८ पत्र); (८) नेमिनाथ छत्तीसी (६ पत्र)' (६) साधु गीतानि' (१) मन्त्र समये जीव प्रतिबोध गीतम्, (११) पेरखत चोबे २४ तीर्थंकर गीतम्, (१२) कल्याण मन्दिर वृत्ति प्रारम्भ (१३) श्री जिनचन्द्रसूरि गीत १६५२ खंभात' (१४) पद्मावती पत्र १६७६, मल्हारनपुर।

अभय भाग—(१) रूपकमाला चूर्णि (भांडारकर इन्स्टीट्यूट, पूना) (२) दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि १६८५ लूणकरणसर (आचार्य शाखा भण्डार) बीकानेर। (३) गाथासाहस्री (आ शा भ)। (४) कथासंग्रह (आ शा भं)। (५) प्रश्नोत्तर पत्र (आ शा भं)। (६) महावीर २७ भव दो पत्र (जयचंदजी भंडार)। (७) सारस्वत रहस्य (महिमाभक्ति भण्डार)। (८) सीताराम चौपाई (अपूर्ण तत्कृत पुस्तकालय; मिलमणि मोहन जैन पुस्तकालय कलकत्ता विजयधर्मसूरि ज्ञानभण्डार आगरा)। (६) वाग्भटालङ्कार वृत्ति मध्य पत्र (महिमाभक्ति भण्डार)।

(१०) गुरु-दुःखित वचनम् म० भ० भ०)। (११) अष्टक, दो पत्र (म० म० भं०)। (प्रियमेलक चौ०, ५ पत्र (म० भ० भं०)। (१३) तीर्थ-भास छत्तीसी (रा० ए० सो० वम्बई)। (१) साँझी गीत (पालनपुर भण्डार)। (१५) साधुगीत छत्तीसी (फूलचन्दजी झाबक)। (१६) कुमारसम्भव वृत्ति, १६७६ (हरिसागरसूरि भण्डार, लोहावट)। (१७) गीत, पत्र १ तथा ८, स० १६६३, पाटण (यति नेमिचन्द जी, वाहडमेर)। (१८) शत्रुँजयरासादि (हालां भण्डार)। (१६) रघुवंश टीका, ६ पत्र (डूगरसी भण्डार, जेसलमेर)। (२०) अष्टोतरी दशाकरण विधि, तीन पत्र (डू० भ०) (२१) माघ काव्य वृत्ति (सुराणा पुस्तकालय, चूरू)। (२२) श्री जिन सिंह पदोत्सव काव्य, नौ पत्र (यति सुमेरमल जी, भीनासर)। (२३) प्रिय-मेलक चौपाई (आगरा ज्ञानमन्दिर)। (२४) द्रौपदी चौपाई (अनन्तनाथ भण्डार, वम्बई)। (२५) कालिकाचार्य कथा (जयचन्द भण्डार, वीका-नेर)। (२६) पार्श्वनाथ लघु स्तवन, ८ पत्र स० १७००, अहमदावाद। (२७) लिंगानुशासन चूर्णि, ६ पत्र। (२८) सारस्वत रूपाणि, ५ पत्र। (२६) सप्तनिन्हव सम्बन्ध। (३०) कथा-सग्रह (२६ – ३० आचार्य शाखा भण्डार)।

संशोधित एवं 'पर्याय' लिखित प्रतियाँ

१—दशवैकालिक पर्याय (हमारे सग्रह)। २—लिंगानुशासन पर्याय, ८ पत्र (महिमाभक्ति भण्डार)। ३—सन्देह-दोलावली पर्याय (जयचन्द जी भण्डार। ४—चतुर्मासिक व्याख्यान पद्धति (हमारे सग्रह। ५—प्रिय-मेलक चौपाई (हमारे संग्रह)।

अन्य-रचित ग्रथों की प्रतियाँ

१—दोषावहार वृत्ति (हमारे सग्रह)। २—श्रवणभूषण, १६५६ वि० (यति चुन्नीलाल जी के संग्रह में)। ३— भरटक द्वात्रिंशिका, ७ पत्र (डूगरसी भण्डार, जैसलमेर)।

महाकवि समयसुंदर का साहित्य अत्यन्त विशाल है उनके सम्बन्ध में हमने गत ३५ वर्षों में पर्याप्त शोध की है फिर भी नवीन शोध करने पर कुछ न कुछ प्राप्ति होती ही रहती है। यहाँ सीमित स्थान में उनके साहित्य का विस्तृत विवेचन देना सम्भव नहीं है। हमने समयसुन्दर कृति कुसुमांजलि का सम्पादन कर प्रकाशन किया है, जिसमें महो पाध्याय विनयसागरजी द्वारा लिखित 'महोपाध्याय समयसुन्दर' निबन्ध व उनकी अब तक प्राप्त ५६३ लघु कृतियां दे दी हैं। सादूल राजस्थान रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर से प्रकाशित समयसुन्दर रास पंचक में उनके ५ रास सार सहित दे दिये हैं, मृगावती रास के सार रूप सती मृगावती" पुस्तक लगभग ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित की थी। अब सीताराम चौपाई नामक कविवर की विशिष्ट कृति को राससार सहित प्रकाशित करते अत्यन्त हर्ष हो रहा है। पाठकों को कविवर की कृतियों का रसास्वादन करने के लिए समयसुन्दर कृति कुसु माञ्जलि ग्रंथ अवश्य अवलोकन कर अपने निज के भक्ति क्रम में सम्मिलित करना चाहिए।

प्रो फूलसिंह हिमांशु ने सीताराम चौ० का संक्षिप्त परिचय मरु-भारती वर्ष ७ अंक १ में प्रकाशित किया था जिसे यहाँ सामार प्रका शित किया जा रहा है।

मणिधारी जयन्ती — अगरचन्द नाहटा

मा सु १४ स २२ — भँवरलाल नाहटा

सीताराम चरित्र सार

पूर्वकथा प्रसंग

एक वार गणधर गौतम राजगृह नगर मे समोसरे। महाराजा श्रेणिकादि परिषद् के समक्ष उन्होंने अठारह पाप स्थानकों का परिहार करने का उपदेश देते हुए कहा कि साध्वादि को मिथ्या कलंक देने से सीता की भाँति प्रवल दु ख जाल मे पडना होता है। श्रेणिक के पूछने पर गौतम स्वामी ने सीता के पूर्वभव से लगा कर उनका सम्पूर्ण जीवन-वृत्त वतलाया जो यहाँ संक्षिप्त कहा जाता है।

वेगवती और महात्मा सुदर्शन

भरतक्षेत्र मे मृणालकुड नगर मे श्रीभूति पुरोहित की पुत्री वेगवती निवास करती थी। एक वार वहाँ सुदर्शन नामक उच्चकोटि के मुनिराज के पधारने पर सारा नगर वन्दनार्थ गया और उनके निर्मल संयम और उपदेशों की सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। मिथ्या दृष्टिवश वेगवती को साधु की प्रशंसा असह्य हुई और वह लोगों की दृष्टि मे मुनिराज को गिराने के लिए मिथ्या प्रचार करने लगी कि ये साधु पाखण्डी हैं। मैंने इन्हें स्त्री के साथ व्रत भंग करते देखा है। वेगवती के प्रचार से साधु की सर्वत्र निन्दा होने लगी। मुनिराज के कानों में जव यह प्रवाद पहुँचा तो उन्हें मिथ्या कलक और धर्म की निन्दा का बड़ा खेद हुआ। उन्होंने जव तक यह कलंक न उतरे, अन्न जल का परित्याग कर दिया। शासनदेवी के प्रभाव से वेगवती का मुह फूल गया और वह अत्यन्त दु खी होकर अपने किये का फल पाने लगी। उसके मन मे पश्चाताप हुआ और अपना दुष्कृत्य स्वीकार करने पर

उसने मुनिराज को निर्दोष घोषित कर दिया। लोगों में सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो गया। वेगवती ने धर्म श्रवण कर संयम स्वीकार किया और आयुष्यपूर्ण कर प्रथम देवलोक में उत्पन्न हुई।

वेगवती और मधु पिंगल

भरतक्षेत्र में मिथिलापुरी नामक समृद्धनगरी थी जहाँ ज्ञानी और तेजस्वी जनक राजा राज्य करते थे। उनकी भार्या वैदेही की कुक्षि में वेगवती का जीव-कन्या के रूप में व एक अन्य जीव पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए। पूर्वभव के वैरवश एक देव ने पुत्र को हरण कर लिया। श्रेणिक राजा द्वारा वैर का कारण पूछने पर गौतम स्वामी ने कहा कि चक्रपुर के राजा चक्रवर्ती और उसकी रानी मदनसुन्दरी की पुत्री अत्यन्त सुन्दरी थी। लेखशाला में अध्ययन करते हुए पुरोहित के पुत्र मधुपिंगल से उसका प्रेम हो गया। मधुपिंगल उसे विदर्भापुरी ले गया और वे दोनों वहाँ आनन्दपूर्वक रहने लगे। कुछ दिनों में मधु पिंगल विद्या विस्मृत होकर धन के बिना दुःखी हो गया। राजकुमार अहिकुण्डल ने जब सुन्दरी को देखा तो वह उसे अपने महलों में ले गया। मधुपिंगल ने जब अपनी स्त्री को नहीं देखा तो उसने राजा के पास जाकर पुकार की कि मेरी स्त्री को कोई अपहरण कर ले गया। आप उसकी शोधकर मुझे प्राप्त कराने की कृपा करें। राजकुमार के किसी पुरुष ने कहा—मैंने उसे पोलासपुर में साध्वी के पास देखा है। मधुपिंगल उसे खोजने के लिए पोलाशपुर गया और न मिलने पर फिर राजा के पास जाकर पुकार की और झगड़ा करने लगा तो राजा ने उसे पिटवा कर नगर के बाहर निकाल दिया। मधुपिंगल

विरक्त होकर साधु हो गया और तपश्चर्या के प्रभाव से मरकर स्वर्गवासी हुआ। राजकुमार अहिकुण्डल ने धर्म सुना और साधु संगति से सदाचारी जीवन विता कर वदेही की कुक्षि में पुत्र रूप मे उत्पन्न हुआ जिसे पूर्वभव का वेर स्मरणकर मधुपिंगल के जीव देव ने जन्मते ही अपहरण कर लिया। देव का विचार था कि इसे शिला पर पछाड कर मार दिया जाय पर मन मे दयाभाव आ जाने से वह ऐसा न कर सका और उसे कुण्डल हार पहना कर वैताढ्य पर्वत पर छोड दिया। चन्द्रगति नामक विद्याधर ने जव उसे देखा तो उसने तत्काल ग्रहण कर रथनेउरपुर ले जाकर अपनी भार्या अंशुमती को देकर लोगों मे प्रसिद्धि कर दी कि मेरी स्त्री गूढगर्भा थी और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ है। विद्याधर लोगों ने पुत्र जन्मोत्सव किया और उस वालक का नाम भामंडल रखा। वह कुमार वेताढ्य पर्वत पर चन्द्रगति के यहाँ वडा होने लगा।

सीता का नाम संस्करण तथा पूर्वानुराग

इधर जव रानी वैदेही ने पुत्र को न देखा तो वह मूर्छित होकर नाना विलाप करने लगी। राजा जनक ने उसे समझा बुझा कर शात किया और पुत्री का जन्मोत्सव मनाकर उसका नाम सीता रखा। राजकुमारी सीता पॉच धायों द्वारा प्रतिपालित होकर क्रमश' यौवन अवस्था मे प्रविष्ठ हुई। सीता लावण्यवती और अद्वितीय गुणवती थी। राजा जनक ने उसके लिए वर की शोध करने के हेतु मत्री को भेजा। मंत्री ने राजा से कहा कि अयोध्या नरेश दशरथ के चार पुत्र है जिनमे कौशल्यानंदन रामचंद्र अपने लघुभ्राता सुमित्रा-

नंदन लक्ष्मण और कैकयी के पुत्र भरत शत्रुघ्न युक्त परिवृत है। इनमें रामचंद्र के साथ सीता का संबंध सर्वथा योग्य है। राजा जनक ने राजपुरुषों को अयोध्या भेजकर सीता का सम्बध कर लिया। सीता ने जब यह सम्बन्ध सुना तो वह भी अत्यन्त प्रमुदित हुई।

नारद मुनि का आगमन अपमान तथा वैरशोधन की चेष्टा

एक दिन नारद मुनि सीता को देखने के लिए आये। सीता ने उनका भयानक रूप देखा तो वह दौड़कर महल में चली गई। नारद मुनि जब पीछे-पीछे गए तो दासियों ने अपमानित कर द्वारपाल द्वारा बाहर निकलवा दिया। नारद मुनि क्रुद्ध होकर सीधे वैताढ्य पर्वत पर रथनेउर नरेश के यहाँ गए और सीता का चित्र बनाकर भामंडल के आगे रखा। भामंडल ने सीता पर मुग्ध होकर उसका परिचय प्राप्त किया और उसकी प्राप्ति के लिए उदास रहने लगा। चन्द्रगति ने भामण्डल को समझा-बूझाकर आश्वस्त किया और सीता की मांग करने में कदाचित् जनक अस्वीकार हो जाय तो अपना अपमान हो जाने की आशंका से चपलगति विद्याधर को छल-बलपूर्वक राजा जनक को ही बुला लाने के लिए मिथिला भेजा।

विद्याधरों का षडयन्त्र और विवाह की शर्त

चपलगति घोड़े का रूप धर मिथिला गया। राजा जनक ने लक्षण युक्त सुन्दर अश्व देखकर अपने यहाँ रख लिया। एक महीने बाद राजा स्वयं उस पर आरूढ़ होकर वन में गया तो अश्व ने राजा जनक को आकाश मार्ग से चन्द्रगति विद्याधर के समक्ष लाकर उपस्थित कर दिया। चन्द्रगति ने भामण्डल के लिए सीता की मांग की तो जनक

ने कहा—दशरथ राजा के पुत्र रामचन्द्र को सीता दी जा चुकी है, अतः अब यह अन्यथा कैसे हो सकता है? विद्याधरों ने कहा—खेचर के सामने भूचर की क्या बिसात है? राम यदि देवाधिष्ठित धनुष चढा सकेगा तो सीता उसे मिलेगी अन्यथा विद्याधर ले जायेंगे। विद्याधर लोग सदल बल मिथिला के उद्यान मे आ पहुँचे। राजा जनक भी खिन्न हृदय से अपने महलों मे आये और रानी के समक्ष कहा कि राम यदि बीस दिन के अन्दर धनुष चढा सका तो ठीक अन्यथा सीता को विद्याधर ले जावेंगे। सीता ने कहा—आप कोई चिन्ता न करें, वर राम ही होगें। विद्याधर लोग अपनी इज्जत खो कर जायेंगे।

धनुष-भंग आयोजन तथा सीता विवाह

मिथिला नगरी के बाहर 'धनुष-मण्डप' बनवाया गया। राजा दशरथ अपने चारों पुत्रों के साथ आ पहुंचे। मेघप्रभ, हरिवाहन, चित्ररथ आदि कितने ही राजा आये थे। धाय माता ने सीता को सबका परिचय दिया। मन्त्री द्वारा धनुष चढाने का आह्वान श्रवण कर राजा लोग बगलें झांकने लगे। अतुलबली राम सिंह की तरह उठे और तत्काल धनुष चढ़ा दिया। टंकार शब्द से पृथ्वी और पर्वत कांपने लगे, शेषनाग विचलित हो गये। अप्सराएं कांपती हुई अपने भर्त्ताओं से आलिंगित हो गई। आलान स्तंभ उखड गये, मदोन्मत्त हाथी छुटकर भग गए। थोडी देर में सारे उपद्रव शान्त हो गए आकाश मे देव दुंदुभि बजी, पुष्पवृष्टि हुई सीता प्रफुल्लित होकर रामचन्द्रके निकट आ पहुँची। दूसरा धनुष लक्ष्मणने चढाया, विद्या-

घर लोगों ने प्रसन्न होकर अठारह कन्याओं का सम्बन्ध किया। राम सीता का पाणिग्रहण हुआ सब लोग अपने अपने स्थान लौटे। राजा दशरथ अपने पुत्रादि परिवार सह जनक द्वारा विपुल समृद्धि पाकर अयोध्या लौटे।

महाराजा दशरथ की विरक्ति

महाराजा दशरथ शुद्ध श्रावक धर्म पालन करते हुए काल निर्गमन करते थे। एक बार जिनालय में उन्होंने अठाई महोत्सव प्रारम्भ किया तो समस्त रानियों को उत्सव दर्शनार्थ बुलाया गया। सब को बुलाने के लिए अलग-अलग व्यक्ति भेजे गये थे। सभी रानियाँ आकर उपस्थित हो गईं। पट्टरानी के पास बुलावा नहीं आने से वह कुपित होकर आत्मघात करने लगी। दासी का कोलाहल सुनकर राजा स्वयं पहुँचा और रानी से कहा ये क्या अनर्थ कर रही हो? इतने में ही रानी को बुलाने के लिए भेजा हुआ वृद्ध पुरुष आ पहुँचा। उसके देर से पहुँचने का कारण वृद्धावस्था की अशक्ति ज्ञात कर राजा के मन में समय रहते आत्महित कर लेने की तमन्ना जगी। इसी अवसर पर उद्यान में सत्यभूतहित नामक चार ज्ञानधरी मुनिराज समोसरे। राजा सपरिवार मुनिराज को वन्दनार्थ गये। उनकी धर्मदेशना श्रवण कर राजा का हृदय वैराग्य से ओतप्रोत हो गया और वे घर आकर चारित्र ग्रहण करने के लिये उपयुक्त अवसर देखने लगे।

भामंडल की आत्म-कथा

जब भामण्डल ने सुना कि सीता का राम के साथ विवाह हो गया तो वह अपने को अधन्य मानने लगा और जिस किसी प्रकार

से सीता को प्राप्त करने का दृढ निश्चय कर सैन्य सहित रवाने हुआ। मार्ग में विदर्भा नगरी मे जब पहुचा तो उसे वहाँ के दृश्यों को देखकर ईहा पोह करते हुए जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। उसे अपनी ही सहोदरा सीता के प्रति लुब्ध होने का बड़ा पश्चाताप हुआ और वैराग्य पूर्वक ससैन्य वापस रथनेउरपुर पहुंचा। पिता चन्द्रगति ने उसे एकान्त मे लौट कर आने का कारण पूछा। भामण्डल ने कहा—हे तात! मैं पूर्व जन्म मे राजकुमार अहिमंडल था और मैंने निर्लज्जतावश ब्राह्मणी का अपहरण किया था। मैं मर कर जनक राजा का पुत्र हुआ, सीता मेरी सहोदरा है। पूर्व जन्म के वैर विशेष से देव ने मेरा अपहरण किया और प्रारब्धवश आपने मुझे अपना पुत्र किया। हाय! मुझ अज्ञानी ने अपनी भगिनी की वाञ्छा की, यही मेरा वृत्तान्त है। विद्याधर चन्द्रगति इस वृतान्त को श्रवण कर विरक्त चित्त से भामण्डल को राज्याभिषिक्त कर सब के साथ अयोध्या के उद्यान मे आया। मुनिराज को वंदनकर चन्द्रगति ने उनके पास दीक्षा ले ली। भामण्डल ने याचकों को प्रचुर दान दिया जिससे वे जनक वैदेही के नन्दन भामण्डल का यशोगान करने लगे। महलों में सोयी हुई सीता ने जब भाटों द्वारा जनक के पुत्र की विरुदावली सुनी तो उसने सोचा—यह कौन जनक का पुत्र? मेरे भाई को तो जन्म होते ही कोई अपहरण कर ले गया था। इस प्रकार विचार करते हुए राम के साथ प्रात काल उद्यान में गयी। महाराजा दशरथ भी आये और उन्होने चन्द्रगति मुनि को देखकर ज्ञानी गुरु से सारा वृतान्त ज्ञात किया। सब लोग जनक-पुत्र भामण्डल का परिचय पाकर प्रसन्न हुए। भामण्डल के हर्ष का तो कहना ही क्या! रामने स्वागतपूर्वक भामण्डल

को नगर में प्रवेश कराया। भामण्डल ने पवनगति विद्याधर को मिथिला भेजा और माता पिता को यथाईपूर्वक विमान में आरूढ़ कर अयोध्या बुला लिया। माता पिता के चरणों में नमस्कार कर सारा वृत्तान्त सुनाया सब लोग परस्पर मिलकर आनन्दित हुए। दशरथ के आग्रह से पाँच दिन अयोध्या में रह कर जनक राजा भामण्डल सहित मिथिला आये उत्सव-महोत्सव पूर्वक कुछ दिन माता पिता के पास रह कर भामण्डल पिता की आज्ञा से रथनेउरपुर चला गया।

राज्याभिषेक की कामना और कैकेयी की वर याचना

एक दिन राजा दशरथ पिछली रात्रि में जग कर वैराग्य पूर्वक चिन्तन करने लगा कि विद्याधर चन्द्रगति धन्य हैं जो संयम स्वीकार कर आत्म साधन में लग गये। मैं मन्दभाग्य अभी भी गृहस्थी में फँसा पड़ा हूँ क्षण क्षण में आयु घट रही है और न मालुम कब क्षय हो जायगी। अत अब रामचन्द्र को राज्य सम्भला कर मुझे भी संयम ग्रहण करना श्रेयस्कर है। उसने प्रातः काल सबके समक्ष अपने विचार प्रकट किये। और सबकी अनुमति से राम के राज्याभिषेक का मुहूर्त देखने लगे। इतने ही में कैकयी राजा के पास गयी और यह सोच कर कि राम लक्ष्मण के रहते मेरे पुत्र को राज नहीं मिलेगा—राजा से अपना अमानत रखा हुआ वर माँगा। उसने कहा—राम को वनवास और भरत को राज्य देने की कृपा करें। राजा दशरथ यह सुन कर बड़ी भारी चिन्ता में पड़ गये। रामचन्द्र ने आकर पिता को चिन्ता का कारण पूछा तो उन्होंने कैकयी के वर की बात बतलाते हुए इस प्रकार पूर्व वृत्तान्त सुनाया—

कैकेयी वर कथा प्रसंग

एक वार नारद मुनि ने हमारे पास आकर कहा कि लंकापति ने नैमित्तिक से पूछा कि मैं सर्वाधिक समृद्धिशाली हूं, देव दानव मेरी सेवा करते हैं तो ऐसा भी कोई है जिससे मुझे खतरा हो ? नैमित्तिक ने कहा -- दशरथ के पुत्रों द्वारा जनक सुता के प्रसग से तुम्हें वडा भय है। रावण ने तुरन्त विभीपण को बुला कर आज्ञा दी कि दशरथ और जनक को मार कर मेरा उद्वेग दूर करो। अतः अब आप सावधान रहें। स्वधर्मी के सम्बन्ध से मुझे व जनक को साव-धान कर नारद मुनि चले गये। मैंने मन्त्री की सलाह से देशान्तर गमन किया और मेरे स्थान पर लेप्यमय मूर्त्ति वैठा दी गयी। जनक ने भी आत्म रक्षार्थ ऐसा ही किया। विभीपण ने आकर दोनों की प्रतिकृतियाँ भग कर दी, हम दोनों का भार उतर गया।

मैं देशाटन करता हुआ कौतुकमंगल नगर में पहुँचा। वहाँ शुभमति राजा की भार्या पृथिवी की पुत्री कैकयी का स्वयंवर मण्डप वना हुआ था, वहुत से राजाओं की उपस्थिति में मैं भी एक जगह छिप कर वैठ गया। कैकयी ने सबको छोड़ कर मेरे गले मे वरमाला डाली जिससे दूसरे सव राजा क्रुद्ध होकर चतुरंगिनी सेना सहित युद्ध करने लगे। शुभमति को भागते देख कर मैं रथारूढ हुआ, कैकयी सारथी वनी और रणक्षेत्र मे वाणों की वर्षा से समस्त राजाओं को परास्त कर कैकयी से विवाह किया। उस समय मैंने कैकयी को आग्रहपूर्वक वर दिया था जिसे उसने धरोहर रखा। आज वह वर माँग रही है कि भरत को राज्य दो। पर तुम्हारी उपस्थिति मे यह

कैसे हो सकता है ? इसी बात की मुझे चिन्ता है। राम ने कहा—आप प्रसन्नतापूर्वक भरत को राज्य देकर अपने वचनों की रक्षा करें मुझे कोई आपत्ति नहीं। दशरथ ने भरत को बुला कर राज्य लेने के लिये समझाया। उसने कहा—मुझे राज्य से कोई प्रयोजन नहीं, मेरा दीक्षित होने का भाव है, आप राम को राज्य दीजिये। राम ने कहा मैं जानता हूँ कि तुम्हें राज्य का लोभ नहीं है पर माता के मनोरथ और पितृवचनों की रक्षा के लिये तुम्हें ऐसा करना होगा। भरत ने कहा—बड़े भ्राता के रहते मेरा राज्य लेना असम्भव है। राम ने कहा—मैं वनवास ले रहा हूँ तुम्हें आज्ञा माननी होगी।

सीता वनवास

जब लक्ष्मण ने यह सुना तो वह दशरथ के पास आकर इसका घोर विरोध करने लगा पर राम ने उसे समझा कर शान्त कर दिया। रामचन्द्र और लक्ष्मण वनवास के लिये प्रस्थान करने लगे सीता भी पीछे चलने लगी। राम के बहुत समझाने पर भी सीता किसी भी प्रकार रुकने को राजी नहीं हुई और छाया की भाँति साथ हो गई। तीनों मिल कर दशरथ के पास गए और नमस्कार पूर्वक अपने अप राधों की क्षमा याचना करते हुए विदा माँगी। दशरथ ने कहा—सुपुत्रो! तुम्हारा क्या अपराध हो सकता है ? मैं तो दीक्षा लूँगा। तुम्हें जैसे उचित लगे करना पर अटवी का मार्ग बड़ा विषम है साव धान रहना! इसके बाद दोनों माताओं से मिल कर उन्हें आश्वस्त कर देव पूजा गुरु वंदनान्तर सबसे क्षमतक्षामणा पूर्वक निर्दोष वन की ओर गमन किया। उन्हें पहुँचाने के लिये राजा सामन्त मन्त्री

व सारे प्रजाजन अश्रुपूर्ण नेत्रों से साथ चले। राम का विरह असह्य था, राज परिवार, रानियाँ और महाजन लोग सभी व्याकुल होकर रुदन कर रहे थे। सबके मुख पर राम को निकालने वाली कैकयी के प्रति रोप और घृणा के भाव थे। राम के वियोग से दु:खी अयोध्या-वासियों का दु ख देखने मे असमर्थ होकर भगवान अंशुमाली भी अस्ताचल की ओर चले। राम सीता और लक्ष्मण ने जिनालय मे आकर रात्रिवास किया। माता पिता मिलने आये जिन्हें रवाना करके कुछ विश्राम किया और पिछली रात मे उठ कर जिनवन्दन करके धनुष वाण धारण कर पश्चिम की ओर रवाना हो गये। विरहातुर सामन्त लोग पैर खोजते हुए आ पहुँचे और रामचन्द्रजी की सेवा करते हुए कितने ही ग्राम नगर उल्लघन किये। जब गंभीरा तट आया तो वस्ती का अन्त जान कर सामन्तादि को वापस लौटा दिया और सीता और लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र नदी पार होकर दक्षिण की ओर चले।

सामन्तादि भारी मन से वापस लौट कर जिनालय मे ठहरे। तत्र विराजित मुनिराज से कितनों ने ही संयम व व्रतादि ग्रहण किये। महाराज दशरथ ने भूतसरण गुरु के पास दीक्षा ले ली और कठिन तप करने मे लग गये।

भरत राम सम्मिलन तथा भरत का आज्ञा-पालन

पुत्रों के वनवास और पति के दीक्षित होने से खिन्न चित्त सुमित्रा व अपराजिता वडा दु ख करने लगी। उन्हें क्लान्त देख कर कैकयी ने भरत से कहा—बेटा। राम लक्ष्मण को बुला कर लाओ,

उनके बिना तुम्हें राज शोभा नहीं देता। कैकयी को साथ लेकर भरत राम की शोध में निकला। गंभीरा पार होकर विषम वन में रामचन्द्र जी के पास जा पहुँचा और घोड़े से उतर कर चरणों में गिर पड़ा राम ने उन्हें आलिंगन और लक्ष्मण ने सन्मानित किया। भरत ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से प्रार्थना की कि—आप मेरे पितृतुल्य हैं, अयोध्या चल कर राज्य कीजिये मैं आप पर छत्र व शत्रुघ्न चामर धारण करेगा। लक्ष्मण मन्त्री होंगे। इतने में ही कैकयी रथ से उतर कर आ पहुँची और पुत्रों को हृदय से लगा कर कहने लगी—मेरा अपराध क्षमा कर अयोध्या का राज सम्भालो। पर रामचन्द्र ने कहा—हम क्षत्रिय हैं वचन नहीं पलटते। भरत को राज्य करने की आज्ञा देकर रामने सबको वापस लौटा दिया।

अवन्ति कथा प्रसंग

राम लक्ष्मण और सीता कुछ दिन भयानक अटवी में रह कर क्रमशः चलते हुए अवन्ती देश आये। एक शून्य नगर को देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ वहाँ धन, धान्य, दुग्ध गाय, भैंस आदि सब विद्यमान थे पर मनुष्य का नाम निशान नहीं था। राम सीता शीतल छाया में बैठे और लक्ष्मण जानकारी प्राप्त करने के लिये दूर से आते हुए उदास पथिक को बुला कर राम के पास लाया। राम के पूछने पर उसने कहा—

यह देश दशपुर का एक नगर है, इसका सूना होने का कारण यह है कि यहाँ वज्रजंघ नामक न्यायी राजा राज करता था जिसे शिकार की बुरी लत लगी हुई थी। एक दिन राजा ने एक गर्भवती

हरिणी को मारा जिसके तड़पते हुए गर्भ को देख कर राजा का हृदय चीत्कार कर उठा। वह विरक्त चित्त से आगे वढा तो शिला पर एक मुनिराज मिले जिनसे प्रतिवोध पाकर उसने सम्यक्त्व मूल श्रावक धर्म स्वीकार किया। तत्पश्चात वह धर्माराधन करता हुआ राज्य पालन करने लगा। उसने मुद्रिका मे मुनिसुव्रत स्वामी की मूर्ति वनवा कर अन्य को नमस्कार न करने का व्रत पालन किया। अवन्तीपति सीहोदर को जिसकी अधीनता मे वह था, नमस्कार करते समय जिनवन्दन का ही अध्यवसाय रखता था। किसी चुगलखोर शत्रु ने सीहोदर के कान भर दिये जिससे वह कुपित होकर दशपुर पर चढाई करके वज्रजंघ को मारने के लिये ससैन्य अवन्ती से निकल पड़ा। इसी वीच एक व्यक्ति शीघ्रतापूर्वक वज्रजंघ से आकर मिला और उसे सीहोदर के आक्रमण से अवगत कराते हुए अपना परिचय इस प्रकार दिया कि मैं कुण्डलपुर का अधिवासी विजय नामक व्यापारी हूँ। मेरे माता-पिता शुद्ध श्रावक हैं, मैने उज्जयिनी में आकर प्रचुर द्रव्य कमाया पर अनंगलता नामक वेश्या से आसक्त होकर सब कुछ खो वैठा। एक दिन मैं वेश्या के कथन से रानी के कुण्डल चुराने के लिये राजमहल मे प्रविष्ट हुआ और छिप कर खडा हो गया—मैं इस फिराक मे था कि राजा सो जाय तो रानी के कुण्डल हस्तगत करूं! पर विचारमग्न राजा को नींद न आने से रानी ने पूछा तो राजा ने कहा मैं दशपुर के राजा वज्रजंघ को मारूंगा जो मुझे प्रणाम नहीं करता। मेरे मन में स्वधर्मी वन्धु को चेतावनी देकर उपकृत करने का विचार आया और मैं वहाँ से आपके पास आकर गुप्त खवर दे रहा हूं, आप अपनी रक्षा का यथोचित उपाय करें। राजा ने

उसका आभार स्वीकार किया। वज्रजंघ ने अन्न पानी का संचय करके नगर के द्वार बन्द कर लिये। सीहोदर की सेना ने आकर नगर को घेर लिया। सीहोदर ने दूत भेज कर वज्रजंघ को कहलाया कि तुम मुझे नमस्कार करो और राज भोगो। पर वज्रजंघ ने कहा—मैं अपना नियम भंग नहीं कर सकता। इसीलिये दोनों राजा एक बाहर और एक भीतर अकड़े बैठ हैं, यही कारण है कि यह देश अभी अभी सूना हो गया है। ऐसा कह कर वह व्यक्ति जाने लगा तो राम ने उसे कटि का कंदोरा इनाम देकर बिदा किया।

राम की वज्रजंघ की सहायता

राम लक्ष्मण स्वधर्मी बन्धु वज्रजंघ की सहायता करने के उद्देश्य से दशपुर के बाहर चन्द्रप्रभ जिनालय में आये और जिन वदमान्तर लक्ष्मण नगर में जाकर राजा से मिला। राजा ने उसे भोजन करने को कहा तो लक्ष्मण के यह कहने पर कि मेरे भ्राता नगर के बाहर हैं, राजाने तैयार मिष्टान्न भोजन भेज दिया। भोजनान्तर लक्ष्मण सीहोदर के पास गया और उससे कहा कि मैं भरत का भेजा हुआ दूत हूं, तुमने अन्यायपूर्वक वज्रजंघ पर घेरा डाल रखा है अब भरत की आज्ञा से विरोध त्याग दो अन्यथा काल कृतान्त के हस्तगत हुआ समझो। सीहोदर ने क्रुद्ध होकर सुभटों को संकेत किया। लक्ष्मण के साथ युद्ध छिड़ गया अकेले वीर ने सीहोदर की सेना को परास्त कर सीहोदर को बांधकर रामके सामने उपस्थित किया, रामने वज्रजंघ को आधा राज्य दिला कर उसका मेल करा दिया और उपकारी विद्यु को रामी के कुण्डल दिलाये। सीहोदर ने ३०० कन्याएं एवं वज्रजंघ ने

८ कन्याएं लक्ष्मण को दी जिन्हे देशाटनकी अवधि पर्यन्त वहीं रखने का आदेश दिया।

राजा वालिखिल कथा प्रसंग

राम-सीता और लक्ष्मण वहाँ से विदा होकर कूपचण्ड उद्यान मे पहुचे जहाँ सीता को भूख प्यास लग गई। लक्ष्मण सरोवर की पाल पर गया, जहाँ राजकुमार पहले से आया हुआ था। राजकुमार के पुरुप लक्ष्मण को बुला ले गए और सम्मानपूर्वक राजकुमार ने परिचय पूछा तो लक्ष्मण ने कहा मेरे भ्राता वाहर बैठे हैं, उनके पास जाने पर सारी वातें करूंगा। राजकुमार ने रामको बुलाकर आदर पूर्वक भोजनादि से भक्ति की फिर राजकुमार ने कहा—इस नगरी मे वालिखिल और उसकी पटरानी पृथ्वी राज्य करते थे। एक बार राजा को युद्ध मे म्लेच्छाधिप बन्दी बनाकर ले गये तब राजा सीहोदर ने कहा कि गर्भवती रानी के यदि पुत्र होगा तो उसे राज्य दिया जायगा। रानी के मैं पुत्री हुई पर राज्य की रक्षा के लिए मुझे पुत्र घोषित कर कल्याण माली नाम रखा गया। मेरी माता और मन्त्री के सिवा इस भेद को कोई नहीं जानता। मुझे पुरुष वेश पहना कर राजगद्दी पर बैठा दिया। मैंने यह गुप्त वात आपके समक्ष इसलिए प्रकट की है कि अब मैं तरुणी हो गई, आप कृपया मुझे अंगीकार करें। लक्ष्मण ने कहा—कुछ दिन तुम पुरुष वेश में राज्य संचालन करो, तुम्हारे पिता को हम विन्ध्याटवी जाकर म्लेछाधिप से छुडालाते हैं। इसके बाद राम सीता और लक्ष्मण विन्ध्याटवी की ओर रवाना हुए। सीता ने कौए के शकुन से भावी विजय की सूचना दी। विन्ध्याटवी पहुँच कर लक्ष्मण

ने बाणों की वर्षा द्वारा म्लेच्छाधिप इन्द्रभूति को परास्त कर दिया, राम के आदेश से उसने वालिखिल्ल को बन्धनमुक्त कर दिया।

ब्राह्मण कपिल कथा प्रसंग

वालिखिल्ल को अपने नगर पहुँचा कर एक अटवी में जाने पर सीता को प्यास लग गई। राम लक्ष्मण उसे अरुण गाँव में कपिल ब्राह्मण के घर ले गये जहाँ ब्राह्मणी ने शीतल जलादि से सत्कार कर ठहराया। इतने ही में ब्राह्मण ने आकर स्त्री को गाली देते हुए उसा हना दिया कि इन म्लेच्छोंको ठहराकर मेरा घर अपवित्र कर दिया। लक्ष्मण उसकी गालियों से क्रुद्ध होकर टाँग पकड़ कर घुमाने लगा तो राम ने उसे छुड़ा दिया और तीनों ने जंगल का मार्ग लिया।

सुदूर अटवी में पहुँचने पर घनघोर घटा गाज बीज के साथ मूसलधार वर्षा होने लगी। ठंड के मारे जब शरीर कांपने लगा तो राम सीता, लक्ष्मण ने एक घनी छाया वाले वट-वृक्ष का आश्रय लिया। इस वृक्ष में एक यक्ष रहता था जो राम-लक्ष्मण के तेज को न सह सका और बड़े यक्ष के पास जाकर शिकायत करने लगा। बड़े यक्ष ने अवधिज्ञान से पहिचान कर पलंग-शय्या आदि सुख सुवि धाएं सोने के लिए प्रस्तुत कर दी। प्रातःकाल जब उठे तो यक्ष द्वारा निर्मित समृद्धिशाली नगर सीता राम लक्ष्मण ने साश्चर्य देखा। इसमें राजभवन मन्दिर और कोट्याधीशों के मकान सुशोभित थे। यक्ष निर्मित रामपुरी में इन्होंने वर्षाकाल व्यतीत किया।

एक दिन जंगल में घूमते हुये कपिल ब्राह्मण ने इस भव्य नगरी को देखा तो एक महिला से उसने इस नगरी का परिचय पूछा।

यक्षिणी ने कहा यह राम की नगरी है राम लक्ष्मण यहाँ आनन्दपूर्वक रहते है और दीन हीन को प्रचुर दान देते है, स्वधर्मी भाई की तो विशेष प्रकार से भक्ति की जाती है। ब्राह्मण ने कहा—मैं राम का दर्शन कैसे करूं, यक्षिणी ने कहा—रात मे इस नगरी मे कोई प्रवेश नहीं करता, तुम पूर्वी दरवाजे के बाहर वाले जिनालय मे जाकर भक्ति करो व मिथ्यात्व त्याग कर साधुओं से धर्म श्रवण करो जिससे तुम्हारा कल्याण होगा। ब्राह्मण यक्षिणी की शिक्षानुसार धर्माराधन करता हुआ पक्का श्रावक हो गया। सरल स्वभावी भली ब्राह्मणी भी प्रतिबोध पाकर श्राविका हो गई। एक दिन कपिल अपनी स्त्री के साथ राजभुवन की ओर आया और लक्ष्मण को देखकर वापस पलायन करने लगा तो लक्ष्मण के बुलाने से आकर नमस्कार पूर्वक कहने लगा—मे वही पापी हूँ जिसने आपको कर्कशता पूर्वक घर से बाहर निकाल दिया था। आप मेरा अपराध क्षमा करें। राम ने मिष्ट वचनों से कहा—तुम्हारा कोई दोष नहीं, उस अज्ञानता का ही दोष है, अब तो तुमने जिनधर्म स्वीकारकर लिया अत. हमारे स्वधर्मी बन्धु हो गए। तदन्तर उसे भोजन कराके प्रचुर द्रव्य देकर बिदा किया। कालान्तर मे कपिल ने संयम मार्ग स्वीकार कर लिया।

वर्षाकाल बीतने पर जब राम अटवी की ओर जाने लगे तो यक्ष ने राम को स्वयंप्रभ हार, लक्ष्मण को कुण्डल व सीता को चडामणि हार भेंट किया एवं एक वीणा प्रदान कर अविनयादि के लिए क्षमा याचना की। राम के विदा होते ही नगरी इन्द्रजाल की भाँति लुप्त हो गई।

भूल। अहंकार त्याग कर भरत की आज्ञा स्वीकार करो। राजा ने कुपित होकर खड्ग निकाली तो नर्तकी ने राजा की चोटी पकड़ ली। लक्ष्मण अतिवीर्य को राम के पास ले गया, सीता ने उसे छुड़ाया। अतिवीर्य ने विरक्त होकर राम की आज्ञा से पुत्र को राज्य देकर दीक्षा ले ली। पुत्र विजयरथ भरत का आज्ञाकारी हो गया।

जितपद्मा के लिए लक्ष्मण का शक्ति-सन्तुलन

राम लक्ष्मण कुछ दिन विजयपुर जाकर रहे फिर वनमाला को वहीं छोड़ कर क्षेमंजलि नगर गये। रामाज्ञा से लक्ष्मण नगर में गया तो उसने सुना कि शत्रुदमन राजा ने यह प्रतिज्ञा कर रखी है—जो मेरा शक्ति प्रहार सहन करेगा उसे अपनी पुत्री दूंगा। लक्ष्मण ने राजसभा में जाकर भरत के दूत के रूप में अपना परिचय देते हुए राजा को पंचशक्ति प्रहार करने को कहा। जितपद्मा ने लक्ष्मण पर मुग्ध होकर शक्ति प्रहार के प्रपंच में न पड़ने की प्रार्थना की। लक्ष्मण ने उसे निश्चिन्त रहने का संकेत कर दिया। राजा ने क्रमशः पंच शक्ति छोड़ी जिसे लक्ष्मण ने दोनों हाथ दोनों काख और दाँतों द्वारा ग्रहण कर ली। देवों ने पुष्पवृष्टि की। लक्ष्मण ने जब कहा—राजा! अब तुम भी मेरा एक प्रहार सहो! तो राजा काँपने लगा जितपद्मा की प्रार्थना से लक्ष्मण ने उसे छोड़ दिया। राजा के पुत्री ग्रहण करने की प्रार्थना पर लक्ष्मण ने कहा—मेरे ज्येष्ठ भ्राता जानें। राजा रामचन्द्र को प्रार्थना कर नगर में लाया और लक्ष्मण के साथ जितपद्मा का ब्याह कर दिया। कुछ दिन वहाँ रह कर राम लक्ष्मण ने फिर वन की राह ली।

मुनिराज उपसर्ग तथा वंशस्थल नगर कथा प्रसंग

जब ये लोग वंशस्थल नगर पहुचे तो राजा प्रजा सबको भयभीत हो भागते देखा और पूछने पर पर्वत पर महाभय ज्ञात कर महासाहसी राम, लक्ष्मण और सीता के साथ पहाड पर गये। उन्होंने देखा एक मुनिराज ध्यान में निश्चल खड़े है, जिन्हें सांप, अजगर आदि ने चतुर्दिग् घेर रखा है। राम धनुषाग्र द्वारा उन्हें हटा कर मुनिराज के आगे गीत, वाद्य, नृत्यादि द्वारा भक्ति करने लगे। पूर्वभव के वैर को स्मरण करके भूत पिशाचों ने नाना उपसर्गों द्वारा भयानक दृश्य उपस्थित कर दिया। राम लक्ष्मण ने उन्हें भगा कर निरुपद्रव वातावरण कर दिया। मुनिराज को उसी रात्रि मे शुक्लध्यान ध्याते हुए केवलज्ञान प्रकट हो गया। देवों ने केवली भगवान की महिमा की, राम के पूछने पर मुनिराज ने उपद्रव का कारण इस प्रकार बतलाया।

अमृतसर के राजा विजयपर्वत के उपभोगा नामक रानी थी। जिससे वसुभूति नामक विप्र लुब्ध रहता था। राजा ने एक बार दूत के साथ वसुभूति को विदेश भेजा। वसुभूति ने मार्ग में दूत को मार दिया और वापस आकर राजा से कहा—दूत ने कहा कि मैं अकेला जाऊँगा, अत. मैं लौट आया हूं। ब्राह्मण रानी के साथ लिप्त था ही, उसने एक दिन रानी के आगे प्रस्ताव रखा कि तुम्हारे उदित, मुदित दोनों पुत्र अपने सुख मे अन्तरायभूत है अत इन्हें मार्ग लगा दो। ब्राह्मणी ने राजकुमारों को भेद की बात बतला दी जिससे राजकुमारों ने ब्राह्मण को तलवार के घाट उतार दिया। संसार के स्वरूप से विरक्त राजकुमारों ने मतिवर्द्धन मुनि के पास दीक्षा ले ली। ब्राह्मण मर कर

वनमाला और लक्ष्मण कथा प्रसंग

अटवी पार करके विजयापुरी के बाहर पहुँचकर वट वृक्ष के पास राम ने रात्रिवास किया। लक्ष्मण ने वट वृक्ष के नीचे किसी विरहिणी स्त्री का विलाप सुनकर कान लगाया तो सुना कि—हे वन देवी! मैं बड़ी भाग्यहीन हूँ जो इस भव में लक्ष्मण को वर रूप में न पा सकी, अब पर भव में मुझे वे अवश्य प्राप्त हों। ऐसा कह कर वह गले में फाँसी लगाने लगी तो लक्ष्मण ने शीघ्रतापूर्वक अपना आगमन सूचित कर फाँसी का फंदा काटा। लक्ष्मण उसे राम के पास लाये, और सीता के पूछने पर कहा कि यह तुम्हारी देवरानी है। सीता के परिचय पूछने पर उसने कहा—इसी नगरी के राजा महीधर की पटरानी इन्द्राणी की मैं वनमाला नामक पुत्री हूँ। बाल्यकाल में राजसभा में बैठे हुए लक्ष्मण की बिरुदावली श्रवण कर मैंने लक्ष्मण को ही पति रूप में स्वीकार करने की प्रतिज्ञा कर ली। पिताजी अन्यत्र सम्बन्ध कर रहे थे पर मैंने किसी की वांछा नहीं की। जब पिताजी ने दशरथजी की दीक्षा और राम लक्ष्मण का वनवास सुना तो उन्होंने खिन्न होकर मेरा सम्बन्ध इन्द्रपुरी के राजकुमार से कर दिया। मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल थी अतः नजर बचा कर निकल भागी और वट वृक्ष के नीचे ज्योंही फाँसी लगाई मेरे पुण्योदय से लक्ष्मण ने आकर मुझे बचा लिया।

वनमाला सीता के साथ उपर्युक्त वार्तालाप कर रही थी इतने ही में राजा के सुभट आ पहुँचे और वनमाला को देखकर राजा को सारा वृत्तान्त सूचित कर दिया। महीधर राजा ने प्रसन्नतापूर्वक आकर

साक्षात्कार किया और उन सबको अपने महलों मे लाकर ठहराया। वनमाला को लक्ष्मण की प्राप्ति होने से सर्वत्र आनन्द छा गया।

अतिवीर्य का आक्रमण आयोजन और पराजय

इसी अवसर पर नन्दावर्त नगर से अतिवीर्य राजा का भेजा हुआ दूत महीधर के पास आया और सूचना दी कि हमारे भरत के साथ विरोध हुआ है अत युद्ध के लिये सैन्य सहित शीघ्र आओ। लक्ष्मण द्वारा पूछने पर दूत ने कहा राम लक्ष्मण की अनुपस्थिति का अवसर देख कर हमारे स्वामी ने भरत से अधीनता स्वीकार करने के लिये कहलाया। भरत ने कुपित होकर दूत को अपमानित करके निकाल दिया। अतिवीर्य इसीलिये सैन्य एकत्र कर भरत से युद्ध करेगा और महीधर महाराज को बुला रहा है। महीधर ने—हम आ रहे हैं, कह कर दूत को विदा किया।

राम ने महीधर से कहा भरत हमारा भाई है, अत' हमे सहाय्य करने का यह समय है, आप अपने पुत्र को हमारे साथ दें ताकि अतिवीर्य को हाथ दिखाया जाय। महीधर ने अपने पुत्र को राम लक्ष्मण के साथ भेज दिया और नंद्यावर्त्त नगर के बाहर पहुँच कर सन्ध्या समय डेरा डाला। प्रात'काल जिनालय मे वन्दन पूजनोपरान्त अधिष्ठाता देव द्वारा कार्य सिद्धि की सूचना के साथ-साथ सक्रिय सहयोग का वचन मिला।

देवी ने सुभटों का नर्त्तकी रूप बना दिया। राम ने राजाज्ञा से नर्त्तकी द्वारा नृत्य प्रारम्भ करवाया। नर्त्तकी ने अपने रूप कला से सबको मुग्ध कर दिया। अवसर देख कर नर्तकी ने राजा से कहा—

मूल। अहंकार त्याग कर भरत की आज्ञा स्वीकार करो। राजा ने कुपित होकर खड्ग निकाली तो नर्तकी ने राजा की चोटी पकड़ ली। लक्ष्मण अतिवीर्य को राम के पास ले गया, सीता ने उसे छुड़ाया। अतिवीर्य ने विरक्त होकर राम की आज्ञा से पुत्र को राज्य देकर दीक्षा ले ली। *पुत्र विजयरथ भरत का आज्ञाकारी हो गया।*

जितपद्मा के लिए लक्ष्मण का शक्ति-सन्तुलन

राम लक्ष्मण कुछ दिन विजयपुर जाकर रहे फिर वनमाला को वहीं छोड़ कर *क्षेमंजलि नगर गये। रामाज्ञा से लक्ष्मण नगर में गया* तो उसने सुना कि शत्रुदमन राजा ने यह प्रतिज्ञा कर रखी है—जो मेरा शक्ति प्रहार सहन करेगा उसे अपनी पुत्री दूंगा। लक्ष्मण ने राजसभा में जाकर भरत के दूत के रूप में अपना परिचय देते हुए राजा को पंचशक्ति प्रहार करने को कहा। जितपद्मा ने लक्ष्मण पर मुग्ध होकर शक्ति प्रहार के प्रपंच में न पड़ने की प्रार्थना की। लक्ष्मण ने उसे निश्चिन्त रहने का संकेत कर दिया। राजा ने क्रमशः पंच शक्ति छोड़ी जिसे लक्ष्मण ने दोनों हाथ दोनों काख और दाँतों द्वारा ग्रहण कर ली। देवों ने पुष्पवृष्टि की। लक्ष्मण ने जब कहा—राजा! अब तुम भी मेरा एक प्रहार सहो। तो राजा काँपने लगा जितपद्मा की प्रार्थना से लक्ष्मण ने उसे छोड़ दिया। राजा के पुत्री ग्रहण करने की प्रार्थना पर लक्ष्मण ने कहा—मेरे ज्येष्ठ भ्राता जानें। राजा रामचन्द्र को प्रार्थना कर नगर में लाया और लक्ष्मण के साथ जितपद्मा का ब्याह कर दिया। कुछ दिन वहाँ रह कर राम लक्ष्मण ने फिर वन की राह ली।

मुनिराज उपसर्ग तथा वंशस्थल नगर कथा प्रसंग

जब ये लोग वंशस्थल नगर पहुचे तो राजा प्रजा सबको भयभीत हो भागते देखा और पूछने पर पर्वत पर महाभय ज्ञात कर महा-साहसी राम, लक्ष्मण और सीता के साथ पहाड पर गये। उन्होंने देखा एक मुनिराज ध्यान में निश्चल खड़े हैं, जिन्हें सांप, अजगर आदि ने चतुर्दिग् घेर रखा है। राम धनुपाग्र द्वारा उन्हें हटा कर मुनिराज के आगे गीत, वाद्य, नृत्यादि द्वारा भक्ति करने लगे। पूर्वभव के वैर को स्मरण करके भूत पिशाचों ने नाना उपसर्गो द्वारा भयानक दृश्य उपस्थित कर दिया। राम लक्ष्मण ने उन्हें भगा कर निरुपद्रव वातावरण कर दिया। मुनिराज को उसी रात्रि मे शुक्ल-ध्यान ध्याते हुए केवलज्ञान प्रकट हो गया। देवों ने केवली भगवान की महिमा की, राम के पूछने पर मुनिराज ने उपद्रव का कारण इस प्रकार वतलाया।

अमृतसर के राजा विजयपर्वत के उपभोगा नामक रानी थी। जिससे वसुभूति नामक विप्र लुब्ध रहता था। राजा ने एक बार दूत के साथ वसुभूति को विदेश भेजा। वसुभूति ने मार्ग मे दूत को मार दिया और वापस आकर राजा से कहा—दूत ने कहा कि मैं अकेला जाऊँगा, अत· मैं लौट आया हूं। ब्राह्मण रानी के साथ लिप्त था ही, उसने एक दिन रानी के आगे प्रस्ताव रखा कि तुम्हारे उदित, मुदित दोनों पुत्र अपने सुख मे अन्तरायभूत है अतः इन्हें मार्ग लगा दो। ब्राह्मणी ने राजकुमारों को भेद की वात वतला दी जिससे राजकुमारों ने ब्राह्मण को तलवार के घाट उतार दिया। संसार के स्वरूप से विरक्त राजकुमारों ने मतिवर्द्धन मुनि के पास दीक्षा ले ली। ब्राह्मण मर कर

म्लेच्छपल्ली में उत्पन्न हुआ। उदित मुदित मुनिराज समेतशिखर यात्रार्थ जाते हुए म्लेच्छपल्ली के मार्ग से निकले तो वह म्लेच्छ इन्हें खड्ग द्वारा मारने को प्रस्तुत हुआ। मुनि भ्राताओं ने सागारी अनशन ले लिया। पल्लीपति ने करुणापूर्वक म्लेच्छ द्वारा मारने से मुनिराजों को बचा लिया। समेतशिखर पहुँच कर मुनिराजों ने अनशन आराधना पूर्वक देह त्यागा और प्रथम देवलोक में देव हुए। म्लेच्छ ने संसार भ्रमण करते हुए मनुष्य भव पाया और तापसी दीक्षा लेकर अज्ञान तप किये जिससे दुष्ट परिणामी ज्योतिषी देव हुआ। उदित, मुदित के जीव अरिष्टपुर नरेश प्रियबन्धु की रानी पद्माभाके कुक्षि से उत्पन्न हुए। ब्राह्मण का जीव भी राजा की दूसरी रानी कनकाभा के उदर से अनुद्धर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। प्रियबन्धु राजाने बड़े पुत्र को राज देकर दीक्षा ले ली और यथासमय स्वर्गवासी हुए। अनुद्धर दोनों भ्राताओं के प्रति मात्सर्य धारण कर देश को लूटने लगा। राजा द्वारा निर्वासित होकर उसने तापसी दीक्षा लेली। रत्नरथ और विचित्ररथ भी दीक्षा लेकर प्रथम देवलोक में गये और वहांसे च्यव कर सिद्धारथ पुर के राजा क्षेमंकर के यहाँ विमला रानी की कुक्षिसे देशभूषण कुलभूषण नामक पुत्र हुये। जिन्हें राजा ने विद्योपार्जनार्थ गुरुकुल में भेज दिया पीछे से रानी के कमलुसवा नामक पुत्री हुयी। राजकुमार जब कला भ्यास करके लौटे तो कमलुसवा को देख कर इस अनुमान से कि हमारे लिये पिताजी किसी राजकुमारी को यहाँ लाये हैं, उसके प्रति आसक्त हो गये। थोड़ी देर में जब विरुदावली सुन कर उन्हें अपनी ही बहिन होने का ज्ञान हुआ तो दोनों ने विरक्त चित्त से सुव्रतसूरि के पास चारित्र ग्रहण कर लिया। राजा क्षेमंकर पुत्र वियोग से दुःखी

होकर उदासीन रहने लगा। अन्त मे मर कर गरुडाधिप देव हुआ। अणुद्धर एक वार अज्ञान तप करता हुआ कौमुदीनगर आया। वहाँ का राजा वसुधारा तापस का भक्त था किन्तु उसकी रानी शुद्ध जिन-धर्म परायणा थी। एक दिन राजा को तापस की प्रशंसा करते देख रानी ने कहा—ये अज्ञान तपस्वी हैं, सच्चे साधु तो निर्ग्रंथ होते हैं। राजा ने कहा—तुम असहिष्णुता से ऐसा कहती हो। रानी ने कहा—परीक्षा की जाय। रानी ने अपनी तरुण पुत्री को रात्रि के समय तापस के पास भेजा। उसने नमस्कार पूर्वक तापस से निवेदन किया कि मुझे माता ने निरपराध घर से निकाल दिया है, अब आपके शरणागत हूँ, कृपया मुझे दीक्षा दें। अणुद्धर उसके लावण्य को देख कर मुग्ध होकर काम प्रार्थना करने लगा। कन्या ने कहा—यह अकार्य मत करो। मैं अभी तक कुमारी कन्या हू। यदि तुम्हें मेरी चाह है तो तापस-धर्म त्याग कर मेरी मा से मुझे मांग लो। इसमें कोई दोप की बात नहीं है। तापस कन्या के साथ हो गया, वह उसे किसी गणिका के यहाँ ले गई। तापस गणिका के चरणों में गिर कर वार-बार पुत्री की माग करने लगा, राजा ने गुप्त रूप से सारी घटना स्वयं देख ली और उसे बाँध कर निर्भ्र छना पूर्वक देश से निकाल दिया। राजा ने प्रतिबोध पाकर श्रावक-धर्म स्वीकार कर लिया। लोगों में निन्दा पाता हुआ तापस कुमरण से मर कर भव भ्रमण करने लगा। एक वार उसने फिर मानव भव पाकर तापसधर्म स्वीकार किया और काल करके अनलप्रभ नामक देव हुआ। उसने पूर्व भव का वैर याद कर हमारे को उपसर्ग किया है। यह वृतान्त सुन कर सीता, राम, लक्ष्मण ने केवली भगवान की भक्तिपूर्वक पूजा स्तुति की।

गरुड़ाधिप देव ने प्रगट होकर वर मांगने को कहा। राम ने कहा— कभी आपत्तिकाल में हमें सहाय्य करना। वंशस्थलपुर नरेश सुरप्रभ ने आकर राम सीता, लक्ष्मण की बहुत सी आदर भक्ति की। राम की आज्ञा से पर्वत पर जिनालय बनवा कर रत्नमय प्रतिमा विराजमान की गई, इस पर्वत का नाम रामगिरि प्रसिद्ध हुआ।

राम का दण्डकारण्य प्रस्थान

रामगिरि से चल कर राम सीता, और लक्ष्मण दण्डकारण्य पहुँचे और कर्नरवा के तट पर बांस की कुटिया बना कर सुखपूर्वक रहने लगे। इस वन में जंगली गाय का दूध एवं अकृष्ट धान्य, आम्र, कटहल दाडिम, केला व जंभीरी प्रचुरता से उपलब्ध थी। एक बार दो आकाशगामी तपस्वी मुनिराज पधारे। सीता राम लक्ष्मण ने अत्यन्त भक्तिपूर्वक आहार दान किया। देवों ने दुन्दुभिनाद पूर्वक वसुधारा वृष्टि की। एक दुर्गन्धित पक्षी ने आकर मुनिराजों को वन्दन किया जिससे उसकी देह सुगन्धित और निरोग हो गई। राम के पूछने पर त्रिगुप्ति साधु ने उसके पूर्व जन्म का वृतान्त इस प्रकार सुनाया :—

जटायुध कथा प्रसंग

कुम्भकपुर का राजा दण्डकी बड़ा उद्दण्ड था। उसकी रानी मस्करि विवेकी भाविका थी। एकबार राजा ने वन में कायोत्सर्ग स्थित मुनिराज के गले में मृतक सांप डाल दिया। मुनिराज ने अभिग्रह कर लिया कि जहाँ तक गलेमें सांप विद्यमान है कायोत्सर्ग नहीं पारूँगा। दूसरे दिन जब राजा ने मुनिराज को उसी अवस्था में देखा तो उसे अपने कृत्य पर बड़ा पश्चाताप हुआ और वह साधु भक्त हो गया।

रुद्र नामक एक तापस उस नगरी मे रहता था, राजा को साधुओं का भक्त हुआ ज्ञात कर मात्सर्यपूर्वक साधुओं को मरवाने के अभिप्राय से उसने साधु का वेष किया और अन्त:पुर में जाकर रानी की विडम्बना की। राजा ने कुपित होकर केवल उसे ही नहीं, सभी साधुओं को घानी में पीला कर मार डाला। एक शक्तिशाली मुनि ने आकर तेजोलेश्या छोडी जिससे सारा नगर जल कर स्मशान हो गया और दण्डकारण्य कहलाने लगा। राजा दण्डकी भव भ्रमण करता हुआ इसी वन मे दुर्गन्धित गृद्ध पक्षी हुआ। हमे देखकर इसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया और वन्दन, प्रदिक्षणान्तर धर्म प्रभाव से सुगन्धित शरीर हो गया। गृद्ध पक्षी मास और रात्रिभोजनादि त्याग कर धर्माराधन करने लगा। मुनिराज अन्यत्र चले गये, पक्षी सीता के पास रहने लगा। उसके शरीरपर सुन्दर जटा थी इससे उसका नाम जटायुध हो गया। साधु-दान के प्रभाव से राम के पास मणिरत्नादि की समृद्धि हो गई एवं देवों ने राम को चार घोडों सहित रथ दिया। राम, सीता, लक्ष्मण सुखपूर्वक रहने लगे।

दण्डकारण्य मे घूमते हुए राम, सीता और लक्ष्मण एक नदी तट-वर्ती वनखंड मे गए। समृद्ध रत्नखान वाले पर्वत, फल फूलों से लदे वृक्ष और निर्मल नदी जल को देखकर राम ने वहीं निवास करना प्रारम्भ कर दिया।

लङ्काधिप रावण कथा प्रसंग

उस समय लंकागढ में रावण राज्य करता था। लंका के चतुर्दिक समुद्र था। रावण का नाम दशमुख भी कहलाता था, जिसकी उत्पत्ति इस प्रकार है—

वैताढ्य पर्वत पर रथनेवर नगर में मेघवाहन विद्याधर राज्य करता था, जिसके इन्द्र से शत्रुता थी। अजितनाथ स्वामी की भक्ति से प्रसन्न होकर राक्षसेन्द्र ने मेघवाहन से कहा कि राक्षसद्वीप में त्रिकूटगिरि पर लंकानगरी है, वहाँ जाकर निरुपद्रव राज्य करो। पातालपुरी जो लंकागिरि के नीचे है, वह भी मैं तुम्हें देता हूँ। मेघवाहन विद्याधर वहाँ राज्य करने लगा। राक्षसद्वीपके कारण वे विद्याधर राक्षस कहलाने लगे। उसी के वंश में रत्नाश्रव का पुत्र रावण हुआ। बचपन में पिता ने उसे दिव्यहार पहनाया, जिसमें नौ मुंह प्रतिबिम्बित होने से वह दशमुख कहलाने लगा। एकबार अष्टापद पर्वत पर भरत चक्रवर्ती द्वारा बनवाये चैत्यों को उल्लंघन करते दशमुख का विमान रुक गया। उसने ध्यानस्थ वालि मुनि को इसका कारण समझ कर अष्टापद को ऊँचा उठा लिया। चैत्य रक्षा के लिए वालि मुनि ने पहाड़ को दबा दिया जिससे दशमुख ने रव (रुदन) किया तो वह रावण नाम से प्रसिद्ध हो गया। रावण ने अपनी बहिन चन्द्रनखा खरदूषण को ब्याह कर उसे पाताल लंका का राज्य दे दिया।

दिव्य खड्ग का पतन और लक्ष्मण का परिताप

चन्द्रनखा के संब और सुबुक्क नामक दो पुत्र थे सबुक विद्या साधन के निमित्त दण्डकारण्य में कुंचुरवा के तटस्थित वंशजाल में उल्टे लटक कर विद्या साधन करता था। उसे बारह वर्ष चार मास बीत गए विद्या सिद्ध होने में तीन दिन अवशिष्ट थे। भवितव्यता वश लक्ष्मण ने वंशजाल में लटकते हुए दिव्य खड्गको देखा तो उसने ग्रहण कर वंशजाल पर वार किया जिससे संबुक का कुण्डल युक्त मस्तक

छिन्न होकर आ गिरा। लक्ष्मण को इस घटना से अपार दुख हुआ। उसने सोचा—मेरे पौरुष को धिक्कार है। मैंने एक निरपराध विद्याधर को मार कर भयंकर पाप उपार्जन कर लिया। उसने राम के समक्ष सारी बात कही तो राम ने कहा—इस प्रकार जिन प्रतिषिद्ध अनर्थ-दण्ड कभी नहीं करना चाहिए, भविष्य मे ख्याल रखना। जब चन्द्रनखा पुत्र को संभालने आई और उसे मरा हुआ देखा तो पुत्र शोक से अभिभूत होकर नाना विलाप करने लगी। अन्त मे रोने पीटने से कुछ हृदय हलका होने से संबुक्क को मारने वाले की खोज मे दण्डकारण्य में घूमने लगी।

रूपगर्विता चन्द्रनखा का पतन

चन्द्रनखा ने घूमते हुए जब दशरथनन्दन को देखा तो सौन्दर्यासक्त होकर पुत्र शोक को भूल कर कन्या का रूप धारण करके राम के पास पहुँची। वह नाना हाव-भाव, विभ्रम से राम को मुग्ध करने की चेष्टा करने लगी। राम ने उसे वन मे अकेली घूमने का कारण पूछा तो उसने कहा—मैं वंशस्थल की वणिकपुत्री हू, मेरे माता-पिता मर गए, अब मैं आपकी शरणागत हूं, मुझे ग्रहण करें। निर्विकार राम ने जब मौन धारण कर लिया और उसकी मोहिनी न चली तो उसने क्षुब्ध होकर स्वयं अपने शरीर को नख-दांतों से क्षत विक्षत कर लिया और वह रोती कलपती अपने पति के पास पहुँची।

खरदूषण सैन्य पतन और सीता-हरण

चन्द्रनखा ने खरदूपण से कहा—किसी भूचर ने चन्द्रहास खड्ग लेकर संबुक्क को मार डाला और मेरी यह दुर्दशा कर दी, में किसी

प्रकार आपके पुण्यों से शील-रक्षा करके यहाँ लौटी हूँ। खरदूषण चौदह हजार सुभटों के साथ चल कर दण्डकारण्य पहुँचा, एवं रावण को भी दूत भेजकर सहायतार्थ आने को सूचित कर दिया। राम ने जब धनुष संभाला तो लक्ष्मण ने कहा—मेरे रहते आप मत जाइये, आप सीता की रक्षा करें। यदि आवश्यकता पड़नेपर सिंहनाद करूं तो आप मेरी सहायता करें। शूरवीर लक्ष्मण ने अकेले खरदूषण की सेना को परास्त कर दिया। चन्द्रनखा की पुकार से रावण पुष्पविमान में बैठकर आया और राम के पास सीता को देख कर उसके रूप से मुग्ध हो गया। उसने अवलोकनी विद्या के बल से लक्ष्मण का संकेत जान लिया और लक्ष्मण के स्वर में सिंहनाद किया। राम ने जटायुध से कहा—मैं लक्ष्मण की तरफ जाता हूँ तुम सीता की रक्षा करना। राम के जाने पर रावण सीता को हरण कर तुरन्त पुष्पविमान में बैठाकर ले चला। जटायुध पक्षी ने इसका घोर विरोध किया और रावण को घायल कर डाला पर रावण के सामने उसकी शक्ति कितनी ? रावण ने जटायुध को धनुष से पीट कर भूमिसात् कर दिया। उसकी हड्डी पसली सब टूट गई। रावण के साथ जाते हुए सीता नाना विलाप करती हुई रो रही थी। रावण ने सोचा अभी यह दुखी है पीछे मेरी रिद्धि देख कर स्वयं अनुकूल हो जायगी। मैंने मुनिराज के पास प्रन लिया था कि बलात्कार से किसी भी स्त्री को नहीं मागूंगा। अत: मेरा प्रन अविचल रहूंगा।

सीता-शोध प्रसंग

राम जब संग्राम में लक्ष्मण के पास पहुँचे तो लक्ष्मण ने कहा—सीता को छोड़ कर आप यहाँ क्यों आये ? राम ने सिंहनाद की बात

कही तो लक्ष्मण ने कहा—धोखा हुआ है, आप शीघ्र लौट कर सीता की रक्षा करें। राम ने जब लौट कर सीता को न देखा तो वह मूर्च्छित होकर गिर पड़े। थोडी देरी में सचेत होने पर मरणासन्न जटायुध ने उन्हें सीताहरण की बात कही। राम ने उसे करुणावश नवकार मंत्र सुनाया जिससे वह मर कर देव हो गया। राम ने सीता को दण्डकारण्य मे सर्वत्र खोजा पर कोई अनुसन्धान न मिला।

इसी समय चन्द्रोदय-अनुराधानन्दन बिरहिया नामक विद्याधर रणक्षेत्र में लक्ष्मण के पास आया। वह भी खरदूषण का शत्रु था, अतः लक्ष्मण का सेवक होकर युद्ध करने लगा। खरदूषण ने लक्ष्मण को फट-कारा तो लक्ष्मण ने उसे युद्ध के लिए ललकारा। वह लक्ष्मण पर खड्ग प्रहार करने लगा तो लक्ष्मण ने चन्द्रहास खड्ग से उसका शिरोच्छेद कर डाला। खरदूषण के मरने से उसकी सेना तितिर बितिर हो गई। विजेता लक्ष्मण बिरहिया के साथ राम के पास पहुँचा। उसने सीता को न देख कर सारा वृतान्त ज्ञात किया और सीता के अनुसन्धान निमित्त विरहिया को भेजा। विरहिया को आगे जाते एक रत्नजटी नामक विद्याधर मिला जिसने रावण को सीता को हर ले जाते देखा था। उसके घोर विरोध करने पर रावण ने उसकी विद्याएँ नष्ट कर दी थी जिससे वह मूर्च्छित होकर कंबुशैल पर्वत पर गिर गया। समुद्री हवा से सचेत होकर रत्नजटी ने विरहिया को सीताहरण की खबर बताई। विरहिया ने राम को पाताललंका पर अधिकार करने की राय दी, जहाँ से सीता को प्राप्त करने का उपाय सुगम हो सकता है। फिर विरहिया के साथ रथारूढ होकर राम पातालपुरी गए और चन्द्रनखा के पुत्र सुन्द को जीत कर पातालपुरी पर अधिकार कर लिया।

कामासक्त रावण की व्याकुलता

रावण ने सीता को हरण करके ले आते हुए उसे प्रसन्न करने के लिए नाना प्रकार के वचन प्रयोग किये पर सीता ने उसे करारी फटकार बता कर निराशा-सा कर दिया। फिर भी वह उसे लंका ले गया और देवरमण उद्यान में छोड़ दिया। जब रावण राजसभा में आकर बैठा तो मदोदरी आदि को साथ लेकर रोती हुई चन्द्रनखा आई और कहने लगी कि—मुझे पति खरदूषण और पुत्र संबुक का दुःख उपस्थित हो गया, तुम्हारे जैसे भाई के विद्यमान रहते ऐसा हो जाय तो फिर क्या कहा जाय ? रावण ने कहा सहोदरे। भावी प्रबल है, आयुष्य कोई घटा बढ़ा नहीं सकता पर मैं थोड़े दिनों में तुम्हारे शत्रु को यम का मेहमान बना कर छोड़ूंगा। इस प्रकार बहिन को आश्वस्त कर जब रावण मदोदरी के पास गया तो उसने उससे गहन उदासी का कारण पूछा। रावण ने कहा—मैं सीता को अपहरण करके लाया हूं पर वह मुझे स्वीकार नहीं करती। उसके बिना मैं हृदय फट कर मर जाऊंगा। मन्दोदरी ने कहा—सीता या तो निरी मूर्ख है जो तुम्हारे जैसा पति स्वीकार नहीं करती अथवा वह सती शिरोमणि है। पर तुम उससे जबरदस्ती भी तो कर सकते हो ? रावण ने कहा—मैं अनन्तवीर्य मुनि के पास नियम ले चुका हूं अतः मैं नियम भंग कदापि नहीं करूंगा। मैं आशापूर्वक आया हूं यदि तुम कुछ उपाय कर सको तो करो।

सीता का आत्मबल तथा मन्दोदरी माद प्रसंग

मन्दोदरी ने सीता के पास आकर न करने योग्य दूती कार्य किया। सीता ने कहा—कोई भी सती स्त्री इस प्रकार की शिक्षा दे

सकती है ? तुम्हारे योग्य यह कार्य है ? मन्दोदरी ने कहा—तुम्हारा कथन यथार्थ है पर पति की प्राण-रक्षा के लिए अयुक्त कार्य भी करना पड़ता है। रावण ने भी स्वयं आकर सीता को बहुत समझाया। नाना प्रलोभन, भय दिखाये पर सीता ने उसे निर्भर्त्छना कर निकाल दिया। रावण ने सिंह, वैताल, राक्षसादि रूप विकुर्वण करके उसे डराने की चेष्टा की पर उसकी सारी चेष्टाएँ निष्फल गई। प्रातःकाल जब विभीषण को ज्ञात हुआ तो उसने सीता को आश्वासन देकर कहा कि—मैं रावण को समझाकर तुम्हें राम के पास भिजवा दूँगा। उसने रावण को इस परनारीहरण के अनर्थ से बचने की प्रार्थना की पर रावण ने एक न सुनी। रावण सीता को पुष्प-विमान मे बैठाकर पुष्पगिरि स्थित सुन्दर उद्यान ले गया और नृत्य, गीत, वाजित्रादि के आयोजन द्वारा उसे प्रसन्न करने की चेष्टा की। सीता ने स्नान भोजनादि त्यागकर एकान्त धारण कर लिया। उसने अभिग्रह किया कि जब तक राम लक्ष्मण के कुशल समाचार न मिले, अन्न का सर्वथा त्याग है। नर्त्तकी ने जब रावण से यह समाचार कहा तो रावण सीता के विरह मे विक्षिप्त चेष्टाएँ करने लगा।

राम-सुग्रीव मिलन प्रसंग

जब किष्किन्धा नरेश सुग्रीव ने खरदूषण को मारनेवाले राम, लक्ष्मण की वीरता का यशोगान सुना तो वह अपना दुःख दूर करने के लिए पातालपुरी आया। राम द्वारा कुशल समाचार पूछने पर जम्बूनन्द मन्त्री ने कहा—ये किष्किन्धापति आदित्यरथ के पुत्र महाराजा सुग्रीव हैं। इनके ज्येष्ट भ्राता बालि बड़े वीर और मनस्वी थे, जिन्होंने

रावण की भी आधीनता स्वीकार नहीं की। उनके वैराग्य से दीक्षित हो जाने पर सुग्रीव राजा हुए। एक बार कोई विद्याधर सुग्रीव का रूप करके तारा के पास आया। तारा ने उसकी चेष्टाओं से कपट जानकर मन्त्री को सूचित किया। कपट-सुग्रीव राज्यासन पर आ बैठा। असली सुग्रीव के आने पर दोनों में भिड़ंत हो गई। मन्त्री ने असली राजा को न पहिचानकर दोनों को मना किया। रानी के शील रक्षार्थ बालि के पुत्र चन्द्ररश्मि को प्रधान स्थापित किया। असली सुग्रीव हनुमान के पास सहायतार्थ गया पर उसे भी दोनों को एकसे देखकर सन्देह हो गया अतः अब आपके शरणागत है। राम ने कहा—तुम निश्चिन्त रहो तुम्हारा काम हम कर देंगे यह साधारण बात है। पर हम अभी दुखी हो रहे हैं क्योंकि सीता को कोई दुष्ट छल करके अपहृत कर ले गया है यदि तुम्हारे से कुछ बन सके तो अनुसन्धान लगाओ। सुग्रीव ने कहा—मैं एक सप्ताह में सीता का पता न लगा सका तो अग्निप्रवेश कर जाऊँगा।

सुग्रीव नामधेयी विद्याधर का अन्त

राम प्रसन्न होकर सुग्रीव के साथ किष्किन्धा आए। नकली सुग्रीव ने युद्ध में उतरकर असली सुग्रीव को गदा के प्रहार से मूर्च्छित कर दिया। फिर सचेत होकर सुग्रीव ने राम से कहा—मैं आपके पास ही था आपने मेरी सहायता नहीं की? राम ने कहा—मैं भी तुम दोनों में असली नकली का निर्णय न कर सका अब मैं अकेला ही तुम्हारे शत्रु को मारूँगा। राम के तेज प्रताप से उसकी विद्या नष्ट हो गई और उसे अपने प्रकृत रूप में लोगों ने पहचान लिया कि—यह साहसगति विद्याधर है। सुग्रीव के साथ उसका युद्ध होने लगा। वानर

दल भग्न होते देख राम ने उसे पकडकर यमपुरी पहुँचा दिया। सुग्रीव ने हर्षित होकर राम लक्ष्मण को उद्यान मे ठहराया और अश्वरत्न आदि भेंट कर स्वयं तारा रानी के पास जाने के पश्चात् रामसे की हुई अपनी प्रतिज्ञा विस्मृत हो गया। सुग्रीव की चन्द्रप्रभादि तेरह कन्याएँ पति वरने की इच्छा से राम के आगे आकर नाटक करने लगी। राम तो सीता के विरह मे दुखी थे अत. उन्हें आँख उठाकर भी नहीं देखा। राम ने लक्ष्मण से कहा—कार्य सिद्ध होने पर सुग्रीव प्रतिज्ञाभ्रष्ट और निश्चिन्त होकर बेठ गया। लक्ष्मण ने सुग्रीव के पास जाकर उसे करारी फटकार वताई। सुग्रीव क्षमायाचना-पूर्वक राम के पास आया और उन्हें आश्वस्त करके सीता की शोध के लिए चल पडा। भामण्डल को भी सीताहरण का सम्वाद भेज दिया गया।

सुग्रीव द्वारा सीता-शोध

सुग्रीव अपने सेवकों के साथ नगर, पहाड, कन्दराओं मे खोज करता हुआ कम्बुशैल पर्वत पर पहुचा तो उसने रत्नजटी को कराहते हुए देखा। उसने सुग्रीव से कहा—जब मैंने रावण को सीता को हरण कर ले जाते देखा तो उसका पीछा करके ललकारा। रावण ने मेरी विद्याएँ छेदन कर मुझे अशक्त कर दिया। अब तो राम के पास जाकर खवर देने में भी असमर्थ हूँ। सुग्रीव उसे उठाकर राम के पास ले गया। उसने सीता की खबर सुनाकर रामचन्द्र को प्रसन्न कर दिया। राम ने उसे अंग के सारे आभूषण देकर पूछा कि लंकानगरी कहाँ है? यह हमें वतलाओ।

लंका की शक्ति और रावण-मृत्यु रहस्य

विद्याधर रत्नजटी ने कहा—लवण समुद्र के बीच राक्षसों के द्वीप में त्रिकूट पर्वत पर लंकानगरी बसी हुयी है। वहाँ राजा रावण-दशानन अपने विभीषण कुम्भकरण भ्राता व इन्द्रजीत, मेघनाद पुत्रों सहित राज करता है। वह बड़ा भारी शक्तिशाली है, उसने नौ ग्रहों को अपना सेवक बना रखा है और विधि उसके यहाँ कोतूल करती है। उस त्रैलोक्य कंटक रावण के समकक्ष कोई नहीं। राम-लक्ष्मण ने कहा—पर स्त्री हरण करने वाले की क्या प्रशंसा करते हो हम उसे दमन कर व लंका को लूटकर सीता को लीला मात्र में ले आवेंगे। उसे ऐसी सीख देंगे कि भविष्य में कोई परस्त्री हरण करने का साहस नहीं करेगा। जंबुवंत ने कहा—ये आपसे प्रीति धारण करने वाली विद्याधर कन्या प्रस्तुत है इसे स्वीकार करो और सीता को लाने की बात छोड़ो। अन्यथा महान कष्ट में पड़ोगे। लक्ष्मण ने कहा—उद्यम से सब कुछ सिद्ध होता है। हम सीता को निश्चय प्राप्त कर लेंगे। सुग्रीव के मन्त्री जंबुवन्त ने कहा—एक बार रावण ने अनन्तवीर्य मुनि को पूछा था कि मुझे कौन मारेगा तो उन्होंने कहा था कि जो कोटिशिला को उठावेगा उसी से तुम्हें मरने का भय है। यह सुन कर राम लक्ष्मण और सुग्रीव सिन्धु देश गये।

कोटिशिला प्रसंग तथा लक्ष्मण द्वारा शक्ति प्रदर्शन

कोटिशिला एक योजन उत्सेधांगुल ऊँची और इतनी ही पृथुल है, यहाँ भारत की अधिष्ठाता देवी का निवास है। शान्तिनाथ स्वामी के चक्रायुध गणधर और उसके ३२ पाट कुन्थुनाथ तीर्थंकर के ९८

अरनाथ स्वामी के २४, मल्लिनाथ के २० पाट, मुनिसुव्रत स्वामी और नमिनाथ स्वामी के तीर्थ के भी करोड़ों मुनिराज यहा से निर्वाण पद प्राप्त हुए अत इसका कोटिशिला नाम प्रसिद्ध हुआ। प्रथम वासुदेव इसे बायी भुजा से ऊँची उठाते है, दूसरे मस्तक तक, तीसरे कण्ठ तक, इस तरह छाती, हृदय, कटि, जाघ, जानु पर्यन्त आठवा व नवम वासुदेव चार अगुल ऊँची उठाते है। लक्ष्मण ने सबके समक्ष बायी भुजा से ऊँची उठा दी, देवों ने पुष्पवृष्टि की। कोटिशिला तीर्थ की वन्दना कर सम्मेतशिखर तीर्थ गये, वहाँ से विमान मे बैठ कर सब लोग किष्किन्धा आ पहुंचे।

आक्रमण मन्त्रणा

राम ने कहा—अब निश्चिन्त न बैठ कर लंका पर शीघ्र चढाई कर देना ही ठीक है। सुग्रीव ने कहा—रावण विद्या बल से परिपूर्ण है अत' पहले युद्ध न छेड कर यदि उसके भाई विभीषण जो कि न्याय-वान और परम श्रावक है—दूत भेज कर प्रार्थना की जाय, ऐसी मेरी राय है। रामचन्द्र ने कहा—ऐसा दूत कौन है जो यह कार्य कर सके ? सबका ध्यान पवन के पुत्र हनुमन्त की ओर गया और श्री-भूति दूत को भेज कर हनुमन्त को बुलाया। उसने जब सारी बातें कही तो हनुमन्त की स्त्री अनंगकुसुमा जो खरदूषण की पुत्री थी, पिता और भाई की मृत्यु का दु ख करने लगी जिसे सबने धीरज बँधाया। दूसरी स्त्री कमला सुग्रीव की पुत्री थी जिसकी माता तारा और सुग्रीव को सुखी करने के कारण उसने दूत का बहुत आदर किया।

हनुमान का दौत्य और शक्ति प्रदर्शन तथा सीता-सन्तुष्टि

हनुमन्त भी राम के गुणों से रंजित होकर तुरंत विमान द्वारा किष्किन्धा गया। राम लक्ष्मण से आदर पाकर हनुमन्त राम की

मुद्रिका और मन्देशा लेकर लंका की ओर ससैन्य आकाशमार्ग से चला। राक्षसों ने ऊँचा गढ़ प्राकार व कूटयन्त्र में असालिया व अग्निविष वाला वाला महासर्प रख छोड़ा था। हनुमान ने वज्र कवच पहिन कर कूट यंत्र को चकचूर कर डाला और मुख में प्रविष्ट होकर उदर विदीर्ण कर निकला। उसने असालिया विद्या के मारक वज्रमुख के भिड़ने पर उसका मस्तक उड़ा दिया। पिता का बदला लेने लंकासुन्दरी आकर हनुमान से लड़ने लगी। हनुमान उसके हाथ से धनुष छीनने लगा तो वे परस्पर एक दूसरे के प्रति मुग्ध हो गये। युद्ध प्रणय रूप में परिणत हो गया। हनुमान एक रात वहाँ रह कर प्रातःकाल लंका जाकर विभीषण से मिला और उसे सीता को लौटाने के लिये रावण को समझाने का भार सौंपा। इसके अनन्तर हनुमान सीता के पास गया वह अत्यन्त दुर्बल चिन्तित और करुण अवस्था में बैठी हुयी थी। हनुमान ने श्री राम की मुद्रिका उसके अंक में गिरा कर प्रणाम किया और अपना परिचय देते हुवे राम-लक्ष्मण के सारे समाचार सुनाये मन्दोदरी ने कहा—ये हनुमान बड़े वीर हैं इन्होंने रावण के सामने वरुण को हराया जिससे उसने अपनी बहिन चन्द्रनखा की पुत्री अनंगकुसुमा को इन्हें परणाया है, पर इन्होंने भूचर की सेवा स्वीकार की यह शोभनीय नहीं! हनुमान ने कहा—हमने उपकारी के प्रत्युपकार रूप को दूतपना किया यह हमारे लिये भूषण है पर तुम सीता के बीच दूती पना करने आई तो यह महादूषण है। मन्दोदरी रावण की बड़ाई करती हुई राम की बुराई करने लगी। सीता के साथ बोलचाल हो जाने से वह मुष्टि प्रहार करने लगी तो हनुमान ने उसे खूब फटकारा। सीता ने ससैन्य हनुमान को भोजन करवा के स्वयं अभिग्रह पूर्ण होने

से पारणा किया। हनुमान ने उसे स्कन्ध पर बैठा कर ले जाने का कहा पर सीता ने पर पुरुष स्पर्श अस्वीकार करते हुये अपना चूडामणि चिन्ह स्वरूप दिया और शीघ्र राम को आने की प्रार्थना पूर्वक हनुमान को विदा कर दिया ताकि मन्दोदरी की शिकायत से रावण हनुमान के प्रति कुछ उपद्रव न करे।

मेघनाद द्वारा नागपाश प्रक्षेप और हनुमान बन्धन

हनुमान सीता को नमस्कार करके रवाने हुआ तो रावण के भेजे हुये राक्षसों ने उसे घेर लिया। उसने वृक्षों को उखाड कर प्रहार करते हुये राक्षसों को भगा दिया और वानर रूप से लोगों को त्रास पहुंचाता हुआ रावण के निकट आया। रावण ने लंका को नष्ट करते देख सुभटो को तैयार होने की आज्ञा दी। इन्द्रजित और मेघनाद सेना सहित हनुमान से युद्ध करने लगे। हनुमान ने अपनी सेना को भगते देखा तो स्वयं युद्ध करने लगा। जब राक्षस लोग भगने लगे तो इन्द्रजित ने तीरों की बौछार लगा दी, हनुमान ने उन्हें अर्द्धचन्द्र बाण से छिन्न कर दिये। इन्द्रजित् द्वारा प्रक्षिप्त शक्ति को जब हनुमान ने लघु-लाघवी कला से निष्फल कर दिया तो उसने नागपाश से हनुमान को बाँध कर रावण के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि इसने सुग्रीव की प्रेरणा से दूत रूप मे लंका मे सीता के पास आने से पूर्व वज्रमुख राजा को मार कर लकासुदरी ले ली एवं पद्मवन को नष्ट कर लका मे उपद्रव मचाकर लोगों को त्रस्त किया है, अब इसे क्या दंड दिया जाय?

हनुमान रावण विवाद और लका में उपद्रव

रावण ने उसके अपराध सुन कर कहा—तुम पवनंजय-अंजना

के पुत्र म होकर अधमशिरोमणि वानर हो, जो भूचर के दूत बने। हनुमान ने उसे कहा—अधम और पापी तुम हो, उत्तम पुरुष परनारी सहोदर होते हैं। तुम्हारे में रत्नाश्रव के पुत्र होने के लक्षण नहीं पर कुलांगार हो! रावण ने उसे साँकलों से बाँध कर सारे नगर में घुमाने का आदेश दिया। हनुमान ने क्षण मात्र में बन्धन मुक्त होकर सहस्र स्तम्भों वाले भुवन को धराशायी कर दिया और आकाश मार्ग से उड़ कर किष्किन्धा नगर आ पहुँचा। सीता की पुष्पांजलि और स्नेहपूर्ण आशीर्वाद हनुमान का संबल था। सुग्रीव उसे बड़े आदर के साथ राम के पास ले गया। हनुमान ने चूड़ामणि सौंपते हुए सीता के संदेश और मार्ग के सारे वृत्तान्त सुनाये।

लंका पर आक्रमण आयोजन

राम को यह बात अधिक खटकती थी कि उसकी प्रिया शत्रु के यहाँ है। लक्ष्मण ने सुग्रीवादि सुभटों को बुला कर शीघ्र लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। वे लोग भामण्डल की प्रतीक्षा में थे। समुद्र पार कैसे किया जाय यह भी समस्या थी। किसी ने रावण के कोप की शंका की तो चन्द्ररश्मि ने कहा—हमारे पास पर्याप्त सेना है, भय का कोई कारण नहीं। राम की सेना में धनरति सिंहनाद, पवनरह प्रस्हाद सुत, भीमकूट, असनिवेग, नल नील अंगद वज्र वदन मन्दरमाल चन्द्रज्योति सिंहरथ, वज्रदत्त, लांगूल दिनकर सोमदत्त मृगुकीर्ति उल्कापात सुग्रीव हनुमान, प्रभामण्डल, पवन गति इन्द्रकेतु महसमकीर्ति आदि सुभट थे। राम के सिंहनाद को सुनकर सेना में उत्साह की लहर आ गई। मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को

विजय योग मे शुभ शकुनों से सूचित होकर राम ने सैन्य सहित लंका की ओर प्रयाण किया। रामचन्द्र तारागण से वेष्टित चन्द्र की भांति सुशोभित थे। सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, अंगद की सेना का चिन्ह वानर था। विरोहिय के हार, सिंहरथ के सिंह, मेघकान्ति के हाथी, ध्वज एव गज, रथ, घोडा, आदि के चिन्ह थे। उन चिन्हयुक्त विमानों में वैठकर वे समुद्र तट पर पहुचे। एक राजा ने युद्ध मे आधीनता स्वीकार कर लक्ष्मण को चार कन्याएँ समर्पित कर दी। हंसद्वीप जाने पर राजा हंसरथ ने राम की बडी सेवा की। इधर भामंडल को बुलाने के लिए दूत भेजा गया।

हंसद्वीप प्रसंग और लङ्का प्रयाण

रामचन्द्र की सेना जब हंसद्वीप पहुँची तो लंका में भगदड मच गई। रावण ने भी रणभेरी बजा कर सेना एकत्र की। विभीषण ने रावण को युद्ध मे न उतरनेकी समयोचित शिक्षा दी किन्तु उसे किसी प्रकार भी सीता को लौटाना स्वीकार नहीं था। विभीषण की शिक्षाओं ने रावण की कोपाग्नि में घृत का काम किया। जब दोनों में परस्पर युद्ध छिड गया, तो कुम्भकरण ने बीच मे पडकर दोनों को अलग किया। विभीषण अपनी तीस अक्षौहिणी सेना लेकर हंसद्वीप गया। वानर सेना मे खलबली मचने से राम अपने धनुष और लक्ष्मण रविहास खड्ग को धारण कर सावधान हो गए। विभीषण ने राम के पास दूत भेज कर कहलाया कि सीता के विषय मे हित शिक्षा देते हुए मेरा रावण से विरोध हो जाने से मैं आपका दासत्व स्वीकार करने आया हू। राम ने मन्त्री लोगों की सलाह लेकर विभी-पण को सम्मानपूर्वक अपने पास बुला लिया जिससे हनुमान आदि

के पुत्र न होकर अधमशिरोमणि वानर हो जो भूचर के दूत बने। हनुमान ने उसे कहा—अधम और पापी तुम हो, उत्तम पुरुष परनारी सहोदर होते हैं। तुम्हारे में रत्नाश्रव के पुत्र होने के लक्षण नहीं पर कुलांगार हो। रावण ने उसे सांकलों से बांध कर सारे नगर में घुमाने का आदेश दिया। हनुमान ने क्षण मात्र में बन्धन मुक्त होकर सहस्र स्तम्भों वाले भुवन को धाराशायी कर दिया और आकाश मार्ग से उड़ कर किष्किन्धा नगर आ पहुँचा। सीता की पुण्यांजलि और स्नेहपूर्ण आशीर्वाद हनुमान का सबल था। सुग्रीव उसे बड़े आदर के साथ राम के पास ले गया। हनुमान ने चूड़ामणि सौंपते हुए सीता के संदेश और मार्ग के सारे वृत्तान्त सुनाये।

लंका पर आक्रमण आयोजन

राम को यह बात अधिक खटकती थी कि उसकी प्रिया शत्रु के यहाँ है। लक्ष्मण ने सुग्रीवादि सुभटों को बुला कर शीघ्र लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। वे लोग भामण्डल की प्रतीक्षा में थे। समुद्र पार कैसे किया जाय यह भी समस्या थी। किसी ने रावण के कोप की शंका की तो चन्द्ररश्मि ने कहा—हमारे पास पर्याप्त सेना है भय का कोई कारण नहीं। राम की सेना में भमरति सिंहनाद, *प्रबलरह प्रस्ताव सुक, भीमकूट, असमिरोग नल, नील अंगद, बज्र* वदन मन्दरमाल चन्द्रज्योति सिंहरथ, बज्रदत्त लांगूल विमलर सोमदत्त भूमुकीर्ति वक्रापाद सुग्रीव हनुमान, प्रभामण्डल, पवन गति इन्द्रकेतु महसमकीर्ति आदि सुभट थे। राम के सिंहनाद को सुनकर सेना में उत्साह की लहर आ गई। मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को

विजय योग मे शुभ शकुनों से सूचित होकर राम ने सैन्य सहित लंका की ओर प्रयाण किया। रामचन्द्र तारागण से वेष्टित चन्द्र की भाति सुशोभित थे। सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, अंगद की सेना का चिन्ह बानर था। विरोहिय के हार, सिंहरथ के सिंह, मेघकान्ति के हाथी, ध्वज एव गज, रथ, घोडा, आदि के चिन्ह थे। उन चिन्हयुक्त विमानों मे बैठकर वे समुद्र तट पर पहुंचे। एक राजा ने युद्ध में आधीनता स्वीकार कर लक्ष्मण को चार कन्याएँ समर्पित कर दी। हंसद्वीप जाने पर राजा हसरथ ने राम की बडी सेवा की। इधर भामंडल को बुलाने के लिए दूत भेजा गया।

हंसद्वीप प्रसंग और लङ्का प्रयाण

रामचन्द्र की सेना जब हंसद्वीप पहुँची तो लंका मे भगदड मच गई। रावण ने भी रणभेरी बजा कर सेना एकत्र की। विभीषण ने रावण को युद्ध में न उतरनेकी समयोचित शिक्षा दी किन्तु उसे किसी प्रकार भी सीता को लौटाना स्वीकार नहीं था। विभीषण की शिक्षाओं ने रावण की कोपाग्नि में घृत का काम किया। जब दोनों मे परस्पर युद्ध छिड गया, तो कुम्भकरण ने बीच मे पड़कर दोनों को अलग किया। विभीषण अपनी तीस अक्षौहिणी सेना लेकर हंसद्वीप गया। बानर सेना में खलबली मचने से राम अपने धनुष और लक्ष्मण रविहास खड्ग को धारण कर सावधान हो गए। विभीषण ने राम के पास दूत भेज कर कहलाया कि सीता के विषय में हित शिक्षा देते हुए मेरा रावण से विरोध हो जाने से मैं आपका दासत्व स्वीकार करने आया हूं। राम ने मन्त्री लोगों की सलाह लेकर विभी-षण को सम्मानपूर्वक अपने पास बुला लिया जिससे हनुमान आदि

सभी वीरों में प्रसन्नता छा गई। इतने में ही भामंडल भी ससैन्य आ पहुँचा, राम ने उसका बड़ा सत्कार किया। कुछ दिन हंसद्वीप में रहकर राम लक्ष्मण ने ससैन्य लंका की ओर प्रयाण किया। बीस योजन की परिधि वाले रणक्षेत्र में सेना के पड़ाव डाले गये।

लंका युद्ध प्रसंग

कुम्भकर्णादि सभी सामन्त अपनी-अपनी सेना के साथ रावण के पास गए। रावण के पास ४ हजार अक्षौहिणी सेना तथा एक हजार अक्षौहिणी वानरों की सेना थी। अक्षौहिणी सेना में २१८७० हाथी रथ १०९३५० पैदल ६५६१० अश्वारोही होते थे। मेघनाद, इन्द्रजित गजारूढ थे। ज्योतिप्रभ विमान में राजा कुम्भकरण सुभटों के साथ एवं रावण पुष्पक विमान में बैठकर चला। भूकम्पादि अपशकुन होने पर भी रावण ने भवितव्यता वश उन्हें अमान्य कर दिया। राक्षस और वानर सेना के वीर परस्पर एक दूसरे पर टूट पड़े। राम की सेना में जयमित्र हरिमित्र सबल महाबल, रथवद्दन रथनेता दृढरथ, सिंहरथ सूर महासूर, सूरमवर सूर्कंत सूरप्रभ, चन्द्राभ चन्द्रानन दमितारि दुदन्त, देववल्लभ मनवल्लभ अतिबल, मीतिकर काली सुभकर, सुप्र सनचन्द्र फणिगर्चंद्र क्षोभ विमल गुणमाली अमतिघात सुजात अमितगति, भीम महाभीम भानु कील महाकील विकल तरंगगति विजय सुसेन रत्नजटी मनहरण विरोदिम जलवाहन वायुवेग सुग्रीव हनुमन्त नल नील अंगद अनल आदि सुभट थे। अनेक विद्याधरों के साथ विभीषण भी सन्नद्धबद्ध थे। रामचन्द्र स्वयं सब से आगे थे। रणभेरी व वाजिंत्रों तथा सेना के कोलाहल व सिंहनाद

से कानों में किसी का शब्द तक सुनाई नहीं पडता था, सैन्य पदरज से सर्वत्र अन्धकार-सा व्याप्त था। नाना प्रकार के शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित बानरों ने रावण की सेना के छक्के छुडा दिए। राक्षसों को भागते देख हस्थ, विहस्थ आ डटे, जिन्हें राम द्वारा प्रेरित नील और नल ने मार भगाया। सूर्यास्त होते ही युद्ध बन्द हो गया।

विषम युद्ध और शक्ति हेतु लक्ष्मण का देवाराधन

दूसरे दिन युद्ध करते हुए जब वानर सेना के पैर उखडने लगे तो पवन पुत्र हनुमान तुरन्त रणक्षेत्र में कूद पडा। राजा वज्रोदर ने हनुमान का कवच व सन्नाह भेद डाला तो हनुमान ने उसका खड्ग द्वारा शिरोच्छेद कर दिया। रावण के पुत्र जंबुमालि को जब हनुमान मारने लगा तो कुम्भकरण त्रिशूल लेकर दौडा। उसे आते देख चन्द्ररश्मि, चन्द्राभ, रत्नजटी और भामण्डल आगे आये जिन्हें दर्शनावरणी विद्या से कुम्भकरण ने निद्रा घूर्मित कर दिया। सुग्रीव ने पडिबोहिणी विद्या से उन्हें जागृत कर दिया जिससे उन्होंने युद्धरत होकर कुम्भकर्ण को विकल कर दिया। इन्द्रजित् जब आगे आया तो सुग्रीव भामण्डल उससे आ भिडे। उसके द्वारा प्रक्षिप्त कक्रपत्र को सुग्रीव ने छेद डाला। मेघवाहन भामडल से युद्ध करने लगा। उसने भामण्डल को, इन्द्रजित् ने सुग्रीव को तथा कुभकरण ने हनुमान को नागपाश से बाँध लिया। विभीषण ने राम लक्ष्मण से कहा—रावण के पुत्रों ने हमारे प्रधान वीरों को बाँध लिया, राक्षसों का पलडा भारी हो रहा है। राम ने अंगद को संकेत किया तो वह कुभकरण से युद्ध करने लगा। इतने ही में हनुमान ने अपना नागपाश तोड डाला। लक्ष्मण और

सभी वीरों में प्रसन्नता छा गई। इतने में ही भामंडल भी सदलबल आ पहुँचा, राम ने उसका बड़ा सत्कार किया। कुछ दिन हंसद्वीप में रहकर राम लक्ष्मण ने ससैन्य लंका की ओर प्रयाण किया। बीस योजन की परिधि वाले रणक्षेत्र में सेना के पड़ाव डाले गये।

लंका युद्ध प्रसंग

कुम्भकर्णादि सभी सामन्त अपनी-अपनी सेना के साथ रावण के पास गए। रावण के पास ४ हजार अक्षौहिणी सेना तथा एक हजार अक्षौहिणी वानरों की सेना थी। अक्षौहिणी सेना में २१८७० हाथी, रथ १०६३५० पैदल ६५६१० अश्वारोही होते थे। मेघनाद, इन्द्रजित गजारूढ़ थे। ज्योतिप्रभ विमान में राजा कुम्भकरण सुभटों के साथ एवं रावण पुष्पक विमान में बैठकर चला। भूकम्पादि अपशकुन होने पर भी रावण ने भवितव्यता वश इन्हें असामान्य कर दिया। राक्षस और वानर सेना के वीर परस्पर एक दूसरे पर टूट पड़े। राम की सेना में जयमित्र हरिमित्र सबल महाबल, रथवर्द्धन रथनेता दृढ़रथ सिंहरथ सूर महासूर, सूरप्रवर, सूरकंत सूरप्रभ चन्द्राभ चन्द्रानन, दमितारि दुर्दन्त, देववल्लभ मनवल्लभ अतिबल प्रीतिकर काली, सुभकर, सुप्र सनचन्द्र कलिमलचंद्र लोल विमल गुणमाली, अप्रतिघात सुजात, अमितगति भीम महाभीम भानु, कील महाकील विकल तरंगगति विजय सुसेन रत्नजटी मनहरण विरोहित जलवाहन वायुवेग सुग्रीव हनुमन्त नल नील अंगद अनल आदि सुभट थे। अनेक विद्याधरों के साथ विभीषण भी सन्नद्धबद्ध थे। रामचन्द्र स्वयं सब से आगे थे। रणभेरी व वाजित्रों तथा सेना के कोलाहल व सिंहनाद

है और मैने न्याय का पक्ष लिया है, तुम अन्यायी हो जो परस्त्री को हरण कर लाये। अब भी मेरा कथन मानकर सीता लौटा दो। रावण विभीषण पर क्रुद्ध होकर उसके साथ युद्ध करने लगा। इन्द्रजित् से लक्ष्मण, कुम्भकरण से राम और दूसरे योद्धाओं से अन्यान्य सुभट भिड गये। थोडी ही देर में इन्द्रजित्, मेघवाहन और कुम्भकरण को नागपाश से बांधकर बानर कटक में ला रखा। रावण ने विभीषण पर जब त्रिशूल फेंकी तो लक्ष्मण के वाण ने उसे निष्फल कर दिया और स्वयं गजारूढ़ होकर रावण से युद्ध करने लगा। रावण ने अग्नि-ज्वालायुक्त शक्ति का प्रहार किया, जिसकी असह्य वेदना से लक्ष्मण मूर्च्छित होकर धराशायी हो गया।

राम ने भाई को भूमिसात् देखते ही रावण के साथ घनघोर संग्राम छेड दिया। राम ने उसके छत्र, धनुष और रथ को छिन्न-भिन्न करके कठोर प्रहार किये जिससे लंकापति भयभीत होकर कांपने लगा। नये-नये वाहनों पर युद्ध करने पर भी राम ने उसे ६ वार रथ-रहित कर दिया और अन्त में धिक्कार खाता हुआ भग कर लंकानगरी मे प्रविष्ठ हो गया। उसके हृदय मे लक्ष्मण को मारने का अपार हर्ष था।

लक्ष्मण हित राम का शोक

राम जब लक्ष्मण के पास आये तो उसे मृतकवत् देखकर भ्रातृ विरह के असह्य दु ख से मूर्च्छित हो गये। जव उन्हें शीतल जल से सचेत किया तो नाना प्रकार से करुण-क्रन्दन और विलाप करते हुए उसके गुणों को स्मरण कर अन्त मे हताश हो गये और सबको अपने

विरोही विद्याधर रणक्षेत्रमें उतर पड़े और पारावद्ध वीरों को आश्वस्त किया। विभीषण इन्द्रजित् से जब आ भिड़ा तो वह अपने पितृतुल्य चाचा से युद्ध न कर भामंडल और सुग्रीव को बांधकर ले गया। लक्ष्मण ने चिन्तित होकर राम से कहा—इन वीरों के बिना विद्यावली रावण को कैसे जीतेंगे ? राम की आज्ञा से लक्ष्मण ने देव को स्मरण किया। देव ने प्रकट होकर राम को सिंह दिया व हल, मूसल एवं लक्ष्मण को गरुड़ दिया व वज्रवदन गदा के साथ-साथ शस्त्रास्त्र व कवच पूरित दो रथ दिये। इन रथों पर हनुमान के साथ आरूढ़ होकर जब राम लक्ष्मण संग्राम में उतरे तो गरुड़ध्वज देखकर नागपाश पलायन कर गए जिससे सुग्रीव भामंडलादि मुक्त हो गए। उन्होंने राम के चरणों में नमस्कार कर पूछा कि यह शक्ति कहाँ से प्रादुर्भूत हुई ? राम ने कहा—पर्वत शृंग पर उपसर्ग सहते हुए देशभूषण मुनिराज को केवल-ज्ञान हुआ उस समय गरुड़ाधिप ने हमें वर दिया था वही वर आज माँगने पर हमें यह सब प्राप्ति हुई है। सब लोग राम के पुण्य की प्रशंसा करने लगे।

युद्धरत रावण, लक्ष्मण की मूर्छा और राम रोष

सुग्रीव ने युद्धरत होकर राक्षसों को जीत लिया तो रावण रोष पूर्वक रथारूढ़ होकर संग्राम में उतरा और उसने वानर सेना को पीछे धकेल दिया। जब विभीषण सन्नद्धबद्ध होकर रावण के सामने आया तो उसने कहा—भाई को मारना अयुक्त है अतः मेरी दृष्टि से हट जाओ। तुमने शत्रु की सेवा स्वीकार कर रत्नाश्रव के वंश को त्याग दिया। विभीषण ने कहा—शत्रु के भय से पीठ देना कायर का काम

है और मैंने न्याय का पक्ष लिया है, तुम अन्यायी हो जो परस्त्री को हरण कर लाये। अब भी मेरा कथन मानकर सीता लौटा दो। रावण विभीषण पर क्रुद्ध होकर उसके साथ युद्ध करने लगा। इन्द्रजित् से लक्ष्मण, कुम्भकरण से राम और दूसरे योद्धाओं से अन्यान्य सुभट भिड गये। थोडी ही देर में इन्द्रजित्, मेघवाहन और कुम्भकरण को नागपाश से बाँधकर वानर कटक मे ला रखा। रावण ने विभीषण पर जब त्रिशूल फेंकी तो लक्ष्मण के बाण ने उसे निष्फल कर दिया और स्वयं गजारूढ होकर रावण से युद्ध करने लगा। रावण ने अग्नि-ज्वालायुक्त शक्ति का प्रहार किया, जिसकी असह्य वेदना से लक्ष्मण मूर्च्छित होकर धराशायी हो गया।

राम ने भाई को भूमिसात् देखते ही रावण के साथ घनघोर संग्राम छेड दिया। राम ने उसके छत्र, धनुष और रथ को छिन्न-भिन्न करके कठोर प्रहार किये जिससे लंकापति भयभीत होकर कांपने लगा। नये-नये वाहनों पर युद्ध करने पर भी राम ने उसे ६ वार रथ-रहित कर दिया और अन्त में धिक्कार खाता हुआ भग कर लंकानगरी में प्रविष्ठ हो गया। उसके हृदय मे लक्ष्मण को मारने का अपार हर्ष था।

लक्ष्मण हित राम का शोक

राम जब लक्ष्मण के पास आये तो उसे मृतकवत् देखकर भ्रातृ विरह के असह्य दु:ख से मूर्च्छित हो गये। जब उन्हें शीतल जल से सचेत किया तो नाना प्रकार से करुण-क्रन्दन और विलाप करते हुए उसके गुणों को स्मरण कर अन्त मे हताश हो गये और सबको अपने

अपने घर आने का कहते हुए करुणान्त रुदन करने लगे। जांबवन्त विद्याधर ने कहा—आप महासत्त्वशील हैं, सूर्य कभी उदय और अस्तकाल में अपना वेश नहीं छोड़ता इस वज्रपात को पृथ्वी की भाँति सहन करें। लक्ष्मण अभी मरा नहीं है यह तो शक्ति प्रहार की मूर्च्छा है, जिसे उपचार द्वारा रातोरात ठीक किया जा सकता है। यदि प्रातःकाल तक ठीक न हुआ तो यह शरीर सूर्य किरण लगते ही प्रातःकाल के बाद निष्प्राण हो जायेगा। राम ने धैर्यधारण किया उनके आदेश से विद्याधरों ने विद्या-बल से सात प्राकार बनाकर सात सेनाओं से सुरक्षित किया। नल नील अतिबल, कुमुद प्रचण्डसेन, सुग्रीव और भामंडल सातों द्वारों पर शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर लक्ष्मण की रक्षा के लिए तैनात हो गए और उधर कुम्भकरण इन्द्रजित और मेघनाद वानर सेना में कैद थे जिनके लिए रावण को दुःख करते व लक्ष्मण के शक्ति द्वारा मूर्च्छित होने की बातें सीता के कानों में पड़ी तो वह देवर के लिए करुण स्वर से आक्रन्दन करने लगी। उसे विलाप करते देख विद्याधरों ने धैर्य बँधाया और मंगल कामना व आशीर्वाद देने के लिए प्रेरित किया।

रामचन्द्रजी की सेना में एक विद्याधरने आकर लक्ष्मण को सचेत करने का उपाय बतलाने के लिए मिलने की इच्छा प्रकट की। भामण्डल ने उसे राम से मिलाया उसने कहा—

लक्ष्मणोपचार आयोजन तथा विशल्या का कथा प्रसंग

मैं सुरगीत नगर के राजा शशिमंडल-शशिप्रभा का पुत्र चन्द्रमण्डल हूँ। एक बार गगन मंडल में भ्रमण करते हुए पूर्ववैरवश

सहस्रविजय ने मेरे पर शक्ति प्रहार किया जिससे मैं मूर्छित होकर अयोध्या के उद्यान में जा गिरा। भरत ने मुझे किसी विशिष्ट जल के प्रभाव से सचेत कर उपकृत किया, उस जल की माहात्म्य कथा आपको बतलाता हूँ।

भरत के मामा द्रोणमुख की नगरी मे महामारी का उपद्रव था, कोई भी उपाय से रोग शान्त नहीं होता था। द्रोण राजा भी रुग्ण था, जब वह स्वस्थ हो गया तो भरत ने उसे पूछा कि आपके यहाँकी बीमारी कैसे गई? तो उसने कहा—मेरी पुत्री विशल्या अत्यन्त पुण्यवान है, उसके गर्भ मे आते ही माता का रोग ठीक हो गया, स्नान करते धायके उसके स्नानजल के छींटे लग गए तो स्नानजलप्रभाव से वहभी निरोग हो गई। जब इस बात की नगर मे ख्याति हुई तो उसका स्नानजल सभी नागरिकों ने ले जाकर स्वास्थ्य लाभ किया। भरत ने मन पर्यवज्ञानी मुनिराज के पधारने पर इस आश्चर्यजनक चमत्कार का कारण पूछा। मुनिराज ने कहा—विजय पुण्डरीकणी क्षेत्र के चक्रनगर मे तिहुणाणंद नामक चक्रवर्ती राजा था, जिसके अनंगसुन्दरी नामक अत्यन्त सुन्दर पुत्री थी। एक बार जब वह उद्यान मेंक्रीडा कर रही थी, तो प्रतिष्ठनगरी के राजा पुणवसु विद्याधर ने उसे अपहरण कर लिया। चक्रवर्ती के सुभटों ने प्रबल युद्ध किया जिससे वह जर्जर हो गया। उसका विमान भग्न हो जाने से वह अनंगसुन्दरी ऊडाकार अटवी मे जा गिरी। उस भयानक जंगल मे अकेली रहते हुए उसने अष्टम और दशम तप प्रारम्भ कर दिया। वह पारणे के दिन फलाहार कर फिर तप प्रारम्भ कर देती। इस प्रकार तीन सौ वर्ष पर्यन्त उसने कठिन तप किया। अन्त मे जब उसने संलेखण पूर्वक चौविहार अनशन ले लिया। मेरु पर्वत के

अपने घर जाने का कहते हुए करुणान्त दुःख करने लगे। जाँबवन्त विद्याधर ने कहा—आप महासत्त्वशील हैं, सूर्य कभी उदय और अस्तकाल में अपना तेज नहीं छोड़ता इस वज्रपात को पृथ्वी की भाँति सहन करें। लक्ष्मण अभी मरा नहीं है, यह तो शक्ति प्रहार की मूर्च्छा है जिसे उपचार द्वारा रातोरात ठीक किया जा सकता है। यदि प्रातःकाल तक ठीक न हुआ तो यह शरीर सूर्य किरण लगते ही प्रातःकाल के बाद निष्प्राण हो जायेगा। राम ने धैर्यधारण किया उनके आदेश से विद्याधरों ने विद्या-बल से सात प्राकार बनाकर सात सेनाओं से सुरक्षित किया। नल नील, अतिबल, कुमुद प्रचण्डसेन, सुग्रीव और भामंडल सातों द्वारों पर शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर लक्ष्मण की रक्षा के लिए तैनात हो गए और उधर कुम्भकरण इन्द्रजित और मेघनाद वानर सेना में कैद थे, जिनके लिए रावण को दुःख करते व लक्ष्मण के शक्ति द्वारा मूर्च्छित होने की बातें सीता के कानों में पड़ी तो वह देवर के लिए करुण स्वर से आक्रन्दन करने लगी। उसे विलाप करते देख विद्याधरों ने धैर्य बँधाया और मंगल कामना व आशीर्वाद देने के लिए प्रेरित किया।

रामचन्द्रजी की सेना में एक विद्याधरने आकर लक्ष्मण को सचेत करने का उपाय बतलाने के लिए मिलने की इच्छा प्रकट की। भामण्डल ने उसे राम से मिलाया उसने कहा—

लक्ष्मणोपचार आयोजन तथा विशल्या का कथा प्रसंग

मैं सुरगीत नगर के राजा शशिमंडल-शशिप्रभा का पुत्र चन्द्र मण्डल हूँ। एक बार गगन मंडल में भ्रमण करते हुए पूर्ववैरवश

सहसविजय ने मेरे पर शक्ति प्रहार किया जिससे मैं मूर्छित होकर अयोध्या के उद्यान मे जा गिरा। भरत ने मुझे किसी विशिष्ट जल के प्रभाव से सचेत कर उपकृत किया, इस जल की माहात्म्य कथा आपको बतलाता हूँ।

भरत के मामा द्रोणमुख की नगरी मे महामारी का उपद्रव था, कोई भी उपाय से रोग शान्त नहीं होता था। द्रोण राजा भी रुग्ण था, जब वह स्वस्थ हो गया तो भरत ने उसे पूछा कि आपके यहाँकी बीमारी कैसे गई? तो उसने कहा—मेरी पुत्री विशलया अत्यन्त पुण्यवान है, उसके गर्भ में आते ही माता का रोग ठीक हो गया, स्नान करते धायके उसके स्नानजल के छींटे लग गए तो स्नानजल प्रभाव से वह भी निरोग हो गई। जब इस बात की नगर मे ख्याति हुई तो उसका स्नानजल सभी नागरिकों ने ले जाकर स्वास्थ्य लाभ किया। भरत ने मन पर्यवज्ञानी मुनिराज के पधारने पर इस आश्चर्यजनक चमत्कार का कारण पूछा। मुनिराज ने कहा—विजय पुण्डरीकणी क्षेत्र के चक्रनगर मे तिहुणाणद नामक चक्रवर्ती राजा था, जिसके अनंगसुन्दरी नामक अत्यन्त सुन्दर पुत्री थी। एक बार जब वह उद्यान मेंक्रीडा कर रही थी, तो प्रतिष्ठनगरी के राजा पुणवसु विद्याधर ने उसे अपहरण कर लिया। चक्रवर्ती के सुभटों ने प्रवल युद्ध किया जिससे वह जर्जर हो गया। उसका विमान भग्न हो जाने से वह अनंगसुन्दरी ऌडाकार अटवी मे जा गिरी। उस भयानक जंगल मे अकेली रहते हुए उसने अष्टम और दशम तप प्रारम्भ कर दिया। वह पारणे के दिन फलाहार कर फिर तप प्रारम्भ कर देती। इस प्रकार तीन सौ वर्ष पर्यन्त उसने कठिन तप किया। अन्त मे जब उसने संलेखण पूर्वक चौविहार अनशन ले लिया। मेरु पर्वत के

जिन मन्दिरों को वन्दनकर लौटते हुए किसी विद्याधर ने उससे कहा कि मैं तुम्हें पिता के यहां पहुंचा दूं ? अनंगसुन्दरी के अस्वीकार करने पर उसने चक्रवर्ती को आकर कहा। चक्रवर्ती जब तक पहुंचा उसे अजगर निगल चुका था। चक्रवर्ती को पुत्री के दुख से वैराग्य हो गया, उसने बाईस हजार पुत्रों के साथ संयम मार्ग ग्रहण कर लिया। अनंगसुन्दरी यदि चाहती तो आत्मशक्ति से अजगर को रोक सकती थी पर उसने शान्ति से उपसर्ग सहा और अनशन आराधना से मर कर देवी हुई। पुनर्वसु विद्याधर भी विरक्त परिणामों से दीक्षित हो कर तप के प्रभाव से देव हुआ। वही देवी च्यवकर द्रोणमुख की पुत्री विशल्या और देव च्यवकर लक्ष्मण के रूप में उत्पन्न हुआ है। पूर्व तपश्चर्या के प्रभाव से उसके स्नानोदक से सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। भरत द्वारा महामारी रोग पैदा होने का कारण पूछने पर मुनिराज ने कहा— गजपुर के विन्ध्य वणिक का भैंसा अतिभार से रुग्ण होकर गिर पड़ा। पर किसी ने उसकी सार सम्भार नहीं की। वह अकाम निर्जरा से मर कर वायुकुमार देव हुआ। वह जातिस्मरण से पूर्वभव का वृत्तान्त ज्ञात कर कुपित हुआ और महामारी रोग फैला दिया। किन्तु कन्या के न्हवण से जैसे सब के रोग गए वैसे ही विद्याधर ने कहा कि लक्ष्मण भी जीवित हो जायगा। रामचन्द्र ने जाम्बुवदादि मन्त्रियों की सलाह से भामंडल को तुरन्त अयोध्या भेजा।

भामंडल से जब भरत ने लक्ष्मण के शक्ति लगने की बात सुनी तो वह रावण पर कुपित होकर तलवार निकाल कर मारने दौड़ा। भामंडल ने कहा—रावण यहां कहां ? वह तो समुद्र पार है। तब

भरत ने स्वस्थ होकर विशल्या के स्नानजल के लिये आने का कारण ज्ञात किया और जल ले जाने मे जोखम है अतः विशल्या को ही भिजवाना तय किया। भरत को मुनिराज के ये वचन याद आ गये कि विशल्या लक्ष्मण की स्त्रीरत्न होगी। उसने द्रोणमुख से विशल्या को भेजने का कहलाया। पर जब वह विशल्या को भेजने के लिये राजी नहीं हुआ तो कैकेयी ने जाकर भाई को समझाया और विशल्या को सहेलियों के साथ विमान मे बैठा कर लंका की रणभूमि में भेजा। रामचन्द्र ने सहेलियों से परिवृत्त विशल्या का स्वागत किया। उसने लक्ष्मण का अंग-स्पर्श किया तो 'शक्ति' हृदय से निकल कर अग्नि ज्वाला फेंकती हुई बाहर जाने लगी। हनुमान ने जब शक्ति को पकडा तो उसने स्त्री रूप में प्रकट होकर कहा—मैं अमोघ विजया शक्ति हूॅं। एक वार अष्टापद पर प्रभु के सन्मुख मन्दोदरी के नृत्य करते हुए वीणा का तांत टूट जाने से रावण ने अपनी भुजा की नस निकाल कर साध दी जिससे नागराज ने उसे यह अजेय शक्ति दी थी। आज तक इस शक्ति को किसीने नहीं जीता पर विशल्या के तप प्रभाव से मैं पराजित हुई। शक्ति के क्षमा याचना करने पर हनुमान ने उसे मुक्त कर दिया। लक्ष्मण जब सचेत हुआ तो उसने रामसे शक्ति प्रहार और विशल्या द्वारा जीवनदान का सारा वृतान्त ज्ञात किया। मंदिर आदि सुभट लोग उत्सव मनाने लगे तो लक्ष्मण ने कहा– वैरी रावण के जीवित रहते यह उत्सव कैसा ? राम ने कहा—तुम्हारे केसरी सिंह के गूजते रावण मृतक जैसा ही है। विशल्या ने सब सुभटों को भी स्वस्थ कर दिया, मन्दिर आदि सुभटों ने विशल्या का लक्ष्मण के साथ पाणिग्रहण करवा दिया।

जिन मन्दिरों को वन्दनकर लौटते हुए किसी विद्याधर ने उससे कहा कि मैं तुम्हें पिता के यहाँ पहुँचा दूँ ? अनंगसुन्दरी के अस्वीकार करने पर उसने चक्रवर्ती को आकर कहा। चक्रवर्ती जब तक पहुँचा उसे अजगर निगल चुका था। चक्रवर्ती को पुत्री के दुःख से वैराग्य हो गया उसने बाईस हजार पुत्रों के साथ संयम मार्ग ग्रहण कर लिया। अनंगसुन्दरी यदि चाहती तो आत्मशक्ति से अजगर को रोक सकती थी पर उसने शान्ति से उपसर्ग सहा और अनशन आराधना से मर कर देवी हुई। पुनर्वसु विद्याधर भी विरक्त परिणामों से दीक्षित हो कर तप के प्रभाव से देव हुआ। वही देवी च्यवकर द्रोणमुख की पुत्री विशल्या और देव च्यवकर लक्ष्मण के रूप में उत्पन्न हुआ है। पूर्व तपश्चर्या के प्रभाव से उसके स्नानोदक से सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। भरत द्वारा महामारी रोग पैदा होने का कारण पूछने पर मुनिराज ने कहा— गजपुर के विन्ध्य वणिक का भैंसा अतिभार से रुग्ण होकर गिर पड़ा। पर किसी ने उसकी सार सम्भार नहीं की। वह अकाम निर्जरा से मर कर वायुकुमार देव हुआ। वह जातिस्मरण से पूर्वभव का वृत्तान्त ज्ञात कर कुपित हुआ और महामारी रोग फैला दिया। किन्तु कन्या के न्हवण से जैसे सब के रोग गए वैसे ही विद्याधर ने कहा कि लक्ष्मण भी जीवित हो जायगा। रामचन्द्र ने जम्बुवदादि मन्त्रियों की सलाह से भामंडल को तुरन्त अयोध्या भेजा।

भामंडल से जब भरत ने लक्ष्मण के शक्ति लगने की बात सुनी तो वह रावण पर कुपित होकर तलवार निकाल कर मारने दौड़ा। भामंडल ने कहा—रावण यहाँ कहाँ ? वह तो समुद्र पार है। तब

भरत ने स्वस्थ होकर विशल्या के स्नानजल के लिये आने का कारण ज्ञात किया और जल ले जाने में जोखम है अतः विशल्या को ही भिजवाना तय किया। भरत को मुनिराज के ये वचन याद आ गये कि विशल्या लक्ष्मण की स्त्रीरत्न होगी। उसने द्रोणमुख से विशल्या को भेजने का कहलाया। पर जब वह विशल्या को भेजने के लिये राजी नहीं हुआ तो कैकेयी ने जाकर भाई को समझाया और विशल्या को सहेलियों के साथ विमान मे बैठा कर लंका की रणभूमि में भेजा। रामचन्द्र ने सहेलियों से परिवृत्त विशल्या का स्वागत किया। उसने लक्ष्मण का अंग-स्पर्श किया तो 'शक्ति' हृदय से निकल कर अग्नि ज्वाला फेंकती हुई बाहर जाने लगी। हनुमान ने जब शक्ति को पकडा तो उसने स्त्री रूप मे प्रकट होकर कहा—मैं अमोघ विजया शक्ति हूँ। एक बार अष्टापद पर प्रभु के सन्मुख मन्दोदरी के नृत्य करते हुए वीणा का तात टूट जाने से रावण ने अपनी भुजा की नस निकाल कर साध दी जिससे नागराज ने उसे यह अजेय शक्ति दी थी। आज तक इस शक्ति को किसीने नहीं जीता पर विशल्या के तप प्रभाव से मैं पराजित हुई। शक्ति के क्षमा याचना करने पर हनुमान ने उसे मुक्त कर दिया। लक्ष्मण जब सचेत हुआ तो उसने रामसे शक्ति प्रहार और विशल्या द्वारा जीवनदान का सारा वृतान्त ज्ञात किया। मंदिर आदि सुभट लोग उत्सव मनाने लगे तो लक्ष्मण ने कहा—वैरी रावण के जीवित रहते यह उत्सव कैसा? राम ने कहा—तुम्हारे केसरी सिंह के गूजते रावण मृतक जैसा ही है। विशल्या ने सब सुभटों को भी स्वस्थ कर दिया, मन्दिर आदि सुभटों ने विशल्या का लक्ष्मण के साथ पाणिग्रहण करवा दिया।

रावण की मन्त्रणा और शक्ति संचय का प्रयत्न

रावण ने जब लक्ष्मण के जीवित होने का सुना तो मृगांक मन्त्री को बुला कर मंत्रणा की। मन्त्री ने राम लक्ष्मण के प्रताप और बढ़ती हुई शक्ति को देखते हुए सीता को लौटा कर सन्धि कर लेने की राय दी। रावण ने सीता को लौटाने के अतिरिक्त राम से मेल करने की आंशिक राय मान कर राम से कहलाया कि—सीता तो यहाँ रहेगी, आपको लंका के दो भाग दे दू गा मेरे पुत्र व भ्राता को मुक्तकर सन्धि कर लो। राम ने कहा—मुझे सीता के सिवाय राज्यादि से कोई प्रयोजन नहीं, तुम्हारे पुत्रादि को छोड़ने को प्रस्तुत हूँ। दूत ने कहा—रावण की शक्ति के समक्ष राज्य और सीता दोनों गँवाओगे। दूत के वचनों से क्रुद्ध भामण्डल ने खड्ग उठाई तो लक्ष्मण ने दूत को अवध्य कह कर छुड़ा दिया। दूत अपमानित होकर रावण के पास गया और आकर कहा कि राम जीते जी सीता को नहीं छोड़ेगा। रावण ने बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करके दुर्जेय राम को जीतने का निर्णय किया। रावण मन्दोदरी ने शान्तिनाथ जिनालय में बड़े ठाठ से अष्टान्हिका महोत्सव प्रारम्भ किया। नगर में सर्वत्र अमारि और शील व्रत पालन करने की आज्ञा देकर आयंबिल तप पूर्वक रावण जिनालय के कुट्टिम तल पर बैठ कर निश्चल ध्यान पूर्वक जाप करने लगा। वानर सेनाको जब रावण के विद्या सिद्ध करने की बात मालूम हुई तो इसके लिये उनमें चिन्ता व्याप्त हो गई। विभीषण ने राम से कहा—रावण को अभी कब्जे में करने का अच्छा अवसर है। नीति निपुण राम ने कहा—युद्ध के बिना और फिर शान्तिनाथ जिनालय में स्थित होने से उसे मारना योग्य नहीं। हां विद्या सिद्ध न हो इसके लिये अन्य उपाय कर्त्तव्य है।

रावण तप भंग प्रयत्न

विभीषण ने वानर सेना को लंका में जाकर उपद्रव करने का आदेश दिया। उद्वेग पाकर लंका के नागरिक कोलाहल करने लगे। देवों ने राम को इसके लिये उपालंभ दिया कि आप जैसे न्यायप्रिय व्यक्ति को ऐसा करना उचित नहीं। लक्ष्मण ने कहा—बहुरूपिणी विद्या सिद्ध न हो, इसी उद्देश्य से यह उपद्रव किया जा रहा है। हे देव! आप अन्यायी का पक्ष न लेकर मध्यस्थ वृत्ति रखें। देव-प्रजा को कष्ट न देने का निर्देश करके चले गए।

राम ने अंगद आदि वीरों को रावण को क्षुब्ध करने के उद्देश्य से लका में भेजा। अंगद ने शान्तिनाथ जिनालय मे जाकर रावण को फटकारते हुए कहा कि—सीता का अपहरण करके यहाँ दम्भ कर रहे हो। मैं तुम्हारे देखते तुम्हारे अन्तःपुर की दुर्दशा करके ले जाऊँगा। अंगद ने मन्दोदरी के वस्त्राभरण छीन लिए और चोटी पकड कर खींचना प्रारम्भ किया। मन्दोदरी नाना विलाप करती हुई रावण से पुकार-पुकार कर छुडाने की प्राथना करने लगी। पर रावण अपने ध्यान मे निश्चल बैठा था। उसके साहस और ध्यान से बहुरूपिणी विद्या सिद्ध होकर उसकी आज्ञाकारिणी हो गई।

रावण का सीता पर असफल सिद्ध-शक्ति प्रयोग

रावण विद्यासिद्ध होकर परीक्षा करने के लिये पद्मोद्यान में गया और नाना रूप धारण करने लगा। सीता रावण का कटक देखकर यही चिन्ता करने लगी कि इस दुष्ट राक्षस से कैसे छुटकारा होगा? रावण ने सीता से कहा—मैं तुम्हें प्रेम मे अभिभूत होकर यहाँ लाया था पर व्रत

रावण की मन्त्रणा और शक्ति संचय का प्रयत्न

रावण ने जब लक्ष्मण के जीवित होने का सुना तो सुयोग्य मन्त्री को बुला कर मंत्रणा की। मन्त्री ने राम लक्ष्मण के प्रताप और बढ़ती हुई शक्ति को देखते हुए सीता को लौटा कर सन्धि कर लेने की राय दी। रावण ने सीता को लौटाने के अतिरिक्त राम से मेल करने की आंशिक राय मान कर राम से कहलाया कि—सीता तो यहाँ रहेगी, आपको लंका के दो भाग दे दूंगा, मेरे पुत्र व भ्राता को मुक्तकर सन्धि कर लो। राम ने कहा—मुझे सीता के सिवाय राज्यादि से कोई प्रयोजन नहीं, तुम्हारे पुत्रादि को छोड़ने को प्रस्तुत हूँ! दूत ने कहा—रावण की शक्ति के समक्ष राज्य और सीता दोनों गवाओगे। दूत के वचनों से क्रुद्ध भामण्डल ने खड्ग उठाई तो लक्ष्मण ने दूत को अवध्य कह कर छुड़ा दिया। दूत अपमानित होकर रावण के पास गया और जाकर कहा कि राम जीते जी सीता को नहीं छोड़ेगा। रावण ने बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करके दुर्जेय राम को जीतने का निर्णय किया। रावण मन्दोदरी ने शान्तिनाथ जिनालय में बड़े ठाठ से अष्टान्हिका महोत्सव प्रारम्भ किया। नगर में सवत्र अमारि और शील व्रत पालन करने की आज्ञा देकर आयंबिल तप पूर्वक रावण जिनालय के कुट्टिम तल पर बैठ कर निश्चल ध्यान पूर्वक जाप करने लगा। वानर सेनाको जब रावण के विद्या सिद्ध करने की बात मालूम हुई तो इसके लिये उनमें चिन्ता व्याप्त हो गई। विभीषण ने राम से कहा—रावण को अभी कब्जे में करने का अच्छा अवसर है। नीति निपुण राम ने कहा—युद्ध के बिना और फिर शान्तिनाथ जिनालय में स्थित होने से उसे मारना योग्य नहीं! हाँ विद्या सिद्ध न हो इसके लिये अन्य उपाय कर्त्तव्य हैं।

वल से उसे नया रथ दे दिया उसने जव भामण्डल, हनुमान और सुग्रीव को रथ रहित कर दिया तो विभीषण आगे आया। रावण के ससुर ने जव उसे भी तीरों से विद्ध कर दिया तो रामने विभीषण की सहायता के लिए वाण वर्षा करके रावण के ससुर को भगा दिया। रावण क्रुद्ध होकर आगे आया तो लक्ष्मण ने उसे जा ललकारा। रावण के की हुई वाण-वर्षा को लक्ष्मण ने कंकपत्र द्वारा निष्फल कर दिया। रावण जव नि शस्त्र हो गया तो उसने वहुरूपिणी विद्या को स्मरण किया। रावण के मेह शस्त्र को लक्ष्मण ने पवन से, अन्धकार को सूर्य तेज से, साप को गरुड से हटा दिया तव वहुरूपिणी विद्यावल से रावण ने उसे छलना प्रारम्भ कर दिया। कहीं, रावण मृतक पडा दीखता तो कभी हजारों भुजाओं से युद्ध करता हुआ, इस प्रकार, नाना प्रकार के अगणित रूप करनेवाले रावण द्वारा प्रक्षिप्त शस्त्रों को भी जव लक्ष्मण ने निष्फल कर दिया तो उसने अपने अन्तिम उपाय चक्ररत्न को स्मरण किया। चक्ररत्न सहस्त्र आरोंवाला मणिरत्नमय ज्योतिपूर्ण और अमोघ था। रावण ने लक्ष्मण के सामने चक्र फैंका, लक्ष्मण के पास सभी सुभट उपस्थित थे, उनके द्वारा दूसरे सभी हथियारों को छिन्न-भिन्न कर देने पर भी चक्ररत्न अवाध गति से लक्ष्मण के पास आकर उसके हाथों पर स्थित हो गया। सारी सेना मे लक्ष्मण के वासुदेव प्रकट होने से आनन्द की लहर छा गई। अनन्तवीर्य मुनि के वचन सत्य हुए।

अहंकारी रावण का पतन

रावण जो प्रतिवासुदेव था, लक्ष्मण के वासुदेव रूप मे प्रकट होने से अपनी करणी पर मन-ही-मन पश्चाताप प्रकट करने लगा। विभीषण

भंग के भय से तुम्हें भोग न सका पर अब भी नहीं मानोगी तो मैं बल प्रयोग करूँगा। सीता ने कहा—यदि मेरे पर तुम्हारा स्नेह है तो परमार्थ की बात कहती हूं कि जब तक राम लक्ष्मण और भामण्डल जीवित हैं तभी तक मैं जीवित रहूँगी। सीता यह कहते हुए मरणासन्न हो गिर पड़ी। रावण के मन में बड़ा पश्चात्ताप हुआ। वह कहने लगा—मुझे धिक्कार है, मैंने राम सीता का वियोग कराके बहुत ही बुरा किया। भाई विभीषण से भी विरोध हुआ। मैंने वास्तव में ही कुमतिवश रत्नाश्रव के कुल को कलंकित किया है। अब यदि सीता को लौटाता हूं तो लोग कहेंगे कि लंकापति ने राम लक्ष्मण के भय से सीता को लौटा दिया। अब मुझे युद्ध तो करना ही होगा पर राम लक्ष्मण को छोड़कर दूसरों का ही संहार करूँगा।

युद्ध-कृत संकल्प रावण की वीरता

रावण युद्ध के लिए कृत संकल्प होकर लंका से निकला। मार्ग में उसे नाना अपशकुन हुए। मन्त्री सेनापति और महाजन लोगों के वारण करने पर भी बहुरूपिणी विद्या के बल से वह अपने आगे हजार हाथी और दस हजार अपने जैसे विद्याधरों की रचना करके रणक्षेत्र में उतरा। केशरीरथ पर राम और गरुड़ पर लक्ष्मण आरूढ़ हो गये। भामण्डल, हनुमान आदि सभी सुभट सन्नद्ध होकर उत्तम शकुनों से सूचित हो राक्षस सेना से आ भिड़े। राक्षस और वानर सेना में भयंकर युद्ध छिड़ा। रक्त की नदियाँ बहने लगी। हनुमान द्वारा राक्षसों को हत विक्षत होते देख मन्दोदरी का पिता आगे आया हनुमान ने उसे तीरों से बींध कर रथ का चकनाचूर कर डाला। रावण ने विद्या

बल से उसे नया रथ दे दिया उसने जब भामण्डल, हनुमान और सुग्रीव को रथ रहित कर दिया तो विभीषण आगे आया। रावण के ससुर ने जब उसे भी तीरों से विद्ध कर दिया तो रामने विभीषण की सहायता के लिए बाण वर्षा करके रावण के ससुर को भगा दिया। रावण क्रुद्ध होकर आगे आया तो लक्ष्मण ने उसे जा ललकारा। रावण के की हुई बाण-वर्षा को लक्ष्मण ने कंकपत्र द्वारा निष्फल कर दिया। रावण जब नि शस्त्र हो गया तो उसने बहुरूपिणी विद्या को स्मरण किया। रावण के मेह शस्त्र को लक्ष्मण ने पवन से, अन्धकार को सूर्य तेज से, साप को गरुड से हटा दिया तब बहुरूपिणी विद्याबल से रावण ने उसे छलना प्रारम्भ कर दिया। कहीं, रावण मृतक पडा दीखता तो कभी हजारों भुजाओं से युद्ध करता हुआ, इस प्रकार, नाना प्रकार के अगणित रूप करनेवाले रावण द्वारा प्रक्षिप्त शस्त्रों को भी जब लक्ष्मण ने निष्फल कर दिया तो उसने अपने अन्तिम उपाय चक्ररत्न को स्मरण किया। चक्ररत्न सहस्त्र आरोंवाला मणिरत्नमय ज्योतिपूर्ण और अमोघ था। रावण ने लक्ष्मण के सामने चक्र फेंका, लक्ष्मण के पास सभी सुभट उपस्थित थे, उनके द्वारा दूसरे सभी हथियारों को छिन्न-भिन्न कर देने पर भी चक्ररत्न अबाध गति से लक्ष्मण के पास आकर उसके हाथों पर स्थित हो गया। सारी सेना में लक्ष्मण के वासुदेव प्रकट होने से आनन्द की लहर छा गई। अनन्तवीर्य मुनि के वचन सत्य हुए।

अहंकारी रावण का पतन

रावण जो प्रतिवासुदेव था, लक्ष्मण के वासुदेव रूप मे प्रकट होने से अपनी करणी पर मन-ही-मन पश्चाताप प्रकट करने लगा। विभीषण

ने अवसर देखकर फिर रावण को समझाया, पर उसने अहंकार के वशीभूत होकर कहा—चक्ररत्न का भय दिखाते हो ? लक्ष्मण ने उसकी धृष्टता चरम सीमा पर पहुँची देखकर उस पर चक्ररत्न छोड़ा जिसके प्रहार से रावण मरकर धराशायी हो गया। रावण के मरते ही उसकी सारी सेना राम की सेना में मिल गई। राम विजयी हुए।

विभीषण शोक तथा रावण की अन्त्येष्टि

रावण को मरा देखकर विभीषण भ्रातृ-शोक से अभिभूत होकर विलाप करता हुआ आत्म घात करने लगा जिसे राम ने समझा-बुझाकर शान्त किया। मन्दोदरी आदि रानियों को भी करुण-क्रन्दन करते देख रामचन्द्र ने आकर समझाया और रावण के दाह संस्कार की तैयारी की। इन्द्रजित् व कुम्भकरण आदि को मुक्त कर दिया गया। राम, लक्ष्मण ने रावण की अन्त्येष्टि में शामिल होकर उसे पद्मसरोवर पर जलांजलि दी।

रावण परिवार का चारित्र-ग्रहण

दूसरे दिन लंकापुरी के उद्यान में अप्रमेयबल नामक मुनि छप्पन हजार मुनियों के साथ पधारे, जिन्हें वहाँ अर्द्धरात्रि के समय केवल ज्ञान उत्पन्न हो गया। राम लक्ष्मण, इन्द्रजित् कुम्भकरण, मेघनाद आदि सभी लोग केवली भगवान को वन्दनार्थ आए। केवली भगवान की वैराग्यवासित देशना श्रवण कर कुम्भकरण मेघनाद इन्द्रजित् ने उनके पास चारित्र-ग्रहण कर लिया। मन्दोदरी पति पुत्रादि के वियोग से दुःख विह्वल थी उसे संयमश्री प्रवर्तिनी ने प्रतिबोध देकर अठावन हजार चन्द्रनखादि स्त्रियों के साथ दीक्षित किया।

राम का लंका प्रवेश

सुग्रीव हनुमान और भामण्डलादि के साथ राम लक्ष्मण लंका-नगरी मे प्रविष्ट हुए। उनके स्वागत मे सारा नगर अभूतपूर्व ढङ्ग से सजाया गया। राम पुष्पगिरि पर्वत के पास पद्मोद्यान मे जाकर सीता से मिले। राम के दर्शन से सीता का विरह दु ख दूर हुआ, देवों ने पुष्पवृष्टि की। सवत्र सीता सती के शील की प्रशंसा होने लगी। लक्ष्मण ने सीता का चरण स्पर्श किया, भाई भामण्डल, सुग्रीव, हनुमान आदि सबसे मिलने के पश्चात् गजारूढ होकर सीता, राम, लक्ष्मण रावण के भवन मे आये। सर्वप्रथम शान्तिनाथ जिनालय में पूजन स्तवन करके शोक सन्तप्त रत्नाश्रव, सुमालि विभीपण, मालवन्त आदि को आश्वस्त किया। राम ने विभीपण को लका का राज्य दिया। विभीषण ने सबको अपने यहाँ बुलाकर खूब भक्ति की। सबने मिल कर राम का राज्याभिपेक करने की इच्छा व्यक्त की तो राम ने कहा—मुझे राज्य से प्रयोजन नहीं, भरत राज्य करता ही है। सीता के साथ राम और विशल्या के साथ लक्ष्मण लंका मे सानन्द रहे। लक्ष्मण की अन्य सभी परिणीताओं को भी बुला लिया गया। राम लक्ष्मण के साथ सहस्रों विद्याधर पुत्रियों का पाणिग्रहण हुआ।

नारद मुनि द्वारा अयोध्या का वर्णन

एक दिन नारद मुनि आकाश मार्ग से घूमते हुए लंका आये। राम ने उन्हें अयोध्या से आये ज्ञातकर भरत के कुशल समाचार पूछे। नारद ने कहा—और तो सब कुशल है पर सीताहरण और लक्ष्मण के संग्राम मे मूर्च्छित होने के बाद विशल्या को अयोध्या से ले जाने

के पश्चात् आपका कोई सम्वाद न मिलने से भरत और माताओं को अपार चिन्ता हो रही है। अयोध्या के समाचारों से राम लक्ष्मण ने नारद मुनि का आभार मानते हुए उन्हें सत्कार पूर्वक विदा किया। तदनन्तर राम ने बिभीषण से अयोध्या जाने के लिए पूछा तो बिभीषण ने सोलह दिन और ठहरने की प्रार्थना की। भरत के पास दूत भेजकर कुशल समाचार कहलाया। भरत दूत को माता के पास ले गया माता ने कुशल समाचार सुनकर दूत को वस्त्राभरणों से सत्कृत किया। अयोध्या नगर में राम लक्ष्मणादि के स्वागत की जोरदार तैयारियाँ होने लगी।

अयोध्याका स्वागत आयोजन और राम का प्रवेश

बिभीषण के आग्रह से १६ दिन और लंका में रह कर राम लक्ष्मण, सीता और विशल्यादि सारा परिवार पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या आया। मार्ग में रामचन्द्रजी ने हाथ के इशारे से अपने प्रवास स्थानों को घटनाचक्र सहित बतलाये। अयोध्या पहुँचने पर चतुरंगिणी सेना के साथ भरत स्वागत करने के लिए सामने आये। नाना प्रकार के वादित्र ध्वनि व मानव-मेदिनी के जय-जयकार युक्त वातावरण में अयोध्या में राम लक्ष्मण सपरिवार प्रविष्ट हुए।

अयोध्या की वीथिकाएँ सुगन्धित जल से छींटी गई। गृह द्वार केशर से लींपे गये पचवर्ण के पुष्प बरसाये गये। मुक्ताओं से चौक पूरा कर तोरण बांधे गए। ध्वजा-पताकाएँ और रत्नमालाएँ लटकाई गई। जिनालयों में सतरह प्रकारी पूजा व महोत्सव प्रारम्भ हुए। बिभीषण की आज्ञा से विद्याधरों ने मणिरत्नादि की वृष्टि की। स्थान

स्थान पर नाटक होने लगे। सधवा स्त्रियाँ पूर्ण कुम्भ धारण कर वधा रही थीं। सब लोग राम लक्ष्मण, सीता, विशल्या, हनुमान, भामंडल आदि के गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। सर्वप्रथम राम जब सपरिवार माताओं के महल मे गए तो सुमित्रा, अपराजिता और कैकयी ने पुत्रों व पुत्र-बधुओं का स्वागत किया, राम, लक्ष्मण सपरिवार माताओं के चरणों में गिर पडे। सर्वत्र हर्ष और उत्साह की लहरें उमडने लगी। भरत शत्रुघ्न ने भ्राताओं के चरणों मे नमस्कार किया। राम लक्ष्मणादि की रानियाँ भिन्न-भिन्न महलो मे आनन्द-पूर्वक रहने लगी।

भरत चारित्र-ग्रहण

एक दिन भरत ने प्रबल वैराग्यवश राम के पास आकर दीक्षा लेने की आज्ञा मागते हुए कहा—यह राजपाट संभालिये, मैं असार संसार को त्याग कर मुनि-दीक्षा लूँगा। मेरी पहले से ही मुनि बनने की इच्छा थी, पर माता के आग्रह से राज्य भार स्वीकार करना पडा अब कृपा कर मुझे अपने चिर मनोरथ पूर्ण करने का अवसर दें। राम ने भरत को बहुत समझाया पर उसकी आत्मा संयम रग मे रंजित थी। कुलभूषण केवली के अयोध्या पधारने पर भरत ने हजार राजाओं के साथ चारित्र ग्रहण कर लिया। निर्ग्रन्थ राजर्षि भरत तप संयम से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

राम-राज्याभिषेक

सुग्रीव आदि विद्याधरों ने राम को राज्य ग्रहण करने की प्रार्थना की तो राम ने कहा—लक्ष्मण वासुदेव है, उसका राज्याभिषेक करो,

उसके राजा होनेसे मैं स्वत ही राजा हो गया क्योंकि यह मेरा विनीत व आज्ञाकारी है। तदनन्तर विद्याधरों ने राम लक्ष्मण का अभिषेक किया। राम बलदेव व लक्ष्मण वासुदेव हुए। सीता और विशल्या पट्टरानियां हुईं। राम ने विभीषण को लंका का राज्य सुग्रीव को किष्किन्धा हनुमान को श्रीपुर चन्द्रोदर के पुत्र को पाताल लंका, रत्नजटी को गीतनगर, भामण्डल को दक्षिण वैताढ्य का राज्य देकर सन्तुष्ट किया। अर्द्ध भरत को साधकर राम लक्ष्मण सुखपूर्वक अयोध्या का राज्य करने लगे।

सीता कलंक उपक्रम व सीता की सौतों का विद्वेष

एक दिन सीता ने स्वप्न में सिंह को आसमान से उतर के अपने मुख में प्रविष्ट होते देखा एवं अपने को विमान से गिरकर पृथ्वी पर पड़ते देखा। उसने तुरत राम से अपने स्वप्न की बात कही। राम ने उसके पुत्र युग्म होने का फलादेश बतलाते हुए विमान से गिरने का फल कुछ अशुभ प्रतीत होता है, बतलाया। सीता ने सोचा न मालूम मैंने पूर्व जन्म में कैसे पाप किये थे जिनका अभी तक अन्त नहीं आया। तदनन्तर वसन्त ऋतु आने से सब लोग फाग खेलने के लिए प्रस्तुत हुए। राम सीता और लक्ष्मण विशल्या को फाग खेलते देख प्रभावती आदि सीता की सपत्नियां सौतिया डाह से जलने लगी। उन्होंने परस्पर विमर्श करके सीता को राम के मन से उतार देने का षड्यंत्र रचा और सरल स्वभावी सीता को बुलाकर पूछा कि—रावण का कैसा रूप था? तुमने पद्मवाड़ी में बैठे अवश्य ही उसे देखा होगा? सीता ने कहा—मैं तो नीचा मुख किये अश्रुपात करती रहती थी, मैंने उसके सामने

नजर उठा के भी नहीं देखा। सौतने पूछा—कोई तो रावण का अगोपांग दृष्टिगोचर हुआ ही होगा? सीता ने कहा—नीची दृष्टि किये होने से उसके पाँव तो अनायास ही दीख गये थे। सौत ने कहा—हमे चरण ही आलेखन कर दिखाओ, हमारे मन मे उसे देखने का वडा औत्सुक्य है। इस प्रकार सीता को भ्रमा कर उससे चित्रालेखन करवा के राम को दिखाते हुए कहा कि आप जिसके प्रेम मे लुब्ध हैं वह सीता तो अहर्निश रावण के ध्यान मे, चरण-सेवा मे निमग्न रहती है। हमने कई वार उसे ऐसा करते हुए देखा पर सोचा कौन किसीकी बुराई करे, आज अवसर पाकर आप से कहा है। स्त्री-चरित्र वडा विकट है, यदि विश्वास न हो तो ये चरणों के चित्र का प्रत्यक्ष प्रमाण देख लें। राम के मन मे सीता के शील की पूरी प्रतीति थी, अत. उन्होंने सीता पर लेश मात्र भी सन्देह न लाकर अन्य रानियों के कथन को केवल सौतिया डाह ही समझा।

एक दिन गर्भ के प्रभाव से सीता को दोहद उत्पन्न हुआ कि मैं जिनेश्वर की पूजा करूं, शास्त्र श्रवण करूं, मुनिराजों को दान दूँ। इस दोहद के पूर्ण न होने से उसे दुर्बल और उदास देख कर राम ने कारण ज्ञात किया और वडे समारोह के साथ उसका दोहद पूर्ण किया। एकदा सीता की दाहिनी आँख फरकने लगी। उसने राम के समक्ष भावी चिन्ता व्यक्त कर राम के कथनानुसार दान पूजा आदि का उपचार किया।

सीता कलंक कथा प्रसंग एव राम विकल्प तथा सीता का अरण्य निष्काशन

भावी प्रबल है। राम के अन्त:पुर मे और वाहर भी सीता के

सम्बन्ध में आशंकाएं फैल गई कि परस्त्रीलंपट रावण के यहां इतने दिन रह कर अवश्य ही वह शील बचा नहीं सकी होगी, पर राम ने केवल प्रेम व अभिमानवश ही उसे पुनः स्वीकार किया है। इस प्रकार नगर की नाना अफवाहें सेवक द्वारा राम ने सुनी और दुःखी होकर स्वयं रात्रिचर्या के छिपे नगर में निकल पड़े। राम किसी कारू के गृह द्वार पर कान लगा कर सुनने लगे। उस गृहस्वामी की पत्नी विलम्ब से घर में लौटी थी और वह उसे गाली देते हुए कहने लगा कि मुझे राम जैसा मत समझ लेना, मैं तुम्हें घर में नहीं प्रविष्ट होने दूंगा। राम ने अपने प्रति मेहणा सुन कर बड़ा खेद किया और जले पर नमक छिड़कने जैसा अनुभव किया। राम ने सोचा, लोग कैसे तुच्छ बुद्धि और अवगुणग्राही होते हैं? दुष्ट व दुर्जनों का काम ही पराया घर मांगने का है! उल्लू को सूर्य नहीं सुहाता। सर्वत्र सीता का अपयश हो रहा है भले ही झूठ ही हो पर लोगों में निन्दा तो हो ही रही है अतः अब भी मैं सीता को छोड़ दूं तो अच्छा ही है। इस प्रकार विकल्प जाल में राम को चिन्तातुर देखकर लक्ष्मण ने चिन्ता का कारण पूछा। राम ने नगर में फैले हुए सीता के अपयश की बात कही तो लक्ष्मण ने कुपित होकर कहा—जो सीता का अपवाद करेगा उसका मैं विनाश कर दूंगा। राम ने कहा—लोक लोक है, किस किस का मुंह पकड़ोगे? लक्ष्मण ने कहा—लोग भख मारें सीता सच्ची शीलवती है, परमात्मा साक्षी है। राम ने कहा—तुम्हारा कहना ठीक है पर अब सीता का त्याग किये बिना अपयश दूर नहीं होगा। लक्ष्मण ने बहुत मना किया पर राम ने उसकी एक न सुनी और सारथी कृतान्तमुख को बुला कर आज्ञा दी कि तुम तीर्थयात्रा की दोहद पूर्ति के बहाने सीता

को ले जाकर डंडाकार अटवी मे छोड आओ। उसने सीता को रथ मे बैठा कर सत्वर अटवी का मार्ग लिया। रास्ते में नाना अपशकुनों के होते हुए भी ग्राम, नगर, पर्वतों को उल्लंघन कर सारथी ने सीता को डंडाकार अटवी मे लाकर पहुँचा दिया। वहाँ नाना प्रकार के फल फूलों के वृक्ष और घना जंगल था और सिंघ व्याघ्रादि हिंस्र पशु प्रचुरता से निवास करते थे। सीता ने सारथी से पूछा—राम आदि सब परिवार कहा रह गया व मुझे अकेली को यहाँ कैसे लाये ? सारथी ने कहा—चिन्ता न करें माताजी सब लोग पीछे आ रहे है। नदी पार होने के अनन्तर सारथी ने आँखों मे आँसू लाकर सीता को रथ से उतार कर राम के कुपित होकर त्यागने का सन्देश सुना दिया। सीता वज्राहत की भाँति सुनते ही मूर्च्छित हो गई। थोडी देर मे सचेत होकर कहा—मुझे अयोध्या ले जाकर सत्य प्रमाणित होने का अवसर दो। सारथी ने दुखित होकर अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए सीता को रोते कलपते छोडकर अयोध्या की ओर रथ को घुमा लिया।

शोक संतप्त सीता की वज्रजंघ से भेट और सकुशल आवास प्राप्ति

सीता अकेली व असहाय अवस्था में भयानक अटवी मे बैठी हुई नाना विलाप करने लगी। कभी वह पति, देवर, पीहर, ससुराल वालों को उपालंभ देती और कभी अपने पूर्वकृत पापों को दोष देती हुई पश्चाताप करने लगती। अन्त मे वह वैराग्य परिणामों से नवकार मंत्र स्मरण करती हुई एक स्थान पर बैठ गई।

इधर पुण्डरीकपुर का राजा वज्रजंघ हाथियों को पकड़ने के लिये इस जंगल में आया हुआ था। उसने सीता को रोते हुए देखा। अद्भुत सौन्दर्यवाली महिला को इस अटवी में देख कर उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। उसने अपने मन में विचार किया कि यह अवश्य ही किसी राजा की रानी है, और गर्भवती भी है न मालूम किस कष्ट में पड़ी हुई है? राजा ने अपने सेवकों को सीता के निकट भेजा। उसने भयभीत होकर आभरण फेंकते हुए कहा कि—मुझे स्पर्श न करना। सेवकों ने कहा—बहिन तुम कौन हो? हमें आभूषणों से कोई प्रयोजन नहीं हमारे स्वामी राजा वज्रजंघ ने तुम्हारी खबर करने भेजा है। इतने में ही वज्रजंघ स्वयं मन्त्री मतिसागर के साथ वहां आ पहुंचा। उसने सीता से परिचय पूछा तो उसने मौन धारण कर लिया। मंत्री ने कहा—विपत्ति किसमें नहीं आती, तुम निस्संकोच अपना दुःख कहो। ये मेरे स्वामी राजा वज्रजंघ आर्हत् धर्मोपासक सदाचारी और दृढ़ सम्यक दृष्टि हैं स्वधर्मी के प्रति अत्यन्त स्नेह रखते हैं। तुम निर्भय होकर अपने भाई से बोलो। मंत्री की बातों से आश्वस्त होकर सीता ने वज्रजंघ से अपनी सारी कथा कह सुनाई। वज्रजंघ ने सीता को धैर्य बंधाते हुए कहा—तुम मेरी धर्मबहिन हो मेरे नगर में चलकर आराम से अपने शील की रक्षा करते हुए धर्माराधन करो। इस समय स्वधर्मी बन्धु के शरण में जाना ही श्रेयस्कर समझकर राजा के साथ सीता पुण्डरीकपुर चली गई। राजा ने बड़े सम्मान से दास दासियों के सहित उसे अलग महल दे दिया जिसमें वह सुखपूर्वक काल निर्गमन करने लगी। सभी लोग सीता के शील की प्रशंसा और राम के अविचारपूर्ण दुर्व्यवहार की निन्दा करने लगे।

धीर एवं संयमी राम की गम्भीर विकलता

कृतान्तमुख सारथी ने सीता को वन मे छोडने और सीता द्वारा कहे हुए वाक्यों को राम के सन्मुख निवेदन किया। उसने कहा—सीता को नदी पार होने के पश्चात् जब मैने अटवी मे छोडा तो उसने रुदन और विलाप के द्वारा वन के मृगों तक को रुला दिया। उसने कह-लाया है कि मैने जान या अनजान मे कोई अपराध किया हो तो क्षमा करना व मुझे जैसे बिना परीक्षा किए हुए अटवी मे छोड दिया वैसे आर्हत धर्म रूपी रत्न को मत छोड देना। सीता का सन्देश सुन कर राम मूर्च्छित होकर गिर पड़े और थोडी देर मे सचेत होने पर सीता के गुणों को स्मरण कर नाना विलाप करने लगे। उनको नाना विलाप करते देख लक्ष्मण ने धैर्य बँधाया। राम ने कहा—उस भयंकर अटवी मे उसे हिंस्र पशुओं ने मार डाला होगा, किसी तरह उनसे बच भी गई तो वह मेरे विरह मे जीवित नहीं बची होगी।—अत· उसके निमित्त पुण्य कार्य व देव-गुरु वन्दन करके शोक त्यागो। राम सीता के गुणों को स्मरण करते हुए राजकाज मे लग गये।

लव-कुश जन्म और उनकी वीरता का कथा प्रसंग

वज्रजंघ राजा के यहाँ रहते हुए सीता ने गर्भकाल पूर्ण होने पर पुत्र युगल को जन्म दिया। राजा ने भानजों के जन्म का उत्सव किया और प्रचुर वधाईया बाँटी। दसूठन के दिन समस्त कुटुम्ब परिवार को भोजन कराके अनंगलवण और मदनांकुश यह कुमारों का नामकरण सस्कार किया। सिद्धारथ नामक क्षुल्लक जो ज्योतिष-निमित्तमे प्रवीण थे, तीर्थ यात्रा के निमित्त घूमते हुए सीता के यहाँ आये। सीता ने

उन्हें आहार पानी से प्रतिपाला। क्षुल्लक ने पुत्रों का परिचय प्राप्त कर भावी सुख की भविष्यवाणी की। दोनों कुमार बड़े होकर बहत्तर कलाओं में प्रवीण शूरवीर और साहसी हुए। राजा वज्रजंघ ने अनंगलवण को शशिचूलादि अपनी बत्तीस कन्याएँ दी एवं साथ ही मदनांकुश का पाणिग्रहण करने के लिये पृथिवीपुर के पृथु राजा के पास उसकी पुत्री कनकमाला की मांग की। राजा पृथु ने कुपित होकर अज्ञात कुलशील को अपनी पुत्री देना अस्वीकार करते हुए दूत को अपमानित करके निकाल दिया। वज्रजंघ ने पृथु के देश में लूट पाट व उत्पात मचा कर उसे युद्ध के लिये बाध्य किया। वज्रजंघ के पुत्र युद्ध के निमित्त तैयार हुए तो लवण और अंकुश भी सीता को समझा बुझा कर युद्ध के लिये साथ हो गये। ढाई दिन पर्यन्त कूच करते हुए पृथु से जा भिड़े। दोनों ओर की सेनाओं में तुमुल युद्ध हुआ। लव और अंकुश दोनों शेर की तरह टूट पड़े और अल्पकाल में शत्रु सेना को परास्त कर दिया—पृथु राजा ने कुमारों के प्रौढ़ पराक्रम से ही उनके कुलवंश की उच्चता का परिचय पाकर क्षमा याचना की।

नारद द्वारा लव-कुश का वास्तविक परिचय तथा लव-कुश की अयोध्या जिज्ञासा

इसी अवसर पर नारद मुनि आये और उनके द्वारा सीताराम के नन्दन दोनों कुमारों का परिचय प्राप्त कर सब लोग प्रसन्न हुए। तब अंकुश दोनों ने नारद से पूछा कि अयोध्या यहाँ से कितनी दूर है? नारद ने कहा—एक सौ योजन की दूरी पर अयोध्या है जहाँ तुम्हारे पिता राम और चाचा लक्ष्मण का राज्य है। अपनी माँ को

निरपराध छोडने की बात से कुपित होकर उन्होंने वज्रजंघ से अयोध्या पर चढाई करने के लिये सहाय्य मांगा। वज्रजंघ ने वैर लेने के लिये आश्वासन दिया। पृथु राजा ने अपनी पुत्री कनकमाला कुश को परणा दी। कुछ दिन वहाँ रह कर लव, कुश ससैन्य विजय के निमित्त निकल पडे। वज्रजघ की सहायता से गगा सिन्धु पार होकर काश्मीर काबुल, कैलाश पर्यन्त देशों को वशवर्ती कर लिया। फिर माता के पास विजेता लव कुश ने आकर चरण वंदना की। सीता भी पुत्रों की समृद्धि देखकर प्रसन्न हुई। नारद मुनि ने आकर राम लक्ष्मण का राज्य पाने का आशीर्वाद दिया। लव कुश के मन मे अयोध्या पर चढ़ाई करने की उत्कट तमन्ना होने से तुरंत रणभेरी बजा कर सेना को सुसज्जित कर लिया। सीता ने आँखों मे आँसू लाकर पिता व चाचा से युद्ध करने मे अनथ की आशंका बतलाई तो पुत्रों ने पिता व चाचा को युद्ध मे न मार, सैन्य संहार द्वारा मान भंग करने का निर्णयकहकर सीता को आश्वस्त किया।

लव कुश का अयोध्या प्रयाण

लव कुश की सेना के आगे दस हजार पुरुप पेड पौधे हटाकर जमीन समतल करने वाले चल रहे थे। योजनान्तर मे पडाव डालते हुए क्रमश सेना अयोध्या के निकट पहुची। राम ने कुपित होकर सिंह और गरुड वाहन तय्यार करवाये। नारद मुनि ने भामंडल के पास जाकर सीता वनवास, वज्रजंघ के संरक्षण में लव कुश के बड़े होकर प्रतापी होने का सारा वृतान्त सुनाते हुए उनके द्वारा अयोध्या पर चढाई होने की सूचना दी। भामंडल माता, पिता के साथ सीता

के पास गया और परस्पर मिलकर सब प्रसन्न हुए। फिर सीता को साथ लेकर लवकुश को समझाने के उद्देश से उसके पास आये। अब कुश ने सम्मानपूर्वक भामण्डलादि को अपने पक्ष में कर लिया।

लव कुश का राम से युद्ध

केसरीरथ पर रामचन्द्र व गरुड़रथ पर लक्ष्मण आरूढ़ होकर रणभेरी बजाते हुए ससैन्य निकले। उनके साथ वह्निसिख, वालि खिल, वरदत्त सीहोदर, कुलिस, श्रवण हरिदत्त सुरभद्र मित्रम आदि पांच हजार सुभट थे। लव कुश की सेना में अग कुलिंग कांबर सिंहल, नेपाल पारस मगध पानीपत और बब्बर देश के राजा थे। दोनों दल परस्पर भिड़ गये। खून की नदियां बहने लगीं गगनगामी विद्याधरों में भामण्डल लव कुश का सहायक हो गया और उसने विद्युत्प्रभ सुग्रीव पवनवेग आदि को लव कुश की उत्पत्ति बतलाकर सब को उदासीन कर दिया। लव कुश राम लक्ष्मण से युद्ध करने लगे। तीरों की वर्षा से अश्वों को मारकर व रथों को चकनाचूर करके उन्होंने राम लक्ष्मण को विस्मित कर दिया। वज्रजंघ और भामण्डल लव कुश की सहायता कर रहे थे। बलदेव वासुदेव के देवाधिष्ठित अस्त्र उस समय काष्ठ सदृश हो गए। लक्ष्मण जैसा वीर जिसने कोटिशिला उठाई व रावण को मारा था वह भी कुश के सामने निराश होकर अन्तिम उपाय चक्र-रत्न को छोड़ने के लिए प्रस्तुत हो गया। चक्र के छोड़ने पर वह तीन प्रदक्षिणा देकर वापस लक्ष्मण के पास लौट आया। लोगों ने कहा—साधु के वचन असत्य हो रहे हैं मालूम होता है कि भरतक्षेत्र में नये बलदेव

वासुदेव प्रगट हो रहे हैं। सिद्धार्थ ने कहा—चिन्ता की कोई बात नहीं अपने गोत्र मे कभी चक्ररत्न प्रभाव नहीं दिखाता। लक्ष्मण के पूछने पर नारद और सिद्धार्थ ने कहा कि ये दोनों महानुभाव राम के पुत्र हैं। राम ऐसा सुनकर तुरन्त अस्त्र त्याग कर पुत्रों से मिलने के लिए आगे बढ़े। इतने मे ही लव कुश ने रथ से उतर कर पिता को नमस्कार किया। राम ने प्रसन्नता पूवक पुत्रों को आलिंगन पूर्वक सीता के कुशल समाचार पूछे। लक्ष्मण के निकट आने पर कुमारों ने उन्हें प्रणाम किया। सर्वत्र मगलमय वाजित्र बजने लगे, बधाइया बंटने लगी। सीता भी पिता पुत्रों का मिलाप सुन कर विमान द्वारा वापस चली गई। सब ने वज्रजंघ का वडा भारी आभार माना। सारे परिवार के साथ परिवृत्त लव कुश वड़े समारोह के साथ अयोध्या मे प्रविष्ट हुए। सर्वत्र सीता और लव कुश की प्रशंसा होने लगी।

अयोध्या निवास के लिये सीता संकल्प

एक दिन राम के समक्ष सुग्रीव, विभीषण ने निवेदन किया कि पति और पुत्रों की वियोगिनी सीता जो पुडरीकनगरी मे बैठी है, महान दु ख होता होगा। राम ने कहा—मैं जानता हूँ और मेरा भी हृदय कम दु खी नहीं है पर क्या करूँ मैंने लोकापवाद के कारण ही प्राणवल्लभा सीता को छोडा तो अब किसी प्रकार उसका कलंक उतरे, ऐसा उपाय करो। राम की आज्ञा से भामंडल, सुग्रीव और विभीषण सीता के पास गये और उसे अयोध्या चलने के लिए कहा। सीता ने गद्गद् वाणी मे कहा—मुझ निरपराधिनी को छोडा, इस अपार दु ख से आज तक मेरा कलेजा जला रहा है। अब मुझे प्रियतम के साथ महलों में

नहीं रहना है अयोध्या में मेरा आना केवल धीज करके अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए ही हो सकता है अन्यथा मेरे लिये धर्म ध्यान के अतिरिक्त दूसरा कोई प्रयोजन अवशिष्ट नहीं है। सुग्रीव द्वारा यह शर्त स्वीकार करने पर सीता उनके साथ आकर अयोध्या के उद्यान में ठहरी।

सीता-शील की अग्नि परीक्षा

दूसरे दिन प्रातःकाल अन्तःपुर की रानियों ने आकर सीता का स्वागत किया। राम ने आकर अपने अपराधों की क्षमायाचना की। सीता ने चरणों में गिर कर कहा प्रियतम! आपको मैं क्या कहूं। आप पर दुख कातर, दाक्षिण्यवान् और कलानिधि हैं, संसार में आप अद्वितीय महापुरुष हैं, पर मुझ निरपराधिनी को बिना परीक्षा किये आपने रण में छोड़ दिया। अग्नि, पानी आदि पांच प्रकार की परीक्षाएँ करा सकते थे पर ऐसा न किया और मुझे अपने भाग्य भरोसे अटवी में धकेल दिया। वहाँ मुझे हिंस्र पशु मार डालते तो मैं आर्त्त रौद्र ध्यान से मरकर दुर्गति में जाती। किन्तु आपका इसमें कोई दोष नहीं मेरे प्रारब्ध का ही दोष है। मेरा आयुष्य प्रबल था। पुंडरीकपुर नरेश ने भ्राता के रूप में आकर मेरी रक्षा की और आश्रय दिया। अब सुग्रीव मुझे यहां लाया है तो मैं कठिन अग्निपरीक्षा द्वारा अपने उभयकुल को उज्वल करूँगी। राम ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा—मैं जानता हूं कि तुम गंगा की भाँति पवित्र हो पर अपयश न सहन कर सकने के कारण ही मैंने तुम्हारा त्याग किया। अब तुम निर्सकोच जलती अग्नि में प्रविष्ट होकर अपने को निष्कलंक प्रमाणित करो।

सीता ने राम के वचनानुसार अग्निपरीक्षा द्वारा धीज करना स्वीकार किया।

राम ने एक सौ हाथ दीर्घ वापी खुदवा कर उसे अगर चन्दन के काष्ठ से भरवा दी और उसके चारों ओर से अग्नि प्रज्वलित कर दी गयी। सीता धीज करने के लिए प्रस्तुत हुई। सारे नगर के लोग मिलकर हाहाकार करते हुये राम के इस अन्याय की निन्दा करने लगे। निमित्त-प्रभावक सिद्धार्थ मुनि ने आकर कहा—शील गुणादि से सती सीता एकान्त पवित्र है। चाहे मेरु पर्वत पाताल में चला जाय, समुद्र सूख जाय तो भी सीता मे कोई लाछन नहीं। यदि मैं मिथ्या कहता हू तो मुझ प्रतिदिन पंचमेरु की चैत्य-वन्दना करके पारणा करनेवाले का पुण्य निष्फल हो। मैं निमित्त के बल पर कहता हू कि सीता के शील के प्रभाव से तुरन्त अग्नि जल रूप मे परिणत हो जायगी। सकलभूषण साधु के केवलज्ञान उत्पन्न होने पर इन्द्र वन्दनार्थ आया और उसने सीता की अग्निपरीक्षा की बात सुनकर हरिणेगमेषी देव को आज्ञा दी कि निर्मल शीलालंकारधारिणी सती सीता को अग्नि परीक्षा मे सहाय करना। इन्द्र की आज्ञा से हरिणेगमेषी देव सीता की सेवा में आकर उपस्थित हो गया।

राम के सेवकों ने वापी में अग्नि पूर्णतया प्रज्वलित होने की खबर दी। राम अग्नि ज्वाला को देखकर बड़े चिन्तित हुए और नाना विकल्प करने लगे। अग्नि की प्रचण्ड ज्वाला का प्रकाश एक-एक कोश तक फैल गया और धग-धगाट शब्द होने लगा, धूम्र घटा आसमान मे छा गई। लोगों के हाहाकार के बीच सीता ने स्नानादि

कर अर्हन्त् भगवान की पूजा की। नमस्कार मन्त्र का ध्यान करके तीर्थपति मुनिसुव्रत स्वामी को नमस्कार कर वापी के निकट आई और कहने लगी—हे लोकपालो मनुष्यों और देव-देवियों! मैंने श्री राम के सिवा अन्य किसी पुरुष की मन वचन, काया से स्वप्न में भी वांछा की हो राग दृष्टि से देखा हो तो मुझे अग्नि जला कर भस्म कर देना अन्यथा जल हो जाना! सीता ने अग्निप्रवेश किया उसके शील प्रभाव से द्रया मन्द हो गई, अग्नि ज्वाला में से जल का असह्य प्रवाह फूट पड़ा। पानी की बाढ़ से लोग डूबते हुए हाहाकार करने लगे। विद्याधर लोग तो आकाश में चढ़ गए भूचरों की पुकार सुनकर सती सीता ने अपने हाथ से जल-प्रवाह को स्तम्भित कर दिया। लोगों में सर्वत्र आनन्द उत्साह छा गया। लोगों ने देखा वापी के मध्य में देव निर्मित स्वणमणि पीठिका पर सहस्र दल कमलासन पर सीता विराजमान है! देव दुन्दुभि और पुष्प वृष्टि हो रही है। सीता के निर्मल शील की प्रसिद्धि सर्वत्र फैल गई, उभय कुल उज्ज्वल हुए।

सीता का चारित्र ग्रहण

राम ने सीता से क्षमायाचना करते हुए उसे सोलह हजार रानियों में प्रधान पट्टरानी स्थापन करने की प्रार्थना की। सीता ने कहा—नाथ! यह संसार असार और स्वार्थमय है अब मुझे सांसारिक भोगों से पूर्ण विरक्ति हो गई है। अब मुझे केवल चारित्र धर्म का ही शरण है। उसने अपने केशों का तुरन्त लोच कर लिया। सीता के लुंचित केशों को देखकर राम मूर्च्छित हो गए। शीतोपचार से सचेत होने पर विलाप करने लगे। सर्वगुप्ति मुनिराज ने सीता को दीक्षा देकर चरणश्री

प्रवर्त्तिनी को सौंप दिया और वह निर्मल चारित्र का पालन करने लगी। राम को लक्ष्मण ने समझा बुझा कर शान्त किया। राम सपरिवार सकलभूषण केवली को वन्दनार्थ गजारूढ़ होकर आये, साध्वी सीता भी वहाँ बैठी हुई थी। केवली भगवान ने राग, द्वेष का स्वरूप समझाते हुए धर्मदेशना दी। राजा विभीषण ने केवली भगवान से सीता के प्रसंग से राम लक्ष्मण और रावण के साथ संग्राम आदि होने का परमार्थिक कारण पूछा। केवली भगवान ने पूर्व जन्म की कथा इस प्रकार बतलाई।

सीता का पूर्वभव कथा प्रसंग

क्षेमपुरी नगरी मे व्यापारी नयदत्त निवास करता था जिसकी भार्या सुनन्दा की कुक्षी से धनदत्त और वसुदत्त नामक दो पुत्र थे। उसी नगर में सागरदत्त नामक एक व्यापारी था जिसकी स्त्री रत्नाभा के गुणवती नामक लावण्यवती पुत्री थी। पिता ने उसकी सगाई वसुदत्त के साथ व माता ने द्रव्य लोभ से श्रीकान्त नामक उसी नगरी के एक व्यापारी से कर दी। ब्राह्मण मित्र से सम्वाद पाकर वसुदत्त ने श्रीकान्त को तलवार के घाट उतार दिया। श्रीकान्त ने मरते-मरते वसुदत्त के पेट मे छुरा भोंक दिया, दोनों मर के जंगली हाथी हुए और पूर्व जन्म के वैर से परस्पर लड मरे। फिर महिष, वृषभ, वानर, द्वीपी मृग आदि भव किये और क्रोधवश जलचर, स्थलचर आदि जीव योनियों में भटकने लगे। भाई के वियोग से दुखी धनदत्त ने भ्रमण करते हुए साधु के समीप धर्म श्रवण कर श्रावक व्रत ले लिए और आयु पूर्ण होने पर वह स्वर्ग गया। वहाँ से महापुर में पद्मरुचि नामक सेठ के रूपमे उत्पन्न

हुआ। एक दिन सेठ ने गोकुल में मरते हुए बैल को देखकर उसे नवकार मन्त्र सुनाया। जिसके प्रभाव से वह उसी नगरी के राजा छत्रछिन्न की रानी श्रीकान्ता का वृषभ नामक पुत्र हुआ। एक दिन राजकुमार गोकुल में गया, वहाँ उसे जातिस्मरण ज्ञान होने से पूर्वभव स्मरण हो आया। उसने अपने को अन्त समय में नमस्कार महामन्त्र सुनानेवाले उपकारी सेठ की खोजके लिए एक मन्दिर बनवाकर उसमें अपना पूर्वभव चित्रित करवा दिया और सेवकों को निर्देश कर दिया कि जो इस चित्र को देखकर परमार्थ बतलावे, उससे मुझे मिलाना। एक दिन पद्मरुचि सेठ उस मन्दिर में आया और चित्र को गौर से देखते हुए समझ गया कि जिस बैल को मैंने नवकार मन्त्र सुनाया था वही मरकर राजा वृषभ हुआ है और जाति-स्मरण से पूर्व भव ज्ञात कर यह चित्र बनवाया मालूम देता है। सेठ की चेष्टाओं को देखकर सेवक ने राजकुमार को खबर दी। राजकुमार ने जिनेश्वर भगवान को नमस्कार कर सेठ के मना करने पर भी उसे वन्दना की और उपकारी के प्रति आभार प्रदर्शित किया। सेठ ने उसे श्रावक व्रत ग्रहण करने की प्रेरणा की। राजा व सेठ दोनों व्रत पालन कर द्वितीय स्वर्ग में गये। पद्मरुचि वहाँ से च्यवकर नंद्यावर्त्त गाँव के राजा नन्दीश्वर का पुत्र नयणानन्द हुआ वहाँ से चतुर्थ देवलोक गया फिर च्यवकर महाविदेह क्षेत्र के क्षेमपुरी में विपुलवाहन का पुत्र श्रीचन्द्रकुमार हुआ। वह समाधिगुप्तसूरि के पास चारित्र ग्रहण कर पाँचवें देवलोक का इन्द्र हुआ। उस समय गुणवती के कारण भवभ्रमण करते हुए वसुदत्त और श्रीकान्त में से श्रीकान्त मृणालनगर के राजा वज्रकम्बु की रानी हेमवती का पुत्र सयंभू हुआ और वसुदत्त

श्रीशर्मे पुरोहित का पुत्र श्रीभूति हुआ। जिसकी भार्या सरस्वती की कुक्षी से गुणवती का जीव वेगवती नामक पुत्री हुई। वह मृगली के भव से मनुष्य भव मे आकर फिर हथिणी हुई थी, वहाँ कादे मे फँस जाने से चारण मुनि द्वारा नवकार मन्त्र प्राप्त कर वेगवती का अवतार पाया। उसने साधु मुनिराज की निन्दा गर्हा की, पश्चात् पितृ वचनों से धर्म ध्यान करने लगी। रूपवान वेगवती को राजकुमार सयंभू ने पिता से मागा। श्रीभूति के माग अस्वीकार करने पर सयंभू ने उसे रात्रि में मार कर वेगवती से भोग किया। वेगवती ने क्षुब्ध होकर उसे भवान्तर मे मरवा कर बदला लेने का श्राप दिया। वेगवती संयम लेकर तप के प्रभाव से ब्रह्म विमान में देवी उत्पन्न हुई। सयभूकुमार भी भव भ्रमण करता हुआ क्रमश मनुष्य भव में आया और विजयसेन मुनि के पास दीक्षित हुआ। एक वार उसने समेतशिखर यात्रार्थ जाते हुए कनकप्रभ विद्याधर की ऋद्धि देखकर तादृशीऋद्धि प्राप्त करने का नियाणा कर लिया। वहाँ से तीसरे देवलोक मे देव हुआ। वहाँ से च्यवकर वह रावण के रूप मे समृद्धिशाली प्रतिवासुदेव हुआ। धनदत्त का जीव पांचवे देवलोक से च्यवकर दशरथनन्दन रामचन्द्र हुआ। वेगवती ब्रह्म विमान से च्यवकर सीता हुई। गुणवती का भाई गुणधर सीता का भाई भामण्डल हुआ। वसुदत्त का ब्राह्मण यज्ञवल्क मर कर विभीषण और नवकार मन्त्र से प्रतिबोध पानेवाले वैल का जीव सुग्रीव राजा हुआ। इस प्रकार पूर्वभव के वैर से सीता के निमित्त को लेकर रावण का संहार हुआ। सीता ने वेगवती के भव में मुनि को मिथ्या कलंक दिया था जिसके कर्म विपाक से उसे चिरकाल तक कलंक का दुख भोगना पड़ा।

उसने जैसे साधु का कलंक वापस उतारा, वैसे ही सीता अग्नि परीक्षा द्वारा निष्कलंक घोषित हुई। इस प्रकार सकलभूषण केवली ने शुभ व अशुभ कर्मों के फल बतलाते हुए धर्मोपदेश देकर पापस्थानकों से मग्न जीवों को बचने की प्रेरणा दी।

केवली भगवान की देशना सुन कर लव कुश और कृतान्तमुख ने दीक्षा ले ली। राम, लक्ष्मण, विभीषणादि ने सीता को वन्दन करके अपराधों की क्षमा याचना की शान्त चित्त से राज्य भोगने लगे। साध्वी सीता ने निर्मल और निरतिचार चारित्र पालन कर अनशन आराधना पूर्वक आयुष्य पूर्ण करके बारहवें देवलोक में इन्द्र रूप में अवतार लिया जहाँ २२ सागरोपम की आयुस्थिति है। राम-लक्ष्मण चिरकाल तक प्रेमपूर्वक राज्य सम्पदा भोगते हुए काल निर्गमन करने लगे।

राम लक्ष्मण का अनन्य प्रेम, इन्द्र द्वारा परीक्षा

एक दिन इन्द्र ने देवसभा में मोहनीय-कर्म के सम्बन्ध में बात चलने पर उसे बड़ा दुर्द्धर्ष बतलाया और महापुरुष भी उसके ऊपर इस वशीभूत होते हैं इसके उदाहरण स्वरूप कहा कि राम लक्ष्मण का प्रेम इतना गाढा है कि एक दूसरे के विरह में अपना प्राण त्याग कर सकते हैं। इन्द्र के वचनों की परीक्षा करने के लिए कौतुहल पूर्वक दो देव अयोध्या में आये और राम को देवमाया से मृतक दिखा कर अन्तःपुर में हाहाकार मचा दिया। लक्ष्मण ने जब राम का मरण जाना तो उसने तत्काल प्राण त्याग दिया। लक्ष्मण को मरा देखकर देवों के मन में बड़ा भारी पश्चात्ताप हुआ पर गये हुए प्राण वापस

नहीं लौट सकते। लक्ष्मण की रानियो का चीत्कार सुनकर राम ने उसे मूर्छित की भांति समझ कर कहा—मेरे प्राणवल्लभ भ्राता को किसने रुष्ट कर दिया ? राम ने पास मे आकर मोहवश उसे उठा कर हृदय से लगाया, चुम्बन किया। पुकारने पर जब लक्ष्मण न बोला तो पागल की भांति प्रलाप करते हुए वे मूर्छित होकर गिर पडे। थोडी देर में शीतोपचार से सचेत होनेपर उन्होंने फिर विलाप करना प्रारम्भ किया। लक्ष्मण की रानियां भी चीत्कार करती हुई कल्पान्त विलाप करने लगी।

राम ने लक्ष्मण के मृतक कलेवर को मोहवश किसी प्रकार नहीं छोडा। वे उसे अपने पर रुष्ट हो गया समझ रहे थे। सुग्रीव, विभीषण आदि ने लक्ष्मण की अन्त्येष्ठि के हेतु राम को समझाने की बहुत चेष्टा की पर राम ने कहा—दुष्ट पापियों। अपने घरवालों को जलाओ, मेरा भाई जीवित है, मेरे से रुष्ट होकर इसने मौन पकड ली है। राम-लक्ष्मण के कलेवर को कंधे पर उठाकर महलों से निकल पड़े। वे कभी लक्ष्मण को स्नान कराते, वस्त्र पहनाते, मुँह मे भोजन देने की चेष्टा करते। इस प्रकार मोह मूर्छित राम को लक्ष्मण के कलेवर की परिचर्या में भटकते छ मास बीत गये। इधर सम्बुक, खरदूषण का वैर लेने के लिए विद्याधरों ने अयोध्या पर चढाई कर दी। राम को जब आक्रमण का वृतान्त ज्ञात हुआ तो वे लक्ष्मण के कलेवर को एकान्त मे रख कर शत्रुओं के सामने युद्ध को प्रस्तुत हो गये। देव जटायुध और कृतान्तमुख का आसन कंपायमान होने से उन्होंने देवमाया से गगनमंडल में अगणित सुभट प्रस्तुत कर राम को अचिन्त्य सहाय किया जिससे विद्याधरों का दल हार कर भाग गया। देवों ने राम

को प्रतिबोध देने के लिए नाना प्रकार से उपक्रम किया। देवों ने सूखे सरोवर से सिंचन, मृतक बैल से हल जोतना, शिला पर कमल लगाने पानी में बालू पीलने आदि के विपरीत कृत्य दिखाये। राम ने कहा —ये मूर्खतापूर्ण चेष्टाएं क्यों करते हो ? देवों ने कहा—महापुरुष ! आप पैरों में जलती न देख कर पर्वत जलता देखते हो स्वयं मृतक को लिए हुए फिरते हो दूसरों को शिक्षा देते हो। राम ने कहा—मूर्खो अमंगल मत बोलो, मेरे भाई ने मेरे से रुष्ट होकर कदाग्रह कर रखा है। देव महाबुध राम के तीव्र मोहनीय का उदय जानकर और कोई उपाय करने का सोचने लगा।

देव ने एक मृतक स्त्री के मुख में कवल देते हुवे दिखाया। राम ने कहा—मूर्ख ! मृतक को क्या खिलाते हो ? उसने कहा—यह मेरी स्त्री मेरे से रुष्ट हो गई है दुश्मन लोग इसे मृतक कहते हैं अतः इसके वचन असह्य होने से मैं आपके पास आया हूँ। राम ने अपने जैसा ही रोगी उसे समझ कर अपने पास रख लिया। एक दिन दोनों कहीं गये और वापस आते देव-माया से लक्ष्मण को स्त्री से हँसते-बोलते काम-केलि करते दिखाया और राम से कहा—तुम्हारा भाई बड़ा पापी है, मेरी स्त्रीके साथ हास्य विनोद करता है मेरी स्त्री भी बड़ी चपल है। इन दोनों के फेर में अपन दोनों भूल कर रहे हैं। आपने इसके पीछे राजपाट छोड़ा और ये लाज शर्म व मर्यादा त्याग बैठे हैं। ससार असार है कोई किसीका नहीं वीतराग भगवान का धर्म आराधन करना ही श्रेयस्कर है। मरण के भय से कोई भी स्वजन सम्बन्धी बचा नहीं सकते। तुम्हारे भाई को जैसे तुम लाख उपाय करने पर भी न बचा सके तो तुम्हें कौन बचावेगा ? देवता के प्रति

बोध से राम का मोह दूर हो गया। उसने आभार मानते हुये कहा—मुझे दुर्गति से बचाने वाले तुम कौन हो महानुभाव। देवों ने अपना प्रकृत रूप प्रकट करके कहा—मैं जटायुध देव हूँ जो आपके नवकार मंत्र सुनाने से चतुर्थ देवलोक मे उत्पन्न हुआ। और दूसरा यह आपका सेवक कृतान्तमुख देव है। आपको इस प्रकार लक्ष्मण का मृत देह लेकर घूमते देखकर हमलोग प्रतिबोध देने आये हैं।

रामका चारित्र ग्रहण

रामने लक्ष्मण की अन्त्येष्टि करके वैराग्य परिणामों से संसार त्याग करने का निश्चय किया। उन्होंने शत्रुघ्न को बुला कर राज्य सौपना चाहा। शत्रुघ्न ने कहा—मैं तो स्वयं राज्य से विरक्त और आपके साथ चारित्र लेने को उत्सुक हू। राम ने अनंगलवणके पुत्र को राज पाट सौंप दिया। सुग्रीव और विभीषण भी अपने पुत्रों को राज्याभिषिक्त कर राम के साथ दीक्षित होने के लिये आ गये। अरहद्दास श्रावक ने मुनिसुव्रत स्वामी के शासनवर्त्ती सुव्रत साधुके पधारने की सूचना दी और उनके पास चारित्र लेने का सुझाव दिया। राम ने उसको इस समाचार के लिये धन्यवाद देकर अयोध्या में सघपूजा, अष्टान्हिका महोत्सवादि प्रारम्भ कर दिये और निर्दिष्ट मुहूर्त्त मे सोलह हजार राजा और सैंतीस हजार स्त्रियों के साथ सुव्रतमुनि के पास चारित्र ग्रहण कर लिया।

राम का केवलज्ञान, धर्मोपदेश व निर्वाण

महामुनि रामचन्द्र पंच महाव्रत लेकर उत्कृष्ट रूप से पालन करने लगे। वे कूर्म की भांति गुप्तेन्द्रिय और भारण्ड पक्षीकी भांति अप्रमत्त

थ। वे शीतकाल में खुले शरीर शीत परिषह व उष्णकाल में शिलाओं पर आतापना लेकर इन्द्रिय दमन करते थे। निर्मल राम तीव्र त्याग वैराग्य की प्रतिमूर्ति थे। वे सुव्रतसूरि की आज्ञा लेकर अकेले पर्वत और भयानक अटवी में कायोत्सग ध्यान करते एवं नाना अभिग्रह लेकर परिषह उपसर्ग सहते हुए तप संयम से आत्मा को भावित करते थे। उन्हें एक दिन अटवी में तप करते हुए अवधि ज्ञान उत्पन्न हुआ, जिससे उन्होंने लक्ष्मण का नरक की असह्य वेदना सहते हुये देखा और सोचा कर्मों की गति कैसी विचित्र है महापुरुष भी उनसे नहीं छूटते। कर्म विपाक और संसार स्वरूप को प्रत्यक्ष देख कर राम के त्याग वैराग्य में खूब अभिवृद्धि हुई। शुद्ध भावनायें और धर्म ध्यान शुक्ल-ध्यान ध्याते हुए मुनि रामचन्द्र कोटिशिला पर योग निरोध कर कायोत्सर्ग ध्यान में तल्लीन हो गये। सीतेन्द्रने जब अवधि ज्ञान से रामचन्द्र मुनि को ध्यान श्रेणि में चढ़ते हुए देखा तो उसके मन में मोहवश यह विचार आया कि राम को क्षपक श्रेणि से नीचे गिरा दूँ ताकि वे मोक्ष न जाकर देवलोक में मेरे मित्र रूप में उत्पन्न हों और हमलोग प्रेमपूर्वक रहें। इन विचारों से प्रेरित होकर सीतेन्द्र राम के निकट आया और पुष्पवृष्टि करके सीता का दिव्य रूप धारण कर बत्तीस प्रकार के नाटक करने प्रारम्भ कर दिये। नाना हावभाव, विभ्रम करके कभी सीता के रूप में कभी विद्याधर कन्याओं के पाणि ग्रहणादि का प्रलोभन देकर राम को क्षुब्ध करने का भरसक प्रयत्न किया पर सराग वचनों को सुन कर भी रामचन्द्र अपने ध्यान में निश्चल रहे और क्षपक श्रेणि आरोहण कर चार घनघाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगट किया। देवों ने कंचनमय कमल स्थापन

कर केवली भगवान रामचन्द्र की महिमा की। एवं सीतेन्द्र ने वारम्वार अपने अपराधों की क्षमा याचना की।

भगवान रामचन्द्र ने कमलासन पर विराजमान होकर धर्मदेशना दी, जिसे सीतेन्द्रादि सभों ने सुनी और प्रतिबोध पाकर धर्म के प्रति विशेष निष्ठावान हुये। केवली रामचन्द्र पृथ्वी में विचरण कर भव्य जीवों का उपकार करने लगे।

एक वार सीतेन्द्र ने अवधिज्ञान का उपयोग देकर लक्ष्मण और रावण को तीसरी नरक मे असह्य वेदना सहन करते देखा। सीतेन्द्र के मन मे करुणा भाव आने से उन्हें नरक से निकालने के लिए जाकर कहा कि मैं तुम्हें स्वर्ग ले जाऊँगा। उन्होंने कहा—हमे अपने किए हुये कर्मों को भोग लेने दो। सीतेन्द्र ने कहा—मैं आपलोगों का दुःख नहीं देख सकता, और देवशक्ति से मै सब कुछ करने में समर्थ हू। ऐसा कह कर उसने दोनों को उठाया पर उनका शरीर मक्खन की भाँति गलने लगा। उन्होंने कहा—यहाँ देव दानव का कृत कर्मों के समक्ष जोर नहीं चलता। अन्त मे सीतेन्द्र ने उन्हें वैर विरोध त्याग कर के सम्यक्त्व में दृढ रहने की प्रेरणा करके स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया। रावण और लक्ष्मण उपशम भाव से अपना नरकायु पूर्ण करने लगे।

एक दिन सीतेन्द्र ने भगवान रामचन्द्र केवली को प्रदक्षिणा देकर वन्दन नमस्कार पूर्वक पूछा कि लक्ष्मण और रावण नरक से निकल कर कहाँ उत्पन्न होंगे, एवं मेरे से कहा कब मिलन होगा ? तथा हमलोग किस भव में मोक्षगामी होंगे ? रामचन्द्र ने कहा—लक्ष्मण व रावण

नरक से निकल कर विजयनगर में मद श्रावक के पुत्र अरहदास और श्रीदास होंगे। फिर स्वर्गवासी होकर दान के प्रभाव से वे मर कर युगलिया रूप में पैदा होंगे। वहाँ दीक्षा लेकर तप के प्रभाव से लांतक देवलोक में देव होंगे। उस समय तुम अपना आयुष्य पूर्ण कर चक्रवर्ती होओगे तथा ये दोनों तुम्हारे पुत्र होंगे। फिर स्वग का भव करके रावण का जीव मनुष्य भव पाकर तीर्थंकर होगा। तथा तुम चक्रवर्ती के भव में चारित्र पालन कर वैजयंत विमान में जाओगे और तैंतिस सागरोपम का आयु पूर्ण कर रावण के जीव तीर्थंकर के गणधर रूप में उत्पन्न होओगे। लक्ष्मण का जीव चक्रवर्ती पुत्र सुकुमाल भोगरथ कितने ही भव कर पुष्करद्वीप के महाविदेहस्थ पद्मपुर में चक्रवर्ती और तीर्थंकर पद पाकर मोक्षगामी होगा। सीतेन्द्र केवली भगवान की वाणी सुन कर स्वस्थान लौटे। भगवान रामचन्द्र आयुष्य पूर्ण कर निर्वाण पद पाये सिद्ध, बुद्ध मुक्त हुए।

सीतेन्द्र अपना बाईस सागरोपम का आयुष्य पूर्ण करते हुए कई तीर्थंकरों के कल्याणकोत्सवों में भाग लेंगे। वहाँ से च्यवकर उत्तम कुल में जन्म लेकर तीर्थंकर वसुदत्त से दीक्षित होकर उनके गणधर होंगे और आयुष्य पूर्ण कर सिद्धि स्थान प्राप्त करेंगे।

अन्त में गणधर गौतम स्वामी ने महाराजा श्रेणिक से कहा कि इस सीता चरित्र का श्रवण कर शील व्रत धारण करना एवं किसीको मिथ्या कलंक न देने का गुण ग्रहण करना चाहिए।

सीताराम चौपाई में प्रयुक्त राजस्थानी कहावतें

डा० कन्हैयालाल सहल

अपने ग्रन्थों मे कहावतो के प्रचुर प्रयोग की दृष्टि से राजस्थान के कवियों मे कविवर समयसुन्दर का नाम सबसे पहले लिया जाना चाहिए। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ "सीताराम चौपाई" की रचना सं० १६७७ के लगभग मे हुई। यह ग्रन्थ सरल सुबोध भाषा मे लिखा गया है जिसमे लोक प्रचलित ढालों का प्रयोग हुआ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ ६ खण्डों मे समाप्त हुआ है और प्रत्येक खण्ड मे सात-सात ढाल है। लोकोक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से इस ग्रन्थ का विशेष महत्व है। इसमें प्रयुक्त बहुत सी कहावतें यहाँ उद्धृत की जा रही है —

(१) ऊंघ तणइ बिछाणउ लाधउ, आहीणइ दूझाणउ वे।
मूगनइ चाउल माहि, घी वणइ प्रीसाणउ वे॥
(प्रथम खण्ड, ढाल ६, छन्द ५)

(हि० भा० ऊँघती हुई को बिछौना मिल गया।)

(२) छट्ठी रात लिखयउ ते न मिटइ। (प्रथम खण्ड, छन्द ११)

(छठी की रात जो लिख दिया गया, वह अमिट है।)

(३) करम तणी गति कहिय न जाय। (दूसरा खण्ड, छन्द २४)

(कर्म की गति कही नहीं जा सकती।)

(४) तिमिरहरण सुरिज थका, कुण दीवानउ लाग।
(दूसरा खण्ड, ढाल ३, छन्द १२)

(सूर्य के होते दीपक को कौन पूछे?)

(५) रतन चिन्तामणि पामतां, कुण ग्रहइ कहउ काच।
दूध घड़ा कुण छासिनइ पीयइ, सहु कहइ साच॥

(चिंतामणि मिलते काच कौन ग्रहण करे? दूध मिलते छाछ कौन पिए?)

(६) भरतनइ तात किसी प करणी, आपणी करणी पार उतरणी।
(खण्ड १ ढाल ४ कड़ी ६)

(अपनी करनी से सब पार उतरते हैं।)

(७) बालक वृद्ध नइ रोगियउ, साधु बाम्हण नइ गाइ।
अबला एइ न मारिवा, मार्यां महापाप थाइ॥
(खण्ड १, ढाल ७ कड़ी ११)

(बालक, वृद्ध रोगी साधु ब्राह्मण गाय और अबला इन्हें नहीं मारना चाहिए क्योंकि इन्हें मारने से महापातक होता है।)

(८) महिपर राय सुखी थयो मुँग माँहि ढल्यो घीय।
बिछावणौ लाधो ऊंघतां भाग पधारूयो सीय॥
(खण्ड ४, ढाल ४ कड़ी ४)

(घी बिखरा तो मूँगों में। ऊघते को बिछौना मिल गया।)

(९) पांचाँ माइ कहीजियइ परमेसर परसाद।
(खण्ड ५, ढाल १ कड़ी १)

(पंचों में परमेश्वर का प्रसाद कहा जाता है।)

(१०) साधु विचार्यो रे सूत्र कहइ, समरथ सजा देई।
(खण्ड ५, पृष्ठ ८८)

(समर्थ सजा देता है।)

(११) लिख्या मिटइ नहिं लेख।
(खण्ड ५, ढाल १ कड़ी १)

(लिखे लेख नहीं मिटते।)

(१२) मूर्छागत थइ मावडी, दोहिलो पुत्र वियोगि।

(खण्ड ५, ढाल ३, छन्द ११)

(पुत्र वियोग दु सह है।)

(१३) पाछा नावइं जे मुआ।

(खण्ड ५, ढाल ३, छन्द २०)

(मरे हुए वापिस नहीं आते।)

(१४) मइ मतिहीण न जाण्यो, त्रुटइं अति घणो ताण्यो।

(खण्ड ५, ढाल ७, छन्द ४५)

(अधिक तानने से टूट जाता है।)

(१५) कीडी ऊपर केही कटकी।

(कीडी (चींटीं) पर कैसी फौज ?)

(१६) ए तत्व परमारथ कह्यो मइं, त्रुटिस्यइ अति ताणियो।

(खण्ड ६, ढाल १२, छन्द १२)

(अधिक ताना हुआ टूट जाता है।)

(१७)

उखाणउ कहइ लोक, पेटइ को घालइ नहीं अति वाल्ही छुरी रे लो

(खण्ड ८, ढाल १, छन्द १७)

(प्यारी (सोने की) छुरी को भी कोई पेट में नहीं रखता।)

(१८)

खत ऊपरि जिम खार, दुख माहे दुख लागो रामनइ अति घणी रे लो।

(खण्ड ८, ढाल १, छन्द २२, पृष्ट १६२)

(घाव पर नमक, इसी प्रकार राम को दु ख मे दु ख अधिक लगा।)

(५) रतन चिन्तामणि कामता, कुण ग्रहइ कहउ काच।
दूध थकां कुण बासिनइ, पीयइ, सहु कहइ साच॥

(चिंतामणि मिलते काच कौन ग्रहण करे? दूध मिलते छाछ कौन पिए?)

(६) भरतमइ तात किसी प करणी, आपणी करणी पार उतरणी।
(खण्ड १ ढाल ४ छन्द ६)

(अपनी करनी से सब पार उतरते हैं।)

(७) बालक वृद्ध नइ रोगियउ, साधु बामण नइ गाइ।
अबला एइ म मारिवा, मार्यां महापाप थाइ॥
(खण्ड १, ढाल ७ छन्द ११)

(बालक, वृद्ध रोगी, साधु ब्राह्मण गाय और अबला इन्हें नहीं मारना चाहिए क्योंकि इन्हें मारने से महापातक होता है।)

(८) मद्दिपर राय सुखी थयो मूँग मांहि ढल्यो घीय।
विछावणों लाधो ऊंघतां धाम पड़न्ते सीय॥
(खण्ड ४, ढाल ४, छन्द ४)

(घी पिलरा तो मूँगों में। ऊंघते को बिछौना मिल गया।)

(९) पांचों मांइ कहीजियइ परमेसर परसाद।
(खण्ड ५, ढाल १ छन्द १)

(पंचों में परमेश्वर का प्रसाद कहा जाता है।)

(१०) साधु विचारों रे सुत कहेइ समरथ सज्जा देई।
(खण्ड ५, पृष्ठ ८८)

(समय सजा देता है।)

(११) लिख्या मिटइ नहिं लेख।
(खण्ड १ ढाल १ छन्द १)

(लिखे लेख नहीं मिटते।)

(१२) मूर्छागत थइ मावडी, दोहिलो पुत्र वियोगि।

(खण्ड ५, ढाल ३, छन्द ११)

(पुत्र वियोग दु सह है ।)

(१३) पाछा नावइं जे मुआ।

(खण्ड ५, ढाल ३, छन्द २०)

(मरे हुए वापिस नहीं आते।)

(१४) मइ मतिहीण न जाण्यो, त्रुटइं अति घणो ताण्यो।

(खण्ड ५, ढाल ७, छन्द ४५)

(अधिक तानने से टूट जाता है।)

(१५) कीड़ी ऊपर केही कटकी।

(कीडी (चींटीं) पर कैसी फौज ?)

(१६) ए तत्व परमारथ कह्यो मइं, त्रुटिस्यइ अति ताणियो।

(खण्ड ६, ढाल १२, छन्द १२)

(अधिक ताना हुआ टूट जाता है।)

(१७)

उखाणउ कहइ लोक, पेटइ को घालइ नहीं अति वाल्ही छुरी रे लो

(खण्ड ८, ढाल १, छन्द १७)

(प्यारी (सोने की) छुरी को भी कोई पेट मे नहीं रखता।)

(१८)

खत ऊपरि जिम खार, दुख माहे दुख लागो रामनइ अति घणी रे लो।

(खण्ड ८, ढाल १, छन्द २२, पृष्ट १६२)

(घाव पर नमक, इसी प्रकार राम को दु ख में दु:ख अधिक लगा।)

(१६) झूठी राति लिख्या मे अक्षर कुण मिटावइ सोइ।

(झूठी रात को जो अक्षर लिख दिये गये, उनको कौन मिटा सकता है ?)

(२०) आभइ बीजलि उपमा हो। (पृ १७८)

(बादल की बिजली।)

(२१) चूकि गिणइ नहि कोइ। (खण्ड ६, ढाल १ क्रम ११)

(चूककर कोई नहीं काटता।)

ऊपर दी हुई सभी कहावतों के राजस्थानी रूपान्तर आज भी उपलब्ध हैं। इससे कम से कम इतना स्पष्ट है कि कविवर समयसुन्दर के जमाने में उक्त कहावत प्रचलित थीं। कवि ने कहावतों के साथ साथ सूक्तियों और मुहावरों का भी प्रयोग किया है। कहीं-कहीं संस्कृत सूक्तियों का अनुवाद भी कर दिया है। उदाहरणार्थ —

'जीवतो जीव कल्याण देखइ" (पृष्ठ १०४) वाल्मीकि रामायण के "जीवन्भद्राणि पश्यति" का अनुवाद मात्र है। 'सीताराम चौपाई' में यह उक्ति राम की हनुमान के प्रति है। राम हनुमान से कहते हैं कि ऐसा प्रयत्न करना जिससे सीता जीवित रहे। वाल्मीकि रामायण में आत्महत्या न करने का निश्चय करते हुए स्वयं हनुमान कहते हैं कि यदि मनुष्य जीता है तो कभी न कभी अवश्य कल्याण के दर्शन करता है इसी प्रकार जीसायौं अंगीकार नहि उवमनइ आचार" "अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति" का स्मरण दिलाता है। कहावत के लिए कवि ने 'उखाणउ का प्रयोग किया है। एक स्थान पर सूत्र शब्द का प्रयोग हुआ है। कहावत भी वस्तुतः एक प्रकार का वाक्सूत्र ही है।

महोपाध्याय कविवर समयसुन्दर विरचित

सीताराम चौपाई

।। दूहा ।।

स्वस्ति श्री सुख सपदा, दायक अरिहत देव ।।
कर जोडी तेहनइ करू , नमसकार नितमेव ।।१।।

निज गुरु चरणकमल नमु , त्रिण्ह तत्व दातार ।
कीडी थी कुजर कियउ, ए, मुझ नइ उपगार ।।२।।

समरूँ सरसति सामिणी, एक करूँ अरदास ।।
माता दीजै मुज्झ नइ, वारूँ वचन विलास ।।३।।

संबपजून (१) कथा सरस, **प्रत्येकबुद्ध** (२) प्रबन्ध ।।
नलदवदन्ति (३) **मृगावती**(४), चउपई च्यार सबध ।।४।।

माई तु आवी तिहाँ, समर्या दीधउ साद ।।
सीताराम सबध परिण, सरसति करे प्रसाद ।।५।।

कलक न दीजइ केहनइ, वली साध नइ विशेषि ।।
पापवचन सहु परिहरउ, दुःख सीता नउ देखि ।।६।।

सील रतन पालउ सहू, जिमि पामउ जसवास ।।
सीता नी परि सुख लहउ, लाभउ लील-विलास ।।७।।

सीताराम सबध ना, नव खड कहीसि निबध ।
सावधान थई साभलउ, सील विना सहु धध ।।८।।

१ ढाल पहिली

राग सारंग[1] ढाल-साहेलो [illegible] मउरीयउ

जंबूदीप जिहां मांहे उत्तम पुरुष नुं ठामो रे।
भरतक्षेत्र तिहां अति भलउ नगर राजगृह नामो रे।

गौतम स्वामि समोसर्या जिस्या श्रीगणधारो रे।
साधु संघाति परवर्या श्रुतकेवली सुविचारो रे ॥२॥ गौ०

वांदिवा श्रेणिक आवियउ द्यइ गणधर उपदेशो रे।
वाणी अमृत आविणी जिम्व सुणइ नरेसो रे ॥३॥ गौ० ॥

जीव नइ मारइ प्राणिनइ,(१) कूड़ बोलइ बहु भंगो रे (२)
परधन चोरी पापियउ (३) परस्त्री करइ प्रसंगो रे (४) ॥४॥गौ ॥

रातइ परिग्रह रंग सु (५) करइ वलि क्रोध विशेषो रे (६)।
मान७माया८लोभ९मनि धरइ, रात दिवस रागद्वेषो१० रे ११॥५॥गौ०॥

वेढि करइ १२ वलि आल दइ (१३) करइ निंदा दिन रातो रे (१४)।
रति नइ१५अरति१६वेतउ रहइ मायामृषा१७मिथ्यातो रे १८॥६॥गौ०॥

ए प्रकार पाप एहवा जे करइ पापी जीवो रे।
भवसमुद्र माहि ते भमइ, दुःख देखइ करइ रीवो रे ॥७॥ गौ ॥

वली विशेष कोई पाप नइ, आपइ कूड़उ आलो रे।
सीता नी परि दुःख सहइ, सबल पडइ जंजालो रे ॥८॥ गौ ॥

---

१ [illegible]

कर जोडी श्रेणिक कहइ, कहउ भगवन ते केमो रे ।
सुणि श्रेणिक गौतम कहइ, ए पूरव भव एमो रे ॥६॥ गौ०॥

भरतखेत्र मइ रिधिभर्यउ, नामइ नगर मृणालो रे ।
श्रीभूति प्रोहित नी सुता, वेगवती सुकमालो रे ॥१०॥ गौ० ॥

तिण अवसरि आव्यउ तिहाँ, साध सुदरसण नामो रे ।
कानन मइ[1] काउसगि रह्यउ, उत्तम गुण अभिरामो रे ॥११॥

छव्रत नी रक्षा करइ, (६) वलि छज्जीव निकायो रे (१२)
इद्री पाच आण्या वसि, (१७) निरलोभी कहिवायो रे (१८)॥१२॥गौ ॥

क्षमावत (१६) सुभ भावना, (२०) कठिनक्रिया गुणपात्रो रे (२१)
सयम योग सूधा धरइ, (२२) त्रिकरण सुद्ध सुगात्रो रे (२५)॥१३॥ गौ०

सीत तावड पीडा सहइ, (२६) मरणसीम[2] उपसर्गो रे (२७)
सत्तावीस गुणे करी, त्रोडइ करम ना वर्गो रे ॥१४॥ गौ०॥

पहली ढाल पूरी थइ, किया साध ना गुण ग्रामो रे ।
समयसुन्दर कहइ ए साध नइ, नित २ करउ प्रणामो रे ॥१५॥ गौ० ॥

[सर्व गाथा २३]

दूहा ४

साधु तणउ आगम सुणी, हरख्या सहु नर नारि ।
वादण आया साध नइ, हय गय रथ परिवारि ॥१॥

दीधी साधजी देसणा, ए ससार असार ।
धरम करउ रे प्राणीया, जिम पामउ भव पार ॥२॥

---

१ वन मांहे २ समउ

१ ढाल पहिली

राग सारंग[1] ढाल-साहेली आंबउ मउरीयउ

जंबूदीप जिहां भाषे उत्तम पुरुष नु ठामो रे।
भरतक्षेत्र तिहां प्रति भलउ नगर राजगृह नामो रे।

गौतम सामि समोसर्‌या गिरुआ श्रीगणधारो रे।
साधु संघातिं परवर्‌या श्रुतकेवली सुविचारो रे ॥२॥ गौ०

वांदिवा श्रेणिक आवियउ द्यइ गणधर उपदेसो रे।
वाणी अंमृत भाविणी निसचल सुणइ नरेसो रे ॥३॥ गौ० ॥

जीव नइ मारइ प्राणिनइ (१) कूड़ बोलइ बहु भंगो रे (२)
परधन चोरी पापियउ (३) परस्त्री करइ प्रसंगो रे (४) ॥४॥गौ ॥

राखइ परिग्रह रंग सु (५) करइ वलि क्रोध विशेषो रे (६)।
मान७माया८लोभ९ममि भरइ, रात दिवस रागद्वेषो१ रे ११॥ ५॥गौ०॥

वेढि करइ १२ वलि आल घइ (१३) करइ निंदा दिन रातो रे (१४)।
रति नइ१५अरति१६वैतउ रहइ मायामृषा१७मिथ्यातो रे १८॥६॥गौ०॥

ए प्रकार पाप एहवा जे करइ पापी जीवो रे।
भवसमुद्र मांहि ते भमइ, दुःख देखइ करइ रीवो रे ॥७॥ गौ ॥

वली विशेष कोई साध नइ, धापइ कूडउ आलो रे।
सीता नी परि दुःख सहइ, सबल पड़इ जंजालो रे ॥८॥ गौ० ॥

---
1 बसरी

कर जोडी श्रेणिक कहइ, कहउ भगवन ते केमो रे ।
सुणि श्रेणिक गौतम कहइ, ए पूरव भव एमो रे ॥६॥ गौ०॥

भरतखेत्र मइ रिधिभर्यउ, नामइ नगर मृणालो रे ।
श्रीभूति प्रोहित नी सुता, वेगवती सुकमालो रे ॥१०॥ गौ० ॥

तिण अवसरि आव्यउ तिहाँ, साध सुदरसण नामो रे ।
कानन मइ[1] काउसगि रह्यउ, उत्तम गुण अभिरामो रे ॥११॥

छव्रत नी रक्षा करइ, (६) वलि छज्जीव निकायो रे (१२)
इद्री पाच आण्या वसि, (१७) निरलोभी कहिवायो रे (१८)॥१२॥गौ ॥

क्षमावत (१६) सुभ भावना, (२०) कठिनक्रिया गुणपात्रो रे (२१)
सयम योग सूधा धरइ, (२२) त्रिकरण सुद्ध सुगात्रो रे (२५)॥१३॥ गौ०

सीत तावड पीडा सहइ, (२६) मरणसीम[2] उपसर्गो रे (२७)
सत्तावीस गुणे करी, ओडइ करम ना व्रर्गो रे ॥१४॥ गौ०॥

पहली ढाल पूरी थइ, किया साध ना गुण ग्रामो रे ।
समयसुन्दर कहइ ए साध नइ, नित २ करउ प्रणामो रे ॥१५॥ गौ० ॥

[**सर्व गाथा २३**]

दूहा ४

साधु तणउ आगम सुणी, हरख्या सहु नर नारि ।
वादण आया साध नइ, हय गय रथ परिवारि ॥१॥

दीधी साधजी देसणा, ए ससार असार ।
धरम करउ रे प्राणीया, जिम पामउ भव पार ॥२॥

---

१ वन मांहे २ समस्त

१ ढाल पहिली

राग सारंग[१] डास-साहेमो भोबउ मउरीयउ

जबूदीप जिहां भापे उत्तम पुरुष नु ठामो रे ।
भरतखेत्र जिहां भति भमउ नगर राजगृह नामो रे ।

गौतम सामि समोसर्‌या गिरुया श्रीगणधारो रे ।
साधु संघाति परवर्‌या श्रुतकेवली सुविचारो रे ।।२।। गौ०

वांदिवा श्रेणिक भाविमउ त्यइ गणधर उपदेशो रे ।
वाणी भमृत भाविणी निरुपम सुणई नरेसो रे ।।३।। गौ० ।।

जीव नइ मारइ प्राणिमइ,(१) कूड बोलइ बहु भंगी रे (२)
परधन चोरी पापियउ (३) परस्त्री करइ प्रसंगो रे (४) ।।४।।गौ ।।

राखइ परिग्रह रस सु (५) करइ वलि क्रोध विशेषो रे (६) ।
मान७माया८लोभ९मनि धरइ, रात दिवस रागद्वेषो१० रे ११।। ५।।गौ०।।

वेढि करइ १२ वलि भ्राल घइ (१३) करइ निंदा दिन रातो रे (१४) ।
रति मइ१५भरति१६वेतउ रहइ मायामृषा१७मिथ्यातो रे १८।।६।।गौ ।।

ए प्रकार पाप एहवा जे करइ पापी जीवो रे ।
भवसमुद्र माहि ते भमइ, दुःख वेदइ करइ रीवो रे ।।७।। गौ०।।

वली विशेष कोई साध नइ, भापई कूडउ भालो रे ।
सीता नी परि दुःख सहइ, सयल पडइ जंजालो रे ।।८।। गौ ।।

एह नहि साध म जाणिज्यो, ए पाखडी कपटी रे।
नगर माहि सगले ठामे, ए पाप नी वात प्रगटी रे ॥७॥ सा०॥

लोक कहइ विरता थका, करम तणी वात देखउ रे।
करम विटबइ, जीव नइ, करम तणउ नहि लेखउ रे ॥८॥ सा०॥

विषयारस लुबधइ थकइ, साध अकारज कीधउ रे।
साध नइ भुडउ भवाडियउ, कलक कूडउ सिरि दीधउ रे ॥६॥सा०

एह उह्राह सुणी करी, साधु घणउ विलखाणउ रे।
अनरथ मुझ थी ऊपनउ, जिन शासन हीलाणउ रे ॥१०॥ सा०॥

एह कलक जउ ऊतरइ, तउ अन्नपाणी लेउ रे।
नहि तरि तउ आपणा कीया, वेदनी करम हु वेउ रे ॥११॥ सा०॥

आवी सासन देवता, साध नइ सानिधि कीधी रे।
वेगवती नइ वेदना, अति घणु सबली दीधी रे ॥१२॥ सा०॥

तुब थयउ मुख सूजि नइ, पाप ना फल परतक्षो रे।
करिवा लागी एहवा, वलि पछतावा लक्षो रे ॥१३॥ सा०॥

हाहा! मइ महा पापिणी, का दीयउ कूडउ आलो रे।
साध समीपि जाइ करी, मेल्या वालगोपालो रे ॥१४॥ सा०॥

भो भो! लोक सको सुणउ, मइ दीयउ आल कूडउ रे।
परतखि मइ फल पामीया, पणि साधजी ए रूडउ रे ॥१५॥ सा०॥

ए मानभाव मोटउ जती, एह नइ पूजउ अर्चउ रे।
जिमि ससार सागर तरउ, मन कोउ इण थी विरचउ रे ॥१६॥ सा०॥

लोक प्रसंसा सहु करइ मन ए साध महंत ।
उतकृष्टी रहणी रहइ, जिन सासन जयवंत ।।३।।

दुख थायइ मुख देखतां नाम थकी मिस्तार ।
अंखित सीझइ दाखतो ए मोटउ अणगार ।।४।।

[सर्व गाथा ९७]

२ ढाल बीजी

ढाल-पुरंदर री बिसेपासी

वेगवती ते बांमणी महामिथ्यामति मोही रे ।
साध प्रसंसा सही नहीं जिनसासन नी द्रोही रे ।।१।।

साध नइ आल कूडउ दीयउ पाप करी पिंड भारयउ रे ।
फिट २ लोक मांहि थई, हाहा नर भव हारयउ रे ।।२।। सा ।।

वेगवती मन चिंतवइ, ए मूरिख लोक न जाणइ रे ।
बांमण नइ मानइ नहीं, मु ड नइ मूढ वखाणइ रे ।।३।। सा०।।

ए पाखंडी कपटीयउ लोक नइ मामइ भासइ रे ।
सिव सासन खोटइ करइ ते को नहि जे पासइ रे ।।४।। सा०।।

तउ हूँ एह नइ तिम करू जिम को लोक न मांनइ रे ।
आल देउं कोई एहवउ जिमि सहु को अपमानइ रे ।।५।। सा०।।

वेगवती इम चिंतवी गइ लोकां नइ पासइ रे ।
स्त्री सेती व्रत भांजतउ मइ दीठउ इम भासइ रे ।।६।। सा०।।

---

* श्री जिनवचन निवासिनी ए देवी

एह नहिं साध म जाणिज्यो, ए पाखडी कपटी रे ।
नगर माहि सगले ठामे, ए पाप नी वात प्रगटी रे ।।७।। सा०।।

लोक कहइ विरता थकां, करम तणी वात देखउ रे ।
करम विटबइ, जीव नइ, करम तणउ नहि लेखउ रे ।।८।। सा०।।

विषयारस लुबधइ थकइ, साध अकारज कीधउ रे ।
साध नइ भु डउ भवाडियउ, कलक कूडउ सिरि दीधउ रे ।।९।।सा०

एह उड्डाह सुणी करी, साधु घणउ विलखाणउ रे ।
अनरथ मुझ थी ऊपनउ, जिन शासन हीलाणउ रे ।।१०।। सा०।।

एह कलक जउ ऊतरइ, तउ अन्नपाणी लेउ रे ।
नहि तरि तउ आपणा कीया, वेदनी करम हु वेउ रे ।।११।। सा०।।

आवी सासन देवता, साध नइ सानिधि कीधी रे ।
वेगवती नइ वेदना, अति घणु सबली दीधी रे ।।१२।। सा०।।

तु ब थयउ मुख सूजि नइ, पाप ना फल परतक्षो रे ।
करिवा लागी एहवा, वलि पछ्तावा लक्षो रे ।।१३।। सा०।।

हाहा ! मइ महा पापिणी, का दीयउ कूडउ आलो रे ।
साध समीपि जाइ करो, मेल्या बालगोपालो रे ।।१४।। सा०।।

भो भो ! लोक सको सुणउ, मइ दीयउ आल कूडउ रे ।
परतखि मइ फल पामीया, पणि साधजी ए रूडउ रे ।।१५।। सा०।।

ए मानभाव मोटउ जती, एह नइ पूजउ अर्चउ रे ।
जिमि ससार सागर तरउ, मन कोइ इण थी विरचउ रे ।।१६।। सा०।।

सोक सुणी हरषित थया सोनइ सामि न होई रे ।
ए मोटा अणगार मई, किम दूषण हुइ कोई रे ।।१७।। सा ।।
साठी चोखा सूपडइ छडतां उज्जला थायइ रे ।
स्पइया खरा थागि मइ, थाल्यां कसमल जायइ रे ।।१८।। सा०।।
पूजा करवा साध नी, वसि सहु करिवा लागउ रे ।
जिन सासन थयउ उज्जमउ, भरम सहू नउ भागउ रे ।।१९।। सा०।।
वेगवती ध्रम सांभली संयम लीधउ सारो रे ।
पहिलइ देवलोकि ऊपनी दवो रूप उदारो रे ।।२ ।। सा०।।
बीजी ढाल पूरी थई, पणि परमारथ लेज्यो रे ।
समयसुंदर कहइ सहु भणी, साध नइ भ्रास म देज्यो रे ।।२१।। सा०।।

[सर्वगाथा ४८]

दूहा १

तिण अवसर इण भरत मइ, मिथिलापुरी प्रसिद्ध ।
विद्युत विराजित वयसहित सुरपुरी समरिद्ध ।।१।।
जनक नाम राजा तिहां जनक समउ हितकार ।
रूपइं रतिपति सारिखउ करण समउ दातार ।।२।।
सीतल चंद तणी परि तेज तपई जिम सूर ।
इंद्र सरीखउ रिद्ध करि, पालइ राज पडूर ।।३।।
वैदेही तसु भारिजा रूपइ रंभ समाण ।
भगत घणु भरतार नी राजा नइ जीवप्राण ।।४।।
इंद्राणी जिमि इंद नइ, हरि नइ लखमी जेम ।
चन्द तणइ जिमि रोहणी राजा राणी तेम ।।५।।

तेहवइ ते देवी चवी, वेगवती नउ जीव ।
वैदेही कुखइ ऊपनी, भोगवि सुक्ख अतीव ॥६॥

अन्य जीव पणि ऊपनउ, ते मेती तिण ठामि ।
राणी जायउ वेलडउ, पुत्र पुत्री अभिराम ॥७॥

एकइ देवइ अपहर्यउ, जातमात्र ततकाल ।
पूरव भव ना वयर थी, ते बालक सुकमाल ॥८॥

श्रेणिक राजाइ पूछियउ, कुण वयर तिण साथि ।
श्री गौतम गणधर कहइ, सामलि तु नरनाथ ॥९॥

[सर्वगाथा ५७]

३ ढाल त्रीजी

सोरठ देस सोहामणउ, साहेलडी ए देवा तणउ निवास ॥
गय सुकमालि ना चउढालिया नी ॥ अथवा ॥ सौभागी सुन्दर तुझ विन
घडी य त जाय ए देशी

चक्रपुरइ राजा हुतउ, पूरव भव, चक्कवइ रिद्धि पभूय ।
मयणसु दरी कुखि ऊपनी, ॥पू०॥ अति सून्दरी तसु धूय ॥

त्रूटक

तसु धूय रूपइ देवकु वरि, नेसालइ भणिवा गई
अति चतुर चउसठि कला सीखी, जोवन भर जुवती थई ॥
प्रोहित्त नउ पणि पुत्र तिहाँ कणि, मधुपिगल नामइ भणइ
गुणगोष्ठि करता नजरि धरता, लपटाणा प्रेमइ घणइ ॥१॥

सोक सुणी हरषित थया छोनइ सामि न होई रे।
ए मोटा अणगार मइ किम दूषण हुइ कोई रे ॥१७॥ सा ॥
साठी भोला सूपबइ छवता ऊजला थायइ रे।
रूपइया खरा मागि मइ, घाल्यां कसमल थायइ रे ॥१८॥ सा०॥
पूजा भरवा साध नी, वलि सहु करिवा लागउ रे।
जिम सासन थयउ ऊजमउ भरम सहू नउ भागउ रे ॥१९॥ सा०॥
वेगवती प्रम सांभली संयम लीधउ सारो रे।
पहिलइ देवलोकि ऊपनी देवो रूप उदारो रे ॥२०॥ सा०॥
बीजी ढाल पूरी थई, पणि परमारथ लेज्यो रे।
समयसुंदर कहइ सहु भणी, साध नइ आल म देज्यो रे ॥२१॥ सा०॥

[सर्वगाथा ४८]

दूहा ४

तिण अवसर इण भरत मइ, मिथिलापुरी प्रसिद्ध।
विबुध विराजित जयसहित सरगपुरी समरिद्ध ॥१॥
जनक नाम राजा तिहां, जनक समउ हितकार।
रूपइ रतिपति सारिखउ करण समउ दातार ॥२॥
सीतल चंद तणी परि, तेज तपइ जिम सूर।
इंद्र सरीखउ रिद्धि करि पालइ राज पडूर ॥३॥
वैदेही तसु भारिजा रूपइ रंभ समाण।
भगत घणुं भरतार नी राजा नइ जीवप्राण ॥४॥
इंद्राणी जिमि इंद्र नइ, हरि नइ लखमी जेम।
चन्द तणइ जिमि रोहणी राजा राणी तेम ॥५॥

ढीका पाट करी मारइ मुहकम, नगर थी वाहिर कियउ ।
तिहां धरम साभलइ साधु पासइ, वइरागइ सजम लियउ ।।५।।

तिहा तप कीधा आकरा ।।पू०।। ऊपनउ सरग मझार ।
अहिकु डल पणि एकदा ।।पू०।। साभल्यउ जिन ध्रमसार ।।
साभल्यउ जिन ध्रम साध पासइ, भद्रक भाव पणु धरी
ऊपनउ वैदेही उयरि ते, पुत्रयुगल पणइ करी ।।
पाछिला भव नउ वयर समरी ते वालक तिरण अपहर्यउ ।
मारीसि एह नइ दुक्ख देइसि, चित्तविचार इस्यउ धर्यउ ।।६।।

झालि पगे पछाडिस्यु ।।पू०।। वस्त्र धोबी धोयइ जेम ।
अथवा खाड उडी खणी ।।पू०।। गाडि नइ मारिसि एम ।।
मारिसि एम हुँ वयरवालिसि, ए लहिस्यइ आपणउ कीयउ ।
इम चित्त माहि विचार करता दया परिणाम आवियउ ।
जिन धरम ना परसाद थी, मइ देवता पदवी लही ।
वाल नी हत्या नहि करू पणि, काइक परि करिवी सही ।।७।।

कु डल हार पहिरावीयउ ।। पू०।। मु कियउ वैताढ्य बाल ।
चन्द्रगति नाम विद्याधरइ ।। पू० ।। दीठउ ते ततकाल ।।
ततकाल वालक नइ उपाड्यउ, रथनेउरपुरि ले गयउ ।
असुमती आपणी भारिजा नइ, कहइ ए तुझ पुत्र थयउ ।।
हु वाझि माहरइ पुत्र किहा थी वात समझावी कही ।
बोलजे मानु खा सूयावडि, अन्त पन्त लेवउ नही ।।८।।

माथउ बाधि माहे सुती ।। पू० ।। फासू सूयावडि खाय ।
पुत्र नइ पासि सूयाडियउ ।। पू० ।। आगाढ अगि न माय ।।

नवरि मजरि विहु नी मिली ।पू०।। खारिण साकर सु दूध ।
मम मम सु विहु मत मिल्यउ ।।पू०।। दूधपाणी जिम सूध ।।
जिमि सुद्ध तिमि वलि जीव जीव सु मिल्यउ भारंड नी परि ।
कामी थयउ कुमारि तेहु नइ ले गयउ विक्रमापुरि ।।
काम भोग ना संयोग सगला सुक्ख भोगवतउ रहइ ।।
विद्या हुंती ते गई वीसरि धम विना ते दुख सहइ ।।२।।

तिहां राजा नउ पुत्र हुतउ ।।पू०।। मतिकुबल इरण नामि ।
तिरण दीठी ते सु दरी ।।पू०।। अति सु दरी अभिराम ।।
अभिराम देखी रूप सु दर काम विहूल ते थयउ ।
दूतिका मु की छल करी नइ, महल मांहि ले गयउ ।।
सुख भोगवइ तिरण साथि कुयर चोरी विष पड्या मोर ए ।
ए देखइ नहीं आपरणी अस्त्री मधुपिंगल करइ सोर ए ।।३।।

राजा पासि जाइ कहइ ।पू०।। देव सुरणउ अरदास ।
अस्त्री किरण मुझ अपहरी ।।पू०।। तुम्हे करउ न्याय तपास ।।
तपास निरति करउ मरस्सर मुझ अभागउ गोरडी ।
बल बूकमां नइ न्हाउ राजा ते पलइ म सरइ घडी ।।
तिहां कुमर नउ कोइ पुरुष कपटी, मधुपिंगल नइ इम कहइ ।
मइ साथवी नई पासि दीठी पोलासपुरि जा जिम लिसइ ।।४।।

ततखिरण ते तिहांकरिग गयउ ।।पू ।। जोई सगली ठाम ।
राजा पासि आव्यउ फिरी ।पू०।। कहइ तिहां न सामी साम ।।
कहइ तिहां न सामइ मुझ अमदा राजा सु भगडउ मांयउ ।
राजा कहइ हु किसु जाणु रीस करि नइ मउकीयउ ।।

ढीका पाट करी मारइ मुहुकम, नगर थी वाहिर कियउ ।
तिहां धरम साभलइ साधु पासइ, वइरागइ सजम लियउ ॥५॥

तिहा तप कीधा आकरा ॥पू०॥ ऊपनउ सरग मझार ।
अहिकु डल पणि एकदा ॥पू०॥ साभल्यउ जिन ध्रमसार ॥
साभल्यउ जिन ध्रम साध पासइ, भद्रक भाव पणु घरी
ऊपनउ वैदेही उयरि ते, पुत्रयुगल पणइ करी ॥
पाछिला भव नउ वयर समरी ते बालक तिण अपहर्यउ ।
मारीसि एह नइ दुक्ख देइसि, चित्तविचार इस्यउ धर्यउ ॥६॥

झालि पगे पछाडिस्यु ॥पू०॥ वस्त्र धोबी धोयइ जेम ।
अथवा खाड उडी खणी ॥पू०॥ गाडि नइ मारिसि एम ॥
मारिसि एम हुँ वयरवालिसि, ए लहिस्यइ आपणउ कीयउ ।
इम चित्त माहि विचार करता दया परिणाम आवियउ ।
जिन धरम ना परसाद थी, मइ देवता पदवी लही ।
बाल नी हत्या नहि करू पणि, काइक परि करिवी सही ॥७॥

कु डल हार पहिरावीयउ ॥ पू०॥ मु कियउ वैताढ्य बाल ।
चन्द्रगति नाम विद्याधरइ ॥ पू० ॥ दीठउ ते ततकाल ॥
ततकाल बालक नइ उपाड्यउ, रथनेउरपुरि ले गयउ ।
असुमती आपणी भारिज्या नइ, कहइ ए तुझ पुत्र थयउ ॥
हु वाझि माहरइ पुत्र किहा थी वात समझावी कही ।
बोलजे मानु खा सूयावडि, अन्त पन्त लेवउ नही ॥८॥

माथउ बाधि माहे सुती ॥ पू० ॥ फासू सूयावडि खाय ।
पुत्र नइ पासि सूयाडियउ ॥ पू० ॥ आणंद अगि न माय ॥

माणव मणि न माय पुत्र मउ विद्याधर महुछव करइ ।
घर बारि बन्नरमाल बांधी कुकुम हाथा धरइ ॥
मुक्त गूडगरमा गोरडीए, पुत्र आयउ इम कहइ ।
सद्गु मिली सूहव गीत गायइं, हीयउ हरखइ गहगहइ ॥६॥

वसूठण करि दीपतउ ॥ पू० ॥ मामंडल दीयउ नाम ।
बीज तणां चंद नी परि ॥ पू० ॥ कुमर बधइ तिण ठाम ॥
तिणि ठाम कुमर बधइ भली परि सुख समाधि सु गुणनिलउ ।
अ णीक पूछयउ गौतम पूरविलउ भव एतलउ ॥
ए ढाल भीजी थई पूरी बा।उ नउ रस भीजीयइ ।
इम समयसु दर कहइ किण सु बयर विरोध न कीजीयइ ॥१०॥

[सर्वगाथा ६७]

दूहा ३

वैदेही राणी हिवइ, पुत्र न देखइ पासि ।
हाहा किणही अपहर्यउ धरणि ढली नीराश ॥१॥

सउ किण मुरछागत थई, दुख मउ दुख न समाय ।
सीतल उपचारे करी थई सचेतन साय ॥२॥

राणी रोयइ रमबडइ वीसरि गयउ विवेक ।
हीयडउ फाटइ दुख सु करइ विलाप अनेक ॥३॥

[सर्वगाथा ७०]

---

* रडबडइ

४ ढाल चवथी

ढाल—धरि आव रे मनमोहन घोटा ॥ एहनी ढाल

हाहा ! दैव तइ स्यु कीयु, मुझ आखि दे लीधी काढि ॥
है है ! भूसकता नाखी भु हिं, मुझ नइ मेरु ऊपरि चाढि ॥है है॥१॥
किण पापी रे म्हारु रतन उदाल्यु, हा हा ! हुं हिव केथी थाउ॥है०॥
कहउ हुं हिव किण दिस जाउ, है है ! किण पा० आकणी०॥

हाथि निधान देई करी, मुझ लीधु वूसट मारि है०॥
राज देई त्रिभुवन तणु, मुझ खोस्यु का करतार ॥है०॥२॥कि०॥

गज उपरि थी उत्तारि नइ, मुझ नइ खर चाडी आज॥है०॥
राणी फेडि दासी करी, भर दरियइ भागउ जिहाज ॥है०॥३॥कि०॥

गयउ आभरण करडियउ, गयउ रतन अमूलक हार ॥है०॥
आज भूली पडी रान मइ, आज वूडी समुद्र मझारि॥है०॥४॥कि०॥

देव नइ ऊलभा किसा, मइ कीधा पाप अघोर ॥है०॥
पूरविलइ भवइ पापिणी मइ, सउकि रतन लीया चोरि॥है०॥५॥कि०

के थापणि मोसा कीया, कइ मइ दीधा कूडा आल ॥है०॥
कइ छाना ग्रभ गालिया, कइ भाजी तरु डालि ॥है०॥६॥कि०॥

कइ काचा फल त्रोडीया, कइ खणि काट्या कद ॥है०॥
कइ मइ सर द्रह सोखीया, कइ मार्‌या जल जीव वृ द ॥है०॥७॥कि०॥

कइ मइ माला पाडिया, के किउ खेत्र विनाश ॥
कइ मइ इडा फोडिया, कइ मृग पाड्या पाश ॥८॥है०कि०॥

प्राणद भंमि न माय पुत्र मउ, विद्याधर महुछव करइ ।
घर बारि वम्ररमाल बांधी कुंकू मा हाथा भरइ ॥
मुभ गूढगरभा मोरडीए पुत्र थायउ इम कहइ ।
सहु मिली सूहव गीत गायई, हीयउ हरखइ गहगहइ ॥९॥

दसूठण करि दीपतउ ॥ पू० ॥ भामंडल दीयउ नाम ।
बीज तणी चंद नी परि ॥ पू० ॥ कुमर वधइ तिण ठाम ॥
तिणि ठाम कुमर वधइ भली परि सुख समाधि सु गुणमिलउ ।
म णीक पूछयउ गौतम पूरविलउ भव एतलउ ॥
ए ढाल बीजी थई पूरी वात मउ रस सीजीयइ ।
इम समयसु दर कहइ किण सु वयर विरोध न कीजीयइ ॥१०॥

[सर्वगाथा ६७]

दूहा ३

वैदेही राणी हिवइ, पुत्र न देखइ पासि ।
हाहा किणही अपहर्यउ पगरिण दली नीरास ॥१॥

तस तिण मुरछागत थई, सुत नउ दुख न समाय ।
सीतल उपचारे करी थई सचेतन साय ॥२॥

राणी रोमइ रमवडइ* बीसरि गयउ विवेक ।
हीयडउ फाटइ दुःख सु करइ विलाप अनेक ॥३॥

[सर्वगाथा ७०]

---

* रडवडइ

दूहा ५

हिव राजा महुछ्व करइ, बेटी तणउ प्रगट्ट ।
दान मान दीजइ घणा, गीत गान गहगट्ट ॥१॥

कीयउ दसूठण अनुक्रमइ, भोजन विधि अभिराम ।
सकल कुटु ब सतोषीयउ, सीता दीधउ नाम ॥२॥

गिरिकदर माहि जिम रही, वाधइ चपावेलि ।
तिम सीता वाधइ सुता, नयण अमीरस रेलि ॥३॥

पच धाइ पालीजती, सुखइ वधइ सुकमाल ।
महिला नी चवसठि कला, तिण सीखी ततकाल ॥४॥

देह १ लाज २ गुण ३ चातुरी ४, काम ५ वध्यउ रगरेलि ।
भर जोवन आवी भली, चालइ गजगति गेलि ॥५॥

[सर्वगाथा ६३]

५ ढाल पांचवीं

ढाल—नणदल विदली री

सीता अति सोहइ, सीतातउ रूपइ रूडी ।

जाणे अम्बा डालि सूडी हो ॥सी०॥

वेणी सोहइ लाबो, अति स्याम भमरकडि आवी हो ॥सी०॥
मुख ससि चाद्रणउ कीधउ, अधारइ पासउ लीधउ हो ॥१॥सी०॥
राखडी सोहइ माथइ, जाणे सेष चूडामणि साथइ हो ॥सी०॥
ससिदल भाल विराजइ,विचि विंदली सोभा काजइ हो ॥२॥सी०॥

कइ जीवाणी ढोल्या भर्या कइ (मइ) मारी जू लीख ।।हैं०।।
कइ संसारउ छोडव्यउ कइ भांजी रांकभीख ।।हैं०।।९।।कि ।।

कइ तिम वाणी पीसिया कइ कीया रांगणि पास ।।हैं०।।
वाणि वणावी घात नी कइ वासाव्या कास ।।हैं०।।१०।।कि०।।

कइ मइ दावानल दीया कइ मइ भांज्या गाम ।।हैं०।।११।।कि०।।
कइ भागि दोधी हाथ सू, कइ भांज्या आराम ।।हैं०।।११।।कि०।।

कइ रिण मागउ बिहु मउ कइ पेटि पाडी भ्रास ।।हैं ।।
कइ मइ भ्रमसा माछला कइ मइ मार्‌या वास ।।हैं०।।१२।।कि०।।

कइ मइ मोल्या करहका कइ दीधी निश्रास ।।हैं०।।
कइ कोई विष दे मारीयउ कइ ढाया आवास ।।हैं०।।१३।।कि०

कइ बछड़ा दूध धावता मां थी विछोड़्या साहि ।।हैं०।।
के मइ बसघ मुख बांधिया बहिता गाडता माहि ।।हैं।।१४।।कि०

के तापस रिषि दूहव्या मुझ नइ दीधउ सराप ।।हैं०।।
के साध नी निंदा करी ए लागा मुझ पाप ।।हैं०।।१५।।कि ।।

इम विलाप करती थको बलि समझावी भूप ।।हैं०।।
दुक्ख म करि तु बापड़ी अथिर संसार सरूप ।।हैं ।।१६।।कि०।।

कीधा करम न छूटीयइ, सुख दुख सरिज्या होय ।।हैं ।।
राणी मन हठकी थीयउ साचउ जिमध्रम सोइ ।।हैं ।।१७।।कि०।।

थयनी ढाल पूरी थई ए बातन आभोग ।।हैं।। ।।
समयसु दर मांधु कहइ दोहिलउ पुत्र विजोग ।।हैं ।।१८।।कि।।

[सर्वगाथा ८५]

दूहा ५

हिव राजा महुछव करइ, बेटी तणउ प्रगट्ट ।
दान मान दीजइ घणा, गीत गान गहगट्ट ॥१॥

कीयउ दसूठण अनुक्रमइ, भोजन विधि अभिराम ।
सकल कुटु ब सतोषीयउ, सीता दीधउ नाम ॥२॥

गिरिकदर माहि जिम रही, वाधइ चपावेलि ।
तिम सीता वाधइ सुता, नयण अमीरस रेलि ॥३॥

पच धाइ पालीजती, सुखइ वधइ सुकमाल ।
महिला नी चवसठि कला, तिण सीखी ततकाल ॥४॥

देह १ लाज २ गुण ३ चातुरी ४, काम ५ वध्यउ रगरेलि ।
भर जोवन आवी भली, चालइ गजगति गेलि ॥५॥

[सर्वगाथा ६३]

५ ढाल पांचवीं

ढाल—नणदल बिदली री

सीता अति सोहइ, सीतातउ रूपइ रूडी ।
जाणे अम्बा डालि सूडी हो ॥सी०॥
वेणी सोहइ लाबी, अति स्याम भमरकडि आवी हो ॥सी०॥
मुख ससि चाद्रणउ कीधउ, अधारइ पासउ लीधउ हो ॥१॥सी०॥
राखडी सोहइ माथइ, जाणे सेष चूडामणि साथइ हो ॥सी०॥
ससिदल भाल विराजइ,विचि विंदली सोभा काजइ हो ॥२॥सी०॥

कइ जीवाणी डोल्या घणां कइ (मइ) मारी जू लीख ।।है०।।
कइ सवारउ सोखम्यउ कइ मांगी रांकभीख ।।है०।।९।।कि० ।।
कइ तिस वाणी पीमिया कइ कीया रांगणि पास ।।है०।।
वाणि करणी घास मी कइ वासाम्या कास ।।है०।।१०।।कि०।।
कइ मइ दावानल दीया कइ मइ भांज्या गाम ।।है०।।११।।कि०।।
कइ माणि वोघी हाथ सू कइ भांज्या आराम ।।है ।।११।।कि०।।
कइ रिण भागउ केहू मउ कइ पेटि पाडी म्हास ।।है ।।
कइ मइ म्हसा माछला कइ मइ मार्‌या बास ।।है०।।१२।।कि०।।
कइ मइ मोल्य करवका कह दीधी मिभ्रास ।।है०।।
कइ कोई बिष दे मारीयउ कइ दाया श्रावास ।।है०।।१३।।कि०
कइ बछडा घूम मावता मां थी विछोड्या साहि ।।है०।।
फे मइ बलद मुख वांधिया बहिता गाडता माहि ।।है।।१४।।कि०
के तापस रिषि दूहव्या मुझ नइ दीधउ सराप ।।है०।।
के साध नी निंदा करी ए लागा मुझ पाप ।।है ।।१५।।कि ।।
इम बिलाप करती थको बलि समझावी भूप ।।है ।।
दुख म करि तु बापडी प्रथिर सखार सरूप ।।है ।।१६।।कि ।।
कीधां करम न छूटीयइ, सुख दुख सरिज्या होय ।।है ।।
राणी मन हठकी लीयउ साचउ जिनध्रम सोइ ।।है०।।१७।।कि०।।
चवथी ढाल पूरी थई ए बालम श्राभोग ।।है।।०।।
समयसुदर मांपु कहइ दोहिलउ पुत्र विजोग ।।है०।।१८।।कि।।

[सर्वगाथा ८८]

दूहा ५

हिव राजा महुच्छव करइ, बेटी तणउ प्रगट्ट ।
दान मान दीजइ घणा, गीत गान गहगट्ट ॥१॥

कीयउ दसूठण अनुक्रमइ, भोजन विधि अभिराम ।
सकल कुटु ब संतोषीयउ, सीता दीधउ नाम ॥२॥

गिरिकंदर माहि जिम रही, वाधइ चंपावेलि ।
तिम सीता वाधइ सुता, नयण अमीरस रेलि ॥३॥

पंच धाइ पालीजती, सुखइ वधइ सुकमाल ।
महिला नी चवसठि कला, तिण सीखी ततकाल ॥४॥

देह १ लाज २ गुण ३ चातुरी ४, काम ५ वध्यउ रंगरेलि ।
भर जोवन आवी भली, चालइ गजगति गेलि ॥५॥

[सर्वगाथा ६३]

५ ढाल पांचवीं

ढाल—नणदल बिंदली री

सीता अति सोहइ, सीतातउ रूपइ रूडी ।
जाणे अम्बा डालि सूडी हो ॥सी०॥
वेणी सोहइ लाबी, अति स्याम भमरकडि आवी हो ॥सी०॥
मुख ससि चाद्रणउ कीधउ, अंधारइ पासउ लीधउ हो ॥१॥सी०॥
राखडी सोहइ माथइ, जाणे सेष चूडामणि साथइ हो ॥सी०॥
ससिदल भाल विराजइ,विचि बिंदली सोभा काजइ हो ॥२॥सी०॥

मयमकमम भरिणयाला विचि कोकी भमरा काला हो ।।सी०।।
सूयटा नी चांच सरेखी नासिका प्रति तीखी निरखी हो ।।३।।सी ।।

मकबेसर तिहां सहकइ गिरुमा नी सगति गहकइ हो ।।सी०।।
कांने कु डल नी जोडी पेहु नउ मूल भाक नइ कोडी हो ।।४।।सी०।।

मधर प्रवाली राती दंत दाडिम कलिय कहाती हो ।।सी०।।
मुख पु निम नउ चंदउ, तसु बचन अमीरस विंदउ हो ।।५।।सी०।।
कंठ कंदसबली त्रिवली दक्षणावर्त संख ज्यु सबली हो ।।सी०।।
प्रति कोमल बे बांहां रक्तोपल सम कर तांहां हो ।।६।।सी०।।

मण मण कलस विसाला ऊपरि हार कुसम नी माला हो ।।सी ।।
कटि लंक केसरि सरिखउ मानइ कोइ पंडित परिखउ हो ।।७।। सी०।।
कटि तट मेखला पहिरी जोबन भरि जायइ लहरी हो ।।सी ।।
रोम रहित बे जांघा हो जाणे करि केलि ना थंभा हो ।।८।।सी०।।
उज्वल पग नख राता जाणे कनक कूरम बे माता हो ।।सी ।।
सीता तउ रूपइ सोहइ निरखंता सुर नर मोहइ हो ।।९।।सी०।। ✓

कवि कल्लोल महीं खाई, ए ग्रंथे वात कही ईई हो ।।सी०।।
जोवन वय मन आसइ, रूपवंत हुई सील पासइ हो ।।१०।।सी०।।
ए वात नी भविकाई कुरूप नी केही बडाई हो ।।सी ।।
सील पालइ ते साचा सीलवंत तणी फुरइ वाचा हो ।।११।।सी०।।
पांचमी ढाल ए भाखी इहां (सीता) पदमचरित्त सइ साखी हो ।।सी
समयसु दर इम बोलइ सीता नइ कोइ न तोलइ हो ।।१२।।सी ।।

[सर्वगाथा ।।१०५।।]

दूहा ३

जोवन वय सीता तणउ, देखी जनक नरेस ।
भणइ सुमति मुहता भणी, देखउ देस प्रदेश ॥१॥
कोइ वर सीता सारिखउ, रूप कला गुण जाण ।
हुइ तउ कीजइ नातरउ, पच्छइ भाग प्रमाण ॥२॥
कर जोडी मुहतउ कहइ, वर जोयउ छइ वग्ग ।
सखर सोना नी मुद्रडी, ऊपरि जाणे नग्ग ॥३॥

[सर्वगाथा १०८]

६ ढाल छट्ठी

॥ राग गउडी जाति—जकडी नी विसेषाली ॥

नगरी अयोध्या इहा थी दूकडी कहाई बे ॥
रिषभ ना राजकाजि घनदइ नीपाई बे ॥
घनदइ नीपाई नगरी साइ दसरथ नाम छइ भूप नउ ॥
पुत्र पदम नामइ नारि अपराजिता नी कुखि उपनउ ।
अति सूरवीर महा पराक्रमी, दान गुण करि दीपतउ ॥
अति रूपवत महा सोभागी, शत्रु ना दल जीपतउ ॥१॥

जेह नइ लहुहडु भाई लखमण कहीजइ बे ।
सुमित्रा राणी नउ बेटउ बलवत सुणीजइ बे ॥
बलवत सुणियइ मात दीठा सुपन आठ मनोहरू ॥
आठमउ ए वासुदेव उत्तम चक्रादिक लक्षण धरू ॥
अत्यत वल्लभ रामचद्र नइ बे बाधव बीजा वली ।
केकेई ना सुत भरत सत्रूघन बेऊ अति महाबली ॥२॥

मयमकमल मृणियाला, विचि कोकी भमरा काला हो ।।सी०।।
सूयटा नी चांच सरेखी नासिका अति चोखी निरखी हो ।।३।।सी ।।

मकचेसर तिहां सहकइ गिरूया नी संगति गहकइ हो ।।सी ।।
कांनि कुंडल नी जोडी येहू नउ मूल लाख नइ कोडी हो ।।४।।सी०।।

अधर प्रवाली राती दंत दाडिम कलिय कहाती हो ।।सी०।।
मुख पुनिम नउ चंदउ तसु वचन अमीरस विंदउ हो ।।५।।सी०।।

कठ कंदलवली त्रिवली दक्षरणावत संख ज्यु सबली हो ।।सी०।।
अति कोमल बे बांहां रक्तोपल सम कर तांहां हो ।।६।।सी०।।

मग मग कलस विसाला ऊपरि हार कुसम नी माला हो ।।सी०।।
कटि लंक केसरि सरिखउ भावइ कोइ पंडित परिखउ हो ।।७।। सी०।।

कटि तट मेखला पहिरी जोवन भरि जावइ लहरी हो ।।सी०।।
रोम रहित बे जंघा हो जाणे करि केलि ना थंभा हो ।।८।।सी०।।

उन्नत पग नख राता जाणे कनक कूरम बे माता हो ।।सी ।।
सीता तउ रूपइ सोहइ निरखता सुर नर मोहइ हो ।।९।।सी०।।

कवि कल्लोल नहीं छई ए ग्रंथे वात कही छई हो ।।सी ।।
जोवन वय मन भासइ, रूपवंत हुई सील पासइ हो ।।१०।।सी०।।

ए वात नी अधिकाई कुरूप नी केही बडाई हो ।।सी ।।
सील पालइ ते साचा सीलवंत तणी फुरइ वाचा हो ।।११।।सी०।।

पांचमी ढाल ए भाखी इहां (सीता) पदमचरित छइ साखी हो ।।सी
समयसुंदर इम बोलइ सीता नइ कोइ न तोलइ हो ।।१२।।सी ।।

[सर्वगाथा ।।१०५।।]

दूहा ३

जोवन वय सीता तणउ, देखी जनक नरेस ।
भणइ सुमति मुहता भणी, देखउ देस प्रदेश ॥१॥
कोइ वर सीता सारिखउ, रूप कला गुण जाण ।
हुइ तउ कीजइ नातरउ, पच्छइ भाग प्रमाण ॥२॥
कर जोडी मुहतउ कहइ, वर जोयउ छइ वग्ग ।
मखर सोना नी मुंद्रडी, ऊपरि जाणे नग्ग ॥३॥

[सर्वगाथा १०८]

६ ढाल छठ्ठी

॥ राग गउडी जाति—जकडी नी विसेषाली ॥

नगरी अयोध्या इहा थी दूकडी कहाई वे ॥
रिषभ ना राजकाजि धनदइ नीपाई वे ॥
धनदइ नीपाई नगरी साइ दसरथ नाम छइ भूप नउ ॥
पुत्र पदम नामइ नारि अपराजिता नी कुखि उपनउ ।
अति सूरवीर महा पराक्रमी, दान गुण करि दीपतउ ॥
अति रूपवत महा सोभागी, शत्रु ना दल जीपतउ ॥१॥
जेह नइ लहुहडु भाई लखमण कहीजइ वे ।
सुमित्रा राणी नउ बेटउ बलवत सुणीजइ वे ॥
बलवत सुणियइ मात दीठा सुपन आठ मनोहरू ॥
आठमउ ए वासुदेव उत्तम चक्रादिक लक्षण धरू ॥
अत्यत वल्लभ रामचद्र नइ बे बाधव बीजा वली ।
केकेई ना सुत भरत सत्रूघन बेऊ अति महाबली ॥२॥

एहवै कांचोभर भाइ ए परिवर्यउ सोहइ बे ।
वसदेव भाठमउ रामचंद मनमोहइ बे ॥
मनमोहइ व रामचंद वर, ए योग्य छइ सीता भणी ।
रंजियउ राजा मंत्रि वचने वात कही सोहामणी ।
सु किया माणस राय दशरथ भणी कहई भवधारियइ ।
कीजीयइ सगपण राम मइ सीता कन्या परिणाविमइ ॥३॥
पहिलु पणि प्रीति हुँती तुम्ह सेती अम्हारइ बे ॥
वसीय विशेषइ वाधइ सगपणइ तुम्हारइ बे ॥
सगपणइ वाधइ प्रीति अधिकी पश्चिम दिन जिम छांहड़ी ।
घंटा शबद जिम वाइ घटती ओछा माणस प्रीतड़ी ॥
हरषियउ भूपति भणइ दशरथ वात जुगती कही तुम्हे ।
मोग्या बस्या एहीज सगपण करणहार एहुंता अम्हे ॥४॥
संपजइ विछाणउ सामउ भाहीणइ घूमाणउ बे ॥
सु म मइ बाजम माँहि घी भणउ प्रीसाणउ बे ॥
घी भणउ प्रीसाणउ कूप माँहि सरस साकर भेसवी ।
घृतपूर ऊपरि घणउ बूरउ जीमतां मन मी रसी ॥
वासतां वाधी देवा वासी पइसतां जिमणउ हुयउ ॥
ए कीयउ सगपण महुत अइ मइ वीवाह मउ मुहुरत जुयउ ॥५॥
मातरउ साथलउ करि तै भर आया बे ।
राजा मइ राणी मइ सगला सरूप बणाया बे ।
सगला सरूप बणावीया मइ सीता पणि हरखी घणु
हार विचि पदक मिस्यु मनोहर भाम बड़ु सीता तणु

ए ढाल छट्ठी थई पूरी, समयसु दर इम कहइ ॥
सबध स्त्री भरतार नउ ए, सको वखत लिख्यउ लहइ ॥६॥

दूहा १० [सर्वगाथा ११४]

तिण अवसरि नारद मुनी, पहिरण वलकल चीर ।
माथइ मुगुट जटा तणउ, हाथि कमडलु नीर ॥१॥
सीता नउ रूप देखिवा, आयउ गति अभ्रात ।
देखी रूप बीहामणउ, सीता थइ भयभ्रात ॥२॥
घर माहे नासी गई, नारद कीधी केडि ।
दासी रोक्यउ बारणउ, गल ग्रहि नाख्यउ गेडि ॥३॥
भाड विगोयउ माडियउ, दासी सु निरभीक ।
पीट्यउ काठउ पोलिए, दे भाभी भ्रम ढीक ॥४॥
नारद सबलउ कोपियउ, ऊडि गयउ आकासि ।
दुख देवउ सीता भणी, बीजी किसो विमासि ॥५॥
वेगि गयउ वेताढ्यगिरि, जिहा रथनेउर भूप ॥
भामडल आगइ धर्यउ, लिखि सीता नउ रूप ॥६॥
रूप देखि विह्वल थयउ, जाग्यउ काम विकार ।
नारद नइ पूछ्यउ नमी, ए केहनउ अणुहार ॥७॥
के देवी के किंनरी, के विद्याधरि काइ ॥
कहइ नारद ए को नही, ए नारी कहिवाइ ॥८॥
जनकराय मिथला धणी, वैदेही तसु नारि ॥
सीता पुत्री तेह नी, अपछर नउ अवतार ॥९॥
बहिनि पुण जाणइ नही, हा हा ! धिग अगन्यान ।
हीयइ न जाणइहित अहित, जिम पीधइ मदपान ॥१०॥

[सर्गगाथा १२४]

एहवे कोमोयर माह ए परिवरयउ सोहइ बे ।
वसदेव माठमउ रामचंद मनमोहइ बे ॥
मनमोहइ बे रामचंद वर, ए योग्य छइ सीता भणी ।
रंजियउ राजा मंत्रि वचने बात कही सोहामणी ।
मुंकिया माणस राय दशरथ भणी कहई अवधारियइ ।
कीजीयइ सगपण राम सइ सीता कन्या परिणावियइ ॥३॥
पहिलु पणि प्रीति हुंती तुम्ह सेता अम्हारइ बे ॥
वनीय विशेषइ वाधइ सगपणइ तुम्हारइ बे ॥
सगपणइ वाधइ प्रीति अधिकी पश्चिम दिन जिम छांहडी ।
घटा दावद जिम चाइ घटती धोछा माणस प्रीतडी ॥
हरखियउ भूपति मणइ दशरथ बात जुगती कही तुम्हे ।
मांम्या कन्या एहीज सगपण करणहार एहुंता अम्हे ॥४॥
उंपतइ विधाणउ साथउ थाहींणइ घूमोणउ बे ॥
दूध मइ चावल मांहि घी घणउ प्रीसाणउ बे ॥
घी घणउ प्रीसागउ दूध मांहि सखर साकर भेलवी ।
घृतपूर छसरि घणउ बूरउ जीमतां मन मी रली ॥
चासतां चावी देवा बोली पहसतां जिमणउ हुयउ ॥
ए कीयउ सगपण कहइ घइ सइ वीवाह मउ मुहूरत पूयउ ॥५॥
मातरउ सावतउ करि ते नर आया बे ।
राजा नइ राणी नइ सगना सकन पठाया बे ।
सगना सकन जगावीया नइ सीता पणि हरखी घणु
हार विवि पदक मिस्यु मनोहर भाय वइ सीता तणु

घोडउ उडि गयउ आकासइ, जनक नइ मु क्यउ तेथि ।
चद्रगत्ति विद्याधर अपणउ, सामी वइठउ जेथि ॥५॥

आदर देइ कहइ विद्याधर, मत डर मन मइ आणे ।
छलकरि नइ ज्याणउ छइ इहाँ तु, पणि मुझ वचन प्रमाणे ॥
भामडल बेटा नइ आपउ, आपणी सीता कन्या ।
आग्रह करि मागा छा एतउ, वात नही का अन्या ॥६॥

दसरथराय तणउ सुत कहियइ, रामचद परिसिद्ध ।
पहली सीता दीधी तेह नइ, हिवए वात निषिद्ध ॥
ते सरिखउ नर आज न कोई, रूपवत बलवत ।
विद्याधर सगला मिलि आया, जनक नइ एम कहत ॥७॥

भो ! भो ! खेचर आगइ भूचर जाणे कीड पतग ।
विद्याधर विद्यावलि अधिका, वात म ताणि एकग ।
अथवा अछता पणि गुण भाखइ, रागी माणस रागइ ।
गुण फेडी नइ अवगुण दाखइ, दोषी लोका आगइ ॥८॥

कहइ विद्याधर[1] केहउ झगडउ, एह प्रतिज्ञा कीजइ ।
देवताधिष्ठित धनुष चढावइ, राम तउ सीता दीजइ ॥
सगला मिलि आया विद्याधर, मिथिलापुर आराम ।
हाथ बाथ हथियारे पूरा विद्यावल अभिराम ॥९॥

जनकराय आयउ अपणे घरि, पणि मन मइ दिलगीर ।
सहु विरतात कह्यउ राणी नइ पणि सीता मन धीर ॥

---

१. चन्द्रगति

७ ढाल सातमी

॥ जाति नाटक वेसिनी ॥ राग—आसावरी ॥

भामंडल नइ भोजन पाणी, भावइ नहिय लगार ।
रात दिवस रहइ आमणदूमणउ, कहइ है है करतार ॥
ठस्या वसि रामति खेल तमासा स्नान मजन अधिकार ।
नाठी नींद नाठइ नीसासा ऐ ऐ काम विकार ॥१॥

बाप कहइ तु सांभलि बेटा सकति घणी छइ मुज्झ ।
दाव उपाय करी नइ सीता परिणावीसि हुं तुज्झ ।
मनगमती वातइ भामंडलि वलि पाम्यउ मन ठाम ।
चंद्रगति विद्याधर चींतवइ, किम थास्यइ ए काम ॥२॥

जउ हुं तिहां जाइ नइ मांगिसि तउ दीसइ नहिं वारु ।
खेचर भागइ भूचर कासुं, बहुत दीजइ किण सारु ।
दूरि थकां मांगीसि कदाचित तउ नहि थइ सहुकारी ।
मान भगउ हुस्यइ तउ माहरउ कीजइ काम विचारी ॥३॥

वेगि विद्याधर तेडि चपल गति मूंक्यउ मन हुलास ।
जा मिथिला नगरी तूं छलि करि आणि जनक मुझ पास ॥
कीधुं रूप तुरंगम तेणइ लोक नइ पाम्यउ त्रास ।
रूपवंत देखी नइ भूपइ आण्यउ निज आवास ॥४॥

मास सीम राख्यइ रूडि परि आणंद अंगि उछाहे ।
एक दिन ते उपरि चढि राजा पहुतउ वनखंड माहे ॥

घोडउ उडि गयउ आकासइ, जनक नइ मु क्यउ तेथि ।
चद्रगत्ति विद्याधर अपणउ, सामी वइठउ जेथि ॥५॥

आदर देइ कहइ विद्याधर, मत डर मन मइ आणे ।
छलकरि नइ ज्याणउ छइ इहाँ तु, पणि मुझ वचन प्रमाणे ॥
भामडल बेटा नइ आपउ, आपणी सीता कन्या ।
आग्रह करि मागा छा एतउ, वात नही का अन्या ॥६॥

दसरथराय तणउ सुत कहियइ, रामचद परिसिद्ध ।
पहली सीता दीधी तेह नइ, हिवए वात निषिद्ध ॥
ते सरिखउ नर आज न कोई, रूपवत बलवत ।
विद्याधर सगला मिलि आया, जनक नइ एम कहत ॥७॥

भो ! भो ! खेचर आगइ भूचर जाणे कीड पतग ।
विद्याधर विद्यावलि अधिका, वात म ताणि एकग ।
अथवा अछता पणि गुण भाखइ, रागी माणस रागइ ।
गुण फेडी नइ अवगुण दाखइ, दोषी लोका आगइ ॥८॥

कहइ विद्याधर[1] केहउ झगडउ, एह प्रतिज्ञा कीजइ ।
देवताधिष्ठित धनुष चढावइ, राम तउ सीता दीजइ ॥
सगला मिलि आया विद्याधर, मिथिलापुर आराम ।
हाथ वाथ हथियारे पूरा विद्यावल अभिराम ॥९॥

जनकराय आयउ अपणे घरि, पणि मन मइ दिलगीर ।
सहु विरतात कह्यउ राणी नइ पणि सीता मन धीर ॥

---

१ चन्द्रगति

बीस दिवस नी अवधि थयी छइ जउ राम धनुष चडावइ ।
तउ सीता परणइ महितरि तउ विद्याधर ले जावइ ॥१०॥

सीता कहइ म करउ को चिंता वर ते रामज होस्यइ ॥
कड़ी राय सिख्यउ ते न मिटइ नाम विद्याधर खोस्यइ ॥
गाम बाहिर धरती समरावी अनुपमंडप तिहां मंड्यउ ॥
दशरथ तुरत तेडावउ आयउ मिथ अभिमान न छड्यउ ॥११॥

लखमण राम भरत सत्रुघन सहु साथि परिवार ।
मेघप्रभ हरिवाहन बीजा राजा मउ नहि पार ॥
आगति स्वागति करणु सतोस्या बइठा मंडप पासे ॥
जनक लोक मिली नइ आया देखण तेथि तमासे ॥१२॥

तिण अवसरि आवी तिहां सीता कीधा सोल सिंगार ।
सु दर रूपइ सातसय कन्या तेहु तरणउ परिवार ॥
धावि मात कहइ सुणि हो पुत्री ए बइठा राजान ।
ए लखमण ए राम भरत ए सत्रूघन बहुमान ॥१३॥

ए मेघप्रभु ए हरिवाहन ए चित्तरथ भूपाल ।
तुझ कारणि ए मिल्या विद्याधर जिण मांड्यउ जंजाल ॥
मत्री बोल्यउ सकति हुयइ ते एह धनुष नइ चाडउ ।
सीता परणउ महितरि इहां थी भीड़ सहु को छांडउ ॥१४॥

अभिमानी राजा के ऊठ्या धनुष चडाया लागा ।
बलती आगि नी ज्वाला ऊठी ते देखी नइ भागा ॥
अति घोर भुजंगम अट्टहास पिशाच उपद्रव होई ।
रे रे रहउ हुंसियार आपापइ इक मांड्यउ सह कोई ॥१५॥

आपणइ काम नही छइ कोई कहइ सहु को विलखाणा ।
धर नी बइयरि सरिसइ वरिस्यइ फोकट चित्त लोभाणा ।।
लाख पायउ जउ जीवता जास्या बहु जोती हुस्यइ वाट ।
रामचद्र उठ्यउ अतुलीबल सीह् सादुला घाट ।।१६।।

विद्याधर नर सहु देखता रामइ चाढ्य उ चाप ।
टकारव कीधउ ताणी नइ प्रगट्यउ तेज प्रताप ।।
धरणी धूजी पर्वत काप्या सेषनाग सलसलिया ।
गल गरजा रव कीधउ दिग्गज जलनिधि जल ऊछलिया ।।१७।।

अपछर बीह्ती जइ आलिग्या आप आपणा भरतार ।
राखि राखि प्रीतम इम कह्ती अम्ह नइ त्तु आधार ।।
आलान थभ उथेडी नाख्या गज छूट मयमत्त ।
बधन त्रोडि तुरगम नाठा खलबल पडीय तुरन्त ।।१८।।

उपसात थया खिण मइ उपद्रव वरत्या जय जय कार ।
देव दु दभि आकासइ वाजी पुष्पवृष्टि परकार ।
सीता पणि हरषित थइ पहुती राम समीप सलज्ज ।।
बीजउ धनुष चडायउ लखमण विद्याधर अचरिज्ज

विद्याधर रज्या गुण देखी सबल सगाई कीधी ।
रूपवत अट्ठारह कन्या रामचद नइ[1] दीधी ।।
विद्याधर किन्नर सुर सहु को पहुता निज निज ठाम ।
पाणीग्रहण करायउ राम नइ सीधा वछित काम ।।२०।।

---

१ लक्ष्मणाय दत्ता

( )

बीस दिवस नी अवधि बधी इह वउ राम धनुष चडावइ ।
तउ सीता परणइ नहितरि तउ विद्याधर ले जावइ ।।१०।।

सीता कहइ म करउ को चिंता वर ते रामज होस्यइ ।।
छट्ठो रात मिल्यउ ते न मिटइ माम विद्याधर खोस्यइ ।।
गाम बाहिर वरती समरावी धनुषमंडप तिहां मंडयउ ।।
दसरथ तुरत तेडायउ आयउ निज अभिमान न छंडयउ ।।११।।

लखमण राम भरत सत्रूघन सहु साथि परिवार ।
मेघप्रभ हरिवाहन बीजा राजा नउ नहि पार ।।
मायति स्वामति वणु सतोरुमा बइठा मडप पासे ।।
लसक लोक मिली नइ आया देखण तेथि तमासे ।।१२।।

तिण अवसरि आवी तिहां सीता कीधा सोल सिंगार ।
सु दर रूपइ सातसय कन्या तेह तणउ परिवार ।।
धावि मात कहइ सुणि हो पुत्री ए बइठा राजान ।
ए लखमण ए राम भरत ए शत्रूघन बहुमान ।।१३।।

ए मेघप्रभु ए हरिवाहन ए चित्तरथ भूपाल ।
तुझ कारणि ए मिल्या विद्याधर जिण मांडयउ जंजाल ।।
मत्री बोल्यउ सकति सुभट ते एह धनुष नइ चाडउ ।
सीता परणउ नहितरि इहां थी भीख/सहू को छांडउ ।।१४।।

अभिमानी राजा के ऊठ्या धनुष चडाबा लागा ।
बलती आगि मी भाला ऊठी ते देखी नइ भागा ।।
अति घोर भुजंगम अट्टहास पिशाच उपद्रव होई ।
रे रे रहउ हुंसियार आपापइ कुण मांड्यउ छइ कोई ।।१५।।

आपणइ काम नही छइ कोई कहइ सहु को विलखाणा ।
घर नी वइयरि सरिसइ वरिस्यइ फोकट चित्त लोभाणा ।।
लाख पायउ जउ जीवता जास्या बहु जोती हुस्यइ वाट ।
रामचद्र उठ्यउ अतुलीबल सीह सादुला घाट ।।१६।।

विद्याधर नर सहु देखता रामइ चाढ्य उ चाप ।
टकारव कीधउ ताणी नइ प्रगट्यउ तेज प्रताप ।।
धरणी धूजी पर्वत काप्या सेषनाग सलसलिया ।
गल गरजा रव कीधउ दिग्गज जलनिधि जल ऊछलिया ।।१७।।

अपछर बीहती जइ आलिंग्या आप आपणा भरतार ।
राखि राखि प्रीतम इम कहती अम्ह नइ तु आधार ।।
आलान थभ उथेडी नास्या गज छूट मयमत्त ।
बधन ओडि तुरगम नाठा खलबल पडीय तुरन्त ।।१८।।

उपसात थया खिण मइ उपद्रव वरत्या जय जय कार ।
देव दु दभि आकासइ वाजी पुष्पवृष्टि परकार ।
सीता पणि हरषित थइ पहुती राम समीप सलज्ज ।।
बीजउ धनुष चडायउ लखमण विद्याधर अचरिज्ज

विद्याधर रज्या गुण देखी सबल सगाई कीधी ।
रूपवत अट्ठारह कन्या रामचद नइ[1] दीधी ।।
विद्याधर किन्नर सुर सहु को पहुता निज निज ठाम ।
पाणीग्रहण करायउ राम नइ सीधा वछित काम ।।२०।।

---

१ लक्ष्मणाय दत्ता

रलीय रंग सु वीवाह कीधउ वाजियउ म्रम्रउ दीधउ ।
संतोखी भइ सहु सप्रण्या जनक घणउ जस लीधउ ।।
पुत्र सहु परिवार सु दसरथ नगर अयोध्या पहुंतउ ।।
सातमी ढाल कहइ अति मोटी समयसुंदर गहगहतउ ।।२१।।

पहिलउ खंड थयउ ए पूरउ सात ढाल सुसवाद ।
युगप्रधान जिणचंद प्रथम शिष्य सकलचंद सुप्रसाद ।।
गच्छ नायक जिनराज सूरीसर भट्टारक बडभाग ।
समयसुंदर कहइ सीस पासतां वाधइ जस सोभाग ।।२२।।

[सर्वगाथा १४६]

इति श्री सीतारामप्रबंधे सीतावीवाह
सीतास्वयवरणो नाम प्रथम खंडः ।।१।।

द्वितीय खण्ड

॥ दूहा ॥

हिव बीजउ खड बोलस्यु, बिहु बाधइ बहुप्रेम ।
सानिधि करिजे सरसती, जोड़ु वेगउ जेम ॥१॥

सीताराम सभागिया, भोगवइ भोग सयोग ।
लीला ना ए लाडिला, घणु बखाणइ लोग ॥२॥

श्रावक नउ सूधउ धरम, पालइ दसरथराय ।
अट्ठाई महुछव करइ, जिणवर देहरे जाइ ॥३॥

जिण मज्जण करिवा भणी, महुछव देखण काजि ।
तेडावी अतेउरी, सगली सगलइ साजि ॥४॥

माणस मुक्या जू जुय, तेडण भणी तुरत्त ।
सहु आवी अतेउरी, भगवत करण भगत्ति ॥१५॥

राजानर मुक्यउ हुतउ, पणि न गयउ किण हेति ।
पटराणी आवी नही, झूरि मरइ रही तेथि ॥१६॥

रंगीय रंग सु वीवाह कीधउ वायजउ त्र्यम्बक दीधउ ।
सतोषी मद सहु संप्रज्या जनक घणउ जस लीधउ ॥
पुत्र सहु परिवार सु दसरथ नगर अयोध्या पहुंतउ ॥
सातमी ढाल कहइ अति मोटी समयसु दर महगहउ ॥२१॥

पहिलउ खंड थयउ ए पूरउ सात ढाल सुसवाद ।
युगप्रधान जिणचंद प्रथम शिष्य सकलचंद सुप्रसाद ॥
गछ नायक जिनराज सूरीश्वर भट्टारक बडभाग ।
समयसु दर कहइ सीम पालतां पामइ जस सोभाग ॥२२॥

[सर्वगाथा १४६]

इति श्री सीतारामप्रबंधे सीताबीवाह
सीताजन्मवर्णनो नाम प्रथम खंड ॥१॥

द्वितीय खण्ड

॥ दूहा ॥

हिव बीजउ खड बोलस्यु, विहु बाधइ बहुप्रेम ।
सानिधि करिजे सरसती, जोडु वेगउ जेम ॥१॥

सीताराम सभागिया, भोगवइ भोग सयोग ।
लीला ना ए लाडिला, घणु बखाणइ लोग ॥२॥

श्रावक नउ सूधउ धरम, पालइ दसरथराय ।
अट्ठाई महुच्छव करइ, जिणवर देहरे जाइ ॥३॥

जिण मज्जण करिवा भणी, महुच्छव देखण काजि ।
तेडावी अतेउरी, सगली सगलइ साजि ॥४॥

माणस मुक्या जू जुय, तेडण भणी तुरत्त ।
सहु आवी अतेउरी, भगवत करण भगत्ति ॥५॥

राजानर मुक्यउ हुतउ, पणि न गयउ किण हेति ।
पटराणी आवी नही, भूरि मरइ रही तेथि ॥६॥

१ ढाल पहली।

कइयइ पुनि पधारिस्यइ, ए गीत नी ढाल

पदराणी इम चिंतवइ, जोयउ २ रे राजा नी वात ।
मवजुवान घरेउरी लेकी २ रे मम मांहि सुहात ॥१॥
चीसारी मु मइ वालहइ हु मरिस्यु रे करिस्यु आंपघात ।
पूठि चीम्यु हिव माहरउ मइ तउ हवइ रे कुस सहइ न वात ॥२॥ची॥
हु गरढी बूढी थयइ न सुहाणी रे राजा मइ तेणि ।
पण न गणयउ मुक कायदउ सू सलीचउ रे भ्रम पाणी सेणि ॥३॥ची
कुंचस थयां चीवइ जिकै वलि जीवइ रे पराभव दीठ ।
वास्देहर चीचीघस्यां वे जीवइ रे ते माणस धीठ ॥४॥
राणी कोपातुर थकी सेवा मांडी रे बेहूवइ पसइ पासि ।
हाहाकार हुयउ तिस्यउ, रोयइ पीटइ रे पासइ रही दासि ॥५॥ ची॰
राम कोलाहल सांभली प्रउको भाव्यउ रे राणी नइ धमि ।
हाहा ए तु स्यु करइ ताणी सीचा रे आंपणइ लहेमि ॥६॥ ची॰
तु कोपी किण कारणइ, राम पूछइ रे आग्रह करी आम ।
परमारथ राणी कहइ, ते भ्रामउ रे नर लेवण ठाम ॥७॥ ची॰॥
तेउ परि राजा कुप्यउ कहइ मउजउ रे तु भ्राव्यउ केम ।
जरा करी थयउ जाजरउ ढजातउ रे हु भाव्यउ तेम ॥८॥ ची ।
कुण भगिनी कुण मारिजा कुण माता रे कुण बाप नइ वीर ।
घृद्धपणइ वसि को नही पोता नु रे जे पोष्यु सरीर ॥९॥ ची॰।

पाणी झरइ बूढापणइँ, आंखि माहि-रे वरइ-घू घलि छाय ।
काने सुरति नही तिसी, बोलता रे जीभ लडथडि जाय ॥१०॥ वी०॥

हलुया पग वहइ हालता, सूगालो रे मुहडइ पडइ लाल ।
दात पडइ दाढ उखडइ, वलि माथइ रे हुयइ घउला वाल॥११॥वी०॥

कडि थायइ वलि कूवडी, वलि उची रे उपडइ नहि मीटि ।
सगलइ डीलइ सल पडइ, नित आवइ रे वलि नाके रीटि ॥१२॥ वी०

हाल हुकम हालइ नहा, कोई मानइ रे नहि वचन लगार ।
धिग बूढापन दीहडा, कोई न करइ रे मरता नी सार ॥१३॥ वी०

वृद्ध वचन इम साभली, राजा नउ रे आव्यउ सवेग ।
साच कह्यउ इण डोकरइ, ए छोडु रे ससार उदेग ॥१४॥ वी०॥

कुटु व सहू को कारिमउ, आऊखउ रे अति अथिर असार ।
हिव काइ आतम हित करू , हु लेउ रे सयम नउ भार ॥१५॥

बीजा खड तणी भणी, ए पहिली रे मइ ढाल रसाल ।
समयसु दर कहइ ध्रम करउ, नहिं थायइ रे बूढा ततकाल ॥१६॥वी०

[सर्व गाथा २२]

दूहा ६

इण अवसरि उद्यान मइ, चउनाणी चित ठाम ।
साध महातस मोसर्‌या, सर्वभूतहित नाम ॥१॥

स।ध तणउ आगम सुणा, पाम्यउ परमाणद ।
हय गय रथ सु परिवर्‌यउ, वादण गयउ नरिंद ॥२॥

त्रिण्ह प्रदक्षिण दे करी, वाद्यउ साध महात ।
जनम २ ना दुख गया, रिषि दरसण देखत ॥३॥

१ ढाल पहली।

कइयइ पुणि पर्मारिस्यइ, ए गीत नी ढाल

पटराणी इम चिंतवइ, कोपउ २ रे राजा नी मात ।
भयकुमान प्रतिहरी तेडी २ रे मन मांहि सुहात ॥१॥
बीसारी मुं मइ बालहइ, हुं मरिस्युं रे करिस्युं आपघात ।
पुणि बीस्युं हिव माहरइ मइ तउ हवइ रे दुख सह्युं न जात ॥२॥ बी०॥
हुं गरवी झूठी थयइ न सुहाणी रे राजा नइ तेणि ।
पण न गणयउ मुझ कायरउ सू सलीथउ रे अम पाणी सेणि ॥३॥ बी
कुयस थयां बीवइं किसें बलि बीवइं रे परागभ बीठ ।
वास्देसर थीबीद्धस्यां जे बीवइ रे ते माणस धीठ ॥३॥
राणी कोपातुर थकी सेवा मांडी रे बेहुमइ गलइ पासि ।
हाहाकार हुयउ विस्यउ रोयइ पीटइ रे पासइ रही दासि ॥४॥ बी
राय कोलाहल सांभली प्रउधी आव्यउ रे राणी नइ संगि ।
हाहा ए तुं स्युं करइ ताणी सीधा रे आपणइ उछंगि ॥६॥ बी०
तुं कोपी किण कारणइ, राय पूछइ रे आग्रहु करी ताम ।
परमारथ राणी कहइ, ते आयउ रे नर तेडण ताम ॥७॥ बी०॥
तेउ परि राजा कुप्यउ कहइ मउजउ रे तुं आव्यउ केम ।
भरा करी थयउ आकरउ ऊभाउउ रे हुं नाव्यउ तेम ॥८॥ बी०।
कुण भगिनी कुण भारिया कुण माता रे कुण बाप नइ बीर ।
परवपणइ बलि को नही पोता नु रे जे पोष्युं सरीर ॥६॥ बी०।

पाणी झरइ बूढापणइं, आंखि माहि रे वरइ-घू घलि छाय ।
काने सुरति नही तिसी, वोलता रे जीभ लडथडि जाय ॥१०॥ वी०॥

हलुया पग वहइ हालता, सूगाली रे मुहडइ पडइ लाल ।
दात पडइ दाढ उखडइ, वलि माथइ रे हुयइ धउला वाल॥११॥वी०॥

कडि थायइ वलि कूवडी, वलि उची रे उपडइ नहि मीटि ।
सगलइ डीलइ सल पडइ, नित आवइ रे वलि नाके रीटि ॥१२॥ वी०

हाल हुकम हालइ नहा, कोई मानइ रे नहि वचन लगार ।
धिग बूढापन दीहडा, कोई न करइ रे मरता नी सार ॥१३॥ वी०

वृद्ध वचन इम साभली, राजा नउ रे आव्यउ सवेग ।
साच कह्यउ इण डोकरइ, ए छोडु रे ससार उदेग ॥१४॥ वी०॥

कुटु व सहू को कारिमउ, आऊखउ रे अति अथिर असार ।
हिव काइ आतम हित करू, हु लेउ रे सयम नउ भार ॥१५॥

बीजा खड तणी भणी, ए पहिली रे मइ ढाल रसाल ।
समयसु दर कहइ ध्रम करउ, नहिं थायइ रे बूढा ततकाल ॥१६॥वी०

[सर्व गाथा २२]

दूहा ६

इण अवसरि उद्यान मइ, चउनाणी चित ठाम ।
साध महातस मोसर्या, सर्वभूतहित नाम ॥१॥

साध तणउ आगम सुणा, पाम्यउ परमाणद ।
हय गय रथ सु परिवर्यउ, वादण गयउ नरिंद ॥२॥

त्रिण्ह प्रदक्षिण दे करी, वाद्यउ साध महात ।
जनम २ ना दुख गया, रिषि दरसण देखत ॥३॥

साध कहइ भ्रम सांभलउ ए ससार असार ।
जनम मरण वेदन घणा, दुख तणउ भंडार ॥४॥
काचउ भांडउ नीर करि जिण वेगउ गलि जाय
काया रोग समाकुली तिण मइ सेक न जाय ॥५॥
जीअसि नउ मनकर जिस्यउ जिस्यउ नदी नउ वेग ।
जोबन मय जाणउ तिस्यउ ऊलट वहइ उवेग ॥६॥
काम भोग सयोग सुख फलाकि पाक समान ।
जीवित जस मउ बिदुयउ सपद सन्ध्यावान ॥७॥
मरण पगां मांहि नित वहइ साचउ जिन ध्रम सार ।
सयम मारग आदरउ जिम पामउ भव पार ॥८॥
साध तणी वाणी सुणी आयउ अति वइराग ।
घरि आवी राजा जोयइ भ्रत सेवा नउ लाग ॥९॥

[सर्वगाथा ३१]

२ ढालबीजी

जातिजातिनी । जती तिमरी पासइ वसमु गाम एहनी ढाल ॥
जती । प्रत्येक बुद्धना । बीजा खंड नी आठमी ढाल ।
जंबू द्वीप पूरब सुविदेह ॥ एहनी ढाल

एहवइ आमण्डम सुणी वाणि । रामइ सीता परणि प्राणि ॥
मुझ जीवित मई पडउ धिक्कार जउ मुझ नही सीता घरि नारि ॥१॥
तउ हूँ ले आवि सीकर जोर । कटक करी चाल्यउ अति घोर ।
मिथमई विदर्भा नगरी आवी । ए दीठी हूंती किण प्रस्तावि ॥२॥

ईहापोह करता ध्यान । ऊपनउ जाती समरण न्यान ।
हा हा हूँ भगिनी सु लुधउ । इम वयराग धरी प्रतिबुधउ ॥३॥
कटक लेई नइ पाछउ वलियउ । घरि आव्यउ सहु सताप टलियउ ।
चन्द्रगति वाप पूछई एकान्त । भामण्डल कहई निज विरतान्त ॥४॥
हू पाछिलई भवि नउ तात । अहिकुण्डल मण्डित सुविख्यात ।
अपहरी वाभण नी मई भज्जा । कामातुर थकइ नाणी लज्जा ॥५॥
हूँ मरी नई थयऊ जनक नउ पुत्र । सीता सहोदर वेडलइ अत्र ।
देवता अपहर्‍यउ वयर विसेप, तुम्हे सुत कीधउ मिटइ नहिं लेख ॥६॥
मइ अगन्यानइ वाछी सीता । हिवपाछिली वात आवी चीता ।
हा हा हु थयउ अगन्यान अध । मइ माहरउ कह्यउ एह सम्बन्ध ॥७॥
ए विरतान्त सुणी नई राय । अथिर ससार थी विरतउ थाय ।
भामण्डल नइ दीधउ राज । तिहा थी चाल्यउ ले सहुसाज ॥८॥
आयउ अयोध्या नगरि उद्यान । तिहा दीठा मुनिवर ध्रमध्यान ।
साधु वादी नई एम पयपइ । जनम मरण ना भय थी कपइ ॥९॥
तारि हो साधजी मुझ नइ तारि । दे दीक्षा भव पार उतारि ।
चन्द्रगति राय नइ दीधी दीक्षा । सीखावी साधजी वेहु शिक्षा ॥१०॥
भामण्डल महिमा करइ सार । याचक नइ द्यइ दान अपार ।
जनक पिता वैदेही मात । सुन्दर रूप जगत विख्यात ॥११॥
चिरजीवे भामण्डल भूप । भाट भाखइ आसीस अनूप ।
राति सू ती थकी सयन मझार । सीता विरुद सुण्या सुविचार ॥१२॥
चिंतवई ए कु ण जनक नउ पुत्र । अथवा मुझ वाधव सु पवित्र ।
अपहरि गयउ ते हनइ तउ कोई, इहा किहां थी आवइ वलि सोई॥१३॥

इम सोचा करता परभाति । गई उद्यान श्रीराम संघाति ।
दसरथ राजा पण तिहां आयउ चन्द्रगति रिषि देखी सुख पायउ ॥१४॥

साधु वांदी, नइ पूछयउ एम । चन्द्रगति दीक्षा लीधी केम ।
मुनि कहइ भामण्डल नी वात । इह भव पर भव ना अवदात ॥१५॥

सहु लोके जाण्यु निसन्देह । जनक नउ पुत्र भामण्डल एह ।
बहिनी जाणी नइ पाए लागउ सीता मिली लोइ ए दुख भागउ ॥१६॥

पइसारउं करि नगर मइ आण्यउ । रामइ समपण साजउ जाण्यउ ।
भामण्डल मुकरिय विचार । मुक्यउ पवन गति खेचर सार ॥१७॥

मिथिला जाइ वधाई दीधी । जनकइ आभरण बगसीस कीधी ।
जनक राजा वैदेही लेई । विमान बइसारि तिहां गयउ लेई ॥१८॥

जनकइ भामण्डल नइ निरख्यउ । पुत्र नइ हे बइ हीयमउ हरख्यउ ।
मां बाप चरणे नाम्यउ सीस । वैदेही भणि पूमी जगीस ॥१९॥

हरखइ मा खोलइ बैसाणउ । माथउ चुम्बि बैठउ नाम सार्यउ ।
पूछयउ मां बाप वात विचार । मामूल मूलकह्यउ परकार ॥२०॥

मां बाप पुत्र पुत्री सहु मिलिया । पुण्य प्रमाणि हुंआ रंगरलिया ।
दशरथ आग्रह करि पंच राति । जनक प्रय प्या रह्यउ सिवराति ॥२१॥

भामण्डल लेई नइ साथि । आयउ जनक मिथिला जिहां आथि ।
पुत्र प्रवेस महोत्सव कीधउ । दान दुखी लोका नइ दीधउ ॥२२॥

भामण्डल रहि केइक दीह । मां बाप लीख लेई नइ अबीह ।
रथनेउर गयउ आपणइ ठामि । मन वंछित भोगवइ सुख कामि ॥२३॥

वीजा खण्ड तणी ढाल वीजी । सुणतां घरम सू भीजइ मीजी ।
समयसुन्दर कहइ सहु समझाय । करम तणी गति कहिय न जाय ॥२४॥
[सर्व गाथा ५५]

दूहा १५

दसरथ राजा एकदा जागयउ पाछिलि राति ।
चित माहे इम चिन्तवइ वड वयराग नी वात ॥१॥

घन्य विद्याघर चन्द्रगति जिण त्रिण ज्यु तज्यउ राज ।
सयम मारग आदर्यउ सारया आतम काज ॥२॥

मन्दभाग्य हूँ मू ढमति खूतउ माहि कुटुम्ब ।
करी मनोरथ व्रत तणउ अजी करू विलम्ब ॥३॥

घरम विलम्ब न कीजीयइ खिण २ त्रूटई आय ।
आखि तणइ फरूकडइ घडी घरू थल थाय ॥४॥

रामचन्द्र नइ राज दे सहु पूछी परिवार ।
सयम मारग आदरू जिम पामु भव पार ॥५॥

इम चिन्तवता चित्त मइ प्रगट थयउ परभात ।
सकल कुटब मेली करी कही राति नी बात ॥६॥

कुटब सहु को इम कहइ तुम्ह विरहउ न खमाय ।
तउ पणि श्रम करता थका कु ण करइ अन्तराय ॥७॥

राम राज नइ योग्य छइ पग नउ वडउ सकज्ज ।
वलि चित आवइ राजि नइ तेह नइ दीजइ रज्ज ॥८॥

जितरइ दसरथ रामनइ राज द्यइ देखि वखत्त ।
तितरइ केकेई गई राजा पासि तरत्त ॥९॥

चित माहे इह चितवइ मुझ बेटा नइ राज ।
जउ होयइ तउ मति गमज सीझई वछित काज ॥ १ ॥
मति अमवस्त महा सकब सवमरा नइ वलि राम ।
राज करी सकइ किहां थकी एह थका नहि ठाम ॥११॥
इरा नइ थांकइं मोक सहु ए दीपता प्रमाग ।
तिमिर हरण सुरिज थका कुण दीवा नउ लाग ॥१२॥
रतम चिन्तामरिग सामतां कुण प्रहइ कहउ काच ।
दूध थकां कुण छासि नइ पीयइ सहु कहइ साच ॥१३॥
आपसि छाडि नइ सिहंगटच आयइ कुण पमार ।
कुरी कारणि कुण मर तजइ कु गन्ध उगारि ॥१४॥
तउ वर मांगीसि माहरउ आपणि सेत न ओडि ।
आपण प्रिमु नइ इम कहइ केकेइ राणी कर जोडि । १५॥

[सर्वगाथा ७०]

३ ढाल श्रीजी

रामआसाउरी सीधूवड मिम बरणाली वांमड रहि वडइ ।
वस करी राता चोलोरे विरती दाएव बस विधि ।
मसउ दीयइ पमरोलो । बरगाली बा० एहुनी ढाल ॥

केकेइ राणी वर मांगइ । आपउ प्रीतम मागो रे ।
देसउठउ द्यइ राम नइ । भरत भणि द्यइ राजो रे ॥१॥ के ।
वर नी बात सुणी करी । दसरथ थयउ दिलगीरो रे ।
राज मांगइ राणी सही । बात तणउ ए हीरो रे ॥२॥ के ॥

किम दिवरायइ भरत नइ। राम थका ए राजो रे।
अणदीधी पणि नहि रहइ। मुज्झ प्रतिज्ञा आजो रे ।।३।। के०।।

कहउ केहि परि कीजियइ। वे तट किम सचवायारे।
इणगी वाघ इहाँ खाई। केही दिस जव रायो रे ।।४।। के०।।

तउ पणि वाचा आपणी। पालइ साहस धीरो रे।
जीवित पणि जातउ खमइ। केहइ गानि सरीरोरे ।।५।। के० ।।

वर दीधउ राणी भणी। पणि मन मइ दिलगीरो रे।
इण अवसरि आव्यउ तिहा। राम पिता नइ तीरो रे ।।७।। के०।।

तात ना चरण नमी कहइ। का चिन्तातुर आजो रे।
आगन्या जिण मानी नहि। तेसू कहेउ काजो रे ।।८।। के०।।

किवा देस को उपद्रव्यउ। के राणी कीयउ किलेसो रे।
के किण सुत न कह्यउ कीयउ। के कोइ वात विसेसोरे ।।८।। के ० ।।

के जउ कहिवा सरिखू हुयइ। तउ मुझ नइ कहउ तातो रे।
कहइ दसरथ पुत्र तुझ थी कृ ण अकहणी वातो रे ।।९।। के०।।

पुत्र तइ कारण जे कह्यौ। ते माहे नहि कोयो रे।
पणि केकइ वर मागइ। कह्यउ परमारथ सोयो रे ।।१०।। के।।

राम कहइ राज वीनवउ। वर दीधउ तुम्हे केमो रे।
सुणि तु पुत्र दसरथ कहइ। जिमि धुरि थी थयउ तेमो रे ।।११।। के०।।

एक दिवस नारद मुनी आव्यउ अम्हारइ पासो रे।
कहइ लकापति पूछियउ। एक निमित्ति उलासो रे ।।१२।। के०।।

हूं लकागढ मउ धणी । समुद्र खाइ जिहु पासा रे ।
जमसिरि मसर जे सिजइ । ते माहरइ घरि दासो रे ॥१३॥ के०॥

देवता पणि डरता रहइ । नवग्रह कीधा चेरो रे ।
हूंतउ त्रैलोक्य कंटकी । को नहि मुझ अधिकेरो रे ॥१४॥ के०॥

भाई विभीषण सारिखा । पुत्र बली मेघनादो रे ।
बइरी मारि प्रलय किया । तेज तणी परसादो रे ॥१५॥ के०॥

हू रावण राजा बडउ दसमाथा छइ मुज्झो रे ॥
हू पणि बीहूं जेह थी ते सूझइ को तुज्झो रे ॥१६॥ के०

बोल्यउ तुरत निमित्तियउ । वाणी मोटउ डर बयो रे ।
दसरथ नां बेटा थकी । जनक सुता परसगो रे ॥१७॥ के०॥

वात सुणी विसखउ थयउ । तेडयउ विभीषण वेगो रे ।
वा दसरथ नइ जनक नइ । मारि टलइ ज्यु उदेगो रे ॥१८॥ के०॥

हूं तुम पासइ आवीसउ । तिहां सुण्यउ एह प्रकारो रे ।
साहमीना सगपण भणी । तुम्हें रहिज्यो हुंसियारो रे ॥१९॥ के ॥

जनक नइ पणि इम हिज कहि । नारद गयउ निज ठामो रे ।
गुप्त मंत्र करि मंत्रि सु । हू छोडी गयउ गामो रे ॥२०॥ के०॥

मुझ मूरति करि लेपनी । बइसारी मुझ ठामो रे ।
जनक नइ पणि इम हिज कीयउ आप रखा हित कामो रे ॥२१॥ के०॥

आ विभीषण एकदा । दीधउ खडग प्रहारो रे ।
बे मूरति भांजी करी । उतरयउ अम्ह नइ मारो रे ॥२२॥ के०॥

भीजी ढाल पूरी थइ । बुद्धि फली बिहुं रायो रे ।
समयसुन्दर कहइ भ्रम करउ । जिम टलइ अति अन्तरायो रे ॥२३॥ के०॥

[सर्वगाथा ६३]

दूहा ४

हू तिहाथी फिरतउ थकउ, पृथिवी माहि अपल्ल ॥
कौतुक मंगल नगर मइ, आयउ एकल मल्ल ॥१॥

सुभमति रायनी भारिजा, पृथिवी कूखि उपन्न।
केकेइ नामइ तिहा, कन्या एक रतन्न ॥२॥

संवरा मंडप माडियउ, वइठा वहु राजान।
हू पणि तिहाछानउ थकउ, वइठउ एकइ थान ॥३॥

रूपवन्त कन्या अधिक, चउसठ कला निधान।
सोल शृङ्गार सजि करी, आवी भर जूवान ॥४॥

[सर्वगाथा ६७]

ढाल चौथी

देसी—वरसालउ सांभरइ, अथवा—हरिया मन लागो

एतउ कुमरी सहुनइ देखती, वहि आवि माहरइ पासिरे ॥
केकेइ वर लाधउ। तू साभलि बेटा एमरे। के०
एतउ मुझ नइ देखि मोहि रही, मृगली जाणें पडी पासिरे ॥१॥के०॥
एतउ भ्रू भमरी लागी रही, मुझ वदन कमल रस माहिंरे। के०
एतउ वरमाला माहरइ गलइ, घाली बिहु हाथे साहि रे ॥२॥के०॥
एतउ राजा तूर वजाडियां, भलउ कुमरी वर्यउ भरतार रे ॥के०॥
एतउ रूठा बीजा राजवी, कहइ आणि घणउ अहंकार रे ॥३॥के०॥

पतउ ए पंथी कोइ मापइउ कुल वंस म जाणइ कोइ रे ।।के०।।
पतउ जउ कुमरी चूकी वरवउ, पणि मोसहुँ नहि अम्हे ताइरे ।।४।।के०।।
पतउ राजा कहइ किसूं कीजिइ थकि पाछी कीजइ केम रे ।।के०।।
पतउ भूप कहइ कुल पूछीयइ, तुं कुण कहि जिम छइ तमो रे ।।५।।के०।।
पतउ हुं बोल्यउ वंसमाहरू, कहिस हिवाहनउ मउ मुझ रे ।।के०।।
पतउ चतुरंग सेना सझिकरी, सुममति सूं मांड्यउ जुज्झ रे ।।६।।के०।।
पतउ सुममति भाखतउ देखिनइ, हुं रथ चड्यउ ततकाल रे ।।के०।।
पतउ केकेइ थई सारथी रथ फेरवउ करक विपाक रे ।।८।।के०।।
पतउ मइ तीर नांख्या तेहना, जाणे वरसण लागउ मेह रे ।।के०।।
पतउ चायइ मारया वादला, सहु भांजिगया भूपतेह रे ।।६।।के०।।
पतउ जय जय सबद बंदी भणइ, गुण प्रगट थया सुविवेक रे ।।
पतउ पुत्री परणावी तिहां आडम्बर करिय अनेक रे ।।१०।।के०।।
पतउ केकेइ गुण रंजियउ मइ कह्यउ हुं तुठउ तुम्हरे ।।के ।।
पतउ मांगि कोइ वर सुन्दरी तुम्ह सानिधि कीतउ जुज्झ रे ।।११।।के०।।
पतउ केकेइ कहइ वर थापउ, मइ तुम्ह सरीखउ नाह रे ।।के०।।
पतउ वर वीजउ हुं सूं करू, तुम्ह दीठा मनि उछाह रे ।।१२।।के०।।
पतउ पणि वर कोइ मांगि तुं रंगीली हासउ मुंकि रे ।।के०।।
पतउ भाभी कहइ नव नाड़िया ए अवसर वी तूं न चूकि रे ।।१३।।के०।।

१—वर वीजउ हुं सूं करू थापउ मइ तुम्ह सरीखउ नाह रे ।
माभ कहइ नव नाड़िया ए अवसर वी रंग उछाहि रे ।।१२।।के ।।
२—मानि वचन प्रिया माहरउ ए अवसर मोटिम चूकि रे ।

एतउ केकेइ कहइ एहवु, माहरउ वर थांपणि राखि रे ।।के०।।
एतउ जद मागु देज्यो तदे, चन्द सूरिजनी छइ साखि रे० ।।१४।।के०।।
एतउ ते वर हेवणा मांगियौ, कहइ भरत नइ आपउ राज रे ।।के०।।
एतउ तू बइठा ते किम लहइं, तिण चिन्तातुर हुं आज रे ।।१५।।के०।।
एतउ राम कहइ राजि दीजियइ, केकेई पूरउ जगीस रे ।।के०।।
एतउ बोल पालउ तुमें आपणउ, मुझनइ नहि छइ का रीस रे ।।१६।।के०।।
एतउ वचन सुपुत्रना सांभली, हरखित थयउ दसरथ राय रे ।।के०।।
एतउ बात भली तेडउ इहा, तुम्हे भरतनइ कहउ समझाय रे ।।१७।।के०।।
एतउ भरत कहइ सुणउ माहरइ, नहीं राज सघाति[1] काज रे ।।के०।।
एतउ मुझ दीक्षा नउ भाव छइ, ए बांधव नइ द्यउ राज रे ।।१८।।के०।।
एतउ राम कहइ सुणि भरत तूँ, ताहरइ नहि राजनउ लोभ रे ।।के०।।
एतउ तउ पणि मा मनोरथ फलइ, बाप बोल नइ चाडउ सोभ रे।।१९।।के०
एतउ भरत भणइ हुं तुम थकां, किम राज ल्यूं जोयउ विमास रे ।।के०।।
एतउ राम कहइ बांधव सुणउ, अम्हे तउ लेस्यूँ वन वास रे ।।२०।।के०।।
एतउ चौथी ढाल पूरी थइ, कही केकेयी वर बात रे ।।के०।।
एतउ समयसुदर कहइ सांभलउ, खोटी वइयरि नी जाति रे ।।२१।।के०।।

[सर्व गाथा ११८]

दूहा ४

बात सुनी नइ कोपियउ, लखमण नाम कुमार ।
दसरथ पासि जई कहइ, का तुम्हें लोपउ कार ।।१।।

---

१ राम थकां ।

एतउ ए पंथी कोइ बापडउ कुण वंस न जाणइ कोइ रे ।।के०।।
एतउ जउ कुमरो चूकी बरउ पणि मांभहुँ नहि अम्हे तोइरे ।।७।।के०।।
एतउ राजा कहइ किस्यूं कीजिइ, वलि पाछी कीजइ केम रे ।।के०।।
एतउ नूप कहइ कुल पूछीयइ, तुं कुण कहि जिम छइ तेमो रे ।।८।।के०।।
एतउ हुं बोलयउ वसमाइरउ, कहिस दिखाइनउ वल मुझ रे ।।के०।।
एतउ चतुरंग सेना सजिकरी सुममति सुं मोकल्यउ झुम्म रे ।।६।।के०।।
एतउ सुममति भाजतउ देखिनइ, हुं रथ बइठउ ततकाल रे ।।के०।।
एतउ केकेइ थई सारथी, रथ फेरवउ फटक विचाल रे ।।७।।के०।।
एतउ मइ तीर नांख्या तेहनइ जाणे वरसण लगउ मेह रे ।।के०।।
एतउ कायइ मारुया पाधरा, सहु भांजिगया नृपतेह रे ।।६।।के०।।
एतउ जय जय सबद थयो सगइ, गुण प्रगट थया सुविवेक रे ।।
एतउ पुत्री परणावी तिहाँ आडम्बर करिय अनेक रे ।।१०।।के०।।
एतउ केकेइ गुण रंजियउ मइ कहयउ हुं तुठउ तुमरे ।।के ।।
एतउ मांगि कोइ वर सुन्दरी तुभ सानिधि जीतउ झुम्म रे ।।११।।के०।।
एतउ केकेइ कहइ वर रहउ, मइ तुम सरीखउ नाह रे ।।के०।।
एतउ वर दीजइ हुं सूं करूं, तुम दीठा मंगि उछाह रे ।।१२।।के०।।
एतउ पणि वर कोइ मांगि तुं रंगीली हासउ मुंकि रे ।।के ।।
एतउ प्राणी छइ नव माहिया ए अवसर थी तूं म चूकि रे ।।१३।।के०।।

१—वर दीयउ हुं सूं करूं रहयउ मइ तुम सरीखउ नाह रे ।
प्राण बसइ मन माहिया ए अवसर थी अंग उछाहि रे ।।१२।।के ।।
२—मानि वचन प्रिया माहरउ ए अवसर मोडिम चूकि रे ।

एतउ केकेइ कहइ एहवु, माहरउ वर थांपणि राखि रे ।।के०।।
एतउ जद मागु देज्यो तदे, चन्द सूरिजनी छइ साखि रे० ।।१४।।के०।।
एतउ ते वर हेवणा मांगियौ, कहउ भरत नइ आपउ राज रे ।।के०।।
एतउ तू बइठा ते किम लहइं, तिण चिन्तातुर हुं आज रे ।।१५।।के०।।
एतउ राम कहइ राजि दीजियइ, केकेई पूरउ जगीस रे ।।के०।।
एतउ बोल पालउ तुमें आपणउ, मुझनइ नहिं छइ का रीस रे।।१६।।के०।।
एतउ वचन सुपुत्रना सांभली, हरखित थयउ दसरथ राय रे ।।के०।।
एतउ बात भली तेडउ इहा, तुम्हे भरतनइ कहउ समझाय रे ।।१७।।के०।।
एतउ भरत कहइ सुणउ माहरइ, नहीं राज सघाति[1] काज रे ।।के०।।
एतउ मुझ दीक्षा नउ भाव छइ, ए बांधव नइ द्यउ राज रे ।।१८।।के०।।
एतउ राम कहइ सुणि भरत तूँ, ताहरइ नहि राजनउ लोभ रे ।।के०।।
एतउ तउ पणि मा मनोरथ फलइ, बाप बोल नइ चाडउ सोभ रे।।१६।।के०
एतउ भरत भणइ हुं तुम थकां, किम राज ल्यूँ जोयउ विमास रे।।के०।।
एतउ राम कहइ बांधव सुणउ, अम्हे तउ लेस्यूँ वन वास रे ।।२०।।के०।।
एतउ चौथी ढाल पूरी थइ, कही केकेयी वर बात रे।।के०।।
एतउ समयसुदर कहइ साभलउ, खोटी बइयरि नी जाति रे ।।२१।।के०।।

[सर्व गाथा ११८]

दूहा ४

बात सुनी नइ कोपियउ, लखमण नाम कुमार।
दसरथ पासि जई कहइ, कां तुम्हें लोपउ कार ।।१।।

---

१ राम थका ।

राम थकां सीता तणउ, रावनउ नहीं अधिकार।
सीह सावूकउ गुंफतइ, कुण बीजउ मिरगारि ॥२॥
कलपवृक्ष आंगणि फल्यउ तउ बीजइ स्याइ काजि।
स्वंकरइ बेडी आपणी, जे सरइ काम श्रिहाजि ॥३॥
राम विना देवा न थयं, किमनइ राज्य हुँ एह।
समझावउ रामइ थकी, लखमण बांधव तेह ॥४॥

[सर्वगाथा १२२]

ढाल पांचवीं

ढाल—धेति धेसन करि, अथवा—धन पदमावती (प्रत्येकबुद्धना पहला खंडनी आठवीं ढाल)

लखमण राम बेऊ मिली रे, हिव चाल्या वनवासो।
सीता पाणि पूंठि थकी रे, समझावइ राम तासोरे ॥१॥
राम वेसासइ आय हियडइ दुःख न मायो रे।
साथि सीता थकी आणि सरीरनी छायो रे ॥२॥ रा
अम्हे वनवासइ नीसरयारे ताठ तणइ आदेश।
दूं सुकुमाल छइ अति घणुं रे, किम दुःख सहिसि कीलेसोरे ॥३॥ रा०
भूख तृषा सहिवी तिहारे, सहिवा टाढइ सीव।
वन अटवी ममिवउ वली रे, न को तिहां आपणो मीतो रे ॥४॥ रा०
ते भणी इहां थाटी रहे रे अम्हे आवा परदेस।
मस्तावइ आवी करी रे आपणइ पासि रालेसोरे ॥५॥ रा०
सीता कहइ मीतम सुणउ रे, तुम्हे कहउ ते तौ साच।
पणि विरहउ न खमी सकुंरे पलकी पछ काचो रे ॥६॥ रा०

घर मनुष्य भख्यउ तख्यउ रे, पणि सूनउ विण कंत।
प्रीतम सूँ अटवी भली रे, नयणे प्रीयू निरखंतो रे ॥७॥ रा० ॥
जोवन जायइ कुल दिउरे, प्रीयुसू विभ्रम प्रेम।
पंचदिहाड़ा स्वाद ना रे, ते आवइ वलि केमोरे ॥८॥ रा०॥
कंत विहुणि कामनि रे, पगि पगि पामइ दोप।
साचउ पणि मानइ नहि रे, जउ वलि ते पायइ कोसोरे ॥६॥ रा०
वर बालापणइ दीहडा रे, जिहा मनि रागनइ रोस।
जोवन भरिया माणसारे, पगि पगि लागइ छइ दोसोरे ॥१०॥ रा०
मइ प्रीतम निश्चय कियउरे, हुं आविसि तुम साथि।
नहि तरि छोडिसि प्राण हुरे, मुझ जीवित तुम हाथो रे ॥११॥ रा०
पाली न रहइ पदमिनी रे, सीता लीधी साथि।
सूर वीर महा साहसी रे, नीसख्या सहु तजी आथो रे ॥१२॥ रा०
लछमन राम सीता त्रिण्हेरे, पहुता तातनइ पासि।
पाय कमल प्रणमी करीरे, करइं त्रिण्ह अरदासो रे ॥१३॥रा०॥
अपराध को कीधउ हुइ रे, ते खमज्यो तुम्हें तात।
दसरथ गदगद स्वरइ कहइ रे, किसउं अपराध सुजातो रे ॥१४॥रा०॥
जिम सुख तिम करिज्यो तुम्हे रे, हु लेइसि व्रत भार।
विषम मारग अटवी तणउ रे, तुम्हें जाज्यो हुसियारो रे ॥१५॥रा०॥
इम सीख माथइ चाडिनइ रे, पहुता माता पासि।
मात विहुँ रोतीथकी रे, हीयडइ भीड्या उलासो रे ॥१६॥रा०॥
मात कहइ मनोरथ हुतारे, अम्हनइ अनेक प्रकार।
वृद्धपणइ थास्या सुखी रे, तुम्हें छोड्या निरधारो रे ॥१७॥रा०॥

अम्हनइ मुख सनुकमइ रे, पाछि चल्या तुम्हें पुत्र ।
किम वियोग सहिस्यां अम्हे रे, कुण वनवास कउ सूत्रो रे ॥१८॥
कायइ बलि मुख देखस्यां रे, अम्हें तुम्हारू वच्छ ।
वेगा मिळिज्यो मातनइं रे, अथिर आउखुं छइ तुच्छो रे ॥१९॥रा०॥
राम कहइ तुम्हें मातजी रे, अधृति मकरिस्यउ काइ ।
नगर वसावी तिहां वळउ रे, तुम्हनइ छेस्यां तेडायोरे ॥२०॥रा ॥
विहुं माते किया पुत्रनइ रे, मंगलीक उपचार ।
आसीस दीधी पहुची रे पुत्र हुज्यो जयकारो रे ॥२१॥रा०॥
सीतापणि सासुतणा रे, चरण नमी ससनेह ।
सासू जपइ धन्य तु रे, प्रिय साथि चली नेहोरे ॥२२॥रा ॥
देवपूजि गुरु वांदिनइ रे, मिळि मिळि सहु सन्तोषि ।
खमी खमावी लोक सु रे, मीसच्छा हुइ निरदोसो रे ॥२३॥रा ॥
पांचमी ढाल पूरी थइ रे राय राणी सन्दोह ।
समयसुन्दर कहइ दोहिलउ रे, मात पिता नउ विछोहो रे ॥२४॥रा०

[सर्व गाथा १४६]

दूहा ३

संप्रेडण सांमि चल्या, सामन्तक भूपाल ।
मत्रि महामन्त्रि मण्डली बाल अनइ गोपाल ॥१॥
प्रजालोक सामि चल्या बलि चल्या वरण अढार ।
पवन छत्रीस पुकारता करता हाहाकार ॥२॥
अंगलणा बलि ओळगू दासी दास खवास ॥
किम करिस्यां आपे हिवइ, कुण पूरेस्यइ आस ॥३॥

[सर्व गाथा १४९]

ढाल छठी

देसी--ओलगडीनी । राग-मल्हार ॥

महाजन २ मिलीनइ सहु आव्यउ तिहा रे, विदा न मागी जाय ।
हियडु फाटइ दुख भरे बोलता रे, आँसू आँखि भराय ॥१॥
रामजी २ राजेसर वहिला आवज्यो रे, तुम विरहउ न खमाय ।
वीछडिया २ वाल्हैसर मेलउ दोहिलउ रे, तुम दीठां दुख जाय ॥२॥
सगली २ राणी रोयइ हूबके रे, रोयइ सगला लोग ।
नीद्रडी २ नाठी अन्न भावइ नही रे, व्याप्यउ विरह वियोग ॥३॥
केकेइ २ नइ कहइं लोक पांतरी रे, रामनइ बाहिर काढि ।
भरत नइ २ दिवरायउ भार राज नउ रे, विरूई स्त्री वेढि राढि ॥४रा०॥
पुरूष २ प्रधाने नगरी सोभती रे, दीसइ आज विछाय ।
चन्द्रमा २ विहुणी जेहवी यामिनी रे, कन्त विण नारि कहाय ॥५॥रा०
जलधर २ विहुणी जेहवी मेदनी रे, विण प्रियु सिज्या जेम ।
पदक २ विहुणी हारलता जिसी रे, आज अयोध्या तेम[1] ॥६॥रा०
ए जिहा २ जास्यइं पुरुष तिहा हुस्यइ रे, अटवी नगर समान ।
असरण २ हुस्यां पणि आये हिवइ रे, नगर अयोध्या रान ॥७॥ रा०॥
लोकना २ वचन इम सुणता थका रे, सीता लखमण राम ।
जिनवर २ प्रासादइ आवीनइ रह्या रे, कीधउ जिन परणाम ॥८॥रा०॥
तिणसमइ २ सूरिज देवता आथम्यउ रे, जाणे एणि विशेषि ।
रामनइ २ वियोगइ लोक आरडइं रे, ते दुख न सकु देखि ॥९॥रा०॥

१—अयोध्या नगरी तेम

अम्हनइ दुख सहुभमइ रे, पाछि चल्या तुम्हें पुत्र ।
किम वियोग सहिस्यां अम्हे रे, कुण वनवास कथ सूत्रो रे ॥१८॥
कइयइ वळि मुख देखस्यां रे, अम्हें तुम्हारू चन्द्र ।
वेगा मिळिज्यो मातनइ रे, अथिर आउखुं मइ तुज्झो रे ॥१९॥रा०॥
राम कहइ तुम्हें मातजी रे, अधृति मकरिस्यउ काइ ।
नगर वसावी तिहां वळउ रे, तुम्हनइ लेस्यां तेडावोरे ॥२०॥रा०॥
तिहां माते किया पुत्रनइ रे, मंगलीक उपचार ।
आसीस दीधी पद्मणी रे, पुत्र हुज्यो जमकारो रे ॥२१॥रा०॥
सीतापणि सासूतणा रे चरण नमी ससनेह ।
सासू कंपइ धन्य तुं रे, प्रिय साथि चली नेहारे ॥२२॥रा०॥
देवपूजि गुरु वांदिनइ रे, सिद्धि सिद्धि सहु सज्योपि ।
क्षमी खमावी लोक सुं रे मीसच्चा दुख निरदोखो रे ॥२३॥रा०॥
पांचमी ढाल पूरी थइ रे राय राणी अन्दोह ।
समयसुन्दर कहइ दोहिला रे मात पिता मन विछोहो रे ॥२४॥रा०

[सर्व गाथा १७५]

दूहा रे

संप्रेडण साथि चल्या सामन्तक भूपाळ ।
मंत्रि महामन्त्रि मण्डळी, बाल अनइ गोपाळ ॥१॥
प्रजालोक साथि चल्या वळि चल्या वरण अढार ।
चवन छत्रीस पुकारता करता हाहाकार ॥२॥
अंगसणा वळि ओळगू दासी दास खवास ॥
किम करिस्यां आपे हिवइ, कुण पूरेस्यइ आस ॥३॥

[सर्व गाथा १७८]

ढाल छठी

देसी---ओलगडीनी । राग-मल्हार ।।

महाजन २ मिलीनइ सहु आव्यउ तिहां रे, विदा न मागी जाय ।
हियडु फाटइ दुख भरे बोलता रे, आंसू आंखि भराय ।।१।।
रामजी २ राजेसर वहिला आवज्यो रे, तुम विरहउ न खमाय ।
वीछडिया २ वाल्हेसर मेलउ दोहिलउ रे, तुम दीठां दुख जाय ।।२।।
सगली २ राणी रोयइ हूबके रे, रोयइं सगला लोग ।
नीद्रडी २ नाठी अन्न भावइ नही रे, व्याप्यउ विरह वियोग ।।३।।
केकेइ २ नइ कहइं लोक पांतरी रे, रामनइ बाहिर काढि ।
भरत नइ २ दिवरायउ भार राज नउ रे, विरूई स्त्री वेढि राढि ।।४रा०।।
पुरूष २ प्रधाने नगरी सोभती रे, दीसइ आज विछाय ।
चन्द्रमा २ विहुणी जेहवी यामिनी रे, कन्त विण नारि कहाय ।।५।।रा०
जलधर २ विहुणी जेहवी मेदनी रे, विण प्रियु सिज्या जेम ।
पदक २ विहुणी हारलता जिसी रे, आज अयोध्या तेम[1] ।।६।।रा०
ए जिहां २ जास्यइं पुरुष तिहा हुस्यइ रे, अटवी नगर समान ।
असरण २ हुस्या पणि आये हिवइ रे, नगर अयोध्या रान ।।७।। रा०।।
लोकनां २ वचन इम सुणतां थका रे, सीता लखमण राम ।
जिनवर २ प्रासादइ आवीनइ रह्या रे, कीधउ जिन परणाम ।।८।।रा०।।
तिणसमइ २ सूरिज देवता आथम्यउ रे, जाणे एणि विशेषि ।
रामनइ २ वियोगइ लोक आरडइं रे, ते दुख न सकु देखि ।।९।।रा०।।

१—अयोध्या नगरी तेम

अम्हनइ सुख सम्रुद्रमइ रे, थाकि चल्या तुम्हे पुत्र ।
किम वियोग सहिस्यां अम्हे रे, कुण वनवास कउ सूत्रो रे ॥१८॥
कदयइ वलि मुख देखस्यां रे, अम्हें तुम्हारू चम्द ।
वेगा मिळिज्यो मातनइ रे, अथिर आउखु छइ तुम्हो रे ॥१९॥रा०॥
राम कहइ तुम्हें मातजी रे, अधृति मकरिस्यउ काइ ।
नगर वसावी तिहां वळउ रे, तुम्हनइ लेस्यां तेडायोरे ॥२०॥रा ॥
तिहुं माते किया पुत्रनइ रे, मगलीक उपचार ।
आसीस दीधी पहुची रे पुत्र हुज्यो चमकारो रे ॥२१॥रा०॥
सीतापणि सासुतणा रे चरण नमी ससनेह ।
सासू आपइ धन्य तु रे, प्रिय साथि चली जेहोर ॥२२॥रा०॥
देवपूजि गुरु वांदिनइ रे, मिळि मिळि सहु सन्तोषि ।
खमी खमावी लोक सु रे, नीसरया धुर निरदोसो रे ॥२३॥रा०॥
पांचमी ढाल पूरी थइ रे राय राणी अन्दोह ।
समयसुन्दर कहइ दोहिलउ रे, मात पिता सउ विछोहो रे ॥२४॥रा०

[सर्व गाथा १२१]

दूहा ३

संप्रेडण साथि चल्या, सामन्तक भूपाल ।
मन्त्रि महामन्त्रि मण्डली वाल अनइ गोपाल ॥१॥
प्रजालोक साथि चल्या वलि चल्या वरण अढार ।
पवन छत्रीस पुकारवा करता हाहाकार ॥२॥
अंगलग्ना वळि लोकगु, दासी दास अवास ॥
किम करिस्यां आपे हिवइ, कुण पूरेस्यइ आस ॥३॥ [सर्व गाथा १२४

ढाल छठी

देसी--ओलगडीनी । राग-मल्हार ॥

महाजन २ मिलीनइ सहु आव्यउ तिहा रे, विदा न मागी जाय ।
हियडु फाटइ दुख भरे बोलता रे, आँसू आँखि भराय ॥१॥

रामजी २ राजेसर वहिला आवज्यो रे, तुम विरहउ न खमाय ।
वीछडिया २ वाल्हेसर मेलउ दोहिलउ रे, तुम दीठां दुख जाय ॥२॥

सगली २ राणी रोयइ हूबके रे, रोयइ सगला लोग ।
नीद्रडी २ नाठी अन्न भावइ नही रे, व्याप्यउ विरह वियोग ॥३॥

केकेइ २ नइ कहइं लोक पांतरी रे, रामनइ बाहिर काढि ।
भरत नइ २ दिवरायउ भार राज नउ रे, विरूई स्त्री वेढि राढि ॥४रा०॥
पुरूष २ प्रधाने नगरी सोभती रे, दीसइ आज विछाय ।
चन्द्रमा २ विहुणी जेहवी यामिनी रे, कन्त विण नारि कहाय ॥५॥रा०
जलधर २ विहुणी जेहवी मेदनी रे, विण प्रियु सिज्या जेम ।
पदक २ विहुणी हारलता जिसी रे, आज अयोध्या तेम[1] ॥६॥रा०
ए जिहां २ जास्यइं पुरुष तिहा हुस्यइ रे, अटवी नगर समान ।
असरण २ हुस्या पणि आये हिवइ रे, नगर अयोध्या रान ॥७॥ रा०॥
लोकनां २ वचन इम सुणता थका रे, सीता लखमण राम ।
जिनवर २ प्रासादइ आवीनइ रह्या रे, कीधउ जिन परणाम ॥८॥रा०॥
तिणसमइ २ सूरिज देवता आथम्यउ रे, जाणे एणि विशेषि ।
रामनइ २ वियोगइ लोक आरडइं रे, ते दुख न सकु देखि ॥९॥रा०॥

१—अयोध्या नगरी तेम

अम्हनइ दुख समुद्रमइ रे, पाछि चाल्या तुम्हें पुत्र ।
किम वियोग सहिस्यां अम्हे रे, कुण वनवास कउ सूझो रे ॥१८॥
कइयइ वलि मुख देखस्यां रे, अम्हें तुम्हारउ वच्छ ।
वेगा मिलिज्यो मातनइं रे, अथिर आउखउ कह छुच्छो रे ॥१६॥रा०॥
राम कहइ तुम्हें मातजी रे, अधृति मकरिस्यउ काइ ।
नगर बसावी तिहां वछउ रे तुम्हनइ लेस्यां तेडायोरे ॥२०॥रा ॥
विहुं माते किया पुत्रनइ रे, मंगलीक उपचार ।
आसीस दीधी माउली रे पुत्र हुज्यो जयकारो रे ॥२१॥रा०॥
सीतापणि सासुतणा रे चरण नमी ससनेह ।
सासू कपइ धन्य तुं रे, प्रिय साथि चली जेहोरे ॥२२॥रा ॥
देवपूजि गुरु वांदिनइ रे, मिलि मिलि सहु सन्तोपि ।
खमी खमावी लोक सुं रे सीसधरा हुइ निरदोसो रे ॥२३॥रा ॥
पांचमी ढाल पूरी थइ रे राय राणी अन्दोह ।
समयसुन्दर कहइ दोहिलउ रे मात पिता मन विछोहो रे ॥२४॥रा०

[सर्व गाथा १४१]

दूहा ३

संप्रेडण साथि चल्या, सामन्तक भूपाल ।
मंत्रि महामन्त्रि मण्डली, बाल अनइ गोपाल ॥१॥
प्रजालोक साथि चल्या वलि चाल्या वरण अढार ।
पवन छत्रीस पुकारता करता हाहाकार ॥२॥
अंगतणा वलि ओलग् दासी दास खवास ॥
किम करिस्यां आपे हिवइ, कुण पूरेस्यइ आस ॥३॥

[सर्व गाथा १४८]

ढाल छठी

देसी—ओलगडीनी । राग-मल्हार ॥

महाजन २ मिलीनइ सहु आव्यउ तिहा रे, विदा न मागी जाय ।
हियडु फाटइ दुख भरे बोलता रे, आंसू आंखि भराय ॥१॥
रामजी २ राजेसर वहिला आवज्यो रे, तुम विरहउ न खमाय ।
वीछडिया २ वाल्हेसर मेलउ दोहिलउ रे, तुम दीठां दुख जाय ॥२॥
सगली २ राणी रोयइ हूवके रे, रोयइं सगला लोग ।
नीद्रडी २ नाठी अन्न भावइ नही रे, व्याप्यउ विरह वियोग ॥३॥
केकेइ २ नइ कहइ लोक पातरी रे, रामनइ बाहिर काढि ।
भरत नइ २ दिवरायउ भार राज नउ रे, विरूई स्त्री वेढि राढि ॥४रा०॥
पुरूष २ प्रधाने नगरी सोभती रे, दीसइ आज विछाय ।
चन्द्रमा २ विहुणी जेहवी यामिनी रे, कन्त विण नारि कहाय ॥५॥रा०
जलधर २ विहुणी जेहवी मेदनी रे, विण प्रियु सिज्या जेम ।
पदक २ विहुणी हारलता जिसी रे, आज अयोध्या तेम[1] ॥६॥रा०
ए जिहा २ जास्यइं पुरुष तिहा हुस्यइ रे, अटवी नगर समान ।
असरण २ हुस्या पणि आये हिवइ रे, नगर अयोध्या रान ॥७॥ रा०॥
लोकना २ वचन इम सुणता थका रे, सीता लखमण राम ।
जिनवर २ प्रासादइ आवीनइ रह्या रे, कीधउ जिन परणाम ॥८॥रा०॥
तिणसमइ २ सूरिज देवता आथम्यउ रे, जाणे एणि विशेषि ।
रामनइ २ वियोगइ लोक आरडइं रे, ते दुख न सकु देखि ॥९॥रा०॥

१—अयोध्या नगरी तेम

सामंतक पाछा वल्या, पणि मन मइ विपवाद ।
रामवियोग दुखी थया, सगलउ गयउ सवाद ।।२।।
तीर्थङ्कर नइं देहरइ, आवी बइठा तेह।
दीठउ साध सोहामणो, अटकल्यो तारक एह ।।३।।
किणही संयम आदर्‍यउ, किणही श्रावक धर्म्म ।
के पहुता साकेतपुरि, ते तउ भारी कर्म्म ।। ४ ।।
तिण विरतात सहु कह्यउ, ते सुणि नइं मा-बाप ।।
करिवा लागा रामनउं, सहु को दुक्ख विलाप ।।५।।
दशरथ दीक्षाआदरी, भूतसरण गुरु पासि ।
तपसंयम करइं आकरा, त्रोडइ कर्म्म ना पास ।।६।।

[सर्वगाथा १७३]

ढाल सातवीं

ढाल—थांकी अवलू आवइ जी,

पुत्र वनवासइ नीसर्‍याजी, दशरथ लीधी दीख, म्हारा रामजी ।
सुमित्रा अपराजिताजी, दुख करइं बेहु सरीख ।।१।।
म्हारा रामजी तुम्ह विण सूनउ राज ।
मा सगली अलजउ करइ जी, आवउ आजोध्या आज ।।२।।म्हा०।।
पांख विहूणी पंखिणी जी, कांय सिरजी करतार ।।
पुत्र अनइं पति बीछड्याजी, अम्हनइ कुण आधार ।।म्हां।।३।।
नयणें नाठी नींदडीजी, अन्न न भावइ लगार ।
पाणी पणि नूतरइ गलइजी, हीयडुं फाटणहार ।।म्हां०।।४।।

हिमनी वाळी कमळिनीजी, जिमदीसइ विलखाय।
पुत्र वियोग मूरी मुंईजी, मुम्ह विण घड़ीय न जाय ॥६॥म्हा०॥
दुलकरती राणी सुणीजी, केकेई थयो दुःख।
भरतनइ कहइ रोती थकी जी, राम विना नहि सुख ॥म्हा०॥६॥
तुम्हनइ राज सोहइ नहीं जी विण लखमण विण राम ॥
मा पणि मरिस्यइ मूरती जी, पडिस्यइ सयळ विराम ॥७॥म्हा०॥
तिणपुत्र वा तु उतावळउ जी राम मनावी आणि।
केकेई साथइ करी जी, भरत चाल्यउ हित जाणि ॥८॥ म्हा०॥
चपळ तुरंगम चढी चूहड जी, पगि २ पूछइ राम।
गंभीरा नदी ऊतरी जी, आवी विषमो ठाम ॥६॥म्हा ॥
बोहर्त मुकि आपई गयउ जी, राम देखी गयऊ माय ॥
आंखें आंसू नांखतो जी, भरत पड्यउ राम पाय ॥१०॥म्हा०॥
रामइ हीअड भीडियउजी लखमण दीयो सनमान।
करजोडी भई बीनवइ जी तुम्हें मुम्ह तात समान ॥११॥म्हा ॥
राज करो तुम्हें आविनइ जी, हूं छत्र धारीसि तुम्ह।
सत्रुघन चामर ढाळस्यइ जी पम मनोरथ अम्ह ॥१२॥म्हा०॥
लखमण मंत्री थास्यइ जी तुरहें सु कउ वनवास।
केकेई आवी विनइ जी ऊतरी रथथी उल्हास ॥१३॥म्हा०॥
हीयडइ भीडी मइ कहइ जी पाछा आवउ पुत्र।
राज अयोध्यानउ भोगवउ जी वात पडइ जिमि सूत्र ॥१४॥म्हा०॥
नारीमी जाति तोछडी जी कुछ कपटनउ गेह।
अपजस अदेखाई करइ जी अपराध खमजो एह ॥१५॥म्हा०॥

राम भणइ खत्री अम्हेजी, न तजउ अंगीकार ।
भरत करो राज आपणइ जी, अम्हें ग्रहउ डंडाकार ॥१६॥म्हा०॥
रामइं भरतनइं तेडिनइं जी, दीधउं हाथ सु राज ।
संतोषी सप्रेडीया जी, सहु करो आपणा काज ॥१७॥म्हा०॥
सातमी ढाल पूरी थई जी, राम रह्या वनवास ।
समयसुन्दर कहइं सहु मिली जी, भरतनइ द्यउ साबास ॥१८॥म्हा०॥
बीजउ खंड पूरउ थयो जी, सनिधि श्री जिनचद ।
सकलचद सुपसाउलइ जी, दिन २ अधिक आणंद ॥१९॥म्हा०॥
श्री खरतर गच्छ राजीयोजी, श्रीजिनराजसूरीस[1] ।
समयसुन्दर पाठक कहइ जी, पूरवउ संघ जगीस ।

[सर्वगाथा १९३]

इतिश्री सीताराम प्रबन्धे राम-सीता-वनवास वर्णने नाम द्वितीयः खण्ड· सम्पूर्णः ।

तीसरा खण्ड

दूहा १२

त्रिण विन गीत न गाइयइं, त्रिण विन मुक्ति न होई ।
कहु त्रीजउ खंड ते भणी, जिम लहइं स्वाद सकोइ ॥१॥
रामचन्द आश्रम रह्या, पहिली रात मझार ।
आवी आगलि चालता, अटवी डडाकार ॥२॥
पंछी कोलाहल करइं, सीह करइं गुजार ।
केसरि कुम्भ विदारिया, गजमोती अबार ॥३॥

१—श्री जिनसागरसूरीश ।

चिहुँ दिसि दीसइ चीतरा, वलि दावानल दाह।
वानर बोंकारव करइ, वनमइ चिउइ वराह ॥४॥
व्यम्रचित्त वन छांपियउ, चालि गया चीत्रउडि।
नाना विध वनराइ जिहाँ चित्रांगदनी ठउडि ॥५॥
अद्भुत फल आस्वादता करता विविध विनोद।
सीताराम तिहाँ रह्या केइक दिन मनमोद ॥६॥
तिहांथी अनुक्रमि चालिया आया अवंती देस।
तिहाँ इकदेस सूनउ थकउ, देखी थयो मंदेस ॥७॥
गाइ भैंसि छूटी भमइ, धानभून भरया ठाम।
गोहनी गोरस सू भरी फलफूल भरया आराम ॥८॥
मारिग भागा गाडला, छूटा पड्या बलद।
ठामि २ दीसइ घणा पणि नहि मनुष्य सबद ॥९॥
बइठा सीतल छांहडी, सीतासु श्री राम।
लखमण बांधवनइ कहइ, किम सूनउ ए आम[1] ॥१०॥
देखीनइ को माणस इहाँ पूछां कुण निमित्त।
लखमण थई उ चउ चढ़यउ एकमि ह लि दुरत ॥११॥
दूरियकी इक आवतउ, दीठउ पुरुष उदास।
लेनरमइ ले आवीयउ, लखमण बांधव पासि ॥१२॥
करि प्रणाम बयठउ रहउ, रामइ पूछ्यउ एम।
परमारथ कहुँ पंथिया, सूनउ देस ए केम ॥१३॥

१—गया
२—ग्राम

ढाल पहली

राग रामगिरी

[चाल–जिनवर स्यु मेरउ चित्त लीणउ।
अम्हनइ अम्हारइ प्रियु गमइ। काजी महमदना गीतनी–ढाल]

कहइ पंथी वात वेकर जोडी, दसपुर नगर ए खास रे।
रयणायर छोडी जलदूपणि, लखमी कीधउ निवास रे ॥१॥
रूडारामजी। देस सूनउ इण मेलिरे, कहता लागस्यइं वेलि रे।
कहता थास्यइ अवेलि रे ॥रू०॥आ०॥
रिद्धि समृद्ध सरगपुर सरिखउ, विवुध वसइं जिहां लोक रे।
सुख सतान सुगुरुनी सेवा, मनवंछित सहु थोक रे ॥२॥रू०॥
सरणागत वज्र पजर सरिखउ, वज्रजघ राय तत्र रे।
न्यायनिपुण विनयादिक गुणमणि, सोभित सुजस पवित्र रे ॥३॥रू०॥
पणितेमइं सवलउ एक दूपण, नहिं दया धरम लिगार रे।
रात दिवस आहेडइं हीडइं, करइं वहु जीव संहार रे ॥४॥रू०॥
एक दिवस मारी एक मृगली, गरभवती हुती तेह रे।
गरभ पड्यउ तडफडतउ देखी, राजा धूजी देह रे ॥५॥रू०॥
मनमाहे राजा इम चींतवइं, मइकीधउ महापाप रे।
निरपराध मारी मृगली भ्रभ,[1] देवनइ कवण जबाब रे ॥६॥रू०॥
बांभण १ साध २ नइस्त्री ३ वाल ४ हत्या, ए मोटा पाप जोइ रे।
ताडन तरजन भेदन छेदन, नरगतणा दुख होइ रे ॥७॥रू०॥

१—ए।

हुं पापी हुं दुरगति गामी, हुं निरदय हुं मूढ रे ।
इम वयराग धरी राय चल्यउ, आगइ तुरग आरूढ रे ॥८॥रू०॥
पहुतउ साध बइठउ सिल ऊपरि, करतउ आतापन एक रे ।
करि प्रणाम राजा इम पूछइ, आण्यउ परम विवेक रे ॥९॥रू०॥
स्यु कष्ट करइ ऊन्हालइ बइठउ, कां सहइ तावड सीत रे ।
कां सहइ भूख त्रिषा तुं सबली, चालतोरी विपरीत रे ॥१०॥रू०॥
साध कहइ तुं सांभलि राजा, आतम हित करूं एह रे ।
तप संयम करी परलोक साधूं, जीवती न गमुं देह रे ॥११॥रू०॥
जीव मारीनइ जे मांस खायइ, मद्य पीयइ वली जेह रे ।
नर भव खायउ निष्फल गमाडइ, दुरगति जायइ तेहरे ॥१२॥ रू० ॥
मांस भोजन ते अहित कहीजइ, ताव मांहे घी पान रे ।
तपसंयम आतम हित कहीयइ, मोखनइ सुख थान रे ॥१३॥ रू० ॥
साध वचनइ राजा प्रतिबूधउ, पभणइ बे करजोडि रे ।
साधजी धरम सुणावि तुं सूधउ, पाप करम थी छोडि रे ॥१४॥ रू० ॥
त्रीजा खंड तणी ढाल पहिली, पूरी थई ए वाणि रे ।
साधु संसार समुद्र थी तारइ, समयसुन्दरनी वाणि रे ॥१५॥ रू० ॥

[सर्वगाथा २८

दूहा ४

देव तउ श्रीवीतराग ते, गुरु सुसाध भगवंत ।
धम्म ते केवलि भाखीयउ, समकित एम कहंत ॥१॥
एक तीर्थंकर देवता, बीजा साध प्रबुद्ध ।
बीजानइ प्रणमइ नहीं, तेहनउ समकित सुद्ध ॥२॥

जीवनइं मारइं जे नहीं, जूठ न बोलइं जेह ।
अणदीधउ जे लयइ नहीं, न धरइ नारी नेह ॥३॥
आरंभ कर्म्म करइं नहीं, न करइं पाप करम्म ।
वलि जे इन्द्री वस करइ, धरमनउ एह मरम्म ॥४॥

[सर्वगाथा ३२]

ढाल बीजी २

राजमती राणी इणिपरि बोलइ, नेमि विणा कुण घुंघट खोलइ एहनी ढाल

धरम सुणी राजा प्रतिबूधउ, निरमल समकित पालइ सूधउ ॥१॥ ध०॥
एहवउ राजा अभिग्रह कीधउ, साधतणइ पासइं सुंस लीधउ ॥२॥ ध०
अरिहंत, साध विना नहिं नामु, सिर किणनइं सुध समकित पामुं ॥३॥
साधु वादी राजा घरि आयउ, लाधउ निधान जाणे सुख पायउ ॥४॥
देव जुहारइं गुरुनइं वंदइं, जिनधर्म करतउ मनि आणदइ ।५। ध० ।
श्रावकना व्रत सूधा पालइ, श्रीजिन सासन नइं अजुयालइं ॥६॥ ध० ॥
एक दिवस मन माहि विचारइं, किम मुझ सूँस ए पडिस्यइ पारइ ७ ।ध०
ऊजेणी नगरी नउ राजा, सीहोदर तिणसु मुझ काजा ॥८॥ ध० ॥
सीस नमाडूँ तउ सुंस भाजइ, प्रणम्या विन किम पडगनउ खाजइ ६ ।
मुद्रिकामइं मुनिसुव्रत मूरति, राय करावी सुंदर सूरति ॥१०॥ ध०
सीहोदरना प्रणमइं पाया, पणि प्रतिमा ना अध्यवसाया ।११। ध०
इण करता दिन वउल्या केता, सावतउ समकित सुप्रसननेता ॥१२॥ ध०
दुसमण भेद कह्यो राजानइं, घाली घात पापइ पचिवानइ । १३ ध०
कुटिल चालइं परछिद्र गवेषइ, दो जीभउ उपकार न देखइ ॥१४॥ ध०

सीहोदर राजा सुणी रूठउ, कालकूवाव जिमि¹ ते गूठउ ॥१६॥ प०
दसपुर नगर नउ देश बखाए, वज्रजंघ राजानइ मारू । १६ प०
बाजा वजत घणा वजडाया वागिया सर्व दिसोदिस धाया ॥१७॥ प०
गयगुडीया घोडा पाखरिया, नालि गोळा सेती रथ भरिया ॥१८॥ प०
मुझ प्रणमइ नहि ते बोल साम्भउ राजा कटक करीनइ आव्यउ ॥१६॥
दसपुर नगर भणीते आवइ, तेहवइ एक पुरुष तिहां आवइ ॥२०॥ प०
वज्रजंघनइ पाये लागी, कहइ एक वात सांमलि सोभागी ॥२१॥ प०
राय भणइ कुणतु वात केही, पुरुष कहइ कुम तूं सुणि कहूं जेही ॥२२॥
कुंडलपुर नगरी नउ हुं वासी पुरखी सकल कला अभ्यासी ॥२३॥ प०
मात पिता मुझ सुधा श्रावक हुं तेहनउ पुत्र पुण्य प्रभावक ॥२४॥ प०
वियत नाम जोबन मदमातउ, पणि वीतराग ने वचने रातउ। २५॥ प०
व्यापार हेति उजेनी आयउ, तिहां मइ द्रव्य घणउ उपायउ ॥२६॥ प०
बीजा खडनी ढाल ए बीजी समयसुंदर कहइ मुणिजरउ जी ॥२७॥

सर्वगाथा ४६

दूहा ११

इकदिन मुझ दृष्टइ पडी केलिगरभ सुकुमाल ।
चंद्रवदनी मृगलोयणी तिलक विराजत भाल ॥१॥
रूपइ रंभा सारखी मदमाती असराल ।
अनंगलता वेस्या इसी हूं पूछउ ततकाल ॥२॥
कुण-कुण नर चूका नहीं श्रावक नइ अणगार ।
अंत लेसी ए बात नउ, न पडइ समझि लिगार ॥३॥

१—विस्मृत

हुं लुब्धधउ कामी थकउ, गणिकासुं दिनराति ।
विषयतणा सुख भोगवुं, विगड्यउ तेहनी वात ॥४॥
धन सघलउ खूटी गयु, निरधन थयउ निटोल ।
अन्य दिवस गणिका कहइं, साभलि प्रीय मुझ[1] बोल ॥५॥
पटराणी ना कानना, कनक कुंडलनी जोडि ।
आणी दे ऊतावली, पूरि प्रियू मुझ कोडि ॥६॥
चोरीइं पइठउं राति हु, राजानइ आवासि ।
राय राणी सूता जिहाँ, भोगवि भोग विलास ॥७॥
हू छानु छिप नइं रह्यो, जाण्यु सोवइं राय ।
तउ राणी ना कानना, कुंडल ल्यु धवकाय ॥८॥
राजा चिंतातुर हुतउ, निद्रा नावइं तेणि ।
राणी पूछइं प्रीयु तुम्हें, चिंतातुर सा केण ॥९॥
स्त्रीनइ गुह्य न दीजीयइं, वली विशेषइ राति ।
तिणि राजा बोलइ नहीं, बोलायउ बहुभाति ॥१०॥
राणी हठ लेई रही, गुह्य कह्यो नृप ताम ।
हुँ मारिसु वज्रजंघ नइं, न करइ मुझ परणाम ॥११॥

सर्वगाथा ७०

ढाल ३

चाल—१ सुण मेरी सजनी रजनी न जावइ रे,
२ पियुड़ा मानउ बोल हमारउ रे ।

सुण मेरा साहमी वात तउ हितनी रे ।
साहमी माटइं कहुँ छु चितनी रे ॥१ सु०॥

मइ इम आण्यु धन ते राया रे।
वरूइ समकित सूधा पाया रे ॥२ सु०॥
हुं पापीजे चोरी पइठइ रे।
आगमी मरणत हुँ इहाँ बइठउ रे ॥३ सु०॥
वेश्या लुबधइ द्रव्य गमायउ रे।
आपणउ कीय इह लोकि पायउ रे ॥४ सु ॥
जिन ध्रम जाण्यउ नइ फल लीजइ रे।
साहमीनइ उपगार करीजइ रे ॥५ सु ॥
इम जाणीनइ भेद जणाया रे।
हुं आमर्ष लेुँ वात सुणाया रे ॥६ सु ॥
सीहोदर राजा तु आवइ रे।
तिण आगइ कुण जीवत जावइ रे ॥७ सु०॥
जे जाणइ ते तुं हिव करिजे रे।
धीरज समकित उपरि धरिजे रे ॥८ सु०॥
राव कहइ तुं पर उपगारी रे।
धन तिज्ञा तु अति सुविचारो रे ॥९ सु०॥
साबासि तुम्ह नइ भेद जणायउ रे।
साहमी सगपण साच दिखायउ रे ॥१० सु ॥
वात सुणीनइ ततखिण राजा रे।
देस ल्यास्यउ कटक आवाजा रे ॥११ सु ॥
आप रहउ राय नगरी माहि रे।
सबरे पहिरे टोप सनाहे र ॥१२ सु ॥

अनपाणी ना संचा कीधा रे।
नगरी ना दरवाजा दीधा रे ॥१३ सु०॥
सीहोदर अति कोपइ चढयउ रे।
नगरी चिहु दिस वींटी पडयउ रे ॥१४ सु०॥
दूत सु मुकइ राय संदेशा रे।
चरण नमीनइ भोगवि देसा रे ॥१५ सु० ॥
राय कहइं हुं राज न मागु रे।
चरण न लागु सुस न भागु रे ॥१६ सु० ॥
सीहोदर सुणि अति घणु कोप्यउ रे।
इणि माहरउ वोल देखउ लोप्यउ रे ॥१७ सु० ॥
हिव हुं एहनइ देस उतारूँ रे।
जीवतउं झाली गरदन मारुं रे ॥१८ सु० ॥
इम वेऊ राय अखस्था वइठा रे।
एक वाहिर एक माहि पइठा रे ॥१९ सु० ॥
देस ए हुँतउ पहिलउ ए धूनउ रे।
इण कारण हीवणा थयउ सूनउ रे ॥२० सु० ॥
ए वृतांत कह्यउ मइ तुम्हनइं रे।
हिव राजेसर सीख द्यउ मुझ नइ रे ॥२१ सु० ॥
हुं जाउं छ स्त्रीनइं कामइ रे।
इमकही रामनइ मस्तक नामइ रे ॥२२ सु० ॥
कडि कंदोरउ रामइं दीधउ रे।
सीख करीनइं चाल्यउ सीधउ रे ॥२३ सु० ॥

प्रीती डाभ्य खंड प्रीतानी रे।
समयसुंदर कहइ प्रम दइवानी रे ॥२४ सु ॥

[सर्वगाथा १४]

॥ ढाल चउथी चदायणनी ॥ पणि ढूहइ २ चाल ॥
॥ राग केदार गउडी ॥

राम भणइ लखमण भणी चालउ दसपुर गाम।
साहमी नइ सानिधि करउ, परम तणुं ए काम॥
॥ चाल ॥
परमतणु एकाम कहीजइ साहमीवछल वेगि वहीजइ।
दसपुर नगर बाहिर बे भाई, चन्द्रप्रभ देहरइ रह्या आई ॥१॥
चन्द्रप्रभ प्रणमी करि, लखमण नगर मझारि।
राजभवनि भोजन भणी, पहुतउ परम उदार॥
॥ चाल ॥
पहुतउ परम उदार कुमार देखी राजा कहइ सुयार।
एहनइ भोजन द्यउ अति सार एकोइ पुरुष रतन अवतार॥२॥
कहइ लखमण बाहिरि अछइ गुरु बांधव परिसिद्ध।
अणजीम्या जीमूं नहीं द्यइ गुरु भोजन सिद्ध।
॥ चाल ॥
द्यइ भोजन राजा अति ताजा पंचामृत खाजु नइ खाजा॥
लखमण राम समीप ले आवइ, भोजन जिमिमइ आणंद पावइ॥३॥
राम कहइ लखमण प्रतइ मळपण देखि भूपाळ॥
अणजोअव्यो पणि आपीयउ, गुरु भोजन ततकाल॥

॥ चाल ॥

आघउ तुझ भोजन लह्यउ माहिज, तुहिवकरि साहमीनइं साहिज।
गयउ लखमण सीहोदर पासइं, भरतइ मु क्यउ दूत इम भासइ ॥४॥
हू सगली पृथिवी नउ धणी, सहुको मुझ छत्रछाय।
व्रजजंघसु का करइं, एवडउ जोर अन्याय॥

॥ चाल ॥

एवडउ जोर अन्याय म करि तु, म करि सग्राम पाछउ जा घरि तुं।
सीहोदर कहइ भरत न जाणइ, गुण दूषण तेहना तिण ताणइ ॥५॥
सीहोदर कहइ माहरउ, ए तउ चाकर राय।
हठियउ हट्ठ लेई रह्यउ, न नमइ माहरा पाय॥

॥ चाल ॥

न नमइ माहरा पाय ते माटइ, मारि करिस एहनइ दहवाटइ।
भरतनइ तात किसी ए करणी, आपणी करणी पार उतरणी ॥६॥
कहइं लखमण तु भरतनी, जउ नवि मानइं आण।
मुंकि विरोध तु करि हिवइ, मुझ अगन्या प्रमाण॥

॥ चाल ॥

मुझ आज्ञा तुं जउ नहीं मानइ, तउ तुं पडीसि कृतात नइ पानइं
इणवचने सीहोदर रूठउ, जमराणइ सरिखउ ते झूठउ ॥७॥
रे रे कटक सुभट तुम्हें, एहनइं मारउ झालि।
विटवा लागा सुभट भट, लखमण छूटीं चालि॥

॥ चाल ॥

लखमण चूरी चाढि निवारया, मुठि मुखादइ केई मारया।
मारतां २ केई नाठा, केईक मुख लीधा त्रिण काठा ॥८॥
सीह आगलि जिम मिरगला, रवि आगलि नक्षत्र।
गज गंधहस्ती आगलि त्रासि गया यत्र-तत्र।

॥ चाल ॥

त्रासि गया यत्र-तत्र कटक भट सुण्या सीहोदर बल उत्कट।
गज आरूढ़ चिहु धमि आयउ, चतुरंग बल पणि चिहु दिस धायउ ॥६॥
लखमणनइ वींटी लीयउ, मेघघटा जिमसूर।
आलान थंभ उपेडिनइ कटक कायउ चकचूर ॥

॥ चाल ॥

कटक कीयउ चकचूर हजूरो बलभद्र देखे रह्यउ दूरि।
ऐ ऐ देखउ अतुल पराक्रम एकलइ कटक भांज्यउ इणि नर किम ॥१०॥
ए नर सुर के असुर के विद्याधर कोइ
तेहवइ लखमण पाडीयउ सीहोदर पणिसोइ।

॥ चाल ॥

सीहोदर पणि लीयउ पाड्यउ पाछे बाही बांधी पछाड्यउ।
आण्यउ राम समीपि सीहोदर, राम कहइ सात्कासि सहोदर ॥११॥
सीहोदर अविरती करइ विज्ञापनी कोडि।
पूठइ आवी इम कहइ, देवदयापर कोडि ॥

॥ चाल ॥

देव दयापर छोडि अम्हारउ, प्रीतम, उपगार गिणस्या तुम्हारउ।
सीहोदर ओलख्यउ ए राम, हा मइ भुंडु कीधू काम ॥१२॥
जे कहउ ते हिव हुं करूं, राम कहइं सुणि राय।
वज्रजंघ सु मेलि करि, जिमि तुझ आणद थाय।

॥ चाल ॥

जिमि तुझ आणद तेहवइं ते नर, आवीनइ प्रणमइ राम सीतावर।
राम कुशल खेम पूछइं वात, मुझ परसादि कहइ सुखसात ॥१३॥
राम कहइं तू धन्यजे, कीधउ साहमी काम।
वज्रजंघ बइठउ तिहां, रामनइं करि प्रणाम।

॥ चाल ॥

रामनइ कहइ वज्रजघ निसुणि पहु, इणि मुझनइं उपगार कीयउ बहु ॥
सीहोदर वज्रजंघनइ भेलाकरि, मेल करायउ रामइं बहुपरि ॥१४॥
दिवरायउ वज्रजंघनइ, विहिंची आधउ राज।
हयगय रथ पायक सहू, सीधा वछित काज ॥

॥ चाल ॥

सीधा वंछित काज सहूना, विजुआनइ कुडल निज बहूना।
सहोदर राय त्रिणसय कन्या, वज्रइ आठ आगइं धरि अन्या ॥१५॥
कहइं लखमण एहा रहउ, कन्या नि जोखीम।
अम्हे परदेसइं भमी, जां आवां तां सीम ॥

१—उव्यो।

॥ चाल ॥

वां आवा तां सीम अंगीकरि पहुता वि राजा निज निज पुरि ।
साहमीवच्छल रामइ कीयउ इम कहइ गौतम श्रेणिक सुणि हरषमें ॥११॥

राम सीता लक्षमणसहु तिहाँ थी चल्या वहांह ।
कूपचंद उद्यानमइ, पहुता बइठा आंह ॥
बइठा आंह सहुको जेहवइ श्रीजालवनी बलमीडाल तेहवइ ।
पूरीवई साहमी नुं वच्छल, समयसुंदर कहइ करि भ्रम निश्चल ॥१२॥

[सर्वगाथा १११]

दूहा ८

सीता नइ लागी घणी भूख-तृषा समकालि ।
लखमण जल जोवा भणी, गयउ सरोवर पालि ॥१॥
तिहाँ पहिलउ आयउ हुँतउ, रामकुंयर सहु साजि ।
लखमण देखी मूंकीयउ, चाकर तेडण काजि ॥२॥
लखमण नइ ते इम कहइ अम्ह सामी सुविचार ।
तुम्हनइ तेडइ ते भणी तिहाँ आवउ इकवार ॥३॥
लखमण चालि तिहाँ गयउ तिण दीघउ बहुमान ।
निज आवास तेडी गयउ करि आमइ असमान ॥४॥
सिंहासन पइसारनइ पूछइ विनय वचन्न ।
तु कुण किहाँ थी आवीयउ, बोलइ पुरुष रतन्न ॥५॥
सुम बांधव लखमण कहइ, बाहिर बइठउ जेथि ।
तेहिनइ पासि गयां पछी वात कहिसि हुं तेथि ॥६॥

तुझ भाई तेडु इहां, मानी लखमण वात।
माणसमुकी रामनइ, तेडायउ नृपजात ॥७॥
राजकुयर आदर घणइं, प्रणमइं रामना पाय।
एकातइ करइं वनती, भोजन भगति कराय ॥८॥

सर्वगाथा ११६

ढाल पांचवीं

राग मल्हार

मेरा साहिब हो श्री शीतलनाथ कि वीनती सुणो ए० ॥

राजेसर हो सुण वीनती एक कि, मनवाछित पूरि माहरा।
भाग जोगइं हो मुझनइं मिलयउ आजकि, चरणन छोडूं ताहरा। १ रा०।

इणनगरी हो वालिखिल्ल नरिंद कि, पटराणी पृथिवी धणी।
तिण वांध्यउ हो म्लेच्छाधिप रायकि, रणि विढतावयरी भणी ।२।रा०।

प्रभवंती हो राणीनइं जाणिकि, सीहोदर राजा कह्यउ।
पुत्र होस्यइ हो जे एहनइ तासकि, राज देईस निश्चउ ग्रह्यउ ॥३ रा०॥

हुँ पुत्री हो हुइ करम संयोगि कि, राजा पुत्र जणावियउ।
सहु साजण हो संतोषी नामकि, कल्याण माली आपीयउ ॥ ४ रा० ॥

मुझ माता हो मंत्री विण भेदकि, केहनइं ते न जणावीयउ।
पहिरावी हो मुझ पुरुष नउ वेसकि, मुझ नइ राजा थापीयउ ॥५ रा० ॥

ए तुम्ह नइ हो कही गुह्यनी वातकि, स्त्रीनउ रूप प्रगट कीयउ।
हुँ आवी हो जोवन भरपूरकि, तुम्ह देखी हरख्यउ हीयउ ॥ ६ रा० ॥

तुम्हनइ तुम्हे हो कउ अंगीकारकि, प्रारथना सफली करउ ।
भाग भोगवहो मिल्या पुरुष प्रधानकि ।
तिण मुझ नइ तुम्हे आदरउ ॥ ७ रा० ॥
लखमण कहइ हो परि पुरुषनउ नेसकि केहक दिन राज पालिसुं ।
ओढाणा हो अम्हे छोरो तावकि तो सीस पिता टालिसुं ॥ ८ रा० ॥
समझावी हो इम चाल्या तेहकि, विन्ध्याटवि पहुता सहू ।
सीता कहइ हो सुणउ जिणदीक्ष सायकि, वेदिवुरुपइ तुम्हनइ कहूं ।६रा०
तुम्हारउ हो हुस्यइ जयकारकि, किम जाण्यउ तइ ते कहइ ।
सीता कहइ हो अनुपइ तरुकागकि, बोल्यउ इण वामइ पखइ ॥१ रा०॥
खीरल सइ हो बोल्यउ एक कागकि, विजय जणावइ तुम्हनइ ।
वायस रव हो आगम अनुसारकि आपपणुं पइ अम्हनइ ॥११ रा०॥
तेह वीजउ हो सहु पोषसी हाठकि राम सीता लखमण भमइ ।
समयसुन्दर हो कहइ करइ उपगार कि ।
नाम लीयइ तिण महसमइ ॥१२॥रा ॥

[सर्वगाथा १११]

दूहा ७

लखमण राम आया गया विन्ध्याटवी मांहि ॥
आगइ दीठउ अति घणउ, म्लेच्छ कटक असराह ॥१॥
वीर सवासइ मोकला सूर पखा उतकाल ।
पण लखमण तिम त्रासव्या जिम हरि नाहि श्रृगाल ॥२॥
तिण म्लेच्छाधिपनइ कह्यउ, ते चढी आव्यउ वेगि ।
मारिन कीधउ अधमूयउ, लखमण मारी तेग ॥३॥

सूरवीर तुम्हें साहसी, मुखि करतउ गुण ग्राम ॥
आगलि आवी ऊभउ रह्यउ, रामनइं करइ प्रणाम ॥४॥
मुझ आगइ रिपु आजथी, उभउ न रह्यउ कोइ ।
हेलामइं जीतउ तुम्हें, इन्द्रभूति हूँ सोइ ॥५॥
जे कहउ ते हिव हु करूँ, पभणइ बे कर जोडि ॥
राम कहइं इन्द्रभूति तु वालिखिल्लनउ छोडि ॥६॥
तुरत तेडावी तेह नइ, छोड्यउ राम हजूर ।
वालिखिल्ल हरपित थयउ, रुद्र नइं कीयउ सनूर ॥७॥

[सर्वगाथा १३८]

ढाल छठी

ढाल—ईडरियै २ उलगाणइ आबू उलग्यउ आ० रे लाल ॥

करजोडी राजा कहइ, किहा थी आवीया ।
किहां थी आवीया रे लाल, किहा थी आवीया ॥
कुण तुम्हें २ मइंवासी म्लेच्छ हराविया । म्ले० लाल । वि० ॥१॥
किम जाण्यउ २ कहउ राजा वालखिल्ल बाधियउ । वा० लाल वा०
विण ओलख्या २ इवडउ उपकार तुम्हें किउ लाल उ० ॥२॥
राम कहइ २ तू जाणिसि आपणइ घरि गयउ आ० लाल आ० ॥
वाल्हेसर २ कहिस्यइ विरतात जिकउ थयउ । वि० लाल वि० ॥३॥
इम कहि नइ २ राजानइ घर पहुचाडियउ । घ० लाल । घ०
परमारथ २ वाल्हेसर सहु समझाडियउ । स० लाल स० ॥४॥
पूरविली २ परिपालइ वालखिल्ल राजनइ । वा० लाल । वा०॥
सापुरसां २ सरिखउ कुण पर काज नइ । प० लाल । प०॥५॥

संचाल्या २ अटवी मांई जिहां पाणी नहीं । त्रि० छाक ।।त्रि ।।
सीता नइ २ त्रिस छागी ते न सकइ सही । ते० छाक । ते० ।।६।।
कहइ सीता २ सुणि प्रीतम हुं तिरसी मरू । हुं० छाक । हुं ।
जीभड़ली सुकाणी हिवहुं किम करूं । हि० छाक हि० ।।७।।
आणीयइ २ पाणी पाइ उतावळउ ।। पा० छाक । पा०।।
सूकइ २ माहरा प्राण सुकाणउ गळउ ।। सू० छाक । सू०।।८।।
आमेरी २ सीता चलि करि मांटी पणउ ।। क० छाक ।।क०।।
व दीसइ २ गामडउ तिहां पाणी घणउ ।।ति० छा०।। ति० ।।६।।
तिहां पाणी २ हुं पाइसि सीतल तुम्ह नइ ।। सी० छा० सी ।
राम कहइ २ धरि धीरज म्हाकि हुं मुज्झ नइ ।।म्हा० छा० म्हा० ।।१०।।
इम कहि नइ २ सीतानइ राम लेई गयउ ।। रा० छा० ।।रा ।।
गामडउ २ नामइ ते अरुण पहूतउ दयउ ।।अ० छा० अ० ।।११।।
ब्रांभणीयउ २ नामइ ते कपिल तिहां वसइ । क० छा० ।।क ।।
सीतानइ २ वळ पामु तसु घरणी रसइ । त० छा० त० ।।१२।।
प इछी २ छास छोटी लगइ त्रीसा गमी ।। लं छाक लं०।।
सीतानइ २ पाणीनी समयसुंदर भणी ।। स० छा० । स० ।।१३।।
[सर्वगाथा १४१]

दूहा २

राम सीता लखमण सहू तिहां लीयउ आसास ।।
सीतळ पाणी ब्रांमणी पायउ परम उलास ।।१।।
तिहां सहूको सुखीया थया बाबेलउ उतारि ।।
तिम घरे वासउ रह्या मीठा बोली नारि ।।२।।

[सर्व गाथा १४३]

ढाल सातवीं

ढाल—नाहलिया म जाए गोरीरइ वणहटइ

राग-मल्हार

सीता कहइ तुम्हें साभलउ। राम जी ॥एक करूँ अरदास॥
इहां थी आपानउ भलउ ॥रा०॥ अटवीनउ वनवास ॥१॥

प्रीयुडा न रहियइं मंदिर पारकइं, इहा नहि को उलखाण।
माहीनर नजाणइ इहा कोइ आपणो। मूरख लोकइ अजाण ॥२ प्रि०॥

आ० तेहवइ ते घर नउ धणी ॥रा०॥ आयउ कपिल पिण विप्र॥
फलफूल इंधण हाथमइं॥ देखि रिसाणउ खिप्र ॥३॥ ॥प्रिय॥

क्रोध करी नइ धमधम्यउ ॥रा०॥ बाभणी नइं द्यइ गालि॥
रे रे घरमइं घालिया ॥रा०॥ एकुण घर सम्भालि ॥४॥ ॥प्रिय॥

वचन कठोर कह्या घणा ॥रा०॥ मारण उठ्यउ डील॥
घर माहि का पइसिवा दीया ॥रा०॥ घूलि धूसरिया भील ॥५॥ ॥प्रि०॥

रे रे इहां थी नीसरउ ॥रा०॥ घर कीधउ अपवित्र।
बाभणी लागी वारिवा ॥रा० तिम वली लोक विचित्र ॥६॥ ॥प्रिय॥

बांभण न रहइ बोलतउ ॥रा०॥ मुहडा छूटी गालि॥
सीता कहइ न सकु सही ॥रा०॥ छोडिखोलड वेढिटालि ॥७॥ ॥प्रि०॥

वसती थी अटवी भली ॥रा०॥ जिहा दुरवचन न होइ॥
इच्छाइं रहियइं आपणी ॥रा० फलफूल भोजन सोइ ॥८॥ ॥प्रि०॥

धिग धिग ए पाणी पियउ ॥रा०॥ भलउ निझरण नु नीर।
दुरजण माणस सग थी ॥रा०॥ भलउ म्रिगला नउं तीर ॥९॥ ॥प्रि०॥

ऊपरि पाणी करि घणुं ॥ रा० ॥ घण नइ म मेल्हइ पास ॥
कुवचन कानि न सांभलइ ।।रा०।। वारू पुण्यिवइ वास ।।१०।। ।।मि।।
सीता वचन सुणीकरि ।।रा०।। कीधउ लखमण कोध ॥
बांभण टांग झाली करी ।।रा०।। ए पउ भमाड्यउ चोष ।।११।। ।।मि०।।
राम कहइ लखमण मा मां ।।रा०।। मुंकी दे तूं याह ॥
ए वात तुझ जुगती नही ।।रा ।। लवस थइ नहि छेह ।।१२।। ।।मि०।।
बालक वृद्ध नइ रोगियउ ।।रा०।। साध ४ बांभण ५ नइ गाइ ।।६।।
अबला ७ एहन मारिवा ।।रा०।। मार्यां महापाप थाइ ।।१३।। ।।मि०।।
इम कहि राम मुंकावियउ ।।रा०।। ते बांभण ततकाल ।
ते घर लोकिनइ नीसर्या ।।रा०।। राम कहीयइ कृपाल ।।१४।। ।।मि ।।
त्रीजा खंडनी सातमी ।। रा० ।। ढाल पूरी थइ तेम ।
तीजउ खंड पूरो थयउ ।।रा०।। समयसुन्दर कहइ एम ।।१८।।

सर्वगाथा १६८ इतिश्रीसीतारामप्रबन्धे वनवासे परोपकार वर्णनो नामस्तृतीय खण्ड सम्पूर्ण ।

(४)

दूहा १५

दानशील तप दिन्हु भला पिणि विन भाव न सिद्धि ।
तिण करवे क्ष्यउ जोईयइ, चउथउ खंड प्रसिद्ध ।।१।।
लखमण सीताराम सहु, गया आघेरा तेथि
गामगीव करि परसिया लागउ थळघर तेथि ।।२।।
सिगलइ संचारउ थयउ मुसलधार करि मेह ।
पूठउ मइ माइला मूहा पडण लागी देह ।।३।।

वड दीठउ इक तिहा वडउ, वहुल पत्र रह्यउ छाइ ॥
वड आश्रय वइठा जई, त्रिण्हे एकठा थाइ ॥४॥

यक्ष वसइं इक तिण वडइ, पणि तसु तेज पडूर ।
अणसहतउ उठी गयो, वडायक्ष हजूर ॥५॥

ते कहइ कुण वरजी सकइ, एतउ पुरुप प्रधान ।
अवधिज्ञान मइ ओलख्या, दीजइं आदर मान ॥६॥

वडउ यक्ष आयउ वही, पलिंग विछायो पास ।
सखर तलाई पाथरी, उसीसा विहुं पास ॥७॥

सुखसेती सूता त्रिण्हें, प्रह ऊगमतइ सूर ।
सहुको झबकी जागीया, वागा मंगल तूर ॥८॥

रामचंदनइ पुण्यइ करि, तिण यक्षइ ततकाल ।
देवनीमी नगरी नवी, नीपाई सुविसाल ॥९॥

गढमढ मन्दिर मालीया, ऊँचा बहुत[१] आवास ।
राजभुवन रलियामणा, लखमी लील विलास ॥१०॥

कोटीधज विवहारिया, वसइं लखेसरी साह ।
गीतगान गहगट घणां, नरनारी उछाह ॥११॥

सीता लखमण रामनइं, देखी थयो अचंभ ।
अटवी माहि अहो २, प्रगटी नगरी सयंभ ॥१२॥

नगरी कीधी मइं नवी, यक्ष कहइं सुसनेह ।
मसकति एह छइ माहरी, पुण्य तुम्हारा एह ॥१३॥

---

१ महल

लखमण राम सीता रह्या तिहाँ परसाला सीम।
रामपुरी परसिद्ध थई, नगरी निज ओलीम ॥१४॥
अटवीमइ भमतउ थकउ, बीजइ दिवस अखूर।
कपिल विप्र तिहाँ आवीयो, देखइ नगरी मूर ॥१५॥

ढाल १ राग—आसाउरी

केसर सोना की परि देखे कसुर तोमार। वे । केसर पहिरी सोना की
रंगे नंदकुमार। वे । ए गीत नी ढाल।

नगरी तिहाँ देखी नवी, रूपनो कपिल संदेह।
पूछइ नगरी नारिनइ, कुणनगरी कहउ एह ॥१॥
नगरी रामकी सुणि बांभण सुविचार। न।
नगरी रची रामकी सरगपुरी अवतार ॥ध्रु०॥ न०॥
नगरी करि दीधी नवी, देवे रामनइ एह।
लखमण राम सुखइ रहइ, सइ सांभली नहीं तेह ॥२ न०॥
सूरवीर अति साहमी बड दाता बड चित्त।
दीन हीननइ ऊपरइं थइ मन वछित वित्त ॥४ न०॥
वलि विशेष साहमी भणी थइ बहु आदर मान।
भोजन भगति करइ वली ऊपरि फोफल पान ॥५ न०॥
कहइ बांभण लोभी थकउ, किणही परि मलुं राम।
सुणि बांभण कहइ बाम्हिणी हम सरिसइ तुम्ह काम ॥६ न ॥
इणनगरी पइसइ नहीं सांभली देखा कोइ।
पूरिपि रच दिसि बारणइ, जिणमंदिर छइ जोइ ॥७ न ॥

तिहां जे जिण पूजइ नमइ, साध वांदइ कर जोडि।
सूधइ मनि जिन ध्रम करइ, मूढ मिथ्यामति छोडि ॥८ न०॥
कपिल भेद लहइ साभली, जिन ध्रम सूधइं चित्त।
साध समीपि जायइ सदा, देव जुहारइं नित्त ॥६ न०॥
प्रतिवूधउ ध्रम साभली, कीधउ गांठिनउ भेद।
श्रावकना व्रत आदस्था, समकित मूल उमेद ॥१० न०॥
लहि जिन धर्म खुसी थयो, दलिद्री जेम निधान।
विप्र आयो घरि आपणइ, कहइ विरतात विधान ॥११ न०॥
चउथा खंड तणी भणी, पहिली ढाल इम जोइ।
समयसुन्दर कहइ पुण्यथी, रलि वेलाउल होइ ॥१२॥ न०।

[सर्वगाथा २७]

दूहा ६

वाभणी बात सुणी करी, संतोषाणी चित्त।
कहइं प्रियु मइ पिण आदस्थउ, जिन ध्रम साचउ तत्त ॥१॥
कपिल बांभण नै[1] बाभणी, बेउं श्रावक सिद्ध।
देव जुहारइं दान द्यइ, गुरु वचने प्रतिबुद्ध ॥२॥
अन्य दिवस अरथी थकउ, कपिल लेइ निज नारि।
रामनो दरसण देखिवा, आव्यो नगर मझारि ॥३॥
धरम तणइ परभाव थी, रोक्यो नही किण लोकि।
राजभुवनि आव्यो वही, रह्यो लखमण अवलोकि ॥४॥

१—अनइते

इम परसंसी तेहनइ, जीमाड्यउरे भोजन भरपूर ।
स्त्री भरतार पहिराविया, धन देई रे घणउ कीधा सनूर ॥४ स०॥
संप्रेड्या घर आपणइं, कर साहमी रे वछल सुविसाल ।
कपिलइं संयम आदस्यो, केतलइ इकरे वलि जातइ कालि ॥५स०॥
वरसालो पूरो रही, वलि चाल्योरे राम अटवी मझारि ।
यक्ष करइं पहिरावणी, राम दीधउरे स्वयंप्रभहार ॥६ स०॥
लखमणनइं कुडल दीया, सीतानइं रे चूणामणि सार ।
वीणा पणि दीधी वली, वलिखाम्योरे अविनय अधिकार ॥७ स०॥
राम चल्यां पछि अपहरी, ते नगरी रे जाणे इन्द्रजाल ।
चउथा खंड तणी भणी, ए बीजेरे समयसुन्दर ढाल ॥८स०॥

सर्वगाथा ॥४४॥

दूहा २

राम तिहाथी चालिया, विजयपुरी गया पासि ।
वड पासइ विश्रामिया, राति तणी रहवासि ॥१॥
वड हेठइ लखमण सुण्यो, विरहणि नारि विलाप ।
लखमण आघेरउ गयो, संभलिवानी टाप ॥२॥

सर्वगाथा ॥४६॥

ढाल त्रीजी ३

(३) देखो माई आसा मेरइ मनकी सफल फलीरे ।
आनन्द अगि न माय, एगीतनी ढाल ॥

सुण वनदेवी मोरी वीनती, साम्हो जोइ रे ।
हुँ निरभागिणि नारि, इण भवि नाह न पामियउ
लखमण कुमार रे, परभव होइज्यो सोइ ॥१॥ सु० आ० ॥

इम कहिनइ ईश्वी भली, पासी गला स्यइ ताम।
लखमण छोडि पासइ गया, आइ गोलावी ताम ॥२॥ सु०॥
मां मां मरइ का कामिनी पासी नाखी छोडि।
तुम्ह पुण्ये हुं आणीयो, पूरि तुं वंछित कोडि ॥३॥ सु०॥
लखमण फरसइ सुखीयई मीली अमृतकुंड वाणि।
लखमण लेई आवीयो, राम पास हित आणि ॥४॥ सु०॥
चंदइ कीधो पद्मणो, सीता दीठी ते नारि।
कहइ हसि देवर ए किसी चंद्ररोहिणी अणुसारि ॥५॥ सु०॥
सीतामई लखमण भणइ, ए वैरागी तुम्ह।
वात कही पासीसणी, मइ अस्त्री तुम्ह ॥६॥ सु० ॥
सीता वात पूछइ वली, तुं कुंण केहनी पुत्रि।
कहि तुम्ह तुल केहर हुंतउ, पासी लीधी कुण सूत्रि ॥७॥ सु०॥
ते कहइ सुणि नगरी इणइ, राजा महीधर नाम।
इन्द्राणी नाम पटहउ, पटराणी अभिराम ॥८॥ सु०॥
वनमाला वल्लभ घणुं हुं तस पुत्री चंग।
बालपणइ बइठी हुती बाप वणइ उछंगि ॥९॥ सु०॥
राजसभा सवली जुडी, मांगण करइं गुणग्राम।
बोलइ घणी विरुदावली लखमणसो लेई नाम ॥१०॥ सु०॥
लखमण ऊपरि ऊपनो मुझ मनि अति महाप्रेम।
दूरियका पणि वूझवा कमलिनी सूरिज जेम ॥११॥ सु०॥
पइ मतिज्ञा मइ करी इण भवि ए भरतार।
दसरथ सुत लखमण जिको, बिमु देवो करतार ॥१२॥ सु०॥

बाप वीजा कुमरा भणी, देतउ हुँतो दिन राति ।
पणि मइ को वाछ्यो नही, लखमणनी मन वात ॥१३॥ सु०॥
अन्य दिवस बापइ सुण्यो, दीक्षा दसरथ लीध ।
भरतनइ राजा थापीयो, राम देशवटउ दीध ॥१४॥ सु०॥
सीता लखमण साथि ले, वनमइं भमइं निसदीस ।
बाप विषाद पाम्यो घणो, स्यु कीधो जगदीस ॥१५॥ सु०॥
इन्द्रपुरी नगरी धणी, सुन्दर रूप कुमार ।
बाप दीधी मुझ तेहनइ, मइ मनि कीधउ विचार ॥१६॥ सु०॥
कइ लखमण परणु सही, नही तरि मरणनी वात ।
दृष्टि वंची परवारनी, हुं नीसरी गई राति ॥१७॥ सु०॥
वड वृक्ष हेठि उभी रही, पासी माडी जाम ।
किणही पुण्य उदय करी, लखमण आव्यो ताम ॥१८॥ सु०॥
वनमाला वात आपणी, सीतानइ कही तेह ।
ढाल त्रीजी चउथा खंडनी, समयसुन्दर कहइ एह ॥१६॥ सु०

सर्वगाथा । ६५ ।

दूहा ७

जेहवइ वनमाला कहइ, सीता आगलि वात ।
तेहवइ पोकारी सखी, वनमाला न देखात ॥ १ ॥

सुभट चिहुँ दिसि दोडिया, जोवा लागा तास ।
जोता जोता आवीया, रामचद्नइ पास ॥ २ ॥

वनमाला दीठी तिहा, राजानइ कह्यउ आइ ।
लखमण राम आया इहां, वनमाला मिळी जाइ ॥ ३ ॥

महिधर राय सुखी थयो, मुंग माहि हस्यो धीय।
विळखवणो क्षयो ह धतां, मानपम्रत त्रेसीय ॥ ४ ॥
राम समीपइ आवीयो, राजा करी प्रणाम।
स्वागत पूछइ रामनइं, मळइ पधार्या स्वाम ॥ ५ ॥
पइसारो करि आणियो, आपणइ भुवन मझारि।
रळीय रंग वद्धामणा, आदर मान अपार ॥ ६ ॥
रामचंद नइ आपीया, ऊँचा महल आवास।
वनमाळा महिला मिळी, लखमण लील विलास ॥ ७ ॥

सर्वगाथा ॥७२॥

ढाल ४

(४) राग गउडी। हिव श्रीचंद सकल वन जोसु ए देसी।

इण अवसरि आयो इक दूत नंद्यावर्त्त नगरी थी नूत।
अतिवीरिज राजा मुकियो, महिधर पासि आवी कूकियो ॥ १ ॥
अम्ह सामी बोलाय तुम्हें, तुम्हनइ तेडण आव्या अम्हे।
भरत सघाति थयउ विरोध, बीजा पणि बोलाया जोध ॥ २ ॥
बहु विद्याधर बस सानुकूल, प्रमुख तेडाया ते अनुकूळ।
हिव तुम्हें आवउ उतावळा, भरत मारिसइ त्रोडा तळा ॥ ३ ॥
सीहोदर नइ धीमय सांधि, दप गय रथ पणि मेळी आवि।
भरत अयोध्या थी नीसरी सामहउ आव्यउ साहस करी ॥ ४ ॥
महिधर सुणि अणबोल्यो रहउ पणि लखमण थी नगयउ सहउ।
कहे दूत किमि थयो विरोध भरत ऊपरि अतिवीरिज क्रोध ॥५॥

दूत कहइ तु सुणि महाभाग, अम्ह सामी दीठउ ए लाग।
लखमण राम गया वनवास, भरतनइं, पाडुं आपणइं पासि ॥६॥
दूत मुकिनइ भरतनइ कह्यउ, मानि आणि किम वइठउ रह्यउ।
आण न मानइ तउ था सज्ज, लहु आपउ देखि सकज्ज ॥७॥
दूत वचन राजा कोपियो, भरत कहइ क्रोधातुर थयो।
अतिवीरिज नइ कहता एम, मत खंड जीभ थई नही केम ॥ ८ ॥
केसरि सीहन सेवइ स्याल, रविनइं किसी ताराओसिपाल।
दुरभापित नइ देइसि दंड, मारि करिसी वयरी सतखंड ॥ ६ ॥
दूत कहइ तु गेहे सूर, ते राजानो सवल पडूर।
इम कठोर कहतइ ते दूत, झालि गलइ नाख्यउ रजपूत ॥ १० ॥
पछोकडि मारो काढीयो, तिण जाई प्रभु कोपइ चाढीयो।
भरत गिणइ नइ तुझ नइं गान, फोकट केहउ करइ गुमांन ॥११॥
दूत वचन सुणि कोपउ चड्यो, मेलि कटकनइ साम्यउ अड्यो।
थयो विरोध थे कारण एह, तिण महिधर नइ तेडइ तेह ॥ १२ ॥
कहइ महिधर आवा छा अम्हे, दूत आगइ थी पहुची तुम्हें।
राम कहइ सुणि महिधर राज, एतउ आज अम्हारो काज ॥१३॥
भरत अम्हारउ भाई तेह, साहिजनी वेला छइ एह।
द्यउ तुम्हेंपुत्र अम्हारइ साथि, अतिवीरिजनइ दिखाडाहाथ ॥१४॥
महिधर सुत दीधा आपणा, सीता सहित राम लखमणा।
रथ बइसी नइ साथइ थया, छाना सा तिन नगरी गया ॥ १५ ॥
नंधावर्त नगरीं नइ पासि, डेरा ताण्या सखर फरास।
सिंहासण वइसारया राम, सीता लखमण उत्तम ठाम ॥ १६ ॥

समी सांझ कीधो आलोच, सीता कहइ मुझ रूपनि सोच ।
अतिवीरिज सांभलिस्यइ सबल भरत कुटुंब करिस्यइ निबल ॥१७॥
भरत कदाचित बल हारिस्यइ, घर तुम्हनइ मेहणउ लागिस्यइ ।
लखमण कहइ चिंता मति करउ, जयहोस्यइ परमेसर करउ ॥१८॥
राम कहइ सूरिज प्रगटइ, काज विलंब न करिवउ घटइ ।
कोइक करिवउ सही उपाय, रात्रि गई इण अध्यवसाय ॥१९॥
प्रहऊठी जिन मंदिर गया, देवजुहारी निःपापथया ॥
पूजा कीधी सत्तर प्रकार सफल थयउ मानव अवतार ॥२०॥
अधिष्ठायक देवी गज पाखि, रामनइ प्रगट थई ततकाल ।
कहइ तुम्हे चिंता म करउ काइ, अतिवीरिज पाडिसि तुम्ह पाइ ॥२१॥
चउथा खंडनी चउथी ढाल राम भजी वनवास विचाल ॥
समयसुंदर कहइ जउ हुइ पुण्य, तउ ते वसती थाई अरण्य ॥२२॥

[सर्वगाथा ९४]

दूहा ४

देवी सहु सुभटां तणउ, कीधउ नटुई रूप ।
देवी हुकमइ राम ते, के नाटक जिहां भूप ॥१॥
राज सभा सबली जुडी, बिहि बइठउ राजान ।
राम थाई रूमा रमा प्रधान रूप प्रधान ॥२॥
नटुई पणि रूमी रही राजा आगलि तेह ।
अतिवीरिज आदर कीयो दीठी सुंदर देह ॥३॥
राम रूप नाटक करइ, अव करउ राखि हुक्कम ॥
तब नटुई नाटक करइ भावइ सहु मरम्म ॥४॥

[सर्वगाथा ४]

ढाल पाचवीं

।। राग गउडी ।।

वाज्यउ वाज्यउ मादल कउ धोंकार, ए गीतनी जाति ।
महिमा नइ मनि बहु दुख देखी, बोल्यउ मित्र जुहार ए देसी ।।

राजा हुकम कीयो नाटक कउ, नटुई बाल कुमारि ।।
चंदवदन मृगलोयणि कामिणी, पगि झाझर झणकार ।।१।।
ततत्थेई नाचत नटुई नारि, पहिरया सोल शृंगार ।
राम नायक मन रंगी नचावते, अपछर के अणुहारि ।।२ त०।।
गीत गान मधुर ध्वनि गावति, सगीत के अनुहारि ।
हाव भाव हस्तक देखावति, उर मोतिण कउ हार ।।२ त०।।
सीस फूल काने दो कुण्डल, तिलक कीयो अतिसार ।
नकवेसर नाचति नक ऊपरि, हुं सबमइं सिरदार ।।४ त०।।
ताल खाव बजावति वांसुली, अरु मादल धोंकार ।
अंग भग देसी देखावत, भमरी घइ वार-वार ।।५ त०।।
ताल उपरि पद ठावति पदमिनि, कटि पातलि थणभार ।
रतन जडित कंचूकी कस बांधति, ऊपरि ओढणिसार ।।६ त०।।
चरणाचीरि चिहू दिसि फरकइ, सोलसज्या सिणगार ।
मुख मुलकति चलति गति मलपति, निरखति नजरि विकार ।।७ त०।।
नाटक देखि मोही रह्यो राजा, मोह्या राजकुमार ।
राज सभा पणि सगली मोही, कहइं ए कवण प्रकार ।।८ त०।।
ऐ ऐ विद्याधरी ए कोई, के अपछर अवतार ।
के किन्नरि के पाताल सुदरी, सुदर रूप अपार ।।९ त०।।

तिण अवसरि नटुइ नृप पूछ्यो भरत विरोध विचार ।
मानि हिवइ तू आण भरत की मूंकि मूरिख अहंकार ॥१० त०॥
अम्ह वचने तुं मानि भरत नइ, ए तुझ सरण आधार ।
लागि-लागि रे भरत ने चरणे नहि सरि गयो अवतार ॥११ त०॥
कोप करी राजा रूपाड्यो, मारण खड्ग प्रहार ।
नटुई सिर चोटी थी झाल्यो, हूयो हाहाकार ॥१२ त०॥
खड्ग उपाडि कहइ इम नटुई मानि के नाखिस्यां मारि ।
लखमण चोटी झालि लेई गयो, राम तणइ दरबारि ॥१३ त०॥
राम सीता हाथी चड़सी नइं गया जिनराज विहार ।
सीता कहइ सु कि २ गरीषमद, ए नहिं तुम आचार ॥१४ त०॥
सीता वचने मूंक्यो अतिवीरिज वरत्या जय जय कार ।
समयसुंदर कहइ ढाल ए पांचमी, नाटकनो अधिकार ॥१५ त०॥
[सर्वगाथा १११]

दूहा २२

कहइ लखमण तुं भरथनो, साचो सेवक थाइ ।
अतिवीरिज वयराग धरि, राम समीपइ आइ ॥१॥
कहइ इम राजइ मुझ सक्यो ए अपमाननो ठाम ।
ईं संसार थी ऊभग्यो संयम लेइसि सामि ॥२॥
राम कहइ ते हारियो संयम खड्गनी धार ।
हिवडा भोगवि राज तुं हुय आगइ अणगार ॥३॥
राजा वयरागइ चड्यो पुत्र नइ दीधो राज ।
गुरु समीप दीक्षा ग्रही साध्या आतम काज ॥४॥

तप संयम करइ आकरा, उद्यत करइं विहार।
पुत्र विजयरथ ते थयउ, भरत नउ अगन्याकार ॥५॥
लखमण राम विजयपुरइं, रहि केतला एक दीह।
वनमाला तिहा मुकि नइं, आघा चाल्या सीह ॥६॥
खेमंजलि नगरी गया, वाहिर रह्या उद्यान।
लखमण पूछी राम नइं, माहि गयउ सुणइ कानि ॥७॥
सत्रुदमन राजा कहइं, जे मुझ सकति प्रकार।
सूरवीर सहइ तेहनइं, पुत्री द्यूं अति सार ॥८॥
लखमण कोतुक देखिवा, गयउ राजा नइ पासि।
आदर मान घणउ दीयउ, वइठउ मन उल्हास ॥९॥
रूप अधिक देखी करी, राजा पूछ्यो एम।
किम आव्या तुम्हें कवन छउ, कहो वात धरि प्रेम ॥ १० ॥
भरत तणउ हूं दूत छु, आयो काम विशेषि।
पांच सकति तु मुकि हुं, सहिसि तमासो देखि ॥ ११ ॥
जितपद्मा राजा सुता, देखी लखमण रूप।
सूरपणो काने सुणी, ऊपनो राग अनूप ॥ १२ ॥
लखमणनइ छानो कहइं, राजकुयरि कर जोडि।
महापुरुष तु मत मरइ, जीवि वरसनी कोडि ॥ १३ ॥
कहइ लखमण तु वीहि मा, ऊभी देखि तमास।
कहइ राजा नइं का अजी, ढील करउ नहि हास ॥ १४ ॥
इम कहइ राजा उठीयो, रह्यो ठाण वय साष।
मुँकी पांच अनुक्रमइ, सकति पराक्रम दाखि ॥ १५ ॥

एक सकति त्रिमणइ करइ, बीजी झालइ हाथि।
त्रीजी चउथी कास मइ, पांचमी दांतां साथि ॥ १६ ॥
लखमण सकति सहु ग्रही, लागो न को प्रहार।
कुसुम वृष्टि देवे केरी, प्रगट्यउ जय-जय कार ॥ १७ ॥
लखमण कहइ एक माहरउ सहि तुं सकति प्रहार।
राजा लागो कांपिवा हुउ ते हाहाकार ॥ १८ ॥
जितपद्मा कहइ छोडिदे, खमि अपराध कृपाल।
हिव हुं तो थई ताहरी, मगन थयो भूपाल ॥ १६ ॥
कहइ राजा हिव परणि तु मुझ पुत्री गुण गेह।
कहइ लखमण छइ माहरइं, भाई आणइ तेह ॥ २० ॥
सत्रुदमन तिहां आइनइ प्रणमी रामना पाय।
तेडी आण्यउ नगर मइ, रामचन्द्रनइ राय ॥ २१ ॥
जितपद्मा परणी तिहां, लखमण कीध विलास।
केइक दिवस तिहां रही वलि चाल्या वनवास ॥ २२ ॥

सर्वगाथा ॥ ३१५ ॥

ढाल ६

॥ राग गउड़ी ॥

जंबुद्वीप मझार म ए सुबाहु तकिनी ढाल

नगर वंसत्थल नाम पहुता पाधरा राम सीता लखमण सरूप,
तिण अवसरि तिहांलोक, दीठा नासता चालक्ष्य हरणा बहूप ॥ १ ॥
रामइ पूछ्या लोक, केहनइ भयकरी नासइ भाजइ बीहताए,
राजा राणी मंत्रि ससमसता थका, आतमनइ हित ईहताए ॥ २ ॥

किण कह्यो परवत पासि, रुड महा निसि, सुणियउ शवद वीहामणउए
मतको करइं विणास, आवि अम्हारडउ, मरणतणउ भय अति घणउए।
कहइ सीता सुणि नाह, आपे पिणि हिवइं, इहाँ सुं नासा तउ भलउए।
राम कहइ मतबीहि, नासइ नहि कदे, उत्तम नर माडइं किलउए ॥४॥
सीतानउ ग्रहि हाथ, राम उंच्यो चड्यउ, लखमण नइं आगइ कीयो ए।
गिरिऊपरिगया तेथि, दीठा साधवी, देखत हियडउ हरखीयउए ॥ ५ ॥
कठिन क्रिया तप जप, करइ आतापना, चरम ध्यान तत्पर थकाए।
तिण्हि प्रदक्षिण देइ, रामसीता सहू, वादइ साधनइ ऊछकाए ॥ ६ ॥
उरग भुयगम भीम, गोणस अजगर, साधु वीठ्यउ सोपकरी ए।
धनुप अग्र सु राम, छेडि दूरइ कीया, देह उघाडी साधरीए ॥ ७ ॥
फासू पाणी लेति, चरण पखालिया, सीता कीधी वंदनाए।
रामइ वाई वीण मधुर सुरइं करी, मुनिगण गाया इकमनाए ॥ ८ ॥
सीता करि शृंगार, सारंगलोयणा, साधु भगति नाटक करइए।
पूरव वयर विशेखि, कोई सुर निसिभर, उपसर्ग करइंतिण अवसरइए ।९।
अगनि सीरीपा केस, आखि विली जिसी, निपट नासिका चीपडीए।
काती सरिखी दाढ, अति वीहामिणी, भाल उपरि भृकुटी चडीए ॥१०॥
काती नइ करवाल, कर झाली करी, नाचइं कूदइ आफलइए।
काया मनुष्यनी काटि मास, खायइं मुखि, हसइ घणुं नइ हूकलइए ।११।
मुकई अंगिनी झाल, खाउ खाउ खांउ करइ, भूतप्रेत अंबर तलइंए।
क्रूरमहा विकराल, भीम भयकर काल, कृतांत रीसइं वलइए ॥ १२ ॥
सीता देखी भूत, वीहतीं रामनइ, आलिंगन देई रहीए।
रामकहइ मत वीहि, कर साहस प्रिया, रहिमुनिवर ना पाय ग्रहीए ॥१३॥

चो छगि भूत पिसाच अम्हे त्रासवी इम कहि रामनइ लखमणाय।
काठी कीधी हाथि, भनइ आकाशी ऊंची, तेभूत नाठा तत्खिणाय ॥१४॥
उपसग-कारी देव, जाण्यो ए नर, राम अनइ लखमण सहीए।
जोर न चालइ मुज्झ पुरत नासी करी, अपणइं ठामि गयो वहीए ॥१५॥
ते मुनिवर तिणरातिं, सुकल ध्यान नइ चाल्या, घातिक करम नउखय कीयोए।
पाम्यो केवलन्यान, भाण समोपम लोकालोक प्रकासीयोए ॥ १६ ॥
कनक कमल वइसारि, वाइ दुंदुभी केवल महिमा सुरकरइए।
राम कहइ कर जोडि कहउ तुम्हे भगवन ए कुण सुर द्वेष को धरइए ॥
छट्ठो ढाल रसाल, चउथा खंडनी, साधुनइ केवल ऊपनोए।
समयसुन्दर कहइ एम द्वेषनो कारण सांभलो सहु को इकमनोए ॥१८॥
[सर्वगाथा ५२]

ढाल ७

(७) कपूरहुवइ अति ऊजलोरे मति रे अनूपम गंध एयीहनी ढाल ॥
राम सीता लखमण सुणउरे पोंचला भवनो वयर।
विजय परवत राजा हुं तोरे, उपभोगा तसु वयर ॥ १॥
पूरव वयर केवलि एम कहइं वि पतव उपसर्ग साधु सहंति । पू ।
कीधा करम न छूटीयइरे सुख-दुख सहुको सहंति ॥ २ पू० का० ॥
अमृतसर राजा तणउरे, दूत हुतउ सुविचित्र।
राणीसुं लुवधउ रहइरे, वसुभूति नामइ मित्र ॥ ३ पू० ॥
नृप हुकम्मि वसुभूति सु रे, दूत चाल्यो परदेश।
विग्रह दूतनइ मारियोरे, पापी पाडई लेस ॥ ४ । पू ॥

पाछइ आवो इम कहइरे, राजा आगलि वात।
दूत पाछउ मुँनइ वालियोरे, कहइ वीजउ न सुहात ॥ ५ । पू० ॥
राणी अति हरषित थईरे, वाभण सु बहु प्रेम।
काम भोग सुख भोगवइरे, विप्र कहइ वलि एम ॥ ६ । पू० ॥
उदित १ मुदित २ सुत ताहरारे, एकरिस्यइं अंतराय।
मारि परा तुं तेहनइ रे, जिम सुख भोगव्या जाय ॥ ७ ।पू०॥
बांभणी भेद जणावीयोरे, उदितकुमर नइ तेह।
तुझ माता मुझ नाह सु रे, कुकरम करइं निसंदेह ॥ ८ । पू० ॥
खडग सुँ माथो वाढियो रे, उदितइ मार्‍यो विप्र।
विप्र मरीनइं ऊपनो रे, म्लेच्छपल्ली नइ खिप्र ॥ ९ । पू० ॥
उदित मुदित बिहुँ बाधवे रे, आव्यो मनि संवेग।
धिग २ ए संसारनइ रे, अनरथ पाप उदेग ॥ १० । पू० ॥
बिहुँ बांधव दीक्षा ग्रही रे, मतिवर्द्धन मुनि पास।
उग्र तपइ तप आकरा रे, मोडइं भवनो पास ॥ ११ । पू० ॥
समेतसिखर जात्रा भणी रे, चाल्या मुनिवर बेइ।
म्लेच्छ पालि माहे गया रे, म्लेच्छे द्वेष करेइ ॥ १२ । पू० ॥
साधुनइ मारण उठीयो रे, क्रोधी काढि खडग्ग।
सागारी अणसण करी रे, मुनि रह्या मेरु अडिग्ग ॥ १३ । पू० ॥
सत्रु मित्र सरिषा गिणइ रे, भावना भावइ अनित्य।
देही पजरइ दुखनउ रे, मुगति तणा सुख सत्य ॥ १४ । पू० ॥
पल्लीपति नइ ऊपनी रे, करुणा परम सनेह।
मारतउ राख्यो म्लेछ नइ रे, उत्तम करणी एह ॥ १५ । पु ॥

साम विहांयी चालिया रे, पहुता गिरि समेत ।
विधि सेती यात्रा करी रे, अणसण कीधउ तेथि ॥ १६ । पू० ॥

पहिलइ देवलोकि देवता रे ऊपना येउ उदार ।
म्लेछ संसार ममी करी रे, आव्यो नर अवतार ॥ १७ । पू० ॥

तापसी दीक्षा आदरी रे कीधो अगन्यान कष्ट ।
ज्योतिषीयाँ माँहि ऊपनोरे, पणि परिणामे दुष्ट ॥ १८ । पू० ॥

नगर अरिष्टपुरइ तिसइ रे, प्रियबन्धू राजान ।
तेह तणइ वे मारिजा रे, जीवन प्राण समान ॥ १६ पू० ॥

पदमामा नइ कनकामा रे, अपछर जाणि प्रतिबिंब ।
ते सुर देवलोक थी चवीरे ऊपना पदमामा कूखि ॥ २० । पू० ॥

एक रतनरथ रूयडोरे, नामइ विचित्र रथ अन्न ।
जोतिषी सुरपणि तिण समइरे कनककामा कूखि ऊपन्न ॥ २१ । पू० ॥

नाम अणुद्धर पाडीयोरे मा वापे तसु दीध ।
राजदेई बडा पुत्रनइ रे, राजा संयम लीध ॥ २२ । पू० ॥

प्रियबन्धू मुनि पामीया रे सरग तणा सुख सुद्ध ।
अणुद्धर अति मच्छर धरइ रे बिहुँ भाई ऊपरि क्रुद्ध ॥ २३ । पू ॥

लागउ देसमइ लूटिवारे, बाहिर काढ्यो भूप ।
तापस व्रत लीधउ तिणइ रे पणि मद्वेप सरूप ॥ २४ । पू० ॥

राजा रतनरथ अवसरइ रे, विचित्ररथ सयोगि ।
राज छोड़ी सयम लीयो रे, गया पहिलइ देवलोगि ॥ २५ । पू० ॥

सुख भोगवि देवातणा रे बेउं चव्या समकालि ।
सिद्धारथपुरनो धणी रे, खेमंकर भूपाल ॥ २६ । पू ॥

विमला पटराणी तणा रे, ऊपना पुत्ररतन्न।
देसभूषण कुलभूषणा रे, नाम गुणोनिष्पन्न॥ २७। पू०॥
राजा भणिवा घालिया रे, नेसालइं वे पुत्र।
काल घणे ते तिहा रह्या रे, भणि गुणि थया सुविचित्र॥ २८॥ पू।
पूठइं मा वेटी जिणी रे, कमलूसवा तसु नाम।
रूप लावण्य गुणे भरी रे, सकल कला अभिराम॥ २९। पू॥
सकल कला सीखी करी रे, निज घरि आया कुमार।
दीठी कन्या रूवडी रे, जाग्यो मदन विकार॥ ३०। पू।
वहिनिपणु जाणइ नही रे, मन मांहि चिंतवइं एम।
तात कन्या आणी इहा रे, अम्ह निमित्त सप्रेम॥ ३१। पू।
पुत्री किणही भूपनी रे, मृगलोयणि सुकुमाल।
सुख भोगविस्या एहसु रे, हिव अम्हे चिरकाल॥ ३२। पू०।
तिण अवसरि जस बोलियो रे, किणही भूपनो एम।
धन-धन खेमंकर प्रभू रे, धन-धन विमला तेम॥ ३३। पू०।
उत्तम कन्या जेहनइ रे, कमलूसवा कहवाय।
वे भाई ते सांभली रे, कहइ अनरथ हाय-हाय॥ ३४। पू०।
अहो अम्हे अगन्यान अधिले रे, वहिनसु वाछ्यो भोग।
धिग धिग काम-विटंबना रे, काम विटंब्या लोग॥ ३५। पू०।
इम मनमाहें चितवइ रे, जाण्यो अथिर संसार।
सुव्रतसूरि पासइं जई रे, लीधउ संयम भार॥ ३६। पू०।
खेमंकर दुखियो थयो रे, दोहिलो पुत्र वियोग।
रात दिवसि रहइ झूरतो रे, परिहस्या भोग संयोग॥ ३७। पू०।

कोइक धरम विराधियो रे, कीधो अनुक्रमि काळ।
गुरुडाधिप देवता थयो रे, क्षेमकर भूपाळ ॥ ३८ । पू० ।
ते थयुदर पणि एकदा रे, कौमुदी नगर मझार।
तापस सेठी आवीयो रे, अगन्यान कष्ट अपार ॥ ३६ । पू ।
वसुधारा राजा तिहां रे पिण तापसनो भक्त।
मदनवेगा तसु भारिया रे ते जिन धरम सु रक्त ॥ ४० । पू० ।
इक दिन राणी आगलइ रे, वसुधारा राजान।
तापस परसंसा करइ रे को नहि यइ समान ॥ ४१ । प० ।
राणी तउ सुध भाविका रे सहइ न सकइ कहइ राय।
ए अगन्यान मिथ्यामती रे, मुझ नइ नायइ दाय ॥ ४२ । पू० ।
साधा साध तो जैनना रे, जीवदया प्रतिपाळ।
निरमळ सील पाळइ सदा रे विषय थकी मन वाळ ॥ ४३ । पू०
सत्रु मित्र सरिपा गिणइ रे, नहि किणसुं राग रोस।
आप तरइ नइ तारवइ रे, निरुपम गुण निरदोस ॥ ४४ । पू० ।
राणी वचन सुणी करी रे, रीसाणउ नर राय।
तुं जिनधरम मी रागीणी रे, तिण तापस न सुहाय ॥ ४५ । पू० ।
राणी कहइ राजन सुणउ रे तापसनी एक वार।
दढता देखउ धरमनी रे, सगळी लहिस्यउ सार ॥ ४६ । पू० ।
इम कहि राणी आपणी रे बेटी रूप निधान।
मुकी तापसनी मढी रे निसि भर भव जोवान ॥ ४७ । पू० ॥
ते कन्या गई एकली रे, प्रणम्या तापस पाय।
करजोडी करइ वीनती रे, सांभळो करि सुपसाय ॥ ४८ । पू० ॥

मुझ नइ काढी बाहिरी रे, माता विण अपराध।
सरणइं आवी तुम्ह तणइं रे, द्यउ दीक्षा मुझ साध॥ ४६। पू०॥
नव जोवन दीठी[1] भली रे, कुंकू वरणी देह।
चन्द्रवदनि मृगलोयणी रे, अपछर जाणो एह॥ ५०। पू०॥
ते कन्या देखी करी रे, तापस पणि तिण वार।
चूकउ अणुधर चित्तमइं रे, जाग्यउ मदन विकार॥ ५१। पू०॥
कहइ अणुद्धर सुणि सुन्दरी रे, मुझनइ सरणो तुज्झ।
कामअगनि करि बलि रही रे, टाढी करि तनु मुज्झ॥ ५२। पू०॥
आवि आलिंगन दे मुंनइ रे, मानि वचन कहइ एम।
आलिंगन देवा भणी रे, बाह पसारी प्रेम॥ ५३। पू०॥
तितरइं तिण कन्या कह्यो रे, अहो अकज्ज अकज्ज।
मुझ नइ को अजी नाभड्यो रे, हु तो कन्या सलज्ज॥ ५४। पू०॥
जइ संग वाछइ माहरो रे, तउ तापसध्रम छोडि।
मुनइ मा पासि मांगीलइं रे, मागता का नहि खोडि॥५५। पू०॥
अमुकइ घरि[2] छइ माहरी रे, माता चालि तु तेथि।
कन्या पूठइं चालियो रे, ते गई गणिका जेथि॥ ५६। पू०॥
गणिकानइं पाये पडी रे, वोनति करइं बार बार।
ए पुत्री द्ये मुझ भणी रे, मानिसि तुझ उपगार॥ ५७। पू०॥
छांनउ रह्यो राजा सुणइ रे, तापस वचन सराग।
पाछी वाहे बांधियो रे, फिट निरलज निरभाग॥ ५८। पू०॥
देसथी बाहिर काढियो रे, थयो तापसथी विरत्त।
मयणवेगानइं इम कहिइ रे, तू कहिती ते तत्त॥ ५६। पू०॥

---

१ जोरइ चढी २ मइ

ए विरतांत देखी करी रे, प्रतिबूझ्यो नरराय।
श्रावकनो व्रत आदर्यो रे, मिथ्यात दूरि गमाय ॥ ६० । पू० ॥
तापस विधि निर्वाहतो रे, कुमरण मूँओ तेह।
भूरि संसार माहे भमी रे, दीठा दुक्ख अछेह ॥ ६१ । पू० ॥
वलि मानव भव पामीयो रे, लीधो तापस धर्म्म।
काल करी थयो देवता रे अनलप्रभ शुभ कर्म्म ॥ ६२ । पू० ॥
अवधिज्ञान प्रयुंजतां रे अम्हनइ दीठा यति।
पूरवलउ वयर सांभर्यो रे, उपसर्ग कीया इण हेति ॥ ६३ । पू ॥
उपसर्ग करितउ वारियो रे, राम तुम्हे ते देव।
विण भोगव्यां किम छूटइ रे, करम सबल नितमेव ॥ ६४ । पू० ॥
केवलि सांसो भांजियो रे, सांभल्यो सहु विरतांत।
राम सीता लखमण कहइ रे, धन-धन साध महंत ॥ ६५ । पू० ॥
केवलीनी पूजा करइ रे, राम भगति मनि आणि।
सीता कहइ भम धन तुम्हे रे, जनम तुम्हारो प्रमाण ॥ ६६ । पू० ॥
महानुभाव मोटा तुम्हे रे, देवतां सइ पूजनीक।
राग द्वेष जीता तुम्हे रे उपसर्ग सह्या निरमीक ॥ ६७ । पू० ॥
केवल ज्ञानमी पामियां रे, जे आगमइ दुरलंभ।
सीता साध प्रसंसती रे शिव सुख कीधा सुलंभ ॥६८ ॥पू०॥
[इण अवसरि तिहां आविउ रे गरुडाधिप शुभ मन्न।
केवलि नइ प्रणमी करी रे, राम कहइ सुवचन्न ॥]
साध भगति कीधी भली रे तिणइ तूठो तुम्ह।
जे मांगो ते द्यू अम्हे रे, वंचित सफलि थइ अम्ह ॥ ६९ ॥

राम कहइं किण आपदारे, सानिधि करिज्यो सामि।
केवली महिमा सांभली रे, नगरी-नगरी ठाम-ठाम ॥ ७० । पू० ।
नगर-नगर ना राजवी रे, तिहाँ आया सहु कोय ।
राम कीधी पूजा साधनी रे, ते देखी रह्या जोय ॥ ७१ । पू० ।
वंसत्थल पुरनो धणी रे, आयो सुरप्रभ भूप ।
राम सीता लखमण तणी रे, कीधी भगति अनूप ॥ ७२ । पू०
राम आदेश तिणि गिरइ रे, सहु राजवीये तार ।
जिनप्रासाद करावियो रे, प्रतिमा रतन उदार । ७३ । पू० ।
कीधी रामइ तिणि गिरइ रे, क्रीडा अनेक प्रकार ।
ते भणी रामगिरि तेहनउ रे, प्रगट्यो नाम उदार ॥ ७४ । पू० ।
सातमी ढाल पूरी थई रे, साभलिज्यो इक मन्न ।
चउथउ खंड पूरो थयो रे, समयसुदर सुवचन्न ॥ ७५ । पू० ।

[सर्वगाथा २२८]

इतिश्री सीताराम प्रवन्धे केवलि महिमा वर्णनो नाम चतुर्थ खड० ॥

खंड ५

दूहा ५

हिव बोल्यु खंड पाचमो, पाच मिल्या जसवाद ।
पाचामाइं कहीजियइं, परमेसर परसाद ॥ १ ॥
सीताराम सहू वली, आगइं चाल्या धीर ।
दण्डकारण्य वनइ रह्या, कन्नरवानइं तीर ॥ २ ॥
नदी स्नान मज्जन करइं, वन फल मीठा खाइं ।
वस कुटीर करी रहइं, सुखइ दिवस तिहाँ जाइं ॥ ३ ॥

असरूपान आंबा फणस दाडिम फल गंभीर।
लखमण आणइ अति भला, वन सुरभीना खीर॥४॥
खातां पीतां विलसतां केइक दिन गया जेथि।
तेहवइ साधु बि आविया, पुण्य योग करी तेथि॥५॥

ढाल ९

॥ राग केदारो गोडी ॥

चाल—आवो सुहारो रे अमारड पास, मननी पूरई आस।

साध बे आयारे अंबरचारि पहुचावइ भव पार।
तप कर दीपइ तेहनी देह, निरुपम गुण मणि गेह॥१। सा०।
वदना कीधीरे लखमण राम बे कर जोडी ताम।
आनंद पाम्योरे दरसण देखि चंद चकोर विशेषि॥२। सा०।
सीता आया रे मुनिवर बेइ त्रिहि प्रदक्षिणा देइ।
सीता बोली रे थो मुझ ठाम बइसत सब सूझतो काम॥३। सा०।
सीता थइ रे रोमंच सरीर, सखर विहरावी खीर।
नारंग केला रे फणस खजूर, फासू दिया रे भरपूर॥४। सा०।
सानिधि कीधी रे समकित दृष्टि थइ वसुधारा वृष्टि।
दुंदुभी वागी रे दिव्य अकास अहो दान सबद प्रकास॥५। सा०।
सीता कीधो रे सफल जमम्म श्रोछ्या अशुभ कम्म।
दुरगमध हुतोरे पंखी एक थयो रिपी देखि विवेक॥६। सा०।
आवी बाथा रे साधना पाय दुरद सुगंध ते थाय।
साध प्रभावइ रे रतन समान देह तणो थयो वान॥७। सा०।

रामचंद देखी रे पंखी सरूप, अचिरजि पाम्यो भूप।
रामइ पूछ्यो रे साध त्रिगुप्ति, नामइं करइ भवलुप्ति ॥ ८ । सा० ।
भगवन भाखो रे ए विरतात, कौतुक चित्तन मात।
कहउ किम पंखी रे तुम्हारो पाय, पडियो दूर थी आय ॥ ९ । सा०
दुरगध देही रे थई क्यों सुगध, साध कहउ संबंध।
साध जी भाखइ रे मधुरी वाणि, राम पूरब भव जाणि ॥१०। सा० ।
राजा हुतउ रे दंडकी नाम, कूंडलपुरनउं सामि।
मक्खरि नामा रे तसु पटराणि, श्रावक धरमनि जाणि ॥११ । सा० ।
पिणि मिथ्याती रे राजा तेह, साधसु तसु नही सनेह।
एक दिन दीठो रे साध महात, काउसिग रह्यो एकात ॥ १२ । सा०।
राजा घाल्यो रे साधु नइं कंठि, साँप मुयो गलि गंठि[1] ।
साधनु देखी रे अगन्यान अंध, राजा करइं क्रम बंध ॥ १३ । सा० ।
साधइ कीधउ रे अभिग्रह आप, जा लगि छइ गलइं साप।
हुँनहिं पारुं रे काउसग्ग ताम, रहिस्यु सुद्ध प्रणाम ॥ १४ । सा० ।
राजउ दीठो रे वीजइं दीह, तिमहीज साध अवीह।
राज्या रंज्यो रे उपसम देखि, वली वयराग विशेषि ॥ १५ । सा० ।
दंडकी राजा रे चितवइ एम, ए मुनि कुदन हेम।
तपसी मोटउ रे ए अणगार, गुणमणि रयण भंडार ॥ १६ । सा० ।
हा मइ कीधो रे मोटा पाप, साधनइ कीधो सताप।
हुं महापापी रे आसातनाकार, छूटिसि केण प्रकार ॥ १७ । सा० ।
मै तो जाण्यो रे आज ही मर्म, साचो श्री जिन धर्म्म।
साप उतार्यो रे कंठथी तेह, साधु वाद्या सुसनेह ॥ १८ । सा० ।

१—लेइ उलठि ।

अपराध खाम्या रे चरणे लागि, जिन भ्रम जाएवो भागि ।
राजा आयो रे आपणइ गेह, साध भगत करइ तेह ॥ १९ । सा० ।
तिण नगरी मइ तापस एक, रहइं पणि मनमा क्रुद्ध ।
नृपनइ दीठो रे साधनइ भक्त, सत्कार आण्यो विरक्त ॥ २० । सा० ।
साधनइ मारू रे केण प्रपंच, इम चितवि कियो संच ।
तापस कीधो साधनो वेष, साध उपरि धरयो द्वेष ॥ २१ । सा० ।
जइ नइ पईठारे अंतेउर माहि, राणी विलखी साहि ।
राजा दीठो रे आपणी मीटि बाहिर काढ्यो पीटि ॥ २२ । सा० ।
मूरखी मारयो रे तापस साध अपणो कीधो साध ।
राज्या कोप्यो रे सेवइ मेलि, साधनइ एकठा भेलि ॥२३॥ सा०
घाणी पीस्या रे सगळा साध एकणइ अपराध ।
अगन्यान जोयवरे अन्याई राय, म करी विचारणा काय ॥२४॥ सा०
साध एक कोई गयो थो अनेथि ते पिणि आयो तेथि ।
लोके वार्यो रे तेथि म जाय आगइ अनरथ थाय ॥२५॥ सा०
साध घाणीनइ रे गयो तिण ठाम अनरथ दीठा ताम ।
पापी राजा रे दियि निरदोषि, पीस्या चढ्यो तिण रोषि ॥२६॥ सा०
साध विचार्यो रे सुत्र कहेह, समरथ सज्जा तेह ।
चक्रवर्ति सेना रे चूरइ साध अमथि पुलाक अराध ॥२७॥ सा०
साधइ मारयो रे राति अपीड चिहुं पहुरि चारि सीह ।
साधइ मारयो रे मछीगर एग टाळ्यो मच्छ अनेग ॥२८॥ सा०
सुमंगल दतिरवइ रे मुनि प्रत्यनीक, राजानइ निरभीक ।
नमुचिनइ मार्यो रे विष्णुकुमार रूपम नहीं ब विगार ॥२९॥ सा०

तेजोलेश्या रे मुकी तेण, नगर वाल्यो सहिजेण।
राजाराणी रे वल्यो सहु कोइ, सर्वत्र समसान होइ ॥३०॥ सा०
देश वल्यो रे सहु ते ठाम, दंडकारण्य थयो नाम।
दंडकी राजा रे भमी संसार, दंडकारण्य मझार ॥३१॥ सा०
पंखी हूयो रे गृद्ध कुबंध, करम करो दुरगंध।
अम्हनइ देखी रे थयो सुभ ध्यान, जातीसमरण न्यान ॥३२॥ सा०
ए प्रतिबूधो रे वंदना कीध, त्रिणहि प्रदक्षिणा दीध।
धरम प्रभावइ रे सुदर देह, थई पखी वात एह ॥३३॥ सा०
रामनइ सुणी रे साध वचन्न, रोमंचित थयो तन्न।
कहइ तुम्हें वारुरे कह्यो विरतांत, अम्हनइं साध महांत ॥३४॥ सा०
मुनि प्रतिबोध्यो रे पंखी गृद्ध, आदर्‍यो जिनध्रम सुद्ध।
पाडूया जाण्या कर्म विपाक, जेहवा फल किंपाक ॥३५॥ सा०
सूवउ पालइ रे समकित धर्म्म, न करइं हिंसा कर्म्म।
झूठ न बोलइ रे पालइ सील, परिग्रह नही विण ढील ॥३६॥ सा०
राति न खायइ वरज्जइ मंस, न करइ पाप नो अंस।
ए ध्रम पालइ रे आतम साध, मुगति तणइ अभिलाष ॥३७॥ सा०
साध भलायो रे पखी तेह, सीतानइ सुसनेह।
सार सुधि करिजे रे एहनी नित्य, सीता कहइ पूज्य सत्य ॥३८॥ सा०
साध सिधाया रे आपणी ठाम, जप तप करइं हितकाम।
सीता कीधी रे तसु सुजगीस, परिचरिजा निसिदीस ॥३९॥ सा०
पंखी थयो रे सीता सखाय, मनगमतो सुखदाय।
तसु तनु सोहइं रे जटा अभिराम, पंखी जटायुध नाम ॥४०॥ सा०

साधनइ दीधो रे भलइ प्रस्ताव, दानतणइ परभाव।
रामनइ थई रे रिधि अदभूत माणिक रतन¹ परभूत ॥४१॥ सा०
देवता दीधो रे रथ श्रीकार, चपल तुरंगम च्यार।
रथ बइसीनइ रे सीताराम, मन वंछित भमइ ठाम ॥४२॥ सा०
ममता देखइ रे कौतुक वृंद, पामइ परमाणंद।
खंड पांचमानी रे पहिली ढाल समयसुंदर कहइ रसाल ॥४३॥ सा०
[सर्वगाथा ४८]

दूहा ६

सीता लखमण राम वलि दंडकारण्य मझारि।
पहुँता तिहां कोइक नदी, तिहां वन खंड वहारि। १॥
रामचंद सीता सहित उत्तम मंडप मांहि।
बइठा लखमण मइ कहइ आणी मन उच्छाहि ॥२॥
गिरि बहु रमणे मत्तो नदी ते निरमल नीर।
वनखंड फल फूले भरया इहां बहु सुख सरीर ॥३॥
माता बांधव मित्र सहु छे आव इणि ठाम।
आपे सहु रहिस्यां इहां, नयो वसावी गाम ॥४॥
तउ बलतो लखमण कहइ, ए मुझ गम्यो विचार।
मुझनइ पिण इहां उपजइ रहतां हरष अपार ॥५॥
इम ते आलोची करी दसरथ राजा पुत्र।
आइ तिहां रहइ तेहवइ, जे थयो तेसुणो चत्र ॥६॥
[सर्वगाथा ५४]

१—मणि माणिक

ढाल २

ढाल :—सुणउरे भविक उपधान वूहां विण, किम सूझइ नवकार जी ।
अथवा—जिनवर सु मेरो मन लीनो, ए देसी ॥

तिण अवसरि लंकागढ़ केरो, रावण राज करेइजी ।
समुद्रतणी पाखतियां खाई, दससिर नाम धरेइजी ॥१॥ ति०
देहतणी उतपति तुम्हें सुणिज्यो मूलथकी चिरकालजी ।
वैताढ्य परवत उपरि पुर इक, रथनेउर चक्रवालजी ॥२॥ ति० ।
मेघवाहन विद्याधर राजा, इन्द्र सु वयर छइ जासजी ।
अजितनाथनइं सरणइं पइठो, इन्द्र तणो पड्यो त्रास जी ॥३॥ ति०
चरणकमल वादीनइ बइठो, भगति करइं करजोडि जी ।
मेघवाहन राजा इम वीनवइं, भव संकट थी छोडि जी ॥४॥ ति०
तीर्थंकरनी भगति देखीनइं, रंज्यो राक्षस इंदजी ।
मेघवाहन राजानइ कहइ इम, सुणि मेटु तुझ दंद जी ॥५॥ ति०
लवण समुद्र मझार त्रिकूटगिरि, उपरि राक्षसदीप जी ।
सर्गपुरी सरिषी छइ नगरी, तिहां लका जिहां जीप जी ॥६॥ ति०
तिहां जा तुं करि राज नरेसर, मुझ आगन्यां छइं तुझजी ।
तिहां रहतां थकां कोउ नहि थायइं, अवर उपद्रव तुज्झ जी ॥७॥ ति०
वलि पृथ्वीना विवर माहे छइ, आठ जोयण उचांनिजी ।
पातालपुर पइं दंडगिरि हेठइ, दुप्रवेस शुभ शातिजी ॥ ८ । ति० ॥
ते पणि नगरी मंइ तुझ दीधी, जा तु करि आणंदजी ।
मेघवाहण लका जइ वइठो, राज करइं निरदंदजी ॥ ६ । ति० ॥

राक्षसद्वीप राजइ विद्याधर तिणि राक्षस कहवाइ जी।
पिणि राक्षस अन्नेरा कोई, सुरनहीं अइ इण ठाइजी ॥ १०। वि० ॥
मेघवाहन विद्याधर वसइ, वसु राजा हुआ केइजी।
वसु क्रमि रत्नाश्रव अंगज, रावण राज करेइ जी ॥ ११। वि० ॥
प्रबल प्रचण्ड त्रिखंड तणो धणी, त्रैलोक्य कंटक तेहजी।
तेज प्रताप तपइ रवि सरिखउ अरियण गजण एहजी ॥ १२। वि० ॥
बालपणइ बापइ पहिरायो देव समपी हारजी।
वसु रतने बालक नवमुहड़ा, प्रतिबिम्बा अति सार जी ॥१३। वि०॥
दसमुहड़ा देखी बालकना रत्नाश्रव थयो प्रेमजी।
दीधउ नाम वसूठण विवसइ ए दसवदन ते एमजी ॥१४। वि ॥
इकदिन अष्टापद गिरि ऊपरि, वहतो थम्भो विमानजी।
भरत कराया चैत्य मनोहर, अवर्ण्या अपमानजी ॥१५। वि०॥
चित चमक्यो तिहां देखि दसानन तप करतो रिषि वालि जी।
इण रिषि सहीय विमान थम्यो मुझ, कीधउ कोप चण्डालजी ।१६।वि०
अष्टापद ऊपाड्यो उधत, भुजाबल करि जेणजी।
चैत्य रक्षा भणी वालि करि चाप्यो वालि रिपीसरतेणजी ॥१७ वि०॥
मुंक्यो मोटो राव सबद तिणि रावण बोलो नाम जी।
ते रावण राजा लंकागढ राज करइ अभिरामजी ॥ १८। वि० ॥
चन्द्रनखा नामइ वसु भगिनी चन्द्रमुखी रूपवन्त जी।
खरदूषण नइ ते परणावी जीवसमी गिणइ कन्तजी ॥१६। वि ॥
पाताल लंकानो राज दीधो रावण निजमनि रंगजी।
चन्द्रनखा अंगजात बे बेटा सब संबुक सुरंगजी ॥२०। वि ॥

संवुक विद्या साधण चाल्यो, वारीतो सूरवीर जी ।
दंडकारण्य गयो एकेलो, कुचरवा नदी तीर जी ॥२१। ति०॥
गुपिलमहावसजालि माहे जई, विद्या साधइ एह जी ।
पग उचा मुखनोचौराखो, धूम्रपान करेइं तेहजी ॥ २२ । ति० ॥
वारह वरस गया साधन्ता, वलि उपरि च्यार मासजी ।
तीन दिवस थाकइ पूरइ थयइ, लहियइ लील विलासजी ॥२३।ति०॥
पंचमा खण्ड तणी ढाल वीजी, रावण उतपति जाणजी ।
समयसुन्दर कहइ हुँछुँ छदमस्थ, केवलि वचन प्रमाणजी ॥२४। ति०॥

सर्वगाथा ॥७८॥

दूहा १२

तिणअवसरि लखमण तिहा, भवितव्यता विशेषि ।
वनमाहि भमतो अवीयो, लिख्या मिटइं नही लेख ॥ १ ॥
दिव्य खडग दीठो तिहा, वंस उपरिली जालि ।
केसर चन्दन पूजियउ, तेजइ भाकभमाल ॥ २ ॥
लखमण ते हाथे लियो, वाह्यो तिण वस जालि ।
ते छेदंतइ छेदियो, मस्तक बंस विचाल ॥ ३ ॥
कनक कुण्डल काने विहुँ, मस्तक कमल सुगन्ध ।
दीठो पृथिवीतलि पड्यो, उंचो तासु कबन्ध ॥ ४ ॥
लखमण पणि विलखो थयो, धिग मुझ पुरुषाकार ।
धिग वीरज धिग बांहबल, धिग धिग मुझ आचार ॥ ५ ॥
ए कोइ विद्या साधतउं, विद्याधर जप जाप ।
निरपराध मइं मारियो, मोटो लागो पाप ॥ ६ ॥

इणपरि आपो निंदतो, करतो पश्चात्ताप।
राम समीपइ आवियो लखण लेइ नइ आप॥ ७॥
राममणी लखमण कह्यो, ते सगलो विरतांत।
राम कहइ कीधइ नहीं, ए अनरथ एकांत॥ ८॥
तीर्थंकर प्रतिषेधियो अनरथदंड एकांत।
आज पछइ तुं मत करइ, एहवा पाप अभ्रांत॥९॥
चंद्रनखा आवी तिहां प्रति जागरण निमित्त।
मुयो देखि निज पुत्र नइ धरती ढली तुरत्त॥ १०॥
मूर्छागत थई मावडी दोहिलो पुत्र वियोगि।
वलि पाछी वलि चेतना करिवा लागी सोग॥ ११॥
करम विटंबइ मोहनी करइ अनेक विलाप।
चंद्रनखा विखिली[१] थई व्याप्यो सोग संताप॥ १२॥

सर्वगाथा॥ ८॥

ढाल ३

तोरा मडइ रंग्यो रे सामीरङ्ग ताती 'ए गीतनी ढाल'

तोरा कीधइ म्हांका लाल लाल पिमड़की पड़वइ पधारउ म्हांकाबाल।
लखकर लेस्यौं श्री तोरी अजब सूरति म्हांको मनड़इ रम्योरे सोमी लेस्यौं था॥
बोलउ देवो सपुत्त पुत्र साम्हो जोवो जी।
विद्यापूरी साधउ पुत्र का तुम सोयो जी।
तोरी मावडी झूरेरे पुत्र जी बोलड़ो द्यो जी।
हा पुत्र हा भगवात हा हा वालेसर जी॥ १॥

१—दुखिनी

हा मन वल्लभ हा जीवन प्राण राजेसर जी।
तोरी मावडी रोइरे पुत्र जी रण मइं जी ॥ २ ॥ वो० ॥
विद्यापूरी दिको पुत्र किहा तु चाल्यउ जी।
दंडकारण्य मे जाइ पुत्र मइ तू नइं पालउ जी।
तोरी मावडी दुखी रे पुत्र जी आवि नइं जी ॥ ३ । वो० ।
साज लइ हुँ आवी पुत्र पहिरउ वागो जी।
मीठा भोजन जीमो पुत्र, सूता जागो जी ॥
तोरी मावडी तेडइ रे पुत्र उठि नइ जी ॥ ४ । वो० ।
तु कुलदीवो तु कुलचंद, तु कुल मंडण जी।
तुं आधार तु सुखकार, तु दुख खंडण जी।
तोरी मावडी कहइ रे पुत्र, तो विण क्यु सरइं जी ॥५॥ वो० ॥
तु का रीसाणो वालिभ पुत्र, आवो मनावुं जी।
भामणो जावुँ वोलो पुत्र, हुँ दुख[1] पावुँ जी।
तोरी मावडी मरइ रे पुत्र, बोल्या वाहिरी जी ॥ ६ । वो० ।
हा पापी हा दिरदय देव, हा हत्यारा जी।
हा गोमारा हा दुराचार, हा संहारा जी।
म्हारउ रतन उदाल्यो कां तंइ, पापिया जी ॥ ७ । वो० ।
हा पापिण मइ पाप अघोर, केई कीधा जी।
थापण मोसा कीधा केइ, पर दुख दीधा जी।
रतन उदा लीधा केइ कोई केहना जी ॥ ८ ॥ वो० ॥
अथवा केहना पुत्र वियोग, कीधा पापिणी जी।
अथवा केई राजकुमार, खाधी सापिणी जी।
कादमिया विप विछूथई माणस मारिया जी ॥ ९ ॥ वो० ॥

---

१ सुख

अथवा केई तापस साध, मइ संताप्याजी।
अथवा छूटी दीधा द्रम्म, गला केहना काप्याजी।
आग लगाडी बाल्या गाम निर्धन पाडिल्याजी ॥ १० ॥ वो० ॥

कै मइ मारी मूंनइ जीव के व्रत भांगाजी।
कै प्रभ गाल्या चोख्या द्रम्म, ए पाप लागाजी।
पुत्रनइ वियोग मोनइ दुख पाड्याजी ॥ ११ ॥ वो० ॥

चन्द्रनखा इम कीधा विलाप मोहनी वाहीजी।
पुत्र न बोलइ मूँयो कूण, राखइ साही जी।
पीटी कूटी रही रोई रडवडी जी ॥ १२ ॥ वो० ॥

किण मार्यो ए माहरो पुत्र सुंडी काढू जी।
जउ देखुं तो तेहनइ झालि, मारु बालूजी।
जोती भमइ रे दंडकारण्य मझारे ॥ १३ ॥ वो० ॥

पंचमा खण्डनी त्रीजी ढाल पूरी कीधी जी।
इहां थी हिव अनरथनी कोडि चाली सीधी जी।
समयसुन्दर कहइ ते सुणज्यो जी ॥ १४ ॥ वो० ॥

सर्वगाथा ॥१ ४॥

दूहा ६

चन्द्रनखा भमती थकी दीठा दसरथ पुत्र।
रूप अनोपम देखि करि, विस्मय पड़ी तुरत्त ॥ १ ॥
पुत्रसोग वीसरि गयो जाग्यो मदन विकार।
इण सेती सुख भोगवु नहीं तर धिग अवतार ॥ २ ॥

कन्यारूप करी नवो, पहुची राम समीपि।
हावभाव विभ्रम करइं, कामकथा उदीपि ॥ ३ ॥
ऐ ऐ काम विटंवना, काम न छूटइ कोइ ।
पुरुष थकी ए अठगुणो,[१] अस्त्रीनइं ए होइ ॥ ४ ॥
रामइं पूछ्यो कवण तु, सुदरि साचो वोलि।
किण कारण वनमइं भमउं, एकली निपट निटोल ॥ ५ ॥
वणिक सुता हु ते कहइ, वंसस्थल मुझ गाम।
मावाप माहरा मरिगया, हु आवी इण ठाम ॥ ६ ॥
कामी १ लिंगी २ वाणियो ३, कपटी ४ अनउं कुनारि।
साच न बोलइं पांच ए, छट्ठउ वली जूयार ६ ॥ ७ ॥
हिव मुझ सरणो तुम्ह तणो, हाथसु झालउ हाथ।
प्रारथिया पहिडइ नही, उत्तम करइं सनाथ ॥ ८ ॥
मौनकरी वइसी रह्या, राम उत्तम आचार।
पडउत्तर दीधो नही, पणि कुण थयो प्रकार ॥ ९ ॥

सर्वगाथा ॥ १२३ ॥

ढाल ४

सहर भलो पणि साकडो रे, नगर भलो पणि दूर रे। हठीला वयरी नाह भलो पणि नान्हडोरे लाल। आयो २ जोवन पूररे हठीला वयरी। लाहो[२] लइ हरपालका रे लाल। एहनी ढाल नायकानी ढाल सारिखी छइ। पणि आंकणी लहरकउ छइ ॥

चन्द्रनखा विलखी थइ रे, बोलावी नहीं राम रे चतुरनर।
फोकट आपो हारियो लाल, पणि को न सस्यो कामरे चतुरनर ॥ १ ॥

---

१ चउगुणउ २ हीरउ रे

असतीचरित न को लहइ रे लाल। जोवो २ चित्त विचारिरे ॥च०॥१॥
छुप-छुप शबद सुरगनोरे, गुहिर जलद गरजारदे। च०।
कोन लहइ भवितव्यतारे लाल, दरसण रहम विचार रे।२। च०
रामलपरि रीसइ चढीरे, रावी विरची नारिरे॥ च०॥
आपसुं आप विछुरियोरेलाल, सर करि अधर विदारिरे॥ ३। च०।
रोती रडवडती' भलीरे, पहुंतो आपणइ गेहरे। च०।
खरदूषण विद्याधरइ रे लाल, प्रिया पूछी ससनेह रे। ४। च०।
तुम्हनइ संतापी किणइ रे, कहिसे तासु मारि रे।
गदगद सरि रोती कहइ रे लाल चन्द्रनखा से नारि रे॥ ५॥
किणही भमते भूचरे रे खडग लिया चन्द्रहास रे। च०।
संबुक मारचो माहरो रे लाल हुं गई पुत्रनइ पासि रे॥ ६। च०।
हुं अबला अप बालही रे, जोरइ आणी हजूरि र। च०।
कीधी मुझ काया इसी रे लाल नख दंतासु विछूरि रे॥ ७। च ।
हुं छूटी किम्हही दुखे रे, जिम तिम राख्यो सील रे। च०।
प्रियडा पुण्य तुम्हारडइ रे लाल हुं आवी अवहीलि रे॥ ८। च०॥
खरदूषण कोपइ चढयो रे, दीधी दमामे चोट रे। च०।
चवदरा तूर वजाविया रे लाल, घ[illegible] दुसमण सिर चोट रे। ९। च०
चवद सहस साथे चढ्या र सुभट कटक सूरवीर रे। च०।
खूतसुंख्यो रावण भणीरे लाल आविज्यो अधारी भीररे॥ १०। च०।
गयणांगणि ऊडी गयो रे, खरदूषण जिहां राम रे। च ।
देखी कटक सीता डरी रे लाल वाजइ तूर विराम रे॥ ११। च०।

रामचंद्र इम चिंतवइ रे, लखमण मार्‍यो जेहरे।
तेहना बाधव आवीया रे लाल, वेढि कारण नहि एहरे ॥ १२ ॥ चे०
ए अनरथ तिण कामिनी रे, कीधौ प्रियु भंभेरि रे ॥ च०
धनुष लेउं निज हाथमइं रे लाल, नहितर लेस्यइं घेर रे ॥ १३ । चे०
तेहवइं लखमण ऊठियो रे, कहइ बांधव नइ एम रे च० ॥
मुझ बाधव बइठा थका रे लाल, ज्रुद्ध करो तुम्हे केम रे ॥ १४ । च० ।
लखमण धनुष चडावियु रे, साम्हउ गयउ सूरवीर रे ॥ च० ॥
सीहनाद जु हू करु रे, तु मुझ करियो भीर रे ॥ १५ ॥ च० ॥
तुम्हें सीतानइ राखिज्यो रे, हू झूझिसि जाईवीर रे । च० ।
देखी लखमण आवतो रे लाल, चाढ्या विद्याधर तीर रे । १६ । च० ।
सुभटे हथियार वाहिया रे, मोगर नइ तरवारिरे । च० ।
लखमण नइ लगा नहिरे लाल, जिम गिरि जलधर धाररे ॥ १७ । च० ।
तीर सडासड मुकिया रे, लखमण वज्राकार रे । च० ।
सुभट कटक उपरि पडइरे लाल, करइ यम भड ज्यु संहाररे ॥१८। च० ।
मस्तक छेदइं केहनो रे, केहनी दाढो मुछ रे । च ।
वलि छेदइ रथनी धजा रे, केहना हयनी पुछ रे ॥ १६ । च० ।
चपल तुरंगम त्रासवइं रे, नीचा पडइ असवार रे । च० ।
रथ भांजी कुटका करइं रे लाल, कायर करइ पोकार रे ॥ २० । च० ।
ऊची सूडि उल्लालता रे, हाथी पाडइं चीस रे । च० ।
पायक दल पाछा पडइं रे, आघा नावइं अधीस रे । २१ । च०
लखमण परदल भाजियो रे, एकलइ अडिग अवीह रे । च० ।
हत प्रहत करि नांखीयो रे लाल, हस्ति घटा जिमि सीह रे । २२ ।

चंद्रनखा दउडी गइ रे, आई दसानन पासि रे। च०।
पुष्प विमान बइसी करी रे लाल, रावण धायो आकास रे ॥२३। च।
रावण दोठी आवतइ रे, सीता राम समीपि रे। च०।
काया कंचण सारिखी रे लाल रूप रही देदीप रे ॥२४। च०।
रति रतिपति पासइ रही रे इंद्राणी इन्द्र पासि रे। च०
चन्द्रनइ पासइ रोहिणी रे लाल जिम सोहइ सुप्रकास रे ॥२५। च०
चपल लोचन अणिआलडा रे, मुख पूनिमचन्द रे। च०।
अधर प्रवाली ऊपमा रे लाल वचन अमीरस बिंद रे। २६। च०
पोन पयोधर पदमिनी रे, गंगापुलिण नितंब रे। च०।
उरु केली थंभ सारिखा रे लाल, पग कूरम प्रतिबिम्बरे ॥ २७। च ॥
एहवी सीता देखिनइ रे, कामातुर थयो तेह रे। च०।
रावणमनमांहे चिन्तवइ रे ला० धिग मुझ जीवत एह रे ॥ २८। च ॥
धिग मुझ विद्या जोरनइ रे ला० धिग मुझ राज पडूर रे।
जस मृगनयणी एहवी रे ला० नहिं नयण हजूर रे ॥ २९। च० ॥
अथवा प्रियुपासइ थकरि किम सामहो जोवाय रे।
ए मोहइ किम मुझनइ रे ला०, तउ करूं कोउ उपाय रे ॥ ३० ।च०॥
अवलोकनि विद्या बलइ रे जाण्या सर्व संकेतरे।
लखमण जे कीधो हुतउ रे लाल, रामसेती अभिप्रेतरे ॥ ३१। च ॥
सिंहनाद सबलो कीधो रे लाल, रावण राक्षस तेमरे।
राम सबद ते सांभल्योरे ला० सीतानइ कहइ एमरे ॥ ३२। च० ॥
हुं लखमण भणी जाउं छुं रे, तुं रहिजे इण ठाम रे।
एम जटायुध जाळव रे ला, आम पहुंचो हुंमकाम रे ॥ ३३। च० ॥

लखमण साम्हउ चालता रे, कुसुकन वास्यो राम रे।
तो पणि धनुप आफालतोरेला, गयो बाधव हित कामरे ॥३४। च०॥
सीता दीठी एकली रे, हाथ सु भडफी लीधरे।
मयंगलइ ज्यु कमलनी रेला, रावण कारिज कीधरे॥ ३५। च०॥
दीधा जटायुध पखीयइ रे, पाखा सेती प्रहार रे।
रावण तनु कीयो जाजरो रे ला, सामिभगत अधिकार रे ॥३६। च०॥
तिण तडफडतो पंखीयो रे, काठो धनुप सु कूटि रे।
नीचो धरती नाखियो रे ला, कडिवासो गयो त्रुटि रे॥ ३७। च०॥
पुष्प विमान बइसारनइ रे, ले चल्यो सीता नारि रे।
सीता दीन दयावणी रे ला, विलवइ अनेक प्रकार रे॥ ३८। च०॥
रावण जातउ चितवइ, एतो दुखिणी आजरे।
जोर करूँ तो माहरो रे ला, सुस जाइ सहु भाजिरे॥ ३६। च०॥
माध समीपइ मइंलीयो रे, पहिलो एहवो सुस रे।
हुँ अस्त्री अणवांछती रे, भोगवु नहि करि हुँस रे॥ ४०। च०॥
रह्यां अति संतोषता रे, अनुकूल थासइं एहरे।
मुझ ठकुराई देखिनइ रे ला, धरिस्यइ मुझ सुँ सनेह रे॥ ४१। च०॥
राम संग्रामइ आवियो रे, लखमण दीठो तामरे।
कहइ सीता मुँकी तिहारे ला, का आया इणि ठामरे ॥ ४२। च०॥
राम कहइ हुँ आवियोरे, सांभलि तुझ सिंहनाद रे।
मइ न कीयो लखमण कहइ रे ला, करिवा लागो विषाद रे॥ ४३ ।च०॥
तुह्मनइ छेतरिवा भणी रे, कीधो किण परपंच रे।
तुम्हे जावो ऊतावलारे ला, सीता राखो सुसंचरे ॥ ४४। च०॥

१—कसक

बांधव बात सुग्रीवकरी रे, पाछो आयो राम रे।
सीता दिहाँ देखइ नहीं रे हा जोई सगळी ठाम रे॥ ४५ । चा०॥
चउथी ढाल पूरी थई रे, पांचमा खण्डनी एह रे।
राम विपलाप जिके कीधा रे हां, समयसुन्दर कहइ तेह रे ॥४६॥चा०
[सर्वगाथा १५८]

दूहा ८

प्रसकइ स्युं धरती पड्यो मुरछागत थयो राम।
खिण पाछी वळी चेतना विरह विलाप करइ ताम॥ १॥
हाहा प्रिया तू किहाँ गई अति कलावकि एह।
विरह खम्यो जायइ नहीं मुझनइ दरसण देहि॥ २॥
म करि रामति छानी रही मइ तूं नयणे दीठ।
हांसो मकरि समागिणी बोलि वचन जे मीठ॥ ३॥
मोन मुकइ धी बाहिरा तू मुझ जीवन प्राण।
मुझ पाखइ जीवुं नहीं भावइ आणि म जाणि ॥४॥
इम विलाप करतां थकां पंखी दीठो तेह।
सीता हरण जणावतो मरतां तणो सनेह॥ ५॥
राममइ करुणा उपनी, दीधो मंत्र नवकार।
पंखी सुणो सरदहइ, य मुझनइ आधार॥ ६॥
तिरजंच देही छोडिनइ पामी देही दिव्य।
देवलोक सुख भोगवइ जीव जटायुध भव्य॥ ७॥
सीता विरहे रामचन्द्रि, करइ विलाप अनेक।
जीवनप्राण गयो पखी, किहांथी रहइ विवेक॥८॥
सर्वगाथा ॥१६७॥

ढाल ५

॥ राग मारुणी ॥

"मांझि रे बावा वीरगोसांई" एगीतनी ढाल ॥

रामइं सीता खबर करावी, दण्डकारण्य मझारि जी।
वलि आसइं पासइं ढुंढावी, न लही वात लिगार ॥ १ ॥
रे कोई जाणइ रे। कोई खबरि सीतानइ आणइं रे।
किण अपहरी राय राणइं । को०। आ० ॥

इण समइ एक विद्याधर आयो, लखमण पासि उदासजी।
चन्द्रोदय अनुराधा नन्दन, राम विरहियो जासजी ॥ २ ॥ रे०

खरदूषण संताप्यो तेहनइ, वयर वहइ तसु साथि जी।
करी प्रणाम कहइ लखमणनइ, द्यो मुझ वासइ हाथ ॥ ३ ॥ रे०

हुँ सेवक तोरो थयो सामी, लखमण कीधो तेमजी।
सबल विद्याधर मिल्यो सखाई, पुण्यउदय करि एम ॥ ४ ॥ रे०

लेई विरहियो साथइ लखमण, करिवा लागो जुद्ध जी।
खरदूषण देखी लखमणनइं, कहिवा लागो क्रुद्ध ॥ ५ ॥ रे०

रे रे दूठ धीठरे भूचर, मुझ अंगजनइ मारि जी।
वलि मुझ साम्हउ जुद्ध करइं तूँ, देखि मनावुं हारि ॥ ६ ॥ रे०

कहइ लखमण रे जीभ वाहइ ते, नर नहि पणि निरबुद्धिजी।
सुभटांतणा पराक्रम कहिस्यइ, सगली कारिज सिद्धि ॥ ७ ॥ रे०

वचन सुणी अति कुप्यो विद्याधर, करुं लखमण सिंहार जी।
खडग वाहइ खरदूषण जेहवइ, लखमण दीयो प्रहार जी ॥ ८ । रे०

चन्द्रहास खड़गस्यु छेद्यो, खरदूषणनो सीस जी।
बेटा पासि थापनइ मुक्यो लखमण छही अगीस जी ॥ ६ । रे०
पीछो कटक दिसोदिसि भागो, जीतो लखमण जोध जी।
करइ प्रणाम रामनइ आवी टाली बयर विरोध जी ॥ १० ॥ रे० ।
किहां सीता दीसइ नही पासइ राम कहइ सुणि वात जी।
मो आवतां पहिली किण अपहरी भेद न को समझात जी ॥११॥ रे०
वलि कहइ राम कवण ए खेचर महापुरुष महाभाग जी ॥
कहइ लखमण सगली वातनो, सुद सीम सोभाग जी ॥ १२ ॥ रे० ।
करि सीतानी खबर विरहिया सीता विण श्री राम जी।
जोवइ माण विचारइ हुं पिणि कष्टमाहम कद साम जी ॥१३॥ रे०
ते भणी जा तुं देस प्रदेसे, जल समुद्र मझारि जी।
पइसि पातालि ढुंढि गिरि कानन, करि सीतानी सार जी ॥ १४ ॥ रे०
वहति करि विरहियो चाल्यो जोवइ सगली ठामजी।
तेहवइ एक विद्याधर वरसइ रत्नजटी तसु नाम जी ॥१५॥ रे० ।
तिणि रावण ले जाती दीठी करती कोडि विलाप जी।
हाक बुंब करि तिणि हाकारयो रे किहां जायसि पाप जी ॥ १५ ॥ रे
रत्नजटी ते पूठइ दोड्यो कहिवा लागो एम जी।
रामतणी पत्नी सीता ए, तुं लेजायइ केम जी ॥१ ॥ रे ।
रावण मंत्र प्रमुखी तेहनी विद्या भांजी केहि जी।
कम्बुसेल परवत उपरि पड़्यो थयो मूर्छित तिणि मेलि जी।
समुद्रवाय करि थयो सचेतन ते खेचर रहइ तेणि जी ॥
तिणि सीतानी खबरि कही पिणि जीवइ न कही केणि जी ॥१६ ॥ रे०

मणि पडी समुद्र मांहिं किम लाभइं, करइं राम अति दुक्ख जी।
मकरि दुक्ख कहइं विद्याधर, हूं करिसु तुम्ह सुखुजी ॥ २० ॥ रे०।
सीतानइं आणिसी ऊतावलि, चालो इहा थी वेगि जी।
ल्यउ पातालपुरी तुम्हे नगरी, मारो मुहकुम तेग जी ॥ २१ ॥ रे०।
वचन मानि रामरथ वइंसी, चाल्या चित्त उदास जी।
लीधो साथि विरहियो खेचर, पहुता नगरी पासि जी ॥ २२ ॥ रे०।
चन्द्रनखा सुत सुंदि विढतो, जीतो ततखिणि रामजी।
सहु पैठा पातालपुरी मइ, जाणी निरभय ठाम जी ॥ २३ ॥ रे०।
मंदिर महुल लह्या अति सुंदर, सरगपुरी परतक्ष जी।
सीता विरह करी दुख साल्या, रामचंद्र नइं लक्ष जी ॥ २४ ॥ रे०।
पाचमां खंडतणी ढाल पाचमी, सीताराम वियोग जी।
करमथकी छूटइ नही कोई, समयसुदर कहइ लोग जी ॥ २५ ॥ रे०।

[सर्वगाथा १६२]

दूहा २३

हिव सीता रोतो थकी, रांवण राखइ एम।
मारग मइ जोतो थको, मधुर वचन धरि प्रेम ॥ १ ॥
कामी रांवण इम कहइ, सुणि सुंदरि सुजगीस।
बीजा नामइं एक सिर, हूं नामुं दससीस ॥ २ ॥
मुंकि सोग तुं सर्वथा, आणि तुं मन उल्हास।
साम्हो जोइसि रागसुं, हुं तुम्ह किंकर दास ॥ ३ ॥
का बोलइ नहि कामिनी, द्यइ मुझ को आदेश।
सोम्हो जोइ सभागिणी, मुझ मनि अति अदेस ॥ ४ ॥

जउ तु हंसि बोलइ नही, तो पणि करि एक काम ।
दे निज चरण प्रहार तुं मुझ तन आवई ठाम ॥ ५ ॥
सीता तु हरि देखि तु पृथिवी समुद्रासीम ।
तेहनो हुं अभिराजीयो मांहु सुरवण भीम ॥ ६ ॥
राजरिद्धि अति रूयडी, तुं भोगवि भरपूर ।
इद्र इद्राणीनी परइ, पणि मुझ वंछित पूरि ॥ ७ ॥
इम वेसास घणा कीया, रावण कामी राय ।
सीता धपराठी रही कहइ कोपातुर थाय ॥ ८ ॥
हा हतास हा पापमति, हा निरलज निरभाग ।
पररमणी वांछइ जिको ते तो काळो काग ॥ ९ ॥
आस पडी मुझ पइवी मत कहइ वात सपाप ॥
कां मइलो करइ वंस मइ कां लाजवि माबाप ॥ १० ॥
नरग पडइ कां बापडा कांइ लगाडइ खोडि ।
रावण हुयो कुसीलियो कहिस्यइ कवियण कोडि ॥ ११ ॥
कां तु परणी आपणी छोडि कुलीनी नारि ।
परणी वांछइ पारकी मूरख हियइ विचारि ॥ १२ ॥
इण परि घणु मिभ्रमियो राणो रावण सीति ।
वार-वार पाप पडइ कहइ मुझसु करि प्रीति ॥ १३ ॥
सीताइ एण सरिखड निभ्रम, सीधो उत्तर दिढ ।
तो पणि लंका ले गयो रावण आसा बद्ध ॥ १४ ॥
देवरमण उद्यानमइ मुंकी सीता नारि ।
आडंबरसु आप [1] पिण पहुतो भवन मझारि ॥ १५ ॥

१—आपणइ

सिंहासन बइठउं सभा, राणो रावण जाम ।
चंद्रानखा रोती थकी, ततखिण आवी ताम ।। १६ ।।
साथे ले मंदोदरी, प्रमुख दसानन नारि ।
सुणि बाधव हुँ दुख भरी, मुझ वीनति अवधारि ।। १७ ।।
खरदूषण मुझ प्राणपति, वलि सबुक सुपुत्र ।
ए विहुंनो मुझ दुख पड्यो, नहि जीवणनो सूत्र ।। १७ ।।
अरि करि गजण केसरी, तूझ सरीखा जसु भाई ।
तसु भगिणी नइं दुख पडइ, तउ हिव स्यु कहिवाइ ।। १६ ।।
रावण कहइ तु रोइ मा, मकरि सहोदरि दुखु ।
पाछा नावइं जे मुआ, सरिज्या हुवइं सुखु दुखु ।। २० ।।
हुवनहारी वात तेहवइ, करम तणइ परणामि ।
दानवदेव लांघइ नही, मरण वेला थिति ठाम ।।२१ ।।
थोडा दिनमाहि देखि हुँ, मारूं दुसमण तुज्झ ।
मुकु यमघरि प्राहुणो, तउ हुँ बांधव तुज्झ ।। २२ ।।
बहिनभणी आसासना, इम दे बहु परकारि ।
आप अंतेउर माहि गयो, जिहा मंदोदरि नारि ।। २३ ।।

सर्वगाथा ।।२१५।।

ढाल ६
राग बगालो

"इमसुणि दूतवचन कोपिउ राजामन्न" एमृगावती नी चौपइनी बीजा खडनी दसमी ढाल ।।

दीठइ मंदोदरि कंत, दिलगीर चितावत ।
कहइ अन्य वालिम लोक, मुआं न कीधो सोक ।। १ ।।

अब तु हंसि बोलइ नहीं, तो पणि करि एक काम।
दे निज चरण प्रहार तूं मुझ तन आवइ ठाम ॥ ५ ॥
सीता तु दरि देखि तु पृथिवी समुद्रासीम।
तेहनो हूं अधिराजीयो भांजु दुरजण भीम ॥ ६ ॥
राजरिद्धि अति रूयड़ी, तूं भोगवि भरपूर।
इंद्र इंद्राणीनी परइ, पणि मुझ वंछित पूरि ॥ ७ ॥
इम वेलास घणा कीया, रावण कामी राम।
सीता अपराठी रही कहइ कोपातुर वाम ॥ ८ ॥
हा हताश हा पापमति हा निरलज्ज निरमाग।
पररमणी वांछइ जिको ते तो काळो काग ॥ ६ ॥
आज पछी मुझ एहवी मत कहइ वात सपाप ॥
कां मइलो करइ वंस नइ, कां लाजविइ मावाप ॥ १० ॥
नरग पडइ कां बापडा कांइ लगाड़इ खोडि।
रावण हुयो कुसीलियो, कहिस्यइ कविजण कोडि ॥ ११ ॥
कां तु परणी आपणी छोडि कुलीनी नारि।
परणी वांछइ पारकी मूरख हियइ विचारि ॥ १२ ॥
इण परि घणु निभ्रछियो राणो रावण सीति।
वार-वार पाप पडइ कहइ मुझसु करि प्रीति ॥ १३ ॥
सीताइ तृण सरिखउ गिण्यउ, सीयो उत्तर दिद्ध।
तो पणि लंका ले गयो रावण आसा बद्ध ॥ १४ ॥
देवरमण उद्यानमइ मुंकी सीता नारि।
आईबरसु आप पिण पहुतो भवन मझारि ॥ १५ ॥

सिंहासन वइठउं सभा, राणो रावण जाम।
चंद्रनखा रोती थकी, ततखिण आवी ताम ॥ १६ ॥
साथे ले मंदोदरी, प्रमुख दसानन नारि।
सुणि बांधव हुं दुख भरी, मुझ वीनति अवधारि ॥ १७ ॥
खरदूषण मुझ प्राणपति, वलि सबुक सुपुत्र।
ए बिहुंनो मुझ दुख पड्यो, नहि जीवणनो सूत्र ॥ १७ ॥
अरि करि गजण केसरी, तूझ सरीखा जसु भाई।
तसु भगिणी नउं दुख पडइ, तउ हिव स्युं कहिवाइ ॥ १६ ॥
रावण कहइ तुं रोइ मा, मकरि सहोदरि दुख।
पाछा नावइ जे मुआ, सरिज्या हुवइं सुखु दुखु ॥ २० ॥
हुवनहारी वात तेहवइ, करम तणइ परणामि।
दानवदेव लांघइ नही, मरण वेला थिति ठाम ॥२१ ॥
थोडा दिनमाहि देखि हुं, मारूं दुसमण तुज्झ।
मुकुं यमघरि प्राहुणो, तउ हुं बांधव तुज्झ ॥ २२ ॥
बहिनभणी आसासना, इम दे बहु परकारि।
आप अंतेउर माहि गयो, जिहा मंदोदरि नारि ॥ २३ ॥

सर्वगाथा ॥२१५॥

ढाल ६
राग बंगालो

"इमसुणि दूतवचन कोपिउ राजामन्न" एमृगावती नी चौपइनी बीजा खडनी दसमी ढाल ॥

दीठइ मंदोदरि कंत, दिलगीर चितावंत।
कहइ अन्य बालिम लोक, मुआं न कीधो सोक ॥ १ ॥

जिम सारवूपणनइ नास, नोखइ घणा नीसास।
मोवन न भावइ धान खायइ नहीं तुं पान ॥ २ ॥
भावइ नहीं तुझ उ ध, त्याग मीति नाखि खखेंधि।
मोसु म मेलइ मीटि मुकइ धणी मुखिसीटि ॥ ३ ॥
तब मुंकि सगली लाज बोलीयो रांवण राज।
जो करइ नहि तु रीस, जो करइ मुझ सवोष ॥ ४ ॥
तउ कहुं मननी वात, जिण थयो मारुइं घात।
भरतानी तुं भरू, ते मयो कहिवो मुख ॥ ५ ॥
मंदोदरी कहइं नाह, साच कहइ मुझ उछाह।
मनि रीस म करइ कोइ, जे मनुष्य डाहो होइ ॥ ६ ॥
प्रीतम जिको प्रिय तुज्झ, ते वात अतिप्रिय मुज्झ।
तुं कहइ जे मुझ काज ते करु तुरत हुं आज ॥ ७ ॥
तब कहइ रावण एम अपहरी सीता जेम।
आणी इहां मइ तेह, पणि धरइ नहीं ते नेह ॥ ८ ॥
जो तेहनादरइ मुज्झ, तो साच कहुं छुं तुज्झ।
मुझ प्राणवाल्हा छूटि हुं मरिसि हियड़ो फूटि ॥ ६ ॥
तातइ तबइ अर्कीव नवि रहइ जिम मुझ जिवि।
मइकही माहरी वात तुं करिस्युं मुझ पोसात ॥ १० ॥
मंदोदरी कहइ मारि, सीता नहीं सुविचारि।
तु सारिखो जे भूप देवता सरिखो रूप ॥ ११ ॥

१—तुझ

वेखास करतो जाणि, नादरइ तो तसु हाणि।
अथवा ते सुभगा नारि, रमणी सिरोमणि सार ॥ १२ ॥
तो सारिखा जिहारत्न, जोगीन्द्र जाणो (जोग) तत्र।
अथवा किसो झंजाल, ते नारि अबला बाल ॥ १३ ॥
जोरइ आलिंगण देहि, मनतणी साध[2] पूरेहि।
तब कहइ रावण एम, सुण प्रिया इम हुइ केम ॥ १४ ॥
अनंतबीरज साध, मइं धरमनो मरम लाध।
ते पासि लीधउ सुस, एहवउ आणी हुस ॥ १५ ॥
करिजोरि पारिकी नारि, भोगवु नहिं अवतारि।
ए पणिजउ सुसअभग्ग, पालउ कदाचि सुमग्ग ॥ १६ ॥
मुझ पड्यइ दुरगति माहि, काढइ ताणी सहि साहि।
व्रत भाजता बहु दोष, व्रत पालतां संतोष ॥ १७ ॥
सुस लीयो मोटउ कोइ, भागो तो दुरगति होइ।
लघु सुस लीधउ तोइ, पाल्यो तो सुभगति होइ ॥ १८ ॥
तिण करूं नही हुं जोर, नवि करु पाप अघोर।
वलि कहइं मंदोदरि एम, तो एथि आणी केम ॥ १९ ॥
पाढीयउ नाह वियोग, बइठी करइ छइ सोग।
रावण कहइं प्रिया जांणि, आसावधइ मइ आणि ॥ २० ॥
जाण्यो हुस्यइ मुझ एह, भारिजा अति सुसनेह।
मदोदरी डाहियार, चित कीयो एह विचार ॥ २१ ॥
जो पणि न कीजइ आम, तो पणि करूं ए काम।
वहि गई सीता पासि, साथे सहेली जास ॥ २२ ॥

२—इच्छा

दासी कही कहइ एम, विलगीर थाई केम ।
रावण सिसो भरतार, पुण्य हुइ तो पाइ करतार ॥ २३ ॥
कल्पवृक्ष दुरलभ जेम, प्रीतम दसानन तेम ।
ए रतनाश्रवनो पुत्र पहनइ राक्षस सूत्र ॥ २४ ॥
ए रूप तो कंदर्प, रूठो तो काळो सर्प ।
अपछरानइं दुरलंभ वांछइ ते तुंनइ अचंभ ॥ २५ ॥
भोगवि तुं भोग सुरम्य, करि सफल आपणो जन्म ।
कहइ जनक तनया ताम, ए ताहरो नहि काम ॥ २६ ॥
जे सती हुवइ अकलेस ते न धइ ए उपदेस ।
जे हुवइ सुभगाचार, ते न धइ कुमति सिगार ॥ २७ ॥
मंदोदरी तुं स्वामि किम प्रीति होवइ मांणि ।
मंदोदरी कहइ एम, तुं कहइ वात छइ तेम ॥ २८ ॥
जो पडइ कारण कोइ, तउ अनुगतो पणि होई ।
पति प्राण धारण काज्जि इम कह्यो मइ निरलज्ज ॥ २९ ॥
मुनिव्रत विराधन नित्त, निज जीवितव्य निमित्त ।
वलि करि दसानन आस आवीयो सीता पासि ॥ ३० ॥
तुझ पतिवर्त्ती कहि केम, जोडउ छु गुणे जेण ।
तुं मानइ मुझ कोइ ए निफल दिन सहु जोइ ॥ ३१ ॥
सीता कहइ करि रीस तुं सांभले दससीस ।
मुझ दृष्टि थी जाइ दूरि, मत फिरइ मग हजूरि ॥ ३२ ॥
जो हुवइ साक्षात इंद्र अथवा तुं हुवइ असुरिंद्र ।
वलि हुवइ तुं कामदेव तउ करइं अहनिसि सेव ॥ ३३ ॥

तउ पणि न वाछुं तुज्झ, करि सकइं ते करि मुज्झ।
पापिष्ट इहांथी गच्छि, नाखीयो इम निभ्रंछि ॥ ३४ ॥
चिंतवइ वलि ऊपाय, केलवु माया काय।
वीहती जिम ते आय, मुझ आलिंगन धइ धाय ॥ ३५ ॥
आथम्यो सूरिज जेथि, अंधकार पसर्यो तेथि।
रावण विकुर्व्या सीह, बेताल राक्षस वीह ॥ ३६ ॥
इम किया उपसर्ग एणि, सीता न बीही तेण।
नवि आवि रावण पासि, नवि थई चित्त उदासि ॥ ३७ ॥
विलखउ थयो दससीस, हाथ घसइ हा जगदीस।
स्युँ थयो हे जगनाथ, धरती पड्या बे हाथ ॥ ३८ ॥
फालथी चूको सीह, एहवइ ऊगउ दीह।
आया विभीषण सर्व, वर सुभट धरता गर्व ॥ ३९ ॥
प्रणमति रावण पाय, पुछइ विभीषण राय।
ए नारि रोती कवण, रावण रह्यो करि मुण ॥ ४० ॥
सीता कहइ सहु वात, रावण तण अवदात।
हुँ जनकराजा पुत्रि, भगिनी भामण्डल सूत्रि ॥ ४१ ॥
रामनी पहिली नारि, नामइं सीता सुविचारी।
अपहरी आंणी एण, रावणइं कांमवसेण ॥ ४२ ॥
सदगुरु[1] तणइं परसाद, मत करइं तुँ विषवाद।
दससिरनइं करि अरदास, मेलहीसि पतिनइं पास ॥ ४३ ॥
आसासना इम देइ, रावण भणी पभणेइं।
परकी नारी एह, तइ कांइ आणी तेह ॥ ४४ ॥

१—देवगुरु

जेहवी आगिनी झाळ, विसकन्नखी विकराळ।
बापणि मुजगी होइ परनारि कहइ सहु कोइ ॥ ४५ ॥
ए नारि रांवण आणि, अनरथ दुखनी खाणि।
कां कुळनइ पइ तु कलंक कां खोयइ अपणी लंक ॥ ४६ ॥
कां यस गमाडइ फुराहि, कां पडइ दुरगति मांहि।
ए नारि पाछी मुँकि, मसमति थकी म चूकि ॥ ४७ ॥
रांवण कहइ ए मूमि माहरी छइ करि फूमि।
ते माहे रूपनी साइ, परकी किम कहवाइ ॥ ४८ ॥
इम सुगति कहतो पाप बह्यो महल उपरि आप।
बइसारि पुष्प विमाणि ले गयो सीताप्राणि ॥ ४९ ॥
चतुरंग सेना सांथि रावणइ कीधी आथि।
वाजित्र वाजइ तूर अति सबल प्रबल पडूर ॥ ५० ॥
गयउ पुष्पगिरिनइ शृंगि ज्यान तिहां अति चंग।
मारेळनइ नारिंग, बहु फणस चपक चंग ॥ ५१ ॥
बहु नागनइ पुन्नाग जिहां घणा सरला नाग।
आसोग तिलक लवंग, सहकार द्रुम सुरंग ॥ ५२ ॥
कंचण तणा सोपान जिहां जल अमृत समपाम।
पदवी वावडी नीर, सीता मुँकी तिणतीर ॥ ५३ ॥
रावण तणइ आदेस सुन्दर बणावी वेस।
योणा रवाप रसाळ वांसली मादळ ताळ ॥ ५४ ॥
सहु लेइ नाटक साज, नटुई आवी सुख काजि।
सीता आगइ करइ गान, आळापइ तामनइ मान ॥ ५५ ॥

सीता खुसी हुयइ केम, लंकेस सुं धरइं प्रेम।
तउ पणि न भीजइ सीत, राम विना नावइं चीत ॥ ५६ ॥
नवि करइ भोजन पान, नवि करइं देह सनान।
नवि करइ कुसमनो भोग, बइठी करइ एक सोग ॥ ५७ ॥
वलि कहइ मुंडइ एम, मइ कीयो एहवो नेम।
श्रीराम लखमण दोय, कहइ कुसल खेम छइ सोय ॥ ५८ ॥
जां सीम न सुणुं कन्न, ता सीमे न जिमुं अन्न।
सीतातणो विरतंत, नटुवी कह्यउ जइ तत ॥ ५९ ॥
भोजन न वाछइ जेह, किम तुम्हनइं वाछइ तेह।
इम सुणी रावण राय, थयो तेहवइ कहिवाय ॥ ६० ॥
खिण रोयइ करइ विलाप, खिण कहइ पोतइं पाप।
खिण करइ गीतनइं गान, खिण करइ जापनइं ध्यान ॥ ६१ ॥
खिण एक थइ हुंकार, कारण विना बार बार।
नाखइ मुखइ नीसास, खिण खंचिनइ पडइ सास ॥ ६२ ॥
खिण आगणइ पडइ आइ, खिण एक नीसरि जाइ।
खिण चडइ जाइ आवासि, पातालि पइसइ नासि ॥ ६३ ॥
खिण हसइं ताली देइ, खिण मिलइ साई लेइ।
खिण द्यइ निलाडइ हाथ, खिण गलहथो खिण बाथ ॥ ६४ ॥
खिण कहइ हा हा देव, इम कीजीयइ वलि नैव।
एक वसी हीयडइ सीत, नहि वात वीजी चीत ॥ ६५ ॥
विरही करइ जे वात, ते किण कवी कहवात[1]।
मइं कही थोडीसी एह, रावणइ कीधी जेह ॥ ६६ ॥

१—तेकिणइ कही न जात

रूपाखियो कैलास, जिण मुखासु सुखास ।
जिण मांखिया अरि भूप, देहनो एह सरूप ॥ ६७ ॥
बलि करइ रांवण खिप्र, तिहां नगर चिहुं दिसि वप्र ।
सुरजे चढावी नालि, दारू भरी सुविसाल ॥ ६७ ॥
सुखि दीया गोला ओह, कांगरे कांगर ओह ।
मांख्या सतघ्नी यत्र, वलि जोया मत्रनइ तंत्र ॥ ६९ ॥
रांवणइ सीता देखि राखो रूडी परि पेखि
आवी पणि न मुंकइ आस सीता रहइ आवास ॥ ७० ॥
ए कही छट्ठी ढाल रांवण विरह विकराल ।
कहइ समयसुंदर एम, पाडुयो प्रमदा प्रेम ॥ ७१ ॥

सर्वगाथा ॥२८५॥

दूहा ६

तिण अवसरि आयो तिहां राजा श्री सुग्रीव ।
किखिंधानगरी धणी, पिण दिलगीर अतीव ॥ १ ॥
खरदूषण मारयो जिणे, ते मोटा सूरवीर ।
राम अनइ लखमण कुमर ए करिस्यइ मुझ भीर ॥ २ ॥
इम चिंतवि पातालपुरि गयो सुग्रीव नरेस ।
साथइ सेना अति घणी पणि मनमांहे अंदेस ॥ ३ ॥
राम चरण प्रणमी करी आगइ बइठो आवि ।
कुसल खेम कह पूछीयो राम तिणइ प्रस्तावि ॥ ४ ॥
जंबूनंद नामइ निपुण, मंत्री कहइ कर जोडि ।
देव तुम्हारइ दरसणई, सीधा वंछित कोडि ॥ ५ ॥

पणि अम्ह कुसल किहां थकी, ते सुणिज्यो सुविचार।
तुम्हे समरथ साहिब वडा, करो अम्हनइ उपगार ॥ ६ ॥
किष्किंध परवत उपरइं, किंकिंध नगर सदीव।
आदीतरथना पुत्र वे, वालि अनइ सुग्रीव ॥ ७ ॥
वाली वलसाली सवल, मोटी जेह्नी माम।
रांवण खवि खीजी रह्यो, पणि नकरइ परणाम ॥ ८ ॥
वयरागइं संयम लीयो, सुग्रीव पालइं राज।
नाम सुतारा तेहनइं, पटराणी सुभ काज ॥ ९ ॥

॥ सर्वगाथा १९५ ॥

ढाल ७

वल्लालानी, अथवा भरत थयोऋपि राया रे। अथवा "जगि छइ घणाइघणेरा, तीरथ भला भलेरा" एतवननी ढाल ॥

इण अवसरि एक कोई, कपटइ सुग्रीव होई।
विद्याधर तारा पासे, आव्यो परम उल्हासे ॥ १ ॥
तारा जाण्यो ए अन्न, ते नहीं लक्षण तन्न।
नासीनइ गइ दूरि, जई कहइ मंत्रि हजूरि ॥ २ ॥
ते विद्याधर दुट्ठ, सिंहासन उपविट्ठ।
तेहवइ वालिनो भाई, आव्यो महलमइ धाई ॥ ३ ॥
दीठो आप सरूप, वीजो सुग्रीव भूप।
तुरत थयो लथपत्थ, नाख्यो दे गलहत्थ ॥ ४ ॥
वीजइ कीयो सिंहनाद, लागो माह्यो माहि वाद।
मुहते विहुंनइ धिक्कार्‍या, जुद्ध करंता ते वार्‍या ॥ ५ ॥

निरखि पडइ मढि काइ, बे सुग्रीव कहाई ॥ ६ ॥
दक्षिण दिसि गयो साचो उत्तर दिसि गयो काचो ।
तारा रह्या छदिस्सि वालि नदन चंद्ररस्मि ॥ ७ ॥
याप्यो मन्त्रि प्रधान सहुको रहइ सावधान ।
इम तारा थकी बेऊ, विमाग पमाडचा बइ तेऊ ॥ ८ ॥
साचउ सुग्रीव वहलो, हनुमत पासि पहुतो ।
आपणो दुक्ख जणायो कटक करी मई ते आयो ॥ ९ ॥
किष्किंध नगरीनइ पासि अलीक सहाड भेद्‌ तास ।
सामहो कटक करेई आयो दूप धरेई ॥ १० ॥
करिवा लागा बे जुद्ध कुण भलो कुण सुद्ध ।
सरिखी देखी बे देह, हनुमत पडचा संदेह ॥ ११ ॥
हनुमन्त अण कीधइ काम, पहुतो आपणइ गाम ।
हिव एक तुम्ह तणुं सरण सुग्रीव प्रणमति चरणं ॥ १२ ॥
बोल्या राघव ताम, अम्हे करिस्यां तुम्ह काम ।
तुम्हें आव्या भलइ पणि मत चापो हिव केणि ॥ १३ ॥
करिवउ तेहनो घात ए छइ थोडीसी वात ।
पणि हिव सांभळो तुम्हे, दुखिया छू आज अम्हे ॥ १४ ॥
सीता लेगयो अपहरि, दुष्ट दुरातमा छल करि ।
ते रिपुनो कोई नाम जाणइ नही तसु ठाम ॥ १५ ॥
ते भणी तुम्हे पणि निरखि जायइ तो करो किम भरति ॥
बोल्यो सुग्रीव राय रांम तुम्हारइ पसाय ॥ १६ ॥

१—राति

साते दिवस माहे देखो, निरति आणिसि लेज्यो लेखो ।
नहि तरि आगि मां पइसु, बोल्यु पालिसि अइसु ॥ १७ ॥
एह वचन अभिराम, सुणि हरषित थयो राम ।
सुग्रीव सार्थ तुरत्त, किंकिंध नगरी संपत्त ॥ १८ ॥
आवतो सांभलि एम, भूठो सुग्रीव तेम ।
आडड थई नइ जुद्ध, करिवा लागो ते क्रुद्ध ॥ १६ ॥
माया सुग्रीव सीधउ, सत सुग्रीवनइ दीधो ।
सबल गदानो प्रहार, पाड्यो धरती निरधार ॥ २० ॥
मूर्छित थयो ते अचेतन, खिण माहि वलिय सचेतन ।
पहुतउ रामनइं पासइं, मननी वात प्रकासइं ॥ २२ ॥
किम न करी मुझ भीर, तुम्हें हुंता मुझ तीर ।
राम कहइ नहि निरति, कुणत्तु, छइ कुण कुदरति ॥ २२ ॥
तिण मइ तेह न मार्यो, हिवतुं इहां रहि हार्यो ।
हु एकलो तिहा जाइसि, तुझ बयरीनइं हू घाइसि ॥ २३ ॥
इम कहि श्रीराम तेथि, गया ते सुग्रीव जेथि ।
रामनो तेज प्रताप, सहिन सकड तेह आप ॥ २४ ॥
तुरत विद्या गइ नासी, मूलगी देह प्रकासी ।
साहसगति नामइ लेह, विद्याधर हुंतो जेह ॥ २५ ॥
लोके ओलख्यउ तुरत्त, एतो तेहीज कुदरत ।
देखि बानरपति क्रुद्ध, तिण सेती माड्यो युद्ध ॥ ३६ ॥
विढतो बानर राय, बार्यो लखमण धाय ।
साहसगति करी गर्व, वानर बल भागो सर्व ॥ २७ ॥

रामइ सीवतो झाल्यो यम रोणानइ ले आव्यो ।
साहसगति मुयो देख्यो सुग्रीवनो हियो हरख्यो ॥ २८ ॥

सुग्रीव लखमण राम, आव्या आपणइ गाम ।
राख्या उद्यान माहे, परि गया आप उछाहे ॥ २९ ॥

तारा राणी नइ मिलियो विरहतणो दुख टलियो ।
अरध रतन पद्ध भेटि दीधा रामनइ भेटि ॥ ३० ॥

लुब्धो रहइ तारा सेती, कहूँ तेहनी वात केती ।
पणि प्रतिज्ञा वीसारी चूको सुग्रीव भारी ॥ ३१ ॥

सुभट तिहां सहु मिलिया विराहिय प्रमुख जे बलिया ।
तेरह सुग्रीव कन्या चंद्रप्रभादिक धन्या ॥ ३२ ॥

राम आगलि आवी तेह, इम बोलइ सुसनेह ।
अम्हारो भरतार, हिव मामी करतार ॥ ३३ ॥

राम उपरि दृष्टि पोती पासि ऊभी रही जोती ।
पिण श्रीराम न जोयइ, सीता विरह वियोगइ ॥ ३४ ॥

राम विनोद निमित्त नाटक करइ एक चित्त ।
तउ पिणि दृष्टि देयइ तेहनइ न बोलावइ ॥ ३५ ॥

सीतानो एक ध्यान ते विन सहु सुनो राम ।
लखमणनइ कहइ राम सीधो सुग्रीव काम ॥ ३६ ॥

पणि सुग्रीव निश्चित किम बइठा ग्रही पर्यंक ।
परवेदन कुण जाणइ काम कीधो कवण पिछाणइ ॥ ३७ ॥

काम सख्या वैद्य नारी वायइ इम दीसइ सारी ।
तां लगि सहु करइ सेव तां आराधइ ज्युं देव ॥ ३८ ॥

तां लगि प्रगटइ सनेह, तां पगि झटकइ खेह।
जा लगि पोतानो काज, सीझइ नइ सहु साज ॥ ३९ ॥
काम सीधा पछइ सोई, वात चीतारइं नहि कोई।
एहवा रांम वचन्न, सांभलि लखमण कन्न ॥ ४० ॥
गयो सुग्रीवनइं पासइ, एहवो आकरो भासइं।
रे तुं कृतघन खेचर, तूं तो अधम नरेसर ॥ ४१ ॥
वीसास्यो आगीकार, नहि उत्तमनइ आचार।
तुं आपणो बोल्यो पालि, उठि तूं आलस टालि ॥ ४२ ॥
नहि तर सुग्रीव (साहसगति) जेम, तुझनइं करिसि हुं तेम।
इण परि निभ्रंछयो वहुपरि, सुग्रीव थरहस्यो भय करि ॥ ४३ ॥
लखमण नइ कहइप्रणमी, सामी अपराध मुझ खमी।
हुं लाज्यो हिव अति घणु, ते परमारथ हुं भणु ॥ ४४ ॥
मइ मतिहीण न जाण्यो, त्रूटइं अति घणो ताण्यो।
हुं रहुं महल आवासि, राम रहइं बनवासि ॥ ४५ ॥
तारा मुझ प्रिया सुखिणी, सीता विरहिणी दुखिणी।
मुझ बयरी मास्यो राम, रामनउ बयरी समाम ॥ ४६ ॥
तुम्ह कियो मुझ उपगार, मुझथी न सस्यो लगार।
पहिलो करइ उपगार, अमूलिक तेह ससार ॥ ४७ ॥
उपगार कियां उपगार, क्रय विक्रय व्यवहार।
उपगार कीधां जे कोई, पाछो न करइं ते होइ ॥४८॥
सींग बिना सहि ढोर, भूमिका भार कठोर।
इम आंपणी निंदा करतो, उपगार चित्तमइं धरतो ॥४९॥

लखमण सुं इम कहतो, रामतणइ पासि पहुतो।
कीधो राम नइ प्रणाम, करजोडी कहइ आम ॥५०॥
हिव हुं आउ छु स्वामि निरखि करिसि ठामि ठामि।
तुम्हे धीरप धरिज्यो मुझ उपरि कृपा करिज्यो ॥५१॥
पहुचइ मातमी ढाल, पूरी थई ततकाल।
समयसुंदर इम बोलइ, सीतानइ कोइ न तोलइ ॥५२॥
पांचमा खंड रसाल, पूरं थयो मात ढाल।
समयसुंदर कहइ आगइ, कहतां दिन घणा लागइ ॥५३॥

सर्वगाथा ।१४८।

इति श्री सीताराम प्रबन्धे सीता संहरणनाम पंचम खंड समाप्तः ॥

खंड ६

दूहा १४

मात पिता प्रणमुं सदा¹ जनम दीया सुखसेण।
दादु दीक्षागुरु वली परमरतन दीयो जेण ॥१॥
विद्यागुरु वादु वली ज्ञान दृष्टि दातार।
आगमादि माटा आपिज्या, ए त्रिहुंनो उपगार ॥२॥
ए त्रिहुनइ प्रणमी करी छट्ठो खंड कहेसि।
नवरस मेली नवनवा मनमा स्वाद कहेसि ॥३॥
सुग्रीव सेवक स्वामि नै निमन्त्र्या गरबारि निमित्त।
भामंडल भाइ भलो मेलव्या एम तुरत ॥४॥

१—सदा

गाम नगर वन गिरि गुहा, जोतो थको सुग्रीव।
कंबुसेल सिखरइं चढ्यो, सुणी रतनजटि रोव ॥५॥

सुग्रीव पूछ्यो का इहा, दुखियो रहइ अत्यन्त।
ते कहइ सुणि सुग्रीव तु, सगलो मुझ्म विरतत ॥६॥

रावण सीता अपहरी, ले जातो थको दीठ।
मइ सीतानइं राखिवा, केडइ कीधी पूठि ॥७॥

जुद्ध करता रावणइ, दीधो सकति प्रहार।
विद्या छेदी माहरी, तिण हुँ करुं पोकार ॥८॥

राम समीपइं पणि हिवइं, जा न सकूं करुं केम।
सुग्रीव ऊपाडी गयो, राम समीपि सप्रेम ॥९॥
रतनजटी विद्याधरइं, प्रणमी रामना पाय।

कहइं सीतानइं ले गयो, रावण लंकाराय ॥१०॥
वात कही सहु आपणी, झगडउ कीधो जेम।

मुझ्म विद्या छेदी तिणइं, आवी न सक्यो तेम ॥११॥
सीता खबरि सुणी करी, हरष्यो श्रीरामचंद।
रोमाञ्चित देहो थई, सिंची अमृत बिंद ॥१२॥

सीता आलिंगन सारिखो, सुख पायो सुजगीस।
डीलतणा आभरण सहु, करइं राम वगसीस ॥१३॥

रामचन्द्र पूछ्यो वली, विद्याधर कहो मुज्झ।
लंका नगरी छइं किहा, किहा ते सत्रु अबुज्झ ॥१४॥

ढाल १

॥ राग रामगिरी ॥

'भणइ मंदोदरी दैत्य दसकंध सुणि' ए गीतनी ढाल। अथवा कपट रच कूकिता
पंचयोध नृप—ए सीता प्रत्येकबुद्ध ना चउढमी ढाल।

सुणउ श्रीराम लंकापुरी बात तिहां कहइ विद्याधरा हाथ जोडी।
दैत्य रावण तिहां राय अति दीपतो, कोइ न सकइ वसु मान मोडी ॥१॥
लवणनामइ समुद्र मांहि राक्षसतणो, दीप एक छइ मीठउ सुणीजइ।
सात जोयण सयांते तेह पिहुलप्पणइ, इहां थकी दूरि तेतो कहीजइ ॥२॥
तेहमांहे त्रिकूटनाम परवत तिहां पांच जोयण सयापिहुलमांन।
नवि नव जोयण उच्चपण तेहनो तेह उपरि लंकापुरी थान ॥३॥
तेथि परचंड राजा दसानन अछइ तेह त्रैलोक्य कंटक कहावइ।
भयभइ जेण सेवक कीया निजतणा विधि तणइ पासि कोइ नावइ ॥
वलि विभीषण कुंभकर्ण नृप सारिखा जेहनइ भाई अगर्मइ वडीला।
अतिसबल इंद्रजित मेघनाद सरिखा[1], सुभट पिण तेहना किण न जीता।
विषमगढ नासिगोला विषम भूमिका।
वलि विषम जिहां दिसइ समुद्र खाई।
अभंग मद अतुलबल कटक अक्षौहिणी
प्रथमथी कुण सकइ तेथि जाई ॥ ५ ॥ सु०
जे तुम्हारइ रुचइ ते करो हिव तुम्हे, तेहनइ काम को न होवइ।
दैत्य रावण तणी बात सगली सुणी लखमणा कुमर तब एम बोलइ

१ — अंगजा

जे हरइ पारकी नारि निरलज निपट, अधम तेहनी किसी कहो वडाई ।
राम कहइं रे सुभट सुणहु विद्याधरा, देखि कुण हेलि करूं तेथि जाई ८
पारको स्त्री हरइं को नही आज थी, एहवी वात करूहु प्रमाणु ।
लंकागढ लूटिनइ मारि पाधर करु, छेदि दस सीसनइ सीत आणु ॥९॥
भणि जंवुवत साहिब सुणो वीनती, चतुर विद्याधरी ए कुमारी ।
तुम्हतणी रागिणी आवि आगइं खडी, आदरो वात मानो हमारी १०
भोग संजोग तुम्हे एहसु भोगवो, सीत वालन तणी बात मूको ।
अन्यथा दुक्ख भागी हुस्यो एहवा, मूढ नर पथिकनर जेमचूको ॥११॥
भणइ लखमण इम म कहि जु जंबुवंत तु, उद्यमे जेण दालिद्र नासइ ।
गोह पन्नग भणी मारिनइ औषधी, वलइं लीधो लोक एम भासइ १२
जेम तिण औषधी वलय लीधो निपुण, तेम अम्हे मारि रिपु सात लेस्यां
जपइ जंववत मंत्रीस सुग्रीवनो, एह उप्पाय अम्हे कहेस्यां ॥ १३ ॥
एकदा रावणइ अनंतवीरज मुणी, पूछियो केहथी मुज्झ मरण ।
ते कह्यो कोडिसिल जेह ऊपाडिस्यइं, तेहथी मरण डर चित्त धरणं १४
भणइं लखमण भुजादड आफालतो, देखि तुं माहरो बल प्रचंडं ।
सिंधु देसइ गयो राम सुग्रीव सु, खेचरे भूचरे करि घमंडं ॥१५॥ सु०
कोडिसिल नाम एकासिला तेथि छइं, भरतखंडवासि देवी निवासा ।
एक जोयण उछेधांगुले ऊंचपणि, पिहूल पणि तेतली सुप्रकासा ॥१६॥
शांति गणधर चक्रायुध मुनि परिवरयो, सिद्धि पामी तिहांसुद्ध भावइं
बत्तीस पाटांगुली तेहथी तिहा वली, मुनि तणी कोडि बहु मुगतिपावइं
कुंथु तीरथ अठावीस जुगसीम वलि, सिद्धिगइ साध संख्यात कोडी ।
अरतणा साधवलि पाट चउबीस लगि, वारकोडि मुगतिगयां कमत्रोडी

मधि तीरथ घणा सीसपाटी तणो[1], कोडि पट साध सीधा सपारइ।
कोडि त्रिण साधनी सीसमा जिन तणी मुगति गई वात सहुको सकारइ
एक कोडि साध मुगति गया भगितणा, इणिघणी कोडियसि सिवनिवासी
नाम ए कोडिसिल तेणि कारण कही, ए सहु बात प्रकरण प्रकासी ॥२०॥
वाम भुजदंड करि प्रथम वासुदेव ते कोडिसिल गगनि ४ चीउपाडइ ॥
सीस बोजइ त्रिजइ कण्ठवाई करी, उर लगी चोर चम्मउ दिखाडइ ॥
हृदय लगि पांचमो करइ छठो कडइ, सातमो साथर्ला सीस थाप्पइ
आठमो जानु लगि एम नवमो वली, भूमि थी आंगुलां च्यार तोलइ।
कोडिसिल पासि कोहुको मिल्यो भाविनइ, लखमणाकुमर नवकारसमरी
वाम भुजदड थूं कोडिसिलइ ऊद्धरी, धन्य हो धन्य कहइ अमर अमरी।
देवता फूलनी वृष्टि करी ऊपरइ राम सुग्रीव सहु सुभट हरख्या।
कोडिसिलथांवि सम्मेतसिखरइ गया, मयण जिनराजना थूंभ निरख्या
राम लखमण विमाने सहु बइसिनइ नगरि कैकिंध पहुता सकोई।
राम कहइ सुणो सुग्रीव सहु को तुम्हे, बइसि रह्या केम निश्चिंत होई ॥
लकगढ लेण चालउ सहु को सुभट मत करै भुक विरह अगनि ताती।
सीत वलि आइस्यइ तो मरण माहरो आइस्यइ फाटस्यइ मुझ छाती ॥
सुभट सुग्रीव कहइ देव सुणो बीनती सुद्ध रावण संघातइ म मंडउ।
जेण विद्याघरइ तेण जमिको सदा, आजलगि तेज तेहनउ अखंडउ ॥
तेमणी तेहमो भाइ छइ अति वडउ परम श्रावक अनइ परम स्याई।
परम उपगारकारी बिभीपण सबल, प्रार्थना मंग स करइ कदाई ॥

१—पेली तरफ

दूत मुकी करी तेहनइं प्रारथो, तेह रावण भणी सीख देस्यइं ।
राम कहइं इहां कुण एहवो दूत छइं, जेह इण काम सोभाग लेस्यइं ॥
एह खेचर माहे को नही एहवो, जे लंका जाइनइ काम सारइं ।
जेण दुरगम विषम लंकगढ पइसता, दैत्य देखइ तुता झालि मारइं ॥
पणि अछइ पवननो पुत्र एक एहवो, नाम हनुमंत एहवो[1] कहीजइं ।
ते सापुरसनइं देव इहा तेडियइ, तेहनी बात सहुको पतीजइ ॥३१॥
वात ए चित्त मानी सहू को तणइं, मुँकियो दूत सिरभूति नामा ।
जाइ हनुमतनइ बात सगली कहइं, लखमणाकुमर सु थया संग्रामा ॥
खरदूषण संबुक मास्या सुणी, अनंगकुसुमा हनुमत नारी ।
बाप बाधव तणो दुक्ख लागो सबल, रोण लागी घणु वारवारी ॥३३॥
सर्व अंतेउरी सहित मंत्री मिली, दुक्ख करती थकी तेह राखी ।
प्रीतिकर भूतिकर पूछियो दूतनइं, ते कहइं बात सहु सत्यभाखी ॥३४
मारि मायावि सुग्रीवनइं रामचंद, नारि तारा मुँकावी महांतइं ।
हिव श्री सुग्रीव उपगार करिवा भणी, सीत मुँकाविवा करइ एकांतइं ।
सुता सुग्रीवनी नारि हनुमतनो, नाम कमला घणु दूत मानइ ।
रामगुणि रजियो गयो किंकिंधपुरि, वेगि हनुमंत बइसी विमानइं ॥
कीयो परणांम सुग्रीवन्इं जाइकरि, तेण श्री रामनइं पासि आण्यो ।
आवतो देखिनइ राम ऊभाथया, आपणो काम मीठो पिछाण्यो ॥३७
देइ आदर घणो राम साईए मिल्या, कुसल खेम पूछिनइं हरष पांम्यो ।
लखमण कुमर सनमान दीधो घणो, हनमंतइ रामनइं सीस नाम्यो ॥
भणइ हनुमंत श्रीरामनइं तुम्हतणा, गुण सुण्या चंद्रकिरणा सरोखा ।
जनक धनुप चाढियो प्रगट पछाडियो, कपट सुग्रीव कीधो परीखा ॥

१ जेहनउ

तुं आव हुकम यो एकलो लंकागढि मारि भांजु मुआइंस सेती ।
वेगि रावण इणो सीत आणुं इहां तुम्हे रहो पणि एवाड केती ॥४०॥
मणइ श्रीराम हनुमंत एक वार तुं लेवि जा सीतनइ कहि संदेसो ।
तुज्झ विरहइ करी रामजीवइ दुक्खइ,

मुज्झ विरहइ किसो तुज्झ अंदेसो ॥४१॥
तुं प्रिया जिमतिमकरी राखे जीवती, जीवतो जीव कल्याण देखइ ।
धाम लखमण लेई साथि आवुं तिहां, धर्म वीतराग मइ करी विशेषइ
माहरा हाथनी आ देजे मुंद्रडी, सीतनइ जेम वेसास होई ।
आवतो वेहनी राखडी आणिजे मुज्झ नइ पणि हुवइ सुख सोई ॥४२
एम समझाविनइ रामचंद मुंकियो वीर हनुमंत सेना संघातइ ।
खंड छट्ठातणी ढाल पहिली इसी समयसुंदर भणो भक्तीय भांतइ ॥

सर्वगाथा ॥४५॥

दूहा २४

आकासइ ऊडी गयो हनुमत सेन समेत ।
पहुतो गढ लंकापुरी पणि रुध्यो गढ तेथि ॥१॥
हनुमंत पूछयो केम किण्यो ए रूंध्यो गढ सच ।
कहइ मंत्री राक्षस तणो सहु माया परपंच ॥२॥
कूड यंत्र माहे तिसइ, असालिया मुख तिहू ।
दाढ विडंबित अम विष अहि वेढियो अनिहू ॥३॥
वज्र कवच पहिरी करी हनुमत गयो हजूर ।
कूड यंत्र प्राकार सहु भांजि किया चकचूर ॥४॥

तस मुखमइ पइठो तुरत, गदा हाथि हथियार ।
उदर विलूरी नीसर्यो, नखना दिया प्रहार ॥५॥
आसालिया विद्यातणो, वज्रमुख सुणी पोकार ।
जुद्ध करइं हनुमंत सु, आरक्षक अहंकार ॥६॥
हनुमंते वज्रमुख मारियो, चक्र सु छेदिउ सीस ।
अधो लंक सुदरी सुता, आवी वापनी रीस ॥७॥
हनुमंत सु रण मंडियो, जेहवइं नाखइं तीर ।
तेहवइ तेहनइ हाथ थी, धनुष भूँटि ल्यंइ वीर ॥८॥
मोगर सकति मुकइ वली, लंकासुदरि जाम ।
हथियार हाथ थी भूँटता, दृष्टि पड्यो रूप ताम ॥९॥
कामातुर हनुमंत थयो, ते पणि हनुमंत देषि ।
कंदर्पने बाणेकरी, वींधाणी सुविशेषि ॥१०॥
लंकासुदरी चिंतवइं, इण विण जीव्यु फोक ।
कहइं जिम तइं मुझ मन मोहिउ, मइं पणि तुझ सहु थोक ॥११॥
हाथ संघातइं हाथ मुझ, द्दिवइ तु झालि सुजाण ।
हनुमंत लकासुदरी, कीधो वचन प्रमांण ॥१२॥
खोलइं बइसारी करी, गाढालिंगन दिद्ध ।
विद्यावलि तिण बिकुरवी, नगरी तेथि समृद्ध ॥१३॥
रातइं ते साथे रही, हनुमत चाल्यो प्रभात ।
अधो लंकसुदरि भणी, जुद्धतणी कहि वात ॥१४॥
पहुतउ ते लंकापुरी, गयो विभीषण गेह ।
करि प्रणाम ऊभो रह्यो, कर जोडी सुसनेह ॥१५॥

हुं आज हुकम द्यो पकडो लंकागढि मारि भांजुं मुसावस सेती ।
वेगि रावण हणो सीस आणुं इहां तुम्हे रहो पणि एकाल केवी ।।४०।।
भणइ श्रीराम हनुमंत एक वार तुं तेथि जा सीतनई कहि संदेसो ।
तुम्ह विरहइ करी रामचीतइ दुक्खइ,
मुझ विरहइ जिसो तुझ अंदेसो ।।४१।।
तुं प्रिया विलविलकरी रहे जीवती, जीवतो जीव कल्याण देखइ ।
काम लखमण छेई साथि आवुं तिहां, धर्म वीतराग नइ करी विशेषइ
माहरा हाथनी जा देजे मुंद्रडी, सीतनइ जेम वेसास होई ।
आवतो तेहनी राखडी आणिजे मुझ नइ पणि हुवइ सुख सोई ।।४२
एम समझाविनइ रामचंद मुंकियो वीर हनुमंत सेना संघातइ ।
खंड छट्ठातणी ढाल पहिली इसी समयसुंदर भण्यो भलीय भांतइ ।।

सर्वगाथा ।।५८।

दूहा २५

आकासइ चली गयो हनुमंत सेन समेत ।
पहुतो गढ लंकापुरी, पणि रुंध्यो गढ तेथि ।।१।।
हनुमंत पूछ्यो केम किवो ए रुंधो गढ सत्र ।
कहइ मंत्री राक्षस तणो, सहु माया परपंच ।।२।।
कूड यंत्र माहे विसइ असाल्या मुख दिठ ।
धाउ विरंचित वन विष भरि वेढियो आनिठ ।।३।।
वज्र कवच पहिरी करी हनुमंत गयो हजूर ।
कूड यंत्र आकार सहु भांजि किया चकचूर ।।४।।

ढाल बीजी

राग मारुणी

लंका लीजइगी, सुणि रांवण लका लीजइगी । ओ आवत लखमण कउ लसकर, ज्यं घन उमटे श्रावण । ए गीतनी ढाल ।

सीता हरिखीजी, निज हीयडइ सीता हरिखीजी ।
हनुमंत दीध रामना हाथनी, मुद्रडी नयणे निरखीजी ॥१॥ सी०
हलुयइ २ हनुमंत जाई, सीत प्रणाम करेई ।
मुद्री खोला माहे नाखी, आणद अगि धरेई ॥ २ ॥ सी०
मुद्रडी देखि सीता मन हरपी, जाणि हुयो प्रिय सगम ।
अमृतकुडमाहे जाणे नाही, विहस्यो तनु थयो संभ्रम ॥ ३ ॥ सी०
रतन जडित रगीलो ओढणा, सीता वगिस्यउ उत्तम ।
हनुमंतनइ वलि पूछइ हरपइ, कुशलखेम छइ प्रीतम ॥ ४ ॥ सी०
कहइ हनुमंत संदेसो सगलो, राम कह्यो जे रंग भरि ।
सुणि सीता वलि अतिघणु हरषी, देखि भणइ मंदोदरि ॥ ५ ॥ सी०
सुँदरि आज तुँ किम हरषित थई, सतोषी मुझ प्रियुडइ ।
कोप करइ सीता कहइ का तु, फोकट फाटइ हियडइ ॥ ६ ॥ सी०
हरषनो हेतु जाणि तु ए मुझ, प्रियुनी कुशलि खेमी ।
इणि सापुरस मुद्रडी आणी, आणंद तेण करेमी ॥ ७ ॥ सी०
पूछइ सीता कहि तु कुण छइ, केहनो पुत्र तु परकज ।
कहइ हुं पवनजय नो नंदन, अजनासुदरि अगजु ॥ ८ ॥ सी०
हनुमंत माहरो नाम कहीजइ, सुग्रीवनउ हूं चाकर ।
सुग्रीव पणि रामनो चाकर, राम सहूनो ठाकुर ॥ ९ ॥ सी०

आदर देनइ पूछियो राय बिभीषण तेह ।
कहउ किण कामइ आवीया तब हनुमंत कहइ एह ॥१६॥

राम सुग्रीव हुं मुंकियो आयो तुम्हारइ पासि ।
नीति निपुण तुम्हे सांभल्यो सुणो एक अरदास ॥१७॥

रामतणी सीता रमणि, आणी रांवण राय ।
पणि पररमणी फरसतां निज कुल मइलउ थाय ॥१८॥

कुण न करइं रिधि गारवउ नारि सुं कुण न मुज्झ ।
विधिना कुण न खंडीयो कुण चूको नहि मुज्झ ॥१९॥

अउपिधि अगत इसो थयइ तउ पिणि आणउ एम ।
निज बांधव रावण तणी, करउ उपेक्षा केम ॥२०॥

रांवण समझावी करी पाछी मुंकउ सीत ।
कहइ बिभीषण मइ कही पहिली घणी कहीत ॥२१॥

तउपणि ते मानइ नही बलिहुं कहिसि विशेषि ।
तिसनी रांवण अति हठी स्युं कीजइ तु देखि ॥२२॥

हनुमंत चाल्यो तिहांथकी पहुतो सीता तीर ।
दीठी सीत दयामणी दुरबल क्षीण शरीर ॥२३॥

जेहवी कमलनी हिमबली तेहवी तनु विछाय ।
आंखे आंसू नाखती मरती दृष्टि लगाय ॥२४॥

केसपास छूटा थका कावइ गाल दे हाथ ।
नीसासा मुख नाखती दीठी दुख भर साथ ॥२५॥

सर्वगाथा ॥ ८१ ।

पति अनंगकुसमानो ए नर, पणि थयो धरणीधर वर।
कहइ हनुमंत सांभलि मंदोदरी, तसु उपगार अधिकतर ॥२०॥ सी०
प्रत्युपकार करण भणी सुदरि, दूतपणउ अम्ह भूपण।
पणि तुं सीता विचि थइ दूती, ते मोटो तुम्ह दूषण ॥२१॥ सी०
जिण कारणि कवियण कहइ एहवा, अन्य रमणि नी संगति।
अस्त्री प्रीतम नइ बाछइ नहीं, वर तजइं प्राण अहंकृत्ति ॥२२॥ सी०
कोपकरी मदोदरी कहइ किम, सुग्रीव बानर प्रमुखा।
दसमुख पंचानन सेवा तजि, राम जुबक भजइं विमुखा ॥२३॥ सी०
तिण कारणि तुं छोडि रामनइं, भजि रावण राजेसर।
सुणि हनुमंत तुं करि आतम हित, ए मुझ पति परमेसर ॥२४॥ सी०
अहंकार वचन सुणि सीता कहइं, का तु मुझ पति निंदइ।
वज्रावरत धनुष जिण चाड्यो, जगत सहू पद वदइ ॥२५॥ सी०
रिपु गज घटा विडारण केसरि, लखमण जास सहोदर।
थोडा दिवसमइं तु पणि देखिसि, प्रगट रूप परमेसर ॥२६॥ सी०
तुम्ह पति अपराधी नइं देस्यइ, मुझ पति डंड प्रबलतर।
पापी जीव भणी जिम प्रायश्चित्त, द्यइ गीतारथ सदगुर ॥२७। सी०
वचन सुणी सीता ना कोपी, मंदोदरि करइ भरछन।
पापिणि माहरा पतिनै इम तुं, कां बोलइ ए कुवचन ॥२८॥ सी०
यष्टि मुष्टि प्रहारै सीता, मारण मांडी पापिणी।
फिट फिट करि हनुमंत निभ्रंछी, निरपराध सतापणि ॥२९॥ सी०
कहइ मदोदरि जइ रावणनइ, हनुमंत दूत समागम।
सेना सु हनुमंत नइ भोजन, सीता द्यइ सुमनोगम ॥३०॥ सी०

तुम्ह विरहइ मुझ प्रियु दुख मानइ अधिको दुख नरगमा ।
चपक वन कहइ प्रीतम संगम, अधिको सुख सरगमो ॥ १० सी०

तिण कारण मुनिवर वांछइ नही प्रीतम संगम कोई ।
जे भणी प्रीतम विरह दुखनो पाछण पइइ न होई ॥ ११ ॥ सी

कहइ सीता सुणि ए वात इम होज सउपणि विरला से नर ।
म करउं प्रेम घणो जे प्रतिबध पणि हुं नहि साहसघर ॥ १२ ॥ सी०

वलि आखे आंसू नाखती कहइ सीता हनुमंतनइ ।
लखमण सहित रामचंद्रकहितइ किहां दीठो मुझ कतनइ ॥ १३ ॥ सी०

सरीर समाधि अछइ मुझ प्रियुनइ के मुझनो पछि पाई ।
कहइ हनुमंत सांभलि तुं सामिणि आरति म करे काई ॥ १४ ॥ सी०

कुशल खेम तुम्ह प्रीतमनइ छइ वसइ[1] किंकिंध विशेषइ ।
पणि प्रियुनइ एतो छइ अफसस तुम्ह मुख कमल न देखइ ॥१५॥ सी

पणि श्रीराम कह्यो छइ इमरे आवाउं तुम्ह पासइ ।
तुम्ह सरिपा कहि सुभट किहां तिहां वलि सीता इम भासइ ॥१६॥सी०

कहइ हनुमंत मुझ माहि तउ कइ, सुभटपणो निज गेहइ ।
राम समीपि जे सुभट अभंग भड तेह तणइ हुं छेहइ ॥१७॥ सी०

इण अवसरि मन्दोदरी बोली सुणि पाहुनं वल पवल ।
रावण आगल वरुणादिक रिपु, मारि मांग्या एकलमल ॥१८॥ सी

ए सरिखो कोई सुभट नहीं इहां दुष्टमान थयो रावण ।
चंद्रनखा निज भगिनी तनया, परणावी सुखपावन ॥१९॥ सी

१—नगरी

वलि सहु सुभट मिलीनइं धाया, हनुमंत ऊपर असिधर।
हनुमंत हण्या गदा हथियारउ, अंधकार जिमि दिनकर ॥४१॥ सी०
सुभट दिसोदिसी भाजि गया सहु, सीह मबद जिम मृगला।
नासइ नाग गरुड देखीनइ, अथवा सेन थी बगला ॥४२॥ सी०
वलि हनुमंत चड्यो अति कोपइं, वानर रूप करी नइं।
पाछो वलि लंकापुरि आयो, कौतुक चित्त धरी नइं ॥४३॥ सी०
घर पाडतउ तोरण तेहना, त्रोडंतो हाथा सु।
त्रासंतो गज तुरग सुभट भट, वीहावतो वाथा सु ॥४४॥ सी०
लंका लोकनइं क्षोभ उपजावतो, गयो रावणनइं पासइं।
रावण निज नगरी भाजती, देखी नइ इम भासइ ॥४५॥ सी०
रे रे सुभट इंद्र वरुण यम, इम मइं हेलइ जीता।
केलासगिरि उंचउ ऊपाड्यो, ए मुझ विरुद वदीता ॥४६॥ सी०
ते मुझ विरुद गमाड्या वानर, मुझ नगरी त्रासंतइं।
वाई वेगि चढत री भेरी, केडि करूं नासंतइ ॥४७॥ सी०
गय गूडइ पाखरो तुरंगम, रथ समूह जोत्रावो।
पालिहार पाचे हथियारे, सनद्ध बद्ध हुइ[1] धावो ॥४८॥ सी०
वेगि करी वानरडो मारुं, इम कहिनइ चडइ जितरइ।
कर जोडी वीनवइ पितानइं, कुमर इंद्रजित तितरइं ॥४९॥ सी०
कीडी ऊपरि केही कटकी, हुकम्म करो ए अम्हनइ।
जिमहुँ वानर झालि जीवतो, तुरत आणी द्यु तुम्हनइं ॥५० सी०

[1]—थइ

आप एकांतइ यइसी सीता¹, राम नाम धरि हियइ ।
गुणि नवकार पचइ कर मोजन अवधि पूगी तिण छीयई ॥३१॥ सी०
हनुमंत सीता नइ इम विनवइ वइसी खवइ मुझ स्वामिनी ।
जिम श्रीराम पासिइं लेई जाऊँ तुझ मोगिवी तु सुहागिनी ॥३२॥ सी
कहइ सीता रोती हनुमंत नइ यह बात नहीं जुगती ।
पर पुरुष सुं फरसु नहिं किचिइं ऊखण की नहिं सगती ॥३३॥ सी०
आप राम आवइ ओ इहां किणी तो आउ तिण सेती ।
ना हनुमंत¹ रावण करइ उपद्रव ढील म करि जिम जेती ॥३४॥ सी
मुझ वचने कहिजे प्रीतम नइ, पडिवाम्यो गुरु ग्यानी ।
वयो नीरोग जटायुध पक्षी बुध्दि थई सोना नी ॥३५॥ सी०
वलि देजे चूड़ामणि माहरी सहिनाणी प्रीतम नइ ।
इम कहिनइ कीधी सीख तिणसुं हनुमंत कल्याण तुम्हनइ ॥३६॥
सीता रोती नइ हनुमंत थइ, इम मा योहिसि बहुपरि ।
आवा देखि राम नइ लखमण इहां वाहली धीरज धरि ॥३७॥ सी०
हनुमंत सीता चरण नमीनइ चाल्यो संदेशा हारण ।
रावण केडि मुंकिया राक्षस मूल की मारण कारण ॥३८॥ सी
वन मांहे गयो हनुमंत वानर, तिवरइ दीठा परदल ।
विविध वृक्ष हनमूली मांड्या, गया हाथि अतुली बल ॥३६॥ सी०
रिपु दल तुटि पड्या समकालइ हनुमंत उपरि ततखण ।
हनुमंत रिपुदल मांजी नांख्या वृक्ष प्रहार विचखण ॥४०॥ सी०

१—इकबीसमइ दिवसइ सीता
१—जा हु मत २—वर्मिं हि

वलि सहु सुभट मिलीनइं धाया, हनुमंत ऊपर असिधर।
हनुमंत हण्या गदा हथियारइ, अंधकार जिमि दिनकर ॥४१॥ सी०

सुभट दिसोदिसी भाजि गया सहु, सीह सबद जिम मृगला।
नासइ नाग गरुड देखीनइ, अथवा सेन थी बगला ॥४२॥ सी०

वलि हनुमंत चड्यो अति कोपइं, वानर रूप करी नइं।
पाछो वलि लंकापुरि आयो, कौतुक चित्त धरी नइं ॥४३॥ सी०

घर पाडतउ तोरण तेहना, त्रोडंतो हाथां सु।
त्रासंतो गज तुरग सुभट भट, वीहावतो वाथा सु ॥४४॥ सी०

लंका लोकनइं क्षोभ उपजावतो, गयो रावणनइं पासइं।
रावण निज नगरी भाजती, देखी नइ इम भासइ ॥४५॥ सी०

रे रे सुभट इंद्र वरुण यम, इम मइं हेलइ जीता।
केलासगिरि उंचउ ऊपाड्यो, ए मुझ विरुद वदीता ॥४६॥ सी०

ते मुझ विरुद गमाड्या वानर, मुझ नगरी त्रासंतइं।
वाई वेगि चढत री भेरी, केडि करूं नासंतइ ॥४७॥ सी०

गय गूडउ पाखरो तुरंगम, रथ समूह जोत्रावो।
पालिहार पाचे हथियारे, सनद्ध बद्ध हुइ[1] धावो ॥४८॥ सी०

वेगि करी वानरडो मारुं, इम कहिनइ चडइ जितरइ।
कर जोडी वीनवइ पितानइं, कुमर इंद्रजित तितरइं ॥४९॥ सी०

कीडी ऊपरि केही कटकी, हुकम्म करो ए अम्हनइ।
जिमहुं वानर झालि जीवतो, तुरत आणी द्यु तुम्हनइं ॥५० सी०

१—थइ

ले आदेस पिताना इंद्रजित, गज चढि हनुमंत सनमुख ।
पहरि सन्नाह शस्त्र ले चाल्यो, साल्यो सबलो अरि दुख ॥५१॥ सी०
मेघनाद पणि साथइ चाल्यो, गज चढि सेना सेती ।
अरिबल मिल्या माहोमाहि वेढ विच थोड़ी सी छेटी ॥५२॥ सी
युद्ध करतां हनुमंत आपणी नासती सेना निरखी ।
आप ऊठि अतुलीबल सगली, राक्षस सेना धरखी ॥५३॥ सी०
निजसेना भागी देखीनइ, इन्द्रजित चढयो अमरसइ ।
वीर सबासबि नाखइ ततपर, जिम नव जलधर बरसइ ॥५४॥ सी०
हनुमत अर्द्धचन्द्र बाण सुं, आवता छेद्या ते सर ।
वलि मुंकइ रावणसुत मोगर तेम सिला वलि वानर ॥५५॥ सी०
राक्षस सुत मुंकइ वलि सबलो सगति प्रहार धरि मच्छर ।
कपकापवी कला करि टाल्यो, हनुमंत कपि विद्याधर ॥५६॥ सी०
इन्द्रकुमरि नागपासे करि हनुमंत देही बांधी ।
रावण पासि आणि ऊभो कीयो कहइ ए दुष्ट अपराधी ॥५७॥
बात कहइ सगली हनुमतनी रावण आगलि राक्षस ।
सीता दूत ए सुग्रीव मुंक्यो गज्र भागो जिण भसमस ॥५८॥ सी०
इण मार्‍यो वलि वज्रमुख राजा लंकासुंदरि लीधी ।
वानर रूप पदमवन भागउ लंकामइ इण कीधी ॥५९॥ सी०
इम अपराध सुणीनइ रावण, रूठउ होठ दंत ग्रहि ।
सांकलि सुं बांधो मारउ कहइ अपजस कीधउ एह ग्रहि ॥६ ॥ सी०
रे पापिष्ट दुष्ट निरलज तु अधम सिरोमणि वानर ।
भूचर मउ सुं दूत थया तो नहि पवनंजय कुंयर ॥६१॥ सी

नहि अंजणासुदरि अगज, आचारे ओलखियइ।
वलि दस दिवसे दोहिलो सहियइं, पणि अपणी माम रखियइ ॥६२॥
हनुमंत कहइ हसीनइ तुझ माहि, नहि उत्तमनो लक्षण।
असमंजस बोलइ का मुहडइ, का करइं अपवित्र भक्षण ॥६३॥ सी०
उत्तम हूइ परनारि सहोदर, अधम हरइ परनारी।
नहि तूं रतनाश्रव नो नंदन, का हुयइ कुल क्षयकारी ॥६४॥ सी०
इण वचने रावण अति कोप्यो, हुकम करइं सुभटानइं।
देखो दुष्ट वचन बोलतो, पालण मारि कटानइं ॥६५॥ सी०
साकल बांध सिहर मइं सगलइ, घर-घर गली भमाडउ।
लंका लोक पासि हीलावउ, दुख वांनरनइ दिखाडउ ॥६६॥ सी०
रावणरीस वचन सुणी वानर, बल करि बधन छोडइं।
जिम मुनिवर सुभ ध्यान धरी नइं, तुरत करम बध त्रोडइ ॥६७॥ सी०
ऊडि गयो उंचो आकासइं, सीता दूत जिम समली।
भांज्यो भुवन सहस जिहा थांभा, चरण लता दे सबली ॥६८॥ सी०
पडतइ भुवन धरा पिण कांपी, सेषनाग सलसलिया।
लका लोक सबल खलभलिया, उदधि नीर ऊछलिया ॥६९॥ सी०
इम हनुमंत महातम अपणो, देखाडी लंकामइं।
किंक्किधनगरी नइं चाल्यो, राम वधावणि कामइं ॥७०॥ सी०
सीता हनुमंत जातउ जांणी, असीस द्यइ जस लेजे।
द्यइ पुष्पाजलि साम्ही हुई नइं, कुशल खेम पहुचेजे ॥७१॥ सी०
खिण एक मांहि गयो ऊडीनइ, किंक्किध नगरीमइं।
सुग्रीव पासि गयो सुखसेती, भलो काम कीयो भीमइं ॥७२॥ सी०

सुग्रीव उठि दीयो बहु आदर राम पासि ले आयो ।
लख्यो राम देखि आवतो परमानंद मनि पायो ॥७३॥ सी०
करि प्रणाम हनुमंत चूड़ामणि रामचंद नइ दीधी ।
सीता मिलण समो सुख पायो हीयडइ आगलि लीधो ॥७४॥ सी०
बीजी ढाल भणी अति मोटी, हनुमंत दूत गमन की ।
समयसुंदर कहइ खंड छट्ठा नी रसिक मांणस सुसजनकी ॥७५॥ सी०
सर्वगाथा ॥ १५८ ॥

दूहा ११

कहइ सीता नई कुशल छइ हनुमंत बोलइ एम ।
तिहां आवी नइ आवतां वात थई छइ जेम ॥१॥
संदेसो सीता कह्यो थोड़ा दिवस मझारि ।
जो नाया तउ जीवती, नहि देखो निजनारि ॥२॥
सीता सहिनाणी सुणो सुणी तास संदेस ।
आपा निंदइ रामजी आणइ मनि अंदेस ॥३॥
धिग धिग जीवित तेहनो, धिग धिग तसु अवतार ।
जसु महिला रिपु मंदिरे निवसइ नित निरधार ॥४॥
रामनइ आमणदूमणो देखी लखमण ताम ।
कहइ सोचा[1] म करो तुम्हे सीझस परमा काम ॥५॥
लखमण तेडाया सुभट सुग्रीवादिक कपि ।
ते कहइ भामंडल भणी, नाया क्या निरति ॥६॥
ठीक नहि छइ अम्ह तणइ पाडो लंका जेथि ।
पिण किम तरिस्यां भुज करी आडो समुद्र छइ पथि ॥७॥

१—चिन्ता

सिंहनाद खेचर कहइ, एतो वात अयुक्त।
आतम हित ते कीजियइं, संत तणो ए सूक्त ॥८॥
हनुमंत भागा जेहना, लंका भुवन प्राकार।
ते रावण कोपी रह्यो, अम्हनइ नाखिस्यइं मारि ॥ ६ ॥
चंदरसमि तेतइ कहइ, सिंहनाद सुणि एह।
कुण बीहइ रावण थकी, अम्ह बल कटक अछेह ॥ १० ॥
राम तणइं कटकइं मिलइं, कुण कुण सुभट अभंग।
नाम सुणो हिव तेहना, जे करइं सबलो जंग ॥ ११ ॥

॥ सर्वगाथा १६६ ॥

ढाल ३

पद्धडी छदनी

अति सबल घनरति सिंहनाद, घृतपूरह[1] केवलि किल प्रलहाद।
कुरुभीमकूट नइं असनिवेग, नलि नील अंगद सबल तेग ॥ १ ॥
वज्र बदन मंदरमालि जाण, चद्रजोति केता करूं बखाण।
रणसीह सिंहरथ वज्रदत्त, लागूल दिनकर सोमदत्त ॥ २ ॥
रिजुकीर्ति उलकापातु धीर, सुग्रीव नइं हनुमत वीर।
वलि प्रभामंडल पवनगत्ति, इंद्रकेत नइ प्रहसंत कित्ति ॥ ३ ॥
भलभला एहवा सुभट भट्ट, वानर कटकमइ अति प्रगट्ट ॥
चंद्ररसमि विद्याधर वचन्न, सुणि करइं वानर रण जतन्न ॥ ४ ॥
तिण वेलि कोपइ चड्या राम, चाडियो त्रिसलि नजरि स्याम ॥
आफालियो निज धनुष चाडि, सिंहनाद कीधो वल दिखाडि ॥ ५ ॥

१—घृतवरह

जिसो प्रलयकाल सूरिज प्रचंड तिसो राम ऐवी तप अखंड।
सुग्रीव प्रमुख वानर सवल्ल, वनवदन उपरि थया सज्ज ॥ ६ ॥
मगसिर तणउ जे प्रथम पक्ष, रविवार पांचम दिन मत्यक्ष।
शुभ लगन वेळि विजय योग, राम कीयो चाल्यणरो प्रयोग ॥ ७ ॥
भलभला शकुन थया समस्त, निरधूम अगनि सामही प्रशस्त ॥
आभरण पहिरे सधव नारि, हासला घोड़ा करइ हेषार ॥ ८ ॥
निर्मल दरसण नयण दिठु, वायस पवन अनुकूल पिठु ॥
चामर मला तोरण विचित्र गजराज पूरण कुंभ छत्र ॥ ६ ॥
सवलनउ सवद सवच्छि गाय, नवकीमो दक्षिण दिसइ जाय।
अविरुद्ध पुरुषनइ सिद्ध अन्न सांभल्यो भेरी सवद कन्न ॥ १० ॥
खीर वृक्ष ऊपरि चढ़ित पक्ष वासियो वायस वाम पक्ष ॥
बीजा थया वलि शकुन जेह, सहु कहइ कारिज सिद्ध तेह ॥ ११ ॥
चाल्यो लंका दिसि रामचंद साथइ विद्याधर तणा वृंद।
नक्षत्र चीट्यो चंद जेम आकास सोहइ राम तेम ॥ १२ ॥
सुग्रीव हनुमंत नइ सुसेण नलनील अंगद शत्रुसेण।
चालइ वानर चिन्ह जाणि, वाजते तूरे चढ़इ विमाणि ॥ १३ ॥
खेचर विराहिय चिन्ह हार सिंहरथ तणइ तोसीहसार।
मेघकंत नइ मातंग मत्त, रणसुर खेचर व्याघ्ररत्त ॥१४ ॥
इण परि विमाने चाहनेषु, गजरथ तुरंगम चिन्ह वेसु।
आप आपणे बइसी विमान विद्याधरइ कीधुं प्रयाण ॥ १५ ॥
भामण्डल सहोदर साथि किन्ह चौतरे मारकि फोज किन्ह।
जिम लोकपाले करी मइद सोहइ त्युं सुभटे रामचंद ॥ १६ ॥

गयणे वहइं सहु जाणि पक्षि, देवता दीसइं ते प्रत्यक्ष ।
अनुकमइ वेलधर समीप, गया समुद्र काठइ[1] तिहा महीप ॥ १७ ॥
आवतो वानर सैन्य देखि, करइ जुद्ध सवलो नृप विशेष ।
ततकाल जीतो नलिइं तेह, रामना प्रणामइ पाय एह ॥ १८ ॥
आपणी कन्या चतुर च्यार, लखमण भणी द्यइ अति उदार ।
तिहां रह्या रग सु एक राति, वलि चालिया उठी प्रभाति ॥ १९ ॥
ततखिण गया लंका समीपि, उतस्या नीचा हंसदीपि ।
राजा तिहा हसरथ प्रसिद्ध, सेवक थई वहु भगति किद्ध ॥ २० ॥
मुकियो माणस रांमचंद, वेगि आवि भामंडल नरिंद ।
रामइ कियो तिणठामि मेलहाण, पणि पड्यो लकापुरी भंगाण ॥ २१ ॥
ऊछली समुद्रनी जाणि वेल, खलभली लका तेण मेल ।
आविया वानर दल उलट्टि, खिण माहि नगरी थई पलट्टि ॥ २२ ॥
दसबदन वाई मदन भेरि, ततकाल सुभटे लियो घेरि ।
वाया वली रण तणा तूर, तिण मिल्या रण झूझार सूर ॥ २३ ॥
आवीया सगला सूरवीर, वडवडा रावण तणा वजीर ।
हिव एण अवसरि करि प्रणाम, वाधव विभीषण कहइ आम ॥ २४ ॥
इन्द्र समो रांम नी रिद्धि आज, अति सवल वानर तणउ अवाज ।
राम सु रावण म करि झुज्झ, तु मानि हित नी वात मुज्झ ॥ २५ ॥
का सुजस खोवइं आलिमालि, का पाप करि पइंसइंपयालि ।
भलभली ताहरइं नवल नारि, तिणा थकी अधिकी नहि ससारि ॥२६॥

---

1 नामइ

सीता भणी पाछी संप्रेखि, नहीतरि न छोडइ राम केडि।
इम सुणि बिभीषण तणा बोल, कहइ इन्द्रजीत तु रहइ अमोल ॥ २७॥
इहाँ तुम्ह ऊपरि नहि बंधाण बीहइ तो बइसी रहि थयाण।
संग्राम करि बहु सुभट मारि आणी जिणइ ए सीत नारि ॥ २८ ॥
रावण सिको किम तजइ तेह परमान्न भूख्यो जेम पाइ।
किम असृत मुर्क त्रिप्यो जेह दससीस तिम सीता सनेह ॥ २९ ॥
पभणो बिभीषण कहइ एम तु सत्रुभूत सुत थयो केम।
जे वचन तुं पहुबा संपेइ, ते आगि माहि इ धण खिवेइ ॥ ३ ॥
लंका तणो गढ भांजि मूक करि महल मंदिर टूक टूक।
सवि आवि लखमण कीध देक तदि सीत देस्यो मुकि लाल ॥ ३१ ॥
एकलो राम जीतो न जाय, लखमण सहित किम युद्ध थाय।
एक सीहनइ पाखर्यो होइ कुण सकइ साम्हो तास जोइ ॥ ३२ ॥
ए मिल्या सुभट मिल्या अनेक कोडि सुग्रीव हनुमंत साथ जोडि।
मरुचीक अंगद अनलबेग तेहनी अति आकरीम तेग ॥ ३३ ॥
पाछी सीता देतां ज मध्य आपणो राखो जीवितव्य।
हुं कहुं केती अधिक वात बीजी न सूझइं काइ घात ॥ ३४ ॥
इम सुणी बिभीषण कठिन बोल कोपीयो रावण अधि निठोल।
चढीयो आपणो खडग काढि मारु बिभीषण सीस बाढि ॥ ३५ ॥
तेवइ बिभीषण त्रटकि, सूरवीर साम्हो थयो सटकि।
उन्मूलि थयो थंभ एक मारु दसानन टलइ ब्वेग ॥ ३६ ॥

१—मर्टकि

जुद्धकरण लागा ततकालि, कुंभकर्ण भाई पड्यो विचालि
काढ्यो विभीषण रावणेण, निज नगरथी कोपातुरेण ॥ ३७ ॥
राजा विभीषण करिय रीस, अक्षोहिणी ले साथि तीस।
गयो हंसदीप सबलइ पङ्करि, वाजते वाजे नवल तूर ॥ ३८ ॥
पडी खलभली वानर कटकि, चाडिउ धनुष रामइ झटकि।
लखमण लिउ रविहास खग्ग, सावधान सुभट्ट थया समग्ग ॥ ३६ ॥
वानरा केरो कटक देखि, वीह्यो विभीषण अति विशेषि।
रांमचंद्रनइ मुकियो दूत, जई कहइं वीनति ते प्रभूत ॥ ४० ॥
सीता तणो देता प्रबोध, मुझ थयो भाई सु विरोध।
हु आवियो हिव तुम्ह पास, तुं सामिनइं हू तुज्झ दास ॥ ४१॥
साभलो दूतना वचन सार, राम मंत्रि सु माड्यो विचार।
मंत्रीस मतिसागर कहेइ, कहो बात कूड नी कुण लहेइ ॥ ४२ ॥
मत रावणइं करि कपट कोइ, मुक्यो विभीषण भाई होइ।
वेसास करिवो नहीं तेण, पंडित वृहस्पति कहइ जेण ॥ ४३ ॥
मतिसमुद्र कहइ जउ पणि छइ एम, तो पणि न थायइ एम केम।
सीता विरोध सुणियइ प्रसिद्ध, धरमी विभीषण नय समृद्ध ॥ ४४ ॥
ते भणी निरदूपण कहाय, पछइ तुम्हें जाणो महाराय।
सुणि राम मुकइं प्रतीहार, तेडइ विभीषण सपरिवार ॥ ४५ ॥
आयो विभीषण तुरत तेथि, श्रीराम बइठा हुंता जेथि।
कर जोडि चरणे कीयो प्रणाम, अति घणउं आदर दियो राम ॥ ४६ ॥
कहइ सीत काजि विरोध मुज्झ, थयउ तेण आयो सरणि तुज्झ।
हरषिया हनुमत सुभट सर्व, सूरिमा जागी चड्या गव ॥ ४७ ॥

सीता भणी पाछी संप्रेखि, नहींतरि न छोडइ राम केडि।
इम सुणि विभीषण तणा बोल, कहइ इन्द्रजीत तु रहइ अबोल ॥ २७ ॥
इहाँ तुम्ह ऊपरि नहिं वखाण बीहइ तो बइसी रहि अयाण।
संग्राम करि बहु सुभट मारि, आणी छिपइ ए सीत नारि ॥ २८ ॥
रावण खिजो जिम तपइ तेह परमान्न मूक्यो जेम पह।
जिम अमृत मुंकइ जिप्यो नेह, दससीस तिम सीता सनेह ॥ २९ ॥
बलतो विभीषण कहइ एम तु सतुभूत सुत थयो केम।
जे वचन तुं पहवा भंपेइ, ते आगि माहि इ धण खिवेइ ॥ ३० ॥
लंका तणो गढ़ भांजि मूळ करि महल मंदिर टूक-टूक।
जदि आवि लखमण कोप हेल तदि सीत देस्यो मुंकि लेल ॥ ३१ ॥
पहलो राम जीतो न जाय लखमण सहित किम युद्ध थाय।
एक सीहनइ पाखरयो होइ कुण सकइ साम्हो सास जोइ ॥ ३२ ॥
ए मिल्या सुभट मिल्या अनेक कोडि सुग्रीव हनुमंत साथ जोडि।
भामंडल अंगद अनलवेग तेहनी अवि आकरीज तेग ॥ ३३ ॥
पाछी सीता देवो ज सम्प आपणो रास्यो जीवितव्य।
हुं कहुं छेवी अधिक वात बीसो म सूझइ काइ घात ॥ ३४ ॥
इम सुणी विभीषण कठिन बोल कोपीयो रावण अति निटोल।
कढीयो आपणो खडग काढि मारु विभीषण मोस वाढि ॥ ३५ ॥
तेतइ विभीषण उर्द्धवि, सूरवीर साम्हो थयो सडवि[1]।
उन्मूलि थयो थंभ एक, मारु दसानन टळइ छेग ॥ ३६ ॥

१—मर्द्धवि

चयारि[1] सहस अक्षोहिणी, रावण कीधी सज्ज ।
एक सहस अक्षोहिणी, वानर तणी सकज्ज ॥ ६ ॥
पाच[2] सहस अक्षोहिणी, थई एकठी प्रगट्ट ।
तेहवइं रामतणो कटक, आयो नगरी निकट्ट ॥ ७ ॥
घर थी नीसरता थका, खिण एक थयो विलंब ।
आप आपणी अस्त्री कीयउ, पासइं मिल्यउ कुटंब ॥ ८ ॥
काचित नारी इम कहइ, प्रीतम कंठइ लागि ।
साम्हे घाये झूझिजे, पणि मति आवइं भागि ॥ ६ ॥
काचित नारी इम कहइ, जिम तइं मुझ नइ पूठि ।
नहीं दीधी तिम शत्रुनइं, पणि देजे मा ऊठि ॥१०॥
काचित नारी इम कहइ, तिम करीज्ये तू कंत ।
घा देखी तुझ पूठिनउ, सखियण मुझ न हसंत ॥ ११ ॥ का०
काचित नारी इम कहइ, रणमइ करतउ झूझ ।
प्रेमपियारा प्राणपति, मत चीतारइ मुझ ॥ १२ ॥
काचित नारी इम कहइ, तिम मुखि लेजे घाय ।
जिम मुख देतो माहरइं, नख खिति साम्हो आय ॥१३॥
काचित नारी इम कहइ, पाघडी मूके मुझ ।
जिमहुं अति वहिली मिलु, सरगपुरी मइं तुझ ॥ १४ ॥
काचित नारी इम कहइ, जय पामी घरि आवि ।
ए अस्त्री वीर भारिजा, मुझनइ विरुद कहावि ॥ १५ ॥

१— भामंडल सेना सहित वानर तणी सकज्ज । एक सहस अक्षोहिणी, राम कटकि थई सज्ज । ६ । २—

वेहवाइ भामंडल सुगाल आवियो झाकझमाल भाल।
श्रीराम आदर मान दिद्ध, वानरे बहु प्रतिपत्ति किद्ध॥ ४८॥

तिहां दसदीव[1] किताक दीह, रह्या राम लखमण अबीह॥
ए खंड छट्ठा तणी ढाल, त्रीसी पूरी थई तिण विचाल॥ ४९॥

मुझ चलम श्री साचोर माहि, तिहां च्यार मास रह्या उछाहि।
तिहां ढाल ए कीधी हरखेन कहइ समयसुंदर भगति हेज॥ ५०॥

सर्वगाथा ॥११५॥

दूहा ३१

लंका साम्हा सहु चल्या पहुता संग्राम ठाम।
वीस जोयण माहे रह्यो कटक तणो आयाम॥ १॥

कुंभकरण सामंत सहु निज निज कटक ले साथि।
रावण मइ पासइ गया सहु हथियारे हाथि॥ २॥

राक्षसपति पूज्या सहु, वस्त्राभरण विशेषि।
आदर मान घणो दीयो यथा युगति ते देखि॥ ३॥

पच्चीस सहस नइ आठसइ सत्तरि गजरथ सार।
एक लाख नव सहस वलि, सइ त्रिणसय पाखिहार॥४॥

पांसठि सहस छसइ वली दस अधिका केकाण।
संख्या एक अखोहिणी तेहमा ए परिमाण॥ ५॥

१—दसदीव आठ दीह

समझावी सहु कामिनी, सुभट चल्या सहु कोइ ।
वली रावण ना कटक मइ, कुण-कुण भेलो होइ ॥ २७ ॥
साढी च्यार कुमारनी, कोडि सु रावण पुत्र ।
मेघनाद नइं इन्द्रजित, गजारुढ़ गया तत्र ॥ २८ ॥
चढि विमान जोतीप्रभइ, ले त्रिसूल निज हाथि ।
कुभकरण राजा चल्यो, सुभट तणो ले साथि ॥ २९ ॥
राणउ रावण चालियो, बइसी पुष्प विमान ।
पृथिवी नभ आपूरतउ, वाजते नीसाण ॥ ३० ॥
भूकपादिक चालता, हुया महा उतपात ।
रांवण ते मान्या नहीं, भावी न मिटइ बात ॥ ३१ ॥

सर्वगाथा ॥२५०॥

ढाल ४

॥ राग सोरठ जाति जांगड़ानी ॥

हो संग्राम राम नइ रावण मंडाणा, जलनिधि जल ऊछलिया ।
इंद्र तणा आसण खलभलिया, शेषनाग सलसलिया ॥ १ हो सं० ॥
प्रवल वेउं दल दीसइं पूरा, अणिए अणिए मिलिया ।
सूरवीर उंचा ऊछलिया, हाक बुंब हूकलिया ॥ २ हो सं० ॥
समुद्रवेलि सारिषउ राक्षस वल, दीठउ साम्हउ आयो ।
राम तणउ पणि वानर नउ दल, त्रूटिनइ साम्हो धायो ॥ ३ हो सं०॥
कुण कुण राम कटक नइं वानर, नाम सुणउ कहुँ केता ।
जयमित्र १ हरिमित्र २ सबल ३ महाबल ४, रथवर्द्धन ५ रथनेता ६ ॥४॥

काचित नारी इम कहइ ए वात सुज वखांण।
मत दिइ मुझ रंडापणो जयमी कहे सुजांण॥ १६॥
काचित नारी इम कहइ रे कालुया केकाण।
भर रण माहे मेल्हिजे पा वावलां समांण॥ १७॥
काचित नारी इम कहइ मागउ सुण्यो वयणि।
तउ सगपण ए आपणइ, तु माइ हु भयणि॥ १८॥
काचित नारी इम कहइ रण तू झूझि मरीसि।
अपछर मइ मुझ ओलखी, हुं तुझ वली वरीसि॥ १९॥
काचित नारी इम कहइ, विरह खमेसि हुं केम।
प्रीतम गलि विलगी रही गज गजइ कमलिनी जेम॥ २०॥
काचित नारि इम कहइ, मागां नहीं भय कोइ।
जिम जिम आवे प्रीतड सुख भोगवस्यां दोइ॥ २१॥
काचित नारी इम कहइ, जिम झूझे झूझार।
जेम पधारे गाइजइ ते पहिले सिरदार॥ २२॥
सुभट कहइ सुणि कामिनी म करउ अम्ह असूर।
अम्ह पहिली लेखाइस्यइ अस कोई मत सूर॥ २३॥
सुभट तिके अ सराहियइ, जे रण पहिला मेलि।
सेना भांजइ सत्रुनी अणिए अणिए मेलि॥ २४॥
अरि करि दंत उपरि चढी हणइ ऊपरि सिरदार।
मइ विण भा मारइ घसी ते साचा झूझार॥ २५॥
एक ओर अमरस तणउ बीजउ अस्त्री प्रेम।
मांहो मांहि माट मंहि हुई घोडी-सी पम॥ २६॥

कुहक बाण छूटइ नालि गोला, बिंदूक वहइ बिहुं पासे[1] ।
रोठ पडइ मोगर खडगारी, अगनि ऊडइ आकासे ॥ १४ ॥ हो०
साम्हे घाए भूझइ सूरा, धड विण राणी जाया ।
दल रावण रड भाजत देखी, हत्थ विहत्थ भड धाया ॥ १५ ॥ हो
तिण बानर नो कटक थकाया, पाछा पग दिवराया ।
तितरइ राम तणां हलकास्या, नील अनइ नल धाया ॥ १६ ॥ हो०
हत्थ विहत्थ हथियारे मास्या, राक्षस बल मचकोड्यो ।
राति पडी आथमियो सूरिज, वे दल विढवो छोड्यो ॥ १७ ॥ हो०
बीजइ दिन वलि रण भूझता, बानर सेना भागी ।
हाक मारि नइ हनुमत ऊठ्यो, सबल सूरिमा जागी ॥१८॥ हो०
पवनपुत्र आवड पेखी, कहइ राक्षस कोपंता ।
काल कृतांत जिसो ए कोप्यो, आज करइ अम्ह अंता ॥१६॥ हो०
साम्हो थई मुँकइ सर[2] धोरणि, सुभट सिरोमणि माली ।
हनुमंत वाण क्षुरप्र संघातइ, वाढी नाखइं विचाली ॥२०॥ हो०
वज्रोदर राजा बहि आयो, हनुमंत सन्नाह भेद्यो ।
काढि खडग कोपातुर हनुमति, वज्रोदर सिर छेद्यो ॥२१॥ हो०
रावण सुत जंबुमालि प्रमुख नइ, हणइं हनुमंत वलि हेलइं ।
हाथ त्रिसूल लेई नइ धायो, कुभकरण तिण वेलइं ॥२२॥ हो०
कुभकरण आवतो देखी, चंदरसमि चंद्राभा ।
रतनजटी भामंडल धाया, जिम भाद्रव ना आभा ॥२३॥ हो०

१—बद्कां छूटइ चिहु पासि २—रण

दढरथ ७ सिंहरथ ८ सूर ६ महासूर १० सूरपवर ११ सूरकंता १२।
सूरप्रम १३ चंद्राम १४ चंद्रानन १५, दमितारी १६ दुरवंता १७।५।हो०
देववल्लभ १८ मनवल्लभ १६ अतिबल२० सुमट प्रीतिकर२१ काली २२
सुमकर २३ सुप्रसनचंद २४ कलिंगचंद्र २५,

कोल २६ विमल २७ गुण माली २८ ॥ ६ ॥ हो०

अप्रतिघात२६ सुघात३० अमितगति ३१ भीम३२ महाभीम३३ भार्णु३४
कील ३५ महाकील ३६ विकल ३७ तरगगति ३८

विजय ३६ सुसेण ४० बलार्णु ॥ ७ ॥ हो०

रत्नजटी ४१ मनहरण ४२ विरोहिय ४३ जल वाहन ४४ वायुवेगा ४५
सुग्रीव ४६ हनुमत ४७ नल ४८ नील ४६ अंगद ५०
अनल ५१ अतुलीबल तेगा ॥ ८ ॥ हो० ॥

इम अनेक विद्याधर वानर, वली बिभीषण ५१ राजा।
सन्नद्ध बद्ध हुया सगलाई, करता बहुत आवाजा ॥ ६ ॥ हो०
पूरा सहु पांचे हथियारे, सुभट विमाने बइठा।
रामचंद्र आगइ थया रण मइ, प्रथम फोज मइ पइठा ॥ १० ॥ हो०
सरणाइ वाजइ सिंधुडइ मदन भेरि पणि वाजइ।
ढोल दमामा पखज भाई, मादइ अंबर गाजइ ॥ ११ ॥ हो
सिंहनाद करइ रणसूरा, हाक बुक हुंकारा।
कांने सबद पड्यो सुणियइ नहीं कीधा रज अपारा ॥ १२ ॥ हो०
युद्ध मांहोमांहि सबलो लागो वीर सहामहि लागी।
जोर करीनइ पा मारता सुभटे तरवारि भागी ॥ १३ ॥

रांम हुकम अंगद नृप ऊठ्यो, कुंभकरण दल मोडइ ।
हाक मारि हनुमन्त वीर तितरइं, नागपासि निज त्रोडइं ॥३५॥हो०
हनुमन्त वीर अनइ अंगद नृप, बेऊं विमाने बइठा ।
लखमण कुमर विरोही विद्याधर, भर रण माहे पइठा ॥३६॥ हो०
लखमण सहु संतोष्या वचने, पास बंधण जे पडिया ।
इन्द्रजित कुमर विभीषण तेहवइं, बे माहोमाहि अडिया ॥३७॥हो०
इन्द्रजित कुमर चिंतवा लागो, ए मुझ बाप नी ठामइं ।
जुद्ध करी जीता पणि नहि जस, ओसरिवो इण कामइं ॥३८॥ हो०
ओसरतो भामडल सुग्रीव नइ बाधी नइ नीसरीयो ।
देखी रामभणी कहइ लखमण, आरति चिंता भरियो ॥३६॥ हो०
इसा सुभटा विण किम जीपायइ, रावण विद्या पूरउ ।
राम हुकम लखमण सुर समर्यो, आयो बोलतउ सूरो ॥४० ॥हो०
चउथी ढाल थई ए पूरी, पिणि संग्राम अधूरो ।
समयसुंदर कहइ सुर करइं सानिधि, पुण्य हुयइ जउ पूरो ॥४१॥हो०

सर्वगाथा ॥२६१॥

दूहा १८

रामचन्द नइ देवता, दीधी विद्या सीह ।
गुरुड तणी लखमण भणी, तेहथी थया अवीह ॥ १ ॥
प्रहरण सन्नाहे भर्या, रथ दीधा वलि दोय ।
नामइं वज्रवदन गदा, लखमण नै घइ सोय ॥ २ ॥
हल मूसल दीधा राम नइ, रथ जोत्राया सीह ।
बिहुं रथ बइठा बे जणा, हनुमन्त साथि प्रहीह ॥ ३ ॥

दरानावरणी विद्या मेमा कुँभकरणइ कहि लीधा ।
हाथ थकी हथियार पड्या सहु, निद्रा घूर्मित कीधा ॥२४॥ हो०
ते ऊपरि सुग्रीवइ धायो, सुग्रीव वानर राजा ।
मुँकी निज पडिबोहिणी विद्या, जागइ कटक थया साजा ॥२५॥ हो०
सुभटवरगी सावधान थई नइ, झुद्ध करण रण सूरा ।
कुँभकरणनइ सुभटे मागो, वजि वागा रण तूरा ॥२६॥ हो०
इन्द्रजित विडतौ आडउ आयो, कहइ वीनति अवधारो ।
तुम्हे आगइ संग्राम करिसि हुं तुम्हे वासोदपुकारो ॥२७॥ हो०
इम जंपत गज ऊपरि चडि रिपुसेन सर बींधी ।
भामंडल सुं सुग्रीव धायो, सबल मडाम्डि लीधी ॥२८॥ हो०
तुरगी तुरगी सुं तरुवारे रथी रथी सुं प्रहारे ।
गजी गजी सुँ जंग मंडाणो पाखिहार पाखिहारे ॥२९॥ हो०
कहइ इन्द्रजित तुम्ह मस्तक छेदिसि, सुणि तुं सुग्रीवराया ।
का तुं लंकापति छोडीनइ, सेवइ भूचर पाया ॥३०॥ हो०
कंकपत्र सर मुँकइ इन्द्रजित, सुग्रीव आवता छेदइ ।
मेघवाहन भामंडल पणि वलि, एक एकनइ भेदइ ॥३१॥ हो०
वज्रनाम विरोही रुन्ध्यो विद्या वलि रण मांहे ।
सुग्रीवनइ बांध्यो नागपासइ विद्या हथियार बांहे ॥३२॥ हो०
घनवाहन भामंडल बांध्यो देखि कटक खलभल्यो ।
छलमल राम समीपइ आवी एम विभीषण बोल्यो ॥३३॥ हो०
सुभट अम्हारा रांवण बेटे नागपास करि बांध्या ।
कुम्भकरण हनुमन्त मइ बांध्यो, घड़राह ना बांध्या ॥ ३४ ॥ हो०

रावण कहइं जुगतो किसो, तइं कीधो छइ काज।
तजि रतनाश्रव वंस नइ, अरि चाकर थयो आज ॥१५॥
वदइ विभीषण दसवदन, सुणि तइं जुगत न कीध।
परस्त्री आणी पापिया, कुलनइं लाछन दीध ॥ १६ ॥
जुगत वात तउ मइं केरी, दियो अन्याई छोडि।
न्यायवंत पासइ रह्यो, मुझनइं केही खोडि ॥ १७ ॥
अजी सीम गयो क्यु नहीं, मानि अम्हारउ बोल।
सीता पाछी सूपि तुं, भूलि मानिपट निटोल ॥ १८ ॥

सर्वगाथा ॥२०६ ॥

ढाल पांचमी

॥ खेलानी ॥

इमसुणि रावण कोपियो जीहो, माडियो जुद्ध विभीषण साथि के।
बांण वाहइ ते विहुगमा जीहो, तीर भाथा भरी धनुष ले हाथि के ॥१॥
रांम रांवण रण मांडियो जीहो, झूझइ छइ राणी रा जाया झूझार के।
हाक मारइं मुखि हुकलइं जीहो, सूर नइ वीर वडा सिरदार के ॥२॥
इन्द्रजित लखमण सु अड्यो जीहो, कुभकरण करइं राम सु जुद्धके।
सीह अड्यो साम्हो नीलसु जीहो, नल सु अड्यो दुरमद अति क्रुद्धके ॥३॥
सयंभु सुभट अड्यो सुभु सु जीहो, इम अनेरी वलि सुभट नी कोडि के।
सूर पुरुष चढ्या सूरिमा जीहो, कायर कांपइ छइ निज बल छोडि के ॥४॥
लखमणइ इन्द्रजित बांधियो जीहो, राम बाध्यो कुभकर्ण सगर्व के।
इम मेघवाहन प्रमुख नइ जीहो, बाधीया नागपासे करी सर्व के ॥५॥

गयासंग्राम माहि मळी लखमण राम उल्हास ।
गरुड चढ्या वसुदेवता, नागपासि गया नासि ॥ ४ ॥
भामंडळ सुग्रीव सहु, मुंकाणा ततकाळ ।
आइ मिल्या श्रीराम नइ गया बीय भंजाळ ॥ ५ ॥
पूछइ करि जोडी प्रभो, सकति किहां थी थाइ ।
राम कहइ तुम्हे सांभळो, जिम भाजइ सन्देह ॥ ६ ॥
कुलभूषण देसभूषणा, मुनिवर परवत शृंगि ।
उपसम सहता रूपनो केवलज्ञान सुरंग ॥ ७ ॥
अम्हनइ वर दीधो हुतो, गुरुडाधिप तिण ठाम ।
आज अम्हे ते मांगियो, सीधा वंछित काम ॥ ८ ॥
विद्याधर इम सांभळी, रंज्या साधु गुणेण ।
परसंसा करइ पुण्यनी पुण्य करो सहु तेण ॥ ६ ॥
करवा लागा जुद्ध वळि, कटक बेउ बहु वार ।
सुग्रीव सुभटे जीपिया राक्षस ना कुमार ॥ १० ॥
रावण ऊठ्यो रीस भरि, रथ बइसी रण सूर ।
सुभट सहु वानर तणा भांजि कीया चकचूर ॥ ११ ॥
वानर कटक पछेळियो देखि विभीसणराम ।
सन्नद्ध बद्ध हुई करि, रावण सांम्हउ जाय ॥ १२ ॥
रावण कहइ आ माहरी, दृष्टि थकी तूं दूरि ।
बांधव वध सुगतो नहीं, नाखे मुझ्झ हजूरि ॥ १३ ॥
कहइ विभीषण बंध पणि जुगति नहीं[1] कइ काइ ।
रिपु मइ बीहतो पूठि थइ, कायर ते कहवाइ ॥ १४ ॥

१—न दीसइ

रांवण कहइं जुगतो किसो, तइं कीयो छइ काज।
तजि रतनाश्रव वंस नइ, अरि चाकर थयो आज ॥१५॥
वदइ विभीषण दसवदन, सुणि तइं जुगत न कीध।
परस्त्री आणी पापिया, कुलनइं लाछन दीध ॥ १६ ॥
जुगत वात तउ मइं केरी, दियो अन्याई छोडि।
न्यायवंत पासइ रह्यो, मुझनइं केही खोडि ॥ १७ ॥
अजी सीम गयो क्यु नहीं, मानि अम्हारउ बोल।
सीता पाछी सूंपि तुं, भूलि मानिपट निटोल ॥ १८ ॥

सर्वगाथा ॥२०६ ॥

ढाल पांचमो

॥ खेलानी ॥

इमसुणि रांवण कोपियो जीहो, माडियो जुद्ध विभीषण साथि के।
बांण वाहइ ते विहुगमा जीहो, तीर भाथा भरी धनुष ले हाथि के ॥१॥
रांम रांवण रण मांडियो जीहो, झूझइ छइ राणी रा जाया झूझार के।
हाक मारइं मुखि हुकलइं जीहो, सूर नइ वीर वडा सिरदार के ॥२॥
इन्द्रजित लखमण सु अड्यो जीहो, कुभकरण करइं राम सुं जुद्धके।
सीह अड्यो साम्हो नीलसु जीहो, नल सु अड्यो दुरमद अति क्रुद्धके ॥३॥
सयंभु सुभट अड्यो सुभु सु जीहो, इम अनेरी वलि सुभट नी कोडि के।
सूर पुरुष चड्या सूरिमा जीहो, कायर कांपइ छइ निज बल छोडि के ॥४॥
लखमणइ इन्द्रजित वाधियो जीहो, राम बांध्यो कुभकर्ण सगर्व के।
इम मेघवाहन प्रमुख नइ जीहो, बांधीया नागपासे करी सर्व के ॥५॥

वानरे आपणइ कटक मइ जीहो, आणिया राख्स बांधवे बंधि के।
इण अवसरि विभीषण प्रतइ जीहो क्रोध करी नइ कहइ दसकंध के ॥६॥
सहि तुं प्रहार एक माहरो जीहो जो रणसुर मइ सबळ सूझार के।
कहइ विभीषण एक भाइ सुं जीहो मुंकि प्रहार अनेक प्रकार के ॥७॥
बांधव मारण मूंकियो जीहो रावणइ सबळ त्रिसूळ हथियार के।
लखमण आवतो ते हण्यो जीहो, बाणसुं बपु पुष्पप्रकार के ॥८॥
कोपीयइ रावणई करि लीयो अमोघ विजय महा सगति हथियार के।
आगळि दीठे ऊभउ रह्यो जीहो मरकत मणि छवि वरण उदार के ॥९॥
भीषन्न करि सोभित हियो जीहो गरुडध्वज लखमण महासूर के।
लंकापति कहइ नमु ऊभउ रह्यो जीहो रे पीठ माहरी दृष्टि हजूर के।१०।
गाजवतो लखमणइ भांखियो जीहो, संग्राम रावण सुं ततकाळ के।
सकति मुंकि राणई रावणइ जीहो, झळकी आगनिनी झाळ असराळ के।११
लखमण नइ लागी होमई जीहो, झळकी वेदना सहिय न जाय के।
मुसकि नइ धरणी ऊपरि पड्यो जीहो मुरछित थयो गया नयण मीचायके
लखमणनइ धरती पड्यो जीहो देखिनइ राम करइ रण घोर के।
छत्र धनुष रथ छेदिया जीहो कीया दससिर मइ प्रहार कठोर के॥१३॥
लंकपति भय करी कांपियो जीहो काळि सकइ नहीं धनुष हथियारके।
नवे-नवे वाहने मूझतो जीहा, राम कीधो रथ रहित बवार के ॥१४॥
मार सिरखुं नहि मूसयी जीहो पिणि निश्च कियो वचन विरोधि के।
रे रे तइ लखमणनइ हण्यो जीहो हियइ हुं तुमइ करु य ते वेक्षि के ॥१५॥
रय थकी रावण ऊतरया जीहो पइठो लंकापुरी मांहि तुरन्त के।
मइ माहरो रिपु मारीयो जीहो तेण हरषित थयो देहनो चित्त के ॥१६॥

राम सुणी सहोदर तणी जीहो, वध तणी वात द्रोडी आयउ पासके।
सगति मास्यो पृथिवी पड्यो जीहो, देखिनइं दुखु लायो घणो तासके।१७।
विरह विलाप करतो थको जीहो, नाखतो आसु नोर प्रवाह के।
मूर्छित थई पृथिवी पड्यो जीहो, सबल सहोदर नो दुख दाह के ॥१८॥
सीतल जल सचेतन करयो जीहो, राम विलाप करइं वली एम के।
हा वछ ए रणभूमिका जीहो, ऊठि सहोदर सूइजइ केम के ॥१६॥ रा०
समुद्र लाघो इहां आवीया जीहो, सबल संग्राम माहे पड्या आज के।
तुँ का अणबोल्यउ सी रह्यो जीहो ,किम सरिस्सइं इम आंपण काज के॥ २०।
विरह खमु किम ताहरो, जीहो बोल्तिु वच्छ जिम धीरज होइ के।
राज नइ रिद्धि रमणी किसी जीहो, बाधव सरिसो ससारि न कोइ के॥२१
अथवा पूरव भव मइं कीया जीहो, जाणीयइ छइ कोई पाप अघोर के
सीता निमित्त इहाँ आवीया जीहो, पड्यो लखमण हिव केह नु जोर के २२
रे हीया का तु फाटइ नही जीहो, वज्र समो हुवो केण प्रकार के।
जे विना खिण सरतो नही जीहो, तेह बोल्या थई अतिघणी वार के॥ २३
पाच सकति मुकी तुज्झ नइ जीहो, सत्रुदमनि तेतउ टाली तुरन्त के।
एक रावण तणी सकति तइं जीहो, झालि न राखी बाधव किम झत्तिके २४
ऊठि बाधव धनुष ए हाथि लइ, साधि तुं तीर लगाइ मा वार के।
ए मुझ मारण आवीयो जीहो, सत्रुनइ कहि कुण वारणहार के ॥२५॥
इणि परि बांधव दुख भस्यो जीहो, राम करइ घणा विरह विलाप के।
कहइ सुग्रीव नइ हिव तुम्हे जीहो, आप आपणी ठाम सहु जाय आप के २६
मुझ मनोरथ सहु मनमांहि रह्या जीहो, सुणि विभीषण राजा कहुँ तेह के
वइं उपगार मुझ नइं कियो जीहो, मुझ पछतावो रह्यो एहके ॥२७॥

प्रत्युपकार मइ तुम्ह मइं जीहो करि न सक्यो ते साक्ष पर्णु कोइ के
मही उीवा दुख तेहनो जीहो मेहनो प दोष वहइ छइ निटोल के ।२८।
सुमीव प्रमुख सुभट सहू जीहो, आपणइ घरि जास्यइ सहु कोइ के।
तुं पणि आ घरि आपणइ जीहो, हिव मुझ थी कांइ सिद्धि न होइ के।
राम वचन इम सांभळी जीहो, अपइ जबर्वत विद्याधर एम के।
राम अदोह दुख का करो जीहो विरह विलाप करो तुम्हे केम के॥
हुवो हुसियार धीरज धरो जीहो उत्तम सुख दुख एक समान के।
सूरिज तेज मुंकइ नहीं जीहो, उगवइ आथमइ तेण प्रस्ताव के ॥३१॥रा०
थवि सबल सकट पड्यो सहइ जीहो साहसंवत पुरुष संसारि के।
नभूनो पाव पृथिवी सहइ जीहो, नवि सहइ तुं तूं एम विचार के ॥३२॥
लखमण सकति विद्या हण्यो जीहो, मूर्छित थया पणी नहीं मुंयो एह के।
को उपचारे करी जीविस्यइ, जीहो प वातनो इहां नहीं संदेह के ॥३३॥
ते भणी उपचार कीजायइ जीहो, राति माहे तुम्हे मत करो ढील के।
महि उतक्खमणमरिस्यइ सही जीहो,सउरविकिरण वसु लागिसइ झीलके
राम आदेस विद्याधरे जीहो विद्या बलिइ कीया सात प्रकार के।
सात सेना सबळो सजी, जीहो सात सेनानो सबळा सिरदार के ॥३५॥
मल पहिलइ रह्या बारणइ जीहा धनुष चढायो मइ लीधि करि तीर के
नील बीजइ रह्या बारणइ, जीहा हाथ गदा लेई साहस धीर के ॥३६॥
अतिबल हाथि त्रिसूल ले, जीहो त्रीजइ बारणइ रह्यो सूरवीर के।
कुमुद रह्या चउथइ बारणइं जीहा पहरि सन्नाह कडि बांधि तूणीर के
हाथि भाला ग्रही मल रह्यो जीहो पांचमइ बारणइ पर्चंडसेन के।
सुमीव छट्ठइ बारणइ, जीहो भालि रह्या हथियार भलेन के ॥३८॥ रा०
भामंडल रह्या सातमइ जीहो बारणइ बिरुद बांची रह्या सूर के।
सुभट रह्या सगळी दिसइ, जीहो अभंग मल अतुळबल प्रबल पहूर के॥

लखमणनी रक्षा करइ, जीहो सहु सावधान रहउ सुविशेष के।
आवि रावण तिहाँ दुखकरइ, वाधव पुत्र वे वाधिया देखि के ।।४०।।
हा कुभकरण हा वांधवा, जीहो इन्द्रजित पुत्र हा मेघनाद के।
मो जीवतइ तुम्हें वाधीया, जीहो धिग मुझनइ पड्यो करइ विपवाद के
धिग विलसित विधाता तणो, जीहो जिण मुझनइं दुख एवडउ दीध के
जउ कदाचित लखमण मुयो, जीहो तुउ करिस्यइं का ए किसु सीध के ।।
वाधव पुत्र वाधे थके, जीहो परमारथ थकी हु वाधीयउ नेटि के।
रावण चिंतातुर थको, जीहो कहइ परमेसर सकट मेटि के ।।४३।। रा०
तिण अवसरि वात सांभली, जीहो सीतापणि करइं दुखु विलाप के।
लखमण सकति सु मारियो, जीहो पृथिवी पड्यो माहरइ पोतइं पाप के
करुणसरि आक्रद करइं, जीहो दीन दयामणी वचन कहइ एम के।
हुं हीन पुण्य अभागिणी, जीहो माहरइं कारज थयो दु ख केम के।४५।
हे लखमण जलनिधितरी, जीहो आवियो तुँ निज वाधव काजि के।
ए अवस्था (हिव) पामीयो, जीहो वांधवनइ कुण करिस्यइं सहाजि के।
है है हुं वालक थकी, जीहो कांइ मारी नहीं फिट करतार के।
जेहना पग थकी मारीयो, जीहो मुझ प्रियु नइ जीव प्राण आधार के ।।
हे देवर तुम्हनइ देवता, जीहो राखिज्यो सुगुरु तणी आसीस के।
सील सतीया तणो राखिज्यो, जीहो जीविज्यो लखमण कोडि वरीस के
इणपरि सीता रोती थकी, जीहो राखी विद्याधरे बाभीस देइ के।
तुज्झ देउर मरिस्यइ नहीं, जीहो वचन अमगल मात न कहेइ के ।।४६।।
छठ्ठा खंडनी पाचमी, जीहो ढाल मोटी कही एणि प्रकार के।
समयसुदर कहइं हु स्युँ करू, जीहो गहन रामायन गहन अधिकार के।
।। सर्वगाथा ३५६ ।।

दूहा १२

सीतायइ धीरज धर्यो, तेहवइ खेचर एक।
राम कटक मइ आवियो, मनि धरी परम विवेक ॥१॥
पणि भामण्डल रोकियो, आवंता दरबारि।
पूछ्यो कहि किम आवियो, ते कहइ सुणि सुविचार ॥२॥
लखमण नइ जउ जीवतो, तुं वांछइ सुममति।
तउ आवा दे मुझ नइ, राम समीपइ झत्ति ॥३॥
जिम हुं तिहां जाई कहुं, साजउ थयण उपाय।
भामण्डल हरषित थकउ, राम पासि ले जाय ॥४॥
विद्याधर इम वीनवइ, राम नइ करी प्रणाम।
चिंता म करउ जीविस्यइ, लखमण ते विधि जाम ॥५॥
आणंद रामनइ ऊपनो, कहइ तुझ वचन प्रमाण।
भद्रक तुझ होइज्यो भलो तुं तउ चतुर सुजाण ॥६॥
कहि तुं किहां थी आवियो, लखमण जीवइ केम।
रामइ इण परि पूछियो विद्याधर कहइ एम ॥७॥
सुरगीत नाम नगर धणी ससिमण्डल सुपवित्र।
अवर राशिप्रभा ऊपनउ, हुं चन्द्रमण्डल पुत्र ॥८॥
गगन मंडल ममतइ थकउ, मइ वसु आपी चइर।
सहसविजय नइ जाणीयो मुझ नइ वैरी वइर ॥९॥
वेढ करता तेण मुझ दीधउ सकति प्रहार।
पड्यो अयोध्या पुर तणइ हुं उद्यान मझार ॥१०॥
दुखियो भरतइ देखियो मुझ नइ पड्यो ससल।
चंदनरस छांटी करी कीधो तुरत निसल्ल ॥ ११ ॥

मइ पूछ्यो श्री भरतनई, कहो ए जल परभाव ।
किम जाण्यो किहा पामीयो, ते कहो सहु प्रस्ताव ॥ १२ ॥
सर्वगाथा ॥ ३७१ ॥

ढाल ६

प्रोहितियारी अथवा सघवीरी

रांम कहइं सुण विद्याधर वात हो, पहिले इण नगरी मइ मरकी हुती
प्रजा पीडामी दिनराति हो, दाय उपाय तिहां लागइ नहीं ॥ १ ॥ रा०
थयो नीरोग द्रोण भूपाल हो, परिवार सेती भरतइ साभल्यो
ते तेडायो ततकाल हो, पूछयो मामा किम रोग गयो टली ॥ २ ॥ रा०
द्रोणमुख राजा कह्यो एम हो, माहरइ बेटी विसलया छइ घरे
तिण गरभ थकी पणि खेम हो, कीधो माता नो रोग गमाडीयो ॥३॥रा०
ते जिनसासन सिणगार हो, मानइ तेहनइ सहुं को जिम देवता ।
ते स्नान करंती नारि हो, लागउ पाणी नो धावि नइ विढुयो ॥४॥रा०
तेहनो ततखिण गयो रोग हो, तिण नगरी मइ वात प्रसिद्ध थई ।
ते जल लेई गया लोग हो, रोग रहित सहु नरनारी थया ॥५॥ रा०
थयो भरतनइ अति अचरज्ज हो, तेहवइ चउनाणी साध समोसस्या ।
गयउ भरत वादण थई सज्ज हो, पूछइ वे करि जोडी साधनइ ॥६॥रा०
कहउ भगवन पूरव जनमि हो, इण कन्यायइ पुण्य किसा किया ।
ए कन्या करेइ धम्मि हो, सुर नर नारी सहु विसमय पड्या ॥७॥ रा०
कहइ न्यानी एम मुणिंद हो, विजय पुण्डरीकणि चक्रनगर भलो ।
तिहा राजा तिहुंणाणंद हो, चक्रवर्ती केरी पदवी भोगवइ ॥ ८ ॥ रा०
तेहनी पुत्री रुववत हो, अनंगसुदरी नामइ अति भली ।
ते सकल कला सोभंत हो, जोवन लहरे जायइ उछटिउ ॥९॥ रा०

ते रमती घर वधान हो, छोठी प्रविष्ट नगरी नइ राखीयइ ।
पुणवसु तेहनउ अभिमान हो सघळो विद्याधर ते कामी घणुं ॥१०॥रा०
तिण अपहरी कुमरी तेह हो चक्रवर्ति सुमटे जुद्ध सघळो कीयो ।
तसु जामरी कीघी देह हो भागउ विमान नइ कन्या भू पडी ॥११॥
ते अटवी रुद्राकार हो पडतां दुखीणी कुमरी अति घणु ।
करइ दुख अनेक प्रकार हो अत्राण असरण तिहां रहइ एकली ॥१२॥
धरइ अरिहंत नउ ध्यान हो सहु संसार असार करी गिणइ ।
तसु सूधू समकित ज्ञान हो तप करइ अट्ठम दसम ते आकरा ॥१३॥
ते भोजन करइ इकवार हो फळ फूल खायइ तप नइ पारणइ ।
इण रहयो रहतां अपार हो, त्रिणसइ वरसां सीम तप कीयो आकरो १४
संलेषण कीघी एम हो अणसण कीधुं चउविहार आकरउ ।
तसु वरस ऊपरि बहु प्रेम हो वळि तिण कीधउ अभिग्रह एहवउ ॥१५॥
सउ हाथ उपरि मुक्त नीम हो, इहांथी अधिकी धरती जाउ नहीं ।
इम दिवस थया छगी सीम हो रहतां चउथे परणामे चढी ॥१६॥ रा०
तेहवइ मेरु प्रतिमा वांदि हो आवतउ छोठी किम विद्याधरइ ।
ते पमणइ एम आणंद हो चालि पिता पासि मुंकुं तुम्ह नइ ॥१७॥रा०
कहइ कन्या ताहरी ठाम हो पुं ना ताहरउ अधिकार इहां नहीं ।
ते पहुता चक्रपुर गाम हो वात कहइ सगळी चक्रवर्ति नइ ॥१८॥ रा०
पुत्री नइ ते गयो पासि हो चक्रवति प्रेम घणउ पुत्री तणो ।
अजगिर आवी गळी तास हो किमही न टळइ ए भवितव्यता ॥१९॥रा०
ते विरहांत देखी बाप हो दुखी नइ आयो नगरी आपणी ।
ते करतउ कोडि विळापहो वइराग आणउ मन मांहि आकरउ ॥२०॥

१—विरह

राय लीयो संयम भार हो, बाइस सहस बेटा सु परिवस्यइ ।
ते जाणती मंत्र अपार हो, पणि तिण अजिगरनइ वास्यो नहीं । २१॥रा०
तसु मेरु अडिग रह्यो मन्न हो, सुख समाधि सघातइं ते मुंई ।
ते धरमणि कन्या धन्न हो, ते देवलोक माहे देवी ते थई ॥२२॥ रा०
ते खेचर पुणवसु नाम हो, कन्या नइ विरह करि दुखियो थयो ।
तिण व्रत लीधो अभिराम हो, तपजप कीधा तिण अति घणा[१]॥२३॥रा०
ते काल करी थयो देव हो, तिहाथी चवी नइ ते लखमण थयो ।
तिहा भोगवि सुख नितमेव हो, ते पणि देवी तिहा कणि थी चवी ॥२४॥
थइ द्रोण नरिंदनी धूय हो, नामइ विसल्या कुमरी विस्तरी ।
तसु पूरव पुन्य प्रभूय हो, तिण न्हवणोदकि रोग टलइ सहू ॥२५॥ रा०
वलि पूछ्यो मुनिवर तेह हो, कहउ किम भगवन मरगी ऊपनी ।
कहइ मुनिवर कारण एह हो, गजपुर वासी विंम्फउ वागियउ ॥२६॥रा०
ते पोठभरीनइ एथि हो, आयो बहु भार करी नइं आक्रम्यो ।
एक भइ सउ पडियो तेथि हो, किणही तसु सार नइं सुद्ध करी नही २७
ते मुयो सहि वहु दुखु हो, करम थोडा किया अकाम निरजरा ।
लह्या वायुकुमार ना सुखु हो, जातीसमरण करि पूरवभव जाणीयो ॥
ते कोप चड्यो ततकाल हो, मरगी उपजावइं सगली गाम मइं ।
पणि सील प्रभाव विसाल हो, रोग विसल्या न्हवणोदकि गया ॥२६॥
ए भरतनइं कह्यो विरतंत हो, साधइ भरतइ पणि मुझ नइ दाखियो ।
मइं ते तुम्ह कह्यो तुरन्त हो, तुम्ह न्हवणोदक आणो तेहनो ॥३०॥ रा०

१—सबला

ते पाणी तणइ प्रभावि हो सहिय सहोदर लखमण जीविस्यइ।
इम जाण्यो भेद ते जीव हो, अति घणउ रामनइं सतोष ऊपनो ॥३१॥
ए छट्ठा खंडनी ढाल हो, छट्ठी पूरी थई वात अछी कही।
ते सुणतां सरस रसाल हो, समयसुंदर कहइ चतुर सुजाण नइ ॥३२॥ रा०

सर्वगाथा ॥४ १॥

दूहा १३

जबु नदादिक मंत्रि सुं, आलोची नइ राम।
भामंडल मुंक्यो तिहां नगर अयोध्या ठाम ॥ १ ॥
भरत देखि नइ ऊठियो, पूछइ कुशल नइ खेम।
ते कहइ कुशल किहां थकी वात थई छइ एम ॥ २ ॥
सीता रावण अपहरी सबलउ थयो समाम।
लखमण नइ लागी सकति दुखियो वरतइ राम ॥ ३ ॥
भरत वात ए सांभली कोप चड्यो ततकाल।
ऊठ्यो अति ऊतावलो, करि माली करवाल ॥ ४ ॥
रे रे किहां रावण तिको ते देखाडो मुज्झ।
तिण मुझ बांधव नइ हण्यो तिण सेती करु जुज्झ ॥ ५ ॥
भामंडल आडउ पड्यो, भरत नै वरिज्यो ताम।
विषम समुद्र खाई विषम, विषमो लंका ठाम ॥ ६ ॥
भरत कहइ तो स्युं करु भामंडल कहइ एम।
आणि विसल्या स्नानजल जीवइ भाई खेम ॥ ७ ॥
भरत कहइ ए केवलो, न्हवणोदक नी वात।
आणा विसल्या ले तुम्हे अउ कोसीम कहात ॥ ८ ॥

मुनिवर पिण भाख्यो हुतो, चीता आव्यो तेह।
लखमण नइं महिला रतन, होम्यइं कन्या एह ॥ ६ ॥
इम कहिनइ मुक्यउ तुरत, द्रोणमेघ नइ दूत।
ते कन्या आपै नहीं, सीह जगाओ सूत ॥१०॥
जुद्ध करण ततपर थयो, गई केकेई ताम।
अति मीठे वचने करी, समझायो हित काम ॥११॥
बहिनि वचन बहु मानियो, मुकी कन्या तेह।
सहस सहेली परिवरी, रूपवंत गुण गेह ॥१२॥
सखर विमान वइसारिनइं, पहुती कीधी तेथि।
संग्रामइं सकतइं हण्यो, लखमण सूतो जेथि ॥१३॥

सर्वगाथा ॥४१६॥

ढाल ७

राग मल्हार

'श्रावण मास सोहामणउ ए चउमासिया' ए गीतनी ढाल।

राम नइं दीधी वधावणी, आई विसल्या एथ्योजी।
हरखित श्रीरामचद हुया, पूछ्यो कहो कहो केथ्यो जी ॥
कहो केथि तेहवइ राजहंसी, परिवरी हसी करी।
ऊतरी नीची मानसरवर, जेम तिम ते कुयरी ॥
चिहुँ दिसइं चामर बीजती नइ, सहेली साथइं घणी।
पदमणी लखमण पासि पहुँती, राम नइ दीधी वधावणी ॥१॥
लखमण नउ अंग फरसीयो, हाथ विसल्या लायोजी।
सकति हीया थी नीसरी, अगनि मुकती जायोजी ॥

ते पाणी तणइ प्रभावि हो सहिय सहोदर लखमण जीविस्यइ ।
इम आण्यो भेद ते जीव हो अति घणउ रामनइं संतोष ऊपनो ॥११॥
ए छट्ठा खंडनी ढाल हो, छट्ठी पूरी थई बास भली कही ।
ते सुणतां सबर रसाल हो समयसुंदर कहइ चतुर सुजाण नइ ॥१२॥ रा०
सर्वगाथा ॥४ १॥

दूहा १३

संबु नदादिक मन्त्रि सुं, आलोची नइ राम ।
भामंडल मुंक्यो तिहां नगर अयोध्या ठाम ॥ १ ॥
भरत देखि नइ ऊठियो, पूछइ कुशल नइ खेम ।
ते कहइ कुशल किहां थकी बात थई छइ एम ॥ २ ॥
सीता रावण अपहरी सबलउ थयो संग्राम ।
लखमण नइ लागी सकति दुखियो वरतइ राम ॥ ३ ॥
भरत बात ए सांभली, कोप चढ्यो ततकाल ।
ऊठ्यो अति उतावलो, करि झाली करवाल ॥ ४ ॥
रे रे किहां रावण तिको ते देखाडो मुज्झ ।
जिण मुझ बांधव नइ हण्यो तिण सेती करुं झुज्झ ॥ ५ ॥
भामंडल आडइ पड़ी, भरत नै वरिज्यो ताम ।
विषम समुद्र खाई विषम, विषमो लंका ठाम ॥ ६ ॥
भरत कहइ तो स्युं करुं भामंडल कहइ एम ।
आणि विसल्या स्नानजल जीवइ भाई खेम ॥ ७ ॥
भरत कहइ ए कउतको, न्हवणोदक नी बात ।
आवा विसल्या छे तुम्हे अख ओलीम कहात ॥ ८ ॥

मुनिवर पिण भाख्यो हुतो, चीता आव्यो तेह ।
लखमण नइं महिला रतन, होस्यइं कन्या एह ॥ ६ ॥
इम कहिनइ मुक्यउ तुरत, द्रोणमेघ नइ दूत ।
ते कन्या आपै नहीं, सीह जगाओ सूत ॥१०॥
जुद्ध करण ततपर थयो, गई केकेई ताम ।
अति मीठे वचने करी, समझायो हित काम ॥११॥
वहिनि वचन बहु मानियो, मुकी कन्या तेह ।
सहस सहेली परिवरी, रूपवंत गुण गेह ॥१२॥
सखर विमान बइसारिनइं, पहुती कीधी तेथि ।
संग्रामइं सकतइं हण्यो, लखमण सूतो जेथि ॥१३॥

सर्वगाथा ॥४१६॥

ढाल ७

राग मल्हार

'श्रावण मास सोहामणउ ए चउमासिया' ए गीतनी ढाल ।

राम नइं दीधी वधावणी, आई विसल्या एथ्योजी ।
हरखित श्रीरामचद हुया, पूछ्यो कहो कहो केथ्यो जी ॥
कहो केथि तेहवइ राजहंसी, परिवरी हसी करी ।
ऊतरी नीची मानसरवर, जेम तिम ते कुयरी ॥
चिहुँ दिसइं चामर वीजती नइ, सहेली साथइं घणी ।
पदमणी लखमण पासि पहुँती, राम नइ दीधी वधावणी ॥१॥
लखमण नउ अंग फरसीयो, हाथ विसल्या लायोजी ।
सकति हीया थी नीसरी, अगनि मुकती जायोजी ॥

मुकति आयइ अगनि झाळा हनुमतइ काठी मही।
कामिनी रूपइ कहइ सुणि तुं दोस माहरउ को नही॥
तुं मुंकि मुझ नइ धाव संभळि मई सहु को संतापीयो।
हुं सकति रूप अमोघ विजया लखमणनी अंग फरसियो॥३॥

अष्टापद नाटक कीयो रांवण आंणी रंगोजी।
नृत्य करइ मंदोदरी, भगवंत भगति अभंगोजी॥
भगवंत भगति अभंग करतां वीण तांत त्रूटी गई।
तिण मुझा भी नस काढि सांधी, भगति भगवंत नी थई॥
ए सकती दीधी नागरायइ रावण ऊपरि रंजीयो।
ए आज पहिली किण न जीती अष्टापद नाटक कीयो॥४॥

आज विसल्या मुझ तणो, जीवउ तेज प्रतापोजी।
पूरब भव तप आकरा इण कन्या कीया आपोजी॥
कीया आकरा तप पणि हुं हिव जाउ छु मुझ छोडि दे।
साधुरूप थमि अपराध माहरउ थाउ खामी जोडि दे॥
इम खामि दीधी सकति मइ हिव आगळा संबन्ध सुणो।
कीधो राम मइ परणास कन्या आज विसल्या मुझ तणो॥५॥

लखमण पासि बइठी जई आदर दीधो रामोजी।
कर सुं लखमण फरसीयो, सुरवदन अभिरामोजी॥
अभिराम लखमण थयो पहठो सावधान थयो तदा।
पूछियो कहो ए किरतांत कुण ए कहइ राम सुणो मुदा।
रावणइ सकति प्रहार मेंल्या तुं पड्यो अचेतन थई।
इण फरसि तुझ नइ दीधो जीवित पीडा सहु दूरइ गई॥६॥

मंदिर प्रमुख सुभट मिल्या, प्रगट्या परम प्रमोदोजी ।
लखमण कुमर निपेधिया, कीजइ किस्सा विनोदोजी ॥
कीजीयइ झूठ विनोद केहा, जीवतइ रावण अरी ।
कहइं राम रावण हणयइं सरिखो, गुजतइ तइं केसरी ॥
श्रीराम वचनइ सुभट साजा, विसल्या कीधा चली ।
कन्या ते लखमण नइ प्रणावी, मदिर प्रमुख सुभटा मिली ॥६॥

ए विरतात सुण्यो सहू, रावण सेवक पासोजी ।
उडउ आलोच माडियो, महुँता सेती विमासोजी ॥
सुविमासि नइं मिरगाक मंत्री, करइ एहवी वीनती ।
तु रूसि भावइं तुसि सामी, कहिसुं तुझ नइ हित मती ॥
ए राम लखमण सबल दीखइं, एइनइ लसकर वहू ।
जिण तुज्झ बांधव पुत्र वाध्या, ए विरतात सुण्यो सहू ॥७॥

सकती विद्या नाखी हणी, तेहनइ किम पहुचायोजी ।
सीता पाछी सुपियइ, तउ सहु जंजाल जायोजी ॥
जजाल जायइं मोल थायइं, तो भलो हुयइ सर्व नो ।
तेहनइ आगली भाजीयइ तउ, किसो वहिवो गर्व नो ॥
लंकेस कहइ मइ वात मानी, पणि सीतानइ मेलहणी ।
अनइ मेल करिस्यु राम सेती, सकति विद्या नी हणी ॥८॥

इम आलोची मुकियो, दूत एक परधानोजी ।
करि प्रणाम श्रीराम नइं, वीनति करइं वहुमानोजी ॥
वहुमान रावण एम वोलइ, मेलि करि पाछा वलो ।
रण थकी मनुष्य संहार थास्यइ, पाप करम थकी टलो ॥

मुकति घायइ धगनि झाळा हनुमतइ काठी महो ।
कामिनी रूपइ कहइ सुणि तुं दोस माहरउ को नहीं ॥
तुं मुंकि मुझ नइ थाव मांमकि मइ सहु को सतापीयो ।
हूं सकति रूप धमोघ विजया लखमणनो अंग फरसियो ॥२॥

अष्टापद नाटक कीयो रावण आणी रंगोजी ।
नृत्य करइ मंदोदरी, भगवंत भगति अभंगोजी ॥
भगवंत भगति अभग करतां, वीण तांत त्रूटी गई ।
तिण भुजा थी नस काढि सांधी, भगति भगवंत नी थई ॥
ए सकती दीधी नागराजा रावण ऊपरि रंजीयो ।
ए आज पहिली किण न जीती अष्टापद नाटक कीयो ॥३॥

आज विसल्या मुझ तणो जीतइ तेज प्रतापोजी ।
पूरव भव तप आकरा इण कन्या कीया आपोजी ॥
कीया आकरा तप पणि हूं हिव जाउ छु मुझ छोडि दे ।
सापुरुष खमि अपराध माहरउ वात सुगती छाडि दे ॥
इम छोडि दीधी सकति नइ हिव आगला संबन्ध सुणो ।
कीयो राम नइ परणाम कन्या आज विसल्या मुझ तणो ॥४॥

लखमण पासि पहुती गई आदर दीधो रामोजी ।
कर सुं लखमण फरसीयो, सुरचंदन अभिरामोजी ॥
अभिराम लखमण थयो षठो सावधान थया तदा ।
पूछियो कहा ए विरतांत कुण ए कहइ राम सुणो मुदा ।
रावणइ सकति प्रहार मूक्या तुं पड्या अचेतन थई ।
इण कुंवरि तुझ नइ दीयो जीवित पीडा सहु दूरइ गई ॥५॥

सउ पुत्र नो पणि नास थासइ, कहइ किसी पर कीजीयइ।
सुरंग देई सुत आणीजै, तउ पणि कुजस लहीजीयइ॥
बहुरूपिणी साधिस्युं विद्या, करिसुं तसु अरदास ए।
हु देवता नइं अजेय थास्यु, रावण एम विमास ए॥१३॥

दुरजय वयरी जीपि नइं, सुत आंणी निज गेहोजी।
सीता सु सुख भोगवु, मनि धरी अधिक सनेहोजी॥
मनि धरी अधिक सनेह सबलो, साहिबी लका तणी।
सहुपुत्र मित्र कलत्र सेती, करिसि सुख साता भणी॥
इम चिंतवी नइं सातिनाथ नो देहरो उद्दोपिनइ।
चंद्रूया तोरण तुरत बाध्या, दुरजय वयरी जीपिनइं॥१४॥

फूलहरो गुँथावियो, पूजा सतर प्रकारोजी।
वारइं मुनिसुव्रत तणइ, जिन मन्दिर अधिकारोजी॥
जिन मंदिरे मंडित करावी, धरा देस प्रदेस ए।
लंका तणे देहरइ दीधउ मंदोदरि आदेस ए॥
सा करइ नाटक स्नात्रपूजा, महुच्छव मंडावियो।
दिन आठ सीम करइ अठाई, फूलहरो गुँथावियो॥१५॥

वाजित्र तूर वजाडिया, महिमा मडी सारोजी।
नंदीसर जिमि देवता, करइ अठाई उदारोजी॥
उदार निज गृह पासि शांति नइ, देहरउ पइंसइ मुदा।
करि स्नान मज्जन लंक सामी, करि प्रणाम मन मइ तदा॥
कुट्टिम तलइं लंकेस वइठो, भगति भाव दिखाडिया।
देहरो फटिक रतन तणउ ते, वाजित्र तूर वजाडिया॥१६॥

माहरो महातम अधिक आणइ, इन्द्र जेण हराविय।
मद करइ राम समान मुझ सुँ, इम आठोची मुकियउ ॥९॥

पंचमुख पणि गिरवर रहते, गंजी न सकइ कोयोजी।
तउ दसमुख किम गंजियइ राम विमासी जोयोजी॥
विमास नइ हुँ मुंकि माहरा सुभट पुत्र सहोदरा।
तु सौसहि सीता माहरइ घरि, मेल करि सुमनोहरा॥
सकाघणा दो माग देस्यु, दूत वचन म सरदह्यो।
राम कह्यो ते सुणिज्यो सहू को, पंचमुख पणि गिरवर रह्यो ॥१०॥

राम सुं काम कोई नहीं अन्य रमणि नहि कामोजी।
तुम पुत्रादिक छोडिस्यु, घइ सीता कहइ रामोजी॥
कहइ राम तहवइ दूत बाल्या म करि राम सू गर्व ए।
तुं ऋद्ध करतो सहिय हारिसि, राज सीता सर्व ए।
ए दूत ना दुरवचन सांमळि भामंडल कोप्यो सही।
काढियो करग प्रहार देवा राम सुं काम कोई नहीं ॥११॥

लखमण आडउ आवियो दूत न मारइ कोयो जी।
दूत निर्भ्रछी नासीयो छे गयो मांम गमायो जी॥
गयो दूत मांम गमाइ सगळी वात रांवण नइ कही।
जीवतउ राम कदे न मुकइ सीतानइ आण सही॥
ए तत्त परमारथ कह्यो मइ बुद्धिस्यइ अति ताणीयो।
ताहरइ आपइ चिन्त ते करि लखमण आडो आवियो ॥१२॥

रांवण मन विमासए, पजि मन माहि उदासोजी।
अह बयरी हुं जीपिस्यु तइ पिण पुत्र नो नासोजी॥

सउ पुत्र नो पणि नास थासइ, कहइ किसी पर कीजीयइ।
सुरंग देई सुत आणीजै, तउ पणि कुजस लहीजीयइ॥
वहुरूपिणी साधिस्युं विद्या, करिसुं तसु अरदास ए।
हु देवता नइं अजेय थास्यु, रावण एम विमास ए॥१३॥

दुरजय वयरी जीपि नइं, सुत आणी निज गेहोजी।
सीता सु सुख भोगवु, मनि धरी अधिक सनेहोजी॥
मनि धरी अधिक सनेह सवलो, साहिबी लका तणी।
सहुपुत्र मित्र कलत्र सेती, करिसि सुख साता भणी॥
इम चिंतवी नइं सातिनाथ नो देहरो उद्दीपिनइ।
चंद्रूया तोरण तुरत वाध्या, दुरजय वयरी जीपिनइं॥१४॥

फूलहरो गुँथावियो, पूजा सतर प्रकारोजी।
वारइं मुनिसुव्रत तणइ, जिन मन्दिर अधिकारोजी॥
जिन मंदिरे मंडित करावी, धरा देस प्रदेस ए।
लंका तणे देहरइ दीधउ मंदोदरि आदेस ए॥
सा करइ नाटक स्नात्रपूजा, महुच्छव मंडावियो।
दिन आठ सीम करइ अठाई, फूलहरो गुँथावियो॥१५॥

वाजित्र तूर वजाडिया, महिमा मंडी सारोजी।
नंदीसर जिमि देवता, करइ अठाई उदारोजी॥
उदार निज गृह पासि शाति नइ, देहरइ पइंसइ मुदा।
करि स्नान मज्जन लंक सामी, करि प्रणाम मन मइ तदा॥
कुट्टिम तलइं लंकेस वइठो, भगति भाव दिखाडिया।
देहरो फटिक रतन तणउ ते, वाजित्र तूर वजाडिया॥१६॥

माहरो महाबल अधिक आणउ, इन्द्र जेण हराविअउ।
मस करइ राम सग्राम मुझ सुँ, इम आलोची मुँकियउ ॥९॥

पंचमुख पणि गिरवर रहते गंजी न सकइ कोयोजी।
तउ दसमुख किम गंजियइ, राम विमासी जोयोजी ॥
विमास नइ सुँ मुँकि माहरा सुभट पुत्र सहोदरा।
तु सांसहि सीता माहरइ घरि, मेल करि सुमनोहरा ॥
छकावणा दो भाग देस्यु, दूत वचन न भरवसो।
राम कह्यो ते सुणिज्यो सहू को, पंचमुख पणि गिरवर रह्यो ॥१०॥

राज सुँ काम कोई नही अन्य रमणि नहि कामोजी।
तुम्ह पुत्रादिक छोडिसु, घइ सीता कहइ रामोजी ॥
कहइ राम तेहवइ दूत बोल्यो म करि राम तू गर्व ए।
तुं तुच्छ करतो सहिय हारिसि, राज सीता सर्व ए।
ए दूत ना दुरवचन सांभलि, भामण्डल कोप्यो सही।
काढियो खड्ग प्रहार देवा राज सुँ काम कोई नहीं ॥११॥

लखमण आवड आवियो, दूत न मारइ कोयो जी।
दूत निर्भ्रछी कासीयो, छे गयो सांम गमाया जी ॥
गयो दूत सांम गमाइ सगळी बात रांवण नइ कही।
जीवतां राम कदे न मु कइ, सीतानइ जाण सही ॥
ए तत्त्व परमारथ कह्यो मइ बुद्धिस्यइ अति ताणीयो।
ताहरइ आवइ चिन्त ते करि लखमण आडो आवियो ॥१२॥

रांवण एम विमासए, पणि मन मांहि उदासोजी।
जउ वयरी हुँ जीपिसु तउ पिण पुत्र नो नासोजी ॥

विचित्र सेना सजी सबली, गया देखइ लोक ए।
मुदमुदित क्रीडा करइ सगला, नहीं तिल पणि सोक ए॥
अहो पुत्र भाई कुंभकरणादिक सुभट सहू बाँधिया।
तउपणि न कोई करइ चिंता, सुग्रीवादिक मुँकिया ॥२०॥
विभीषण सुत सुभीषण कहइ, वडर विना सहु कोयो जी।
हतप्रहत पर जात करउ, जिम कोलाहल होयोजी॥
करउ सबल कोलाहल नगर मइ, लंकागढ भांजो तुम्हें।
आवास मंदिर महुल ढावो, हित वचन कहु छु अम्हे॥
सहु मिली सुभट तिम हीज कीधो, एह उपद्रव कुण सहइ।
समकाल सगलइ सोर ऊठ्या, विभीषण सुत सुभीषण कहइ ॥२१॥
राखि राखि लंका धणी, लोक करइ पुकारोजी।
दउडो दउडो[1] वाहरू, चडि आवउ असवारोजी॥
असवार आवो करउ रक्षा, वानरे गढ भेलियो।
ए नगर मारि विध्वंस नाख्यो, धूडि धाँणी मेलियो॥
ऊठियो रांवण बुब सांभलि, जोध जंग करण भणी।
वारियो मंदोदरी नारि, राखि राखि लंका धणी ॥२२॥
साँति भुवन सानिधिकरा, देवता ऊठ्या वेगोजी।
सबल कोलाहल खलभली, देखी लोक उदेगोजी॥
उदेगि देखी देवताए, विभीषण वानर भडा।
खिण एक माहे मारि भागा, सुर आगइ किम रहइ खडा॥
देवता बीजा देहराना, ऊठीया क्रोधातुरा।
करइं जुद्ध सातिना देव सेती, साति भुवन सानिधिकरा ॥२३॥

१—धाउ धाउ

नगर ढंढेरो फेरियो, वलि वरताषी अमारोजी।
आविल तप जप आखडी, हुकम कीयो सहु नारीजी॥
सहु नारि मंदोदरि नगरी मांहि धरम करावए।
दिन आठ सीम छगी अहिंसा[1], सील वरत पलावए॥
वलि कहइ जे कोइ पाप करिस्यइ, तेह कुँ चउ रोरिइ।
जाणिस्यो गूहरिस्यइ नहीं को, नगर ढंढेरो फेरइ॥१७॥

लोक सको लंका तणो लागो करिवा धर्म्मोजी।
लोक भणी लाधो वातिरे, रावण विद्या नो मर्मोजी॥
रावण विद्या नो मम लाधो, जब विद्या ए सीझिस्यइ।
तो देवता पिण पहुचइ का सही संग्राम न जीपिस्यइ॥
ते मणी लंका मांहि जाई मइ, त्रास उपजावो घणो।
बहु रूपिणी विद्या न सीझइ, लोक सको लंका तणइ॥१८॥

वलिय विभीषण इम कहइ अवसर चारू एहोजी।
देहरउ श्रीशांतिनाथ नइ बइठउ रावण तेहोजी॥
बइठउ ते रावण जाइ झालो पछइ को न सकइ मही।
श्रीराम कहइ तुं सुणि विभीषण वात कहइ साची सही॥
पणि शुद्ध कीधां विण न मारु वलि विशेषइ देहरई।
पणि करिसि कोइ उपाय बीजो वलिय विभीषण इम कहइ॥१९॥

सुग्रीवादिक मुँकिया रावण क्षोभ निमित्तो जी।
लंका नगर मांहि गया सेना सबी विचित्रो जी।

१—दिन आठ लगइ पहर्बु करावो २—मेहदातिक

वहुरूपणी विद्या थई तउ, तेज एहनो कुण सहइ ।
ते भणी करिस्यइ विघन एहनइ, न्याय धरम मांहि जे रहइं ।।२७।।
देव भणइं लखमण भणी, प्रजालोक नइं मूकोजी ।
बीजउ जे रुचइ ते करइं, न्याय धरम थी म चूकोजी ।।
म चूक धरम थकी करउ सहु, इम कही गया सुरवरा ।
हिव रामचंद उपाय करिस्यइं, मुंकिस्यइं सेवक खरा ।।
ए खंड छट्ठो थयो पूरो, सात ढाल सोहावणी ।
कहइ समयसुंदर सील पालो, देव भणइं लखमण भणी ।।२८।।

सर्वगाथा ।।४४४।।

इति श्री सीताराम प्रबंधे रांम रावण युद्ध, विशल्या कन्या समुद्धृत, लखमण शक्ति, रांवण समाधारित बहु रूपिणी विद्यादि वर्णनो नाम षष्ठ. खण्ड समाप्त :

खण्ड ७

दूहा २२

सात क्षेत्र मिलइ सामठा, तउ सगला सुख होइ ।
तिण कारणि कहुं सातमो, खंड सुणो सहु कोय ।।१।।
हुं नहि थातउ आखतो, जोडतो ए जोड ।
रामायण मोटा हुवइं, सुणिज्यो आलस छोडि ।।२।।
अंगद प्रमुख कुमर घणा, हय गय रथ आरूढ ।
रावण नइ खोभाविवा, मूक्या राम अमूढ ।।३।।
पइठा लंका मांहि ते, करता कोडि किलेस ।
निरख्यो रावण भुवन तिहां, अति दुरगम परवेस ।। ४ ।।

सासिनो देव हरावीयो, नासि गयो सतकालोजी ।
वानर बलि गढ मोसिवा, मूका करइ हक चालोजी ॥
हक चाल वानर तणो देवता कोइ आविया ।
पूणभद्रनइ माणिभद्र नामइ, रावण दिस ते भाविया ॥
वानर स्यणा मेलिकारे वामाणि मइ तव बोलीयो ।
रे सुणो वानर वात माहरी सासिनउ देव हरावीयो ॥२४॥

रावण ध्यान धरम धरी बइठउ देहरा मांहोजी ।
इन्द्र साखात आवइ इहां, ते पणि न सकइ साहोजी ॥
कोइ साहि न सकइ कदे तेहनइ, क्षोभावइ पणि को नहीं
वामरे रावण पासि जाता कधि नइ राखवा सही ॥
पछि युद्ध करतां देवते पिण गया नासी डर करी ।
पणि पायरे वानर पछाड्या रावण ध्यान धरम धरी ॥२५॥

देव भणइ रावण भणी, दिइ ओलंभउ पछोजी ।
शांति जिणेसर देहरई रावण बइठउ तेहोजी ॥
बइठउ दसानन देहरा मई नगर क्षेम विध्वंसीयो ।
दसरथ तणा अंगज कहीजड न्याय धरम रहीजोजी ॥
मन पीड करतो वानरा नइ तुम्हे राखो जग धणी ।
भभासण कहइ सुणि देवता तुं देव कहइ रावण भणी ॥२६॥
न्याय धरम मांहि मैं रहइ तेहनउ कीजइ पखोजी ।
तुं विपरीत पयो कहइ ते नहि सुगत प्रतखोजी ॥
ते नहीं सुगत प्रतख तुं दिस रहि मध्यस्थ पणइ सदा ।
महाभाग कोप तुं मुंकि मनथी वात मुझ सांभलि मुदा ॥

वहुरूपणी विद्या थई तउ, तेज एहनो कुण सहइ।
ते भणी करिस्यइ विघन एहनइ, न्याय धरम माँहि जे रहइं ॥२७॥
देव भणइं लखमण भणी, प्रजालोक नइं मूकोजी।
वीजउ जे रुचइ ते करइं, न्याय धरम थी म चूकोजी॥
म चूक धरम थकी करउ सहु, इम कही गया सुरवरा।
हिव रामचंद उपाय करिस्यइं, मुँकिस्यइं सेवक खरा॥
ए खंड छट्ठो थयो पूरो, सात ढाल सोहावणी।
कहइ समयसुंदर सील पालो, देव भणइं लखमण भणी ॥२८॥

सर्वगाथा ॥४४४॥

इति श्री सीताराम प्रबंधे राम रावण युद्ध, विमल्या कन्या समुद्धृत, लखमण शक्ति, रावण समाधारित बहु रूपिणी विद्यादि वर्णनों नाम षष्ठ. खण्ड समाप्त :

खण्ड ७

दूहा २२

सात क्षेत्र मिलइ सामठा, तउ सगला सुख होइ।
तिण कारणि कहुँ सातमो, खंड सुणो सहु कोय ॥१॥
हुँ नहि थातउ आखतो, जोडतो ए जोड।
रामायण मोटा हुवइं, सुणिज्यो आलस छोडि ॥२॥
अंगद प्रमुख कुमर घणा, हय गय रथ आरुढ।
रावण नइ खोभाविवा, मूक्या राम अमूढ ॥३॥
पइठा लंका माहि ते, करता कोडि किलेस।
निरख्यो रावण भुवन तिहां, अति दुरगम परवेस ॥ ४ ॥

तिहां अंत्र पुरुष काळीजता, मोहीता चित्राम।
मरकत मणि यासे करी, रचीता ठाम ठाम ॥ ६ ॥
देखइ एक फटिक घरइ, तरुणी सुंदर देह।
तिस भूका पूछइ किहां, शांतिनाथ नो गेह॥ ६ ॥
ते उत्तर पाछउ न थइ मूरखी कुमर करण।
तितरइ देखी लेपमय काम्या परस्परेण ॥ ७ ॥
आगइ आता पकना पीठो देवो साद।
पूछयो तिण देखाडियो, शांतिनाथ प्रासाद ॥ ८ ॥
सेना बाहिर मुंकिनइ कुमर ले अंगद नाम।
देहरा माहे पइसि नइ कीघो जिन परणाम ॥ ६ ॥
रावणनई निभ्र छि नइ, ढीमइ सबळ बळभ।
रे सीता नइ अपहरी प स्यइ मांड्यो दम ॥ १० ॥
जब तुं त्रिभुवन माथ नइ आगइ रह्यो न हुंत।
तउ रे अधम करत हुं यम पणि ते न करंत ॥ ११ ॥
इम अनेक निभ्र छना, कीधी तेण कुमार।
बांधी पाछे बांहियां अंतेउरी उदार ॥ १२ ॥
आभ्रण ऊतारी लीया, वस्त्र लीया उतारि।
बांधी चोटी सुं सहू कामिनी करइ पोकार ॥ १३ ॥
रे पापी तइ छळ करी अपहरी सीता नारी।
हुं तुम्ह नारी देखता छे जाउ छुं वारि ॥ १४ ॥
जब तुम्ह माहे सकति छइ तउ तुं आवइ आवि।
कस म्हाकि मंदोदरी मिसरथ इम बोलावि ॥ १५ ॥

वालि कहइं रावण देखि तु, तुझ वाल्हेसर नारि।
हुं वानर पति थाइसु, धिगधिग तुझ अवतार ॥ १६ ॥
हीयो हाथ सु ढाकती, खोस्या आभ्रणचीर।
आंखि आंसू नाखती, देखि तु नारि दिलगीर ॥ १७ ॥
करउं विलाप मंदोदरी, हे वाल्हेसर सार।
वानर जायइं अपहरी, करि वाहर भरतार ॥ १८ ॥
लंका गढनो तु धणी, इवडी ताहरी रिद्धि।
वलि माडो तइं साधना, केही थास्यइ सिद्धि ॥१६॥
का वइठो तु मौन करि, ऊठि - ऊठि प्रीउ वेगि।
छेदि सीस वानरतणो, जेम मुझ टलइ उद्वेग ॥ २० ॥
इम विलाप मन्दोदरी, कीधा अनेक प्रकार।
रांवण सुणि डोल्यो नहीं, ध्यान थी एक लिगार ॥२१॥
अडिग रह्यो रावण इहा, जाणे मेरु गिरिंद।
साहसीक सिरोमणी, रतनाश्रव कुलचन्द ॥ २२ ॥

ढाल ९

॥ राग रामगिरी ॥

'छांनो नइ छिपी नइ वाल्हो किहा रहिउ' एगीतनी ढाल।

विद्या नइं सीधीरे वहुरूपिणी, रावण पुण्य विशेपिरे।
सबल रांवण साहस करी, मेरु अडिग मन देखिरे ॥१॥ वि० ॥
प्रगट थई परमेसरी, कहइं करजोडी एमरे।
दसमुख द्यइ मुझ आगन्या, तु कहइ ते करुं तेमरे ॥ २ ॥ वि० ॥

विहां मंत्र पुरुष मलीजता, माहीता तिण्ठाम।
मरकत मणि थाभे करी, करीया टाम ठाम ॥ ५ ॥
देखइ एक फटिक घरउ, तरणी सुंदर देह।
बिस भूला पूछइ किहां, शांतिनाथ नो गेह॥ ६ ॥
ते ऊपर पाखड न थइ, मरखी कुमर करेण।
विलरइ पेखी लेपमय आव्या परस्परेण ॥ ७ ॥
आगइ आता एकना दीठो देतो माह।
पूछयो तिण दखाडियो, शांतिनाथ प्रासाद ॥ ८ ॥
सेना बाहिर मुंकिनइ, कुमर जे अगद नाम।
देहरा माह पइसि नइ कीधो जिन परणाम ॥ ९ ॥
रावणनइं निभ्र छि नइ, दीधउ सबल उलम।
रे सीता नइ अपहरी, प स्यउ मांड्यो दम ॥ १० ॥
जउ तुं त्रिभुवन नाथ नइ आगइ रह्यो न हुँत।
तउ रे अधम करंत हुं यम पणि ते न करंत ॥ ११ ॥
इम अनेक निभ्र छना, कीधी तेण कुमार।
बांधी पाछे बांहियां मंदोदरी चदार ॥ १२ ॥
आभ्रण उतारी लीया, वस्त्र लीया उतारि।
बांधी चोटी सुं सहू कामिनी करइ पोकार ॥ १३ ॥
रे पापी तइ छल करी अपहरी सीता मारी।
हुं तुम नारी देखता ले जाउ छुं वारि॥ १४ ॥
जउ तुम माहे सकति छइ तउ तुं आवउ धावि।
केस झालि मंदोदरी निसर्यउ इम बोलावि ॥ १५ ॥

सुणि रावण सीता भणइं, मुझ ऊपरितु ताहरुं सनेह रे।
थोडोई पणि जो धरइ, जाणि परमारथ एह रे ॥१४॥वि०॥
लखमण राम भामंडला, जा जीविस्यइ ता सीम रे।
हुपणि जीविसि ता लगी, एहवो जाणिजो नीम रे ॥१५॥वि०॥
इम कहती धरणो ढली, ए ए मोहनी कर्म रे।
मरण समान सीता थई, रावण जाण्यो ते मर्म रे ॥१६॥वि०॥
अवसर देखिनइं इम कहइं, हा हा मइं कीधउ अन्याय रे।
निरमल कुल मइ कलंकियो, कुमति ऊपनी मुझ कांइ रे ॥१७॥वि०॥
अत्यन्त राग मगन थकां, हा हा विछोह्या सीता राम रे।
भाई विभीषण दूहव्यो, मइ कीधो भुण्डो काम रे ॥१८॥वि०॥
जउ हुं सीतानइ पाछीसुपस्यु, तऊ लोक जाणिस्यइ आम रे।
देखो लंकापति बीहतइं, ए कीधो असमरथ काम रे ॥१९॥वि०॥
हिव मुझ इम जुगतो अछइ, संग्राम करू एक बार रे।
लखमण रांम मुँकीकरी, बीजा नो करूं संहार रे ॥२०॥वि०॥
इम मन मइ अटकल करी, उठ्यो संग्राम निमित्त रे।
तिणि समइं तिहा उपद्रव हुवा, भूकंपा दिग्दाह नित्त रे ॥२१॥वि०॥
आडउ कालउ साप ऊतर्यो, चालतां पड्यो सिर छत्र रे।
सेठ सेनापति मंत्रवी, वारीजतो यत्र तत्र रे ॥ २२ ॥ वि० ॥
नगरी लंका थकी नीसर्यो, सजि संग्रामनो साज रे।
वहुरूपिणि इन्द्ररथ सज्यो, तिहां बइठो जाणे सुरराज रे॥२३॥वि०
आगइ हजार हाथी कीया, पांच पूरे हथियार रे।
माथइ मुगट रतने जड्यो, कांने कुंडल अति सार रे ॥२४॥वि०॥

इम कहिनइ रे गई देवता आपणइ ठाम आणद रे।
अठार सहस अन्तेवरी, तेहवइ आणावइ ते दन्द रे॥ ३॥ वि०॥
चरण नमी नइ करइ वीनती, करजी मुगत पोकार रे।
अम्हांनइ विगोइ इण वानरे, तुम सिर थकां भरतार रे॥ ४॥ वि०॥
कहइ रे रावण कोपइ चड्यो तुम्हे करउ लील विलास रे।
नाम फेडुं रे वांनर तणो सउ मुझ देज्यो साबासि रे॥ ५॥ वि०॥
नीसरयौ शांति ना चैत्य थी, स्नान मज्जन करि सार रे।
पूजा कीधी वीतरागनी, आभ्रण पहिरया उदार रे॥ ६॥ वि०॥
भोजन कीधा रावण अति भला सज्जन संतोष्या सहु कोइ रे।
आनंद विनोद करतुं थकुं सुमट साथिइ थया सोइ रे॥७॥ वि०॥
विद्यानी परीक्षा करिवा गयो रावण क्रीडा उद्यान रे।
हय गय रथसुं परिवरयउ मनि धरतउ अभिमान रे॥ ८॥ वि॥
रावण रूप कीधा घणां महियल सुं मारइ हाथि रे।
पवन व्याम माहे गयो सेवक कीधा सहु साथि रे॥ ९॥ वि०॥
कटक देखी रावणतणो मीता चीहती चितवइ एम रे।
इन्द्र पणि जीपी न सकइ एहनइ, मुझ प्रिय जीपिस्यइ केम रे॥१०॥ वि०॥
छूटीसि किम राक्षस थकी सबल चिंता करइ सीत रे।
तिण अवसरि रावण भणइ सुणि सुंदरि सुविदीत रे॥११॥ वि०॥
राग मगन थई आगी इहां पणि न सक्यो करी भोग रे।
व्रत भंग थकी बीहतइ थकइ वलि विरुयो कहि लोग रे॥१२॥ वि०॥
पणि हिव भोगविस्युं सही कारणि व्रत भंग जाणि रे।
पुष्पविमांन बइठी थकी तुं पणि मन सुख माणि रे॥१३॥ वि॥

सुणि रावण सीता भणइं, मुझ ऊपरितु ताहरुं सनेह रे।
थोडोई पणि जो धरइ, जाणि परमारथ एह रे ॥१४॥वि०॥
लखमण राम भामंडला, जां जीविस्यइ ता सीम रे।
हुपणि जीविसि ता लगी, एहवो जाणिजो नीम रे ॥१५॥वि०॥
इम कहती धरणो ढली, ए ए मोहनी कर्म रे।
मरण समान सीता थई, रावण जाण्यो ते मर्म रे ॥१६॥वि०॥
अवसर देखिनइं इम कहइं, हा हा मइं कीधउ अन्याय रे।
निरमल कुल मइ कलंकियो, कुमति ऊपनी मुझ काइ रे ॥१७॥वि०॥
अत्यन्त राग मगन थका, हा हा विछोह्या सीता राम रे।
भाई विभीषण दूहव्यो, मइ कीधो भुण्डो काम रे ॥१८॥वि०॥
जउ हुं सीतानइ पाछीसुपस्यु, तऊ लोक जाणिस्यइ आम रे।
देखो लङ्कापति बीहतइं, ए कीधो असमरथ काम रे ॥१९॥वि०॥
हिव मुझ इम जुगतो अछइ, संग्राम करूं एक वार रे।
लखमण राम मुँकीकरी, बीजा नो करूं संहार रे ॥२०॥वि०॥
इम मन मइ अटकल करी, उठ्यो संग्राम निमित्त रे।
तिणि समइं तिहां उपद्रव हुवा, भूकंपा दिग्दाह नित्त रे ॥२१॥वि०॥
आडउ कालउ साप ऊतर्यो, चालतां पड्यो सिर छत्र रे।
सेठ सेनापति मंत्रवी, वारीजतो यत्र तत्र रे ॥ २२ ॥ वि० ॥
नगरी लंका थकी नीसर्यो, सजि संग्रामनो साज रे।
वहुरूपिणि इन्द्ररथ सज्यो, तिहा बइठो जाणे सुरराज रे॥२३॥वि०
आगइ हजार हाथी कीया, पांच पूरे हथियार रे।
माथइ मुगट रतने जड्यो, कांने कुंडल अति सार रे ॥२४॥वि०॥

मेघाडम्बर सिर धर्यो चामर वीजतो सार रे ॥
वाजित्र बाजइ अति घणा, भेदी मदन भंकार रे ॥२५॥वि०॥

आप समा विद्याधरा, सुभट सहसदस साथि रे ।
इन्द्र तणी परि सोहतो रावण हथियार हाथि रे ॥२६॥वि०॥

एहवइ आडम्बर रावण आवतो, दीठो दसरथ तणे पुत्रि रे ।
जगत्र प्रलय जलधर मिलइ, कालकृतान्त नइ सूत्रि रे ॥२७॥वि०॥

भणइ लखमण भो भो भड वावो मदन भेरि वेगि रे ।
सहु को महारथ सज्ज करो, गय गुडो वांधव तेग रे ॥२८॥वि०॥

चपल तुरंगम पाखरो, प्रगुणा[1] थाओ पाखिहार रे ।
टोप सन्नाह पहिरो तुम्हे, वेगि म लावो वार रे ॥२६॥वि०॥

हुक्म सुणी सहु को तथा आया श्रीराम नइ पासि रे ।
केसरी रथइ रामचंद चढ्या लखमण गरुड उल्हास रे ॥३०॥वि०॥

हय गय रथ पायक्की करी वीडा सुभट सिरदार रे ।
भामण्डल हनुमन्त सहु राजवी रण झूझार रे ॥३१॥वि०॥

सहु मिली आया रणभूमिका रणक्रीडा रसिक अपार रे ।
सबल सकुन थया चालतां जयत वणावइ निरधार रे ॥३२॥वि०॥

सातमा खंड तणी भणी ए पहिली मइ ढाल रे ।
समयसुंदर कहइ आगइ सुणो कुम-कुम थया हक चाल रे ॥३३॥

सर्वगाथा ॥५४॥

१—सज

दूहा १७

अरिदल साम्हो आवतो, देखी रावणराय ।
करि आगइ रथ आपणो, साम्हो आयो धाय ॥ १ ॥
आम्हो साम्हो वे मिल्या, दल वादल असराल ।
निज-निज धणी हकारिया, ते झूझइ ततकाल ॥ २ ॥
युद्ध थयो ते केहवो, ते कहियइ अधिकार ।
कहतां पार न पामियइ, पणि कहुं एक लिगार ॥ ३ ॥
रुधिर तणी वूही नदी, नर संहार निसीम ।
रामायण सवलो मच्यो, महाभारथ रण भीम[1] ॥ ४ ॥
इण अवसरि गज रथ चड्यो, राक्षस कटक प्रगट्ट ।
हत प्रहत हनुमंत कीयो, दूरि गयो दहवट्ट ॥ ५ ॥
कोप करी आव्यो तिहा, मन्दोदरी नो वाप ।
तीरे मारे तेहनइ, करि काटइ ग्रहि चाप ॥ ६ ॥
सर वींधी हनुमन्त सकल, कंचण रथ कीयो चूर ।
वलि रावण दीवउ नवो, विद्यावल भरपूर ॥ ७ ॥
रथ रहित कीधा तिणइं, भामण्डल हनुमन्त ।
सुग्रीवादिक पणि सुभट, पणि पाला झूझंत ॥ ८ ॥
देखि विभीषण ऊठियो, सवल करइ संग्राम ।
रावण सुसरइं वींधियो, तीरां सु तिण ठाम ॥ ९ ॥
भेदि विभीषण भेदियो, केसरीरथ तिण तीर ।
रामचद उठ्या तुरत, करुं विभीषण भीर ॥ १० ॥

१—सीम

तीर सहासह मारिनइ, सुरत कीया ते दूरि।
रावण रुठ्यो रीस भरि नजरि करी अतिक्रूर ॥ ११ ॥
रांवणनइ देखी करी, लखमण रुठ्यो वेगि।
रे दसकंठ ऊभउ रहे, देखि मोरि तु तेग ॥ १२ ॥
रे भूचर रावण कहइ, तुमसुं करंवा युद्ध।
तु आणु तु आ परउ, विद्या मुझ्झ विशुद्ध ॥ १३ ॥
लखमण कहइ आण्यो नहीं पर नी हरतो नारि।
रे पापी इण पगि रहे आवुं गर्व उतारि ॥ १४ ॥
रे पापिष्ट निकृष्ट तुं निरमरयाद निलज्ज।
इम निर्भंछी नाखियो रावण कियो अकज्ज ॥ १५ ॥
रावण अति कोप्यो थको, मझ्का नाखइ तीर।
गगन सरे करि छाइयो जाणो ऊग्या तीर ॥ १६ ॥
लखमण वार्या आवता कंकपत्र करि सेह।
शस्त्र रहित रावण कियो, राखी सबली रेह ॥ १७ ॥

सर्वगाथा ॥७२॥

ढाल बीजी

॥ हो रंग लीयां हो रग लीयां नलद० एहनी जाति ॥

रावण बहु रुपिणी बोलावी ते पणि वेगि ऊभी रही आवी ॥ १ ॥
रावण लखमण सेती मूझइ, पिण कांई आगली वात न सूझइ ॥ २ ॥

२—आण्या

रावण मेहशास्त्र नइ मूकइं, लखमण पवण उडाडी फूकइं ॥ ३ ॥
रावण अन्धकार विकुरवइं, लखमण सूरिज तेज सुं हरवइ ॥ ४ ॥
रावण साप मुँकी वीहावइं, लखमण गुरुड मुंकी नइ हरावइं ॥ ५ ॥
इण परि खेद खिन्न घणो कीधो, लखमण रावण नइं दुख दीधो ॥६॥
संनिधि करिवा तिण प्रस्तावइ, देवी बहूरूपिणी तिहा आवइ ॥ ७ ॥
बहुरूपिणी परभाव विशेषइ, लखमण रण माहे इम देखइ ॥ ८ ॥
सुन्दर मुकुट रतन करि मंडित, रावण सीस पड्या अति खण्डित ॥९॥
केऊर वीर वलयकरी सुन्दर, मणिमय मुद्रिका श्रेणि मनोहर ॥ १० ॥
एहवी वीस भुजा पडि दीखइ, लखमण जाणइ मुज्झ जगीसइ ॥११॥
लखमण आपणइ चित्त विचास्यो, मइं तो रावण राक्षस मास्यो ॥१२॥
तेहवइं रावण ऊठी आयो, ततखिण त्रूटि पडीनइ धायो ॥ १३ ॥
अपणा सहस भुजादण्ड कीधा, भुज-भुज सहस शस्त्र तिण लीधा॥१४॥
तरुयारि तीर भाला अणीयाला, तोमर चक्र मोगर विकराला ॥ १५ ॥
रावण शस्त्र मुंकइ समकालइ, लखमण आवता सगला टालइ ॥ १६ ॥
लंकानाथ चड्यो अहंकारइं, आपणो चक्ररतन चीतारइं ॥ १७ ॥
ततखिण चक्र आवी करि वइठो, रावण लोचन अमीय पइठो ॥ १८ ॥
ते चक्र सहस आरे करी सोहइ, मनोहर मोती माला मोहइ ॥ १९ ॥
ते तउ चक्र रतनमय दीपइं, ते थका वयरी कोइ न जीपइं ॥ २० ॥
रावण चक्र मुक्यो तिण वेला, लखमण सुभट कीया सहु भेला ॥२१॥
राघव सुग्रीव हनुमंत वीरा, भामंडल नृप साहस धीरा ॥ २२ ॥
तिण मिली रावण हथियार छेद्या, सुभटे साम्हा आवता भेद्या ॥२३॥
तो पिण चक्र वहीनइ आयो, लखमण कर ऊपरि ते ठायो ॥ २४ ॥

देखी सुभट सहु को हरख्या ए सही वासुदेव करि परख्या ॥२६॥
अम्हनइ अनन्तवीरिज कह्यो पहिलो, ते पणि वचन थयो सहु वहिलो
ए तो वासुदेव बलदेवा ऊपना सुरनर करिस्यइ सेवा ॥ २७ ॥
लखमण हाथि रह्यो चक्र देखी रावण चितवइ चित्त विखेपी ॥ २८ ॥
जेहनइ चक्र रतन हुयइ हाथइ, जेहनइ पुण्डरीक छत्र नइ माथइ ॥२९॥
तेहनी सेव करइ राय राणा तेहनी आन करइ परमाणा ॥ ३ ॥
धिग मुझ विद्या तेज प्रतापा रावण इण परि करइ पछतापा ॥ ३१ ॥
मुझनइ भूमिगोचर निभ्रछइ, मुझनइ लखमण जीपिवा वांछइ ॥३२॥
हाहा ए संसार असारा बहु विध दुख तणा भंडारा ॥३३॥
हाहा राज रमणि पणि चपल, जोबन ढलन्यो जाय नदी जल ॥३४॥
हाहा कडुआ करम विपाका, जेहथा निव चतूरा आका ॥३५॥
धिग धिग काम भोग समागा दुरगति दायक अंति वियोगा ॥३६॥
सोलइ रोग समाकुल देहा कारिमा कुटुंब सजन सनेहा ॥३७॥
इम हुं जाणतो पणि मुरझायो पारकी स्त्री हरतो पांतरायो ॥३८॥
हा हा धिग धिग मुझ अमारो मइ ता निफल गमाड्या सारो ॥३९॥
इम वइराग चड्यो लंकेसर, बिभीषण बोलयो देखी अवसर ॥४०॥
रावन मानि अजी मुझ वचन सीता पाछी सुंपि सुरचनं ॥४१॥
भोगवि राज चहूर लंका नो मानि वचन ए छाल टंकानो ॥४२॥
तो पिण रावण वात न मानइ किम ही सीता चढइ मुझ पानइ ॥४३
लखमण कहइ भो रावण राणा, हुं हिव का करइ लोभावाणा ॥४४॥
हिव तु मानि वचन बांधव नो जो तु पुत्र मइ रतनाश्रव नो ॥४५॥
जउ तु जीवत वांछइ अपणउ, तउ तु मारे राक्षस समझणो ॥४६॥

रावण रोस करि कहइं जाण्यो, तइं तउ चक्र तणो वल आण्यो ॥४७॥
इम वोलइ तो रावण दीठो, लखमण जाण्यो ए तो धीठो ॥४८॥
लखमण चक्ररतन ले मुकइं, ते पणि रावण थकी न चूकइ ॥४६॥
ए चक्र रावण नइ थयो एहवो, पर आसक्त नारी जन जेहवो ॥५०॥
जे तिण करि झाल्यो सुविचारी, तेहिज फिरि नइ थयो क्षयकारी ॥५१॥
रावण लखमण चक्र प्रहारइं, ततखिण ढलि पड्यो धरती तिवारइ ॥
जाणे प्रवल पवन करि भागो, रावण ताल ज्युं दीसिवा लागो ॥५३॥
जाणे केतु ग्रह ऊपरती, किंवा त्रुटि पड्यो ए धरती ॥५४॥
रावण सोहइ पडियो धरती, जाणे आथमतउ सउ दिनपती ॥५५॥
रावण पडतउ देखी त्राठा, राक्षस सुभट सहु जायइ नाठा ॥५६॥
तव सुग्रीव विभीषण भाखइं, इम आश्वासन देई राखइं ॥५७॥
तुम्हनइ ए नारायण सरणं, मत को आणो डर भय मरणं ॥५८॥
सगलउ रावण कटक नउ मेलो, जई थयो रामचंद नइ भेलो ।५६
ढाल ए सातमी खंडनी जाणो, बीजी ढालइ मार्‍यो रावण राणो ॥६०
पामी जयत पताका रामइं, इम कहइ समयसुंदर इण ठामइं ॥६१॥
॥ सर्वगाथा १३३॥

ढाल त्रीजी

रे रगरत्ता करहला मो, प्रीउ रत्तउ आणि ।
हु तो ऊपरि काढिनइ, प्राण करू कुरवाण ॥१॥
सुरगा करहा रे, मो प्रीउ पाछउ वालि, मजीठा करहा रे ए गीतनी ढाल

राग मारुती

रावणनइ धरती पड्यउ, देखि विभीषण राय ।
आपघात करतउ थकउ, राख्यो घणे उपाय ॥१॥

राजेसर रावण हो, पभणसइ मुनि बोलि।
हठीला रावण हो साम्हउ जोइ सनेह सुं।
तुं का भयो निठुर निटोल ॥ रा० । आंकणी ॥
मुरछागत थई नइ पड्योरे, वोहिलो बांधव दुख।
वाय सचेत कीयो वली रे, पिण विलाप करइ छख्खु ॥२॥ रा०
तो सरिखा महाराजवी रे, लंकागढ मा माथ।
मयमइ निज बस आणिया, तुं इन्द्र नइ घाल्या बाथ ॥३॥ रा०
एहवो तुं पणि पामीयोरे, ए अवस्था आज।
तउ जग मइ धिग का नहीं रे, उठि उठि महाराज ॥४॥ रा०
इह लोक परलोक हित तणो तइ बचन न मान्यो मुज्झ।
तउ पणि बांधव ऊठि तुं, हुं वलिहारी जाउं तुज्झ ॥५॥ रा०
कम्मि अपराध तुं माहरो रे, का थायइ कठिन निटोल।
दीन दीन मुझ देखिमइ, तुं दिइ मुझ बांधव बोल ॥६॥ रा०
इण अवसरि अंतेउरी, मन्दोदरि दे आदि।
सपरिवार आवी इहाँ करइ विलाप विषाद ॥७॥
पियारा प्रीतम हो एक रसउ ॥ आंकणी।
धरणी ढलि ध्रबकरी रे, मूर्छागति थई तेह,
वलि सचेत थई सुंदरी रे करइ विलाप धरि नेह ॥८॥ पी०
हा जीविन हा वाल्हारे हा अम्ह जीवनप्राण।
हा गुण गरुवा माहरारे, हा प्रिय चतुर सुजाण ॥९॥ पि०
हा राजेसर किहां गयो रे, अम्हनइ कुण आधार।
नयण निहालो माहरा रे, बीनति करुं वारवार ॥१०॥ पि०

रे हतियारा देव तइं, का हस्यो पुरुष प्रधान।
अम्ह अबलानइं एवडु, तइं दुग्नू दीध असमान ॥११॥ पि०
इम विलाप करती थकी रे, अंतेउर नइ देखि।
केहनइ करुणा न ऊपजइ रे, वलि विरही नइ विशेखि ॥१२॥ पि०
विभीषण मंदोदरी रे, दुखु करंता देखि।
रामचन्द आवी तिहारे, समझावइं सुविशेष ॥१३॥ पि०
भावी वात टलइ नहीं रे, वयर हुवइ मरणात।
मन हटकी ल्यउ आपणउ रे, म करउ सोक अश्रात ॥१४॥ रा०
प्रेत कतूत करो तुम्हे रे, राम कहइ सुविचार।
विभीषण सहु को मिली रे, करइं रावण संसकार ॥१५॥ रा०
बावना चंदन आणीया रे, आण्या अगर उदार।
चय उपरि पउढाडियो रे, कीयो किसु करतार ॥१६॥ रा०
रावण नइ संसकारि नइ रे, लखमण राम उदास रे।
पहुता पदम सरोवरइं रे, द्यइ जळ अंजल तास ॥१७॥ रा०
इंद्रवाहन कुभकरण नइ रे, मुकाव्या श्रीराम।
सोक मुँकउ सुख भोगवउ रे, द्यइ आसानना आम ॥१८॥ रा०
ए संसार असार मइं रे, कवण न पामइ दुखु।
इम चिंतवता चित्त मइं रे, गया मन्दिर मन लुखु ॥१९॥ रा०
त्रीजी ढाल पूरी थई रे, सातमा खंड नी एह।
समयसुदर कहइं साभलो, वयराग नी वात जेह ॥२०॥ रा०

॥ सर्वगाथा १५३ ॥

दूहा ६

तिण अवसरि बीजइ दिनइ, लंकापुरी उद्यान ।
अप्रमेयबळ नाम मुनि आया उत्तम ध्यान ॥ १ ॥
साथइ छप्पन्न सहस मुनि साधु गुणे अभिराम ।
शुभ लेश्या चढ्यो साधवी अप्रमेयबल नाम ॥ २ ॥
अनित्य भावना भावतां, धरतां निरमळ ध्यान ।
आघी रातइ रूपनो, निरमळ केवलग्यान ॥ ३ ॥
केवल महिमा सुर करइ, वायइ वाजित्र तूर ।
मुनि वांदण आवइ भविक, प्रह ऊगमतइ सूर ॥ ४ ॥
देव तणी सुणि दुन्दुभी लखमण राम समेत ।
विद्याधर साथे सहू आया वंदण हेत ॥ ५ ॥
कुंभकरण वलि इन्द्रजित मेघनाद सुविलास ।
त्रिण्ह प्रदक्षिण देइनी बइठा केवलि पास ॥ ६ ॥

सर्वगाथा ॥ ११६ ॥

ढाल ४

॥ राग धगालु ॥

॥ जानी एहा मान न कीजीयइ ए मीत मी चाल ॥

लखमण राम विभीषण बइठा बइठा सुग्रीव राय रे ।
कुंभकरण मेघनाद सहुको बइठा आगइ आय रे ॥ १ ॥
थाइ केवली भगवंत देसना, हां ए संसार असार रे ।
जन्म मरण ग्रभवास जराविक दुख तणो भंडार रे ॥ २ ॥ था० ॥
डाभ अणी ऊपरि जल जेहवो, तेहवो जीवित जाणि रे ।
संध्याराग सरीखो यौवन, गरव ते अनरथ खाणि रे ॥३॥ था० ॥

इन्द्रधनुष सरिखी रिधि जाणो, अथिर अनित्य ससार रे।
आसू ना आभला सरीखा, प्रिय संगम परिवार रे ॥४॥ घ० ॥
काम भोग गाढा अति भूंडा, जेहवा फल किंपाक रे।
मुख मीठा परिणामइ कडुया, जेहवो नींब नइ आक रे ॥५॥ घ० ॥
विरह वियोग दुखु नानाविध, सोग संताप सदाई रे।
सोलह रोग समाकुल काया, कारिसी सहु ठकुराई रे ॥ ६ ॥ घ० ॥
जरा राक्षसी प्रतिदिन पीडइ, मरणे आवइं नेडउ रे।
छाया मिस माणस तिण मुक्या, जमराणा नो तेडउ रे ॥७॥ घ० ।
मायाजाल जंजाल मुकि द्यो, वलि मुको विपवाद रे।
वलि मांनव भव लहता दोहिलो, म करो धरम प्रमाद रे ॥८॥ घ० ॥
विषय थाकी विरमउ तुम्हें प्राणी, विषय थकी दुख होइ रे।
सीतासंगम बांछा करतो, राणो रावण जोई रे ॥ ९ ॥ घ० ॥
साधतणी देसना सांभलि, ऊपनो परम वयराग रे।
कुभकरण मेघनाद इन्द्रजित, इण लाधो भलौ लाग रे ॥ १० ॥ घ० ॥
परम संवेगइ केवलि पासइं, लीधो संयम भार रे।
मन्दोदरि पति पुत्र वियोगइ, दुखु करइं वार वार रे ॥ ११ ॥ घ० ॥
संयमसिरी पहुतणी प्रतिबोधी, पाम्यो परम सवेग रे।
मन्दोदरि पणि दीक्षा लीधी, अलगु टल्यो उदेग रे ॥ १२ ॥ घ० ॥
सहस अठावन दीक्षा लीधी, चन्द्रनखादिक नारी रे।
तप जप सूधो सयम पालइं, आतम हित सुखकारी रे ॥१३ घ० ॥
प्रतिवूधा वहुला तिहा प्राणी, साभलि ध्रम उपदेसा रे।
समयसुन्दर कहइं ए ढाल चउथी, सातमा खण्डनी एसा रे ॥१४॥घ०॥

सर्वगाथा ॥१७३ ॥

ढाल ५

॥ राग परजियो कालहरो मिश्र ॥

सिहरां सिरहर सिवपुरी[1] रे, गढां बडो गिरिनारि रे।
राण्यां सिरहरि रुकमिणी रे कुमरा मन्थ कुमार रे॥१॥
कंसासुर मारण आविनइ प्रद्धाव उबारण, रास रमनि घर आवज्यो।
घरि आज्यो हो रामजी, रास रमनि घरि आज्यो॥२॥

॥ पूर्गीतनी ढाल ॥

जयवसिरी पामी करी रे, लखमणनइ श्रीराम रे।
सुग्रीव हनुमन्त साथि छे रे, भामण्डल अभिराम रे॥ १ ॥
लंकागढ़ लीघउ लंई भइ विभीषण नइ दीघउ।
राम लंकागढ़ लीघउ॥
गढ़ लीघउ हो हो रामजी। राम लंकागढ़ लीघउ॥ आं ॥
लंकागढ़ रलियामणउ रे सुंदर पोलि प्रकार रे।
चउरासी चउहटा भला रे, सरगापुरी अवतार रे॥ २॥ ले
लखमण राम पधारिया रे लंका नगरी माँहि रे।
पइसारो सबलो सज्यो रे अति घणो अंगि उछाह रे॥ ३॥ लं०
गउखि चढी कहइ गोरडी रे, क लखमण क राम रे।
चामरधारी पूछियइ रे, कहउ सीता किण ठाम रे॥४॥ लं०
पुष्पगिरि परवत तणइ रे, पासइ पदम उद्यान रे।
सीता तिहां बइठी अछइ रे, धरती मिमुनो ध्यान रे॥५॥ लं०

१—मधुपुरी।

राम खुसी थका चालिया रे, तुरत गया तिण ठाम रे।
गज थी नीचा ऊतस्या रे, सीता दीठी श्रीराम रे ॥६॥ लं०
दुख करती अति दूबली रे, विरह करीनइ बिछाय रे।
सीतापणि श्री रामजी रे, आवता दीठा धाय रे ॥७॥ लं०
दूर थकी देखी करी रे, आणंद अंगि न माय रे।
आँखे आँसू नाखती रे, ऊभी रही साम्ही आय रे ॥८॥ लं०
विरह माँहि दुख जे हुयइ रे, संभास्यो थकउ सोइ रे।
ते वाल्हेसरनइ मिलया रे, कोडि गुणउ दुख होइ रे ॥९॥ लं०
सीता नइ रोती थकी रे, रामजी हाथे झालि रे।
हे दयिता दुख मुकि देरे, कहइ प्रियु साम्हो निहालि रे ॥१०॥ लं०
हिव तु धरि धीरज पणो रे, सुख फाटी हुयइ दुखु रे।
जग सरूप एहवो अछइ रे, दुख फीटी हुयइ सुखु रे ॥११॥ लं०
पुण्य विशेषइं प्राणीया रे, पामइ सुखु अपार रे।
पाप विशेषइं प्राणीया रे, पांमइ दुखु किवार रे ॥१२॥ लं०
इणपरि समझावी करी रे, दे आलिंगन गाढ रे।
सीता संतोषी घणु रे, हीयो हुयो अति ताढ रे ॥१३॥ लं०
जाणे सींची चंदनइं रे, झीली अमृत कुंड रे।
छाटी कपूर पाणी करी रे, इम सुख पाम्यो अखंड रे ॥१४॥ लं०
सीता राम साम्हो जोयो रे, राम थया अति हृष्ट रे।
चक्रवाक जिम ग्रह समइ रे, चकवाकी नी दृष्टि रे ॥१५॥ लं०
राम सीता बेउ मिलया रे, जेथयो सुखु सनेह रे।
ते जाणइ एक केवली रे, के वलि जाणइं तेहरे ॥१६॥ लं०

सीता सहित श्रीराम नइ रे निरखी सुर हरखंत रे।
कुसुम वृष्टि ऊपरि करइ रे, गंधोदक वरषति रे ॥१७॥ छ०
परसंसा सीता तणी रे, वलि करइ देवता एम रे।
धन धन ए सीता सती रे साचो सील सुं प्रेम रे ॥१८॥ छ०
रावण ओमावी नही रे, ऊठि कोडि रोमराइ रे।
मेरु चूला चालइ नही रे, पवन तणो कपाइ रे ॥१९॥ छ०
लखमण सीतानइ मिल्यो रे कीधउ चरण प्रणाम रे।
सीता हियडइ भीडीयो रे, बोलायो लेइ नाम रे ॥२०॥ छ०
भामंडल आवी मिल्यो रे, बहिन भाई बहु प्रेम रे।
सुग्रीव हनुमंत सहु मिल्या रे, आणंद वरत्या एम रे ॥२१॥ छ०
हिव श्रीराम हाथी चढी रे, सीता सहित उछाह रे।
लखमण नइ सुग्रीव सुं रे, पहुता लंका माहि रे ॥२२॥ छ
सीस ऊपरि धरता थका रे, मेघाडंबर छत्र रे।
चामर बीजइ बिहुं दिसइ रे वाजइ बहु वाजित्र रे ॥२३॥ छ०
जय जय शबद ध्वनी भणइ रे, सुहव द्यइ आसीस रे।
रामचंद राजेसरू रे, जीवउ कोडि वरीस रे ॥२४॥ छ०
रावण भुवण पधारिया रे, रामचंद नरराय रे।
गज थी सीता ऊतरी रे पहिला देहरइ जाय रे ॥२५॥ छ०
सांतिनाथ प्रतिमा तणी रे, पूजा कीधी सार रे।
वंदना कीधी तिहां भणी रे, पहुचावइ भवपार रे ॥२६॥ छ०
वंदना करि बइठा तिहां रे लखमण नइ हनुमंत रे।
रतनाश्रव सुमालि नइ रे विभीषण भामंडल रे ॥२७॥ छ०

रामचन्द्रइं परिचाविया रे, सहू सोकातुर तेह रे।
सोक मुँकी ऊठी करी रे, पहुता निज निज गेह रे ॥२८॥ लं०
इण अवसरि विभीषणइ रे, सपरिवार श्रीराम रे।
आपणइं घर पधराविया रे, सहस रमणी अभिराम रे ॥२९॥ लं०
स्नान मज्जन भोजन भला रे, भगति जुगति सुविचित्र रे।
सहु मिली कीधी वीनती रे, राज्याभिषेक निमित्त रे ॥३०॥ लं०
रामचंद कहइ माहरइ रे, राज सु केहो काज रे।
पंच मिलीनइं थापीयो रे, भरत करइ छइ राज रे ॥३१॥ लं०
रामचंद लंका रह्या रे, सीता सु काम भोग रे।
इंद्र इंद्राणी नी परइं रे, सुख भोगवइ सुर लोग रे ॥३२॥ लं०
लखमण पणि सुख भोगवइ रे, राणी विसलया साथ रे।
बीजा विद्याधर बहू रे, पासि रहइ ले आथि रे ॥३३॥ लं०
राम अनइ लखमण वली रे, दे आपणा सहिनाण रे।
पूरवली कन्या सहू रे, आणावी अति जाण रे ॥३४॥ लं०
ते सगली परणी तिहां रे, के लखमण के राम रे।
सुख भोगवइं लंकापुरी रे, राज करइं अभिराम रे ॥३५॥ लं०
पचमी ढाल पूरी थई रे, सातमा खंडनी एह रे।
कहइ (समय) 'सुदर' सीलवतनी रे, पग तणी हुँ छु खेहरे ॥३६॥लं०

सर्वगाथा ॥२०९॥

दूहा १७

अन्य दिवस नारद रिषी, कलिकारक परसिद्ध।
वलकल वस्त्र दीरघ जटा, हाथ कमंडल किद्ध ॥१॥

नम थी नीचव लखमो, आमो समा मझारि।
आदर मान घणो दीयो, रामचद सुविचार ॥२॥
रामइ पूछयउ किहां थकी आया रिषि कहइ एम।
नगर अयोध्या थी कहउ भरत नइ कुशल छइ खेम ॥३॥
कुशल खेम तिहां कणि अछइ, पणि तिहां अकुशल एह।
तुम्ह दरसण दीसइ नही, साछइ अधिक सनेह ॥४॥
सीता रावण अपहरी, लखमण पड्यो संग्राम।
इहां थी विसल्या ले गया, दुखी सुण्या श्रीराम ॥५॥
आगइ खबरि का नहीं तिण चिंता करइ तेह।
झूरि झूरि माता मरइ, दुख तणो नहि छेह ॥६॥
नारद वचन सुणी करी, लखमण राम दयाल।
सहु दिलगीर थया घणुं नयणे नीर प्रणाल ॥७॥
नारद तुम्हे भलो कीयो, वात कही सहु आय।
नारद रिषि संप्रेडियो, पूगी अरची पाय ॥८॥
राम अयोध्या आइवा उछक थया अत्यंत।
राम¹ विभीषण पूछियो, ते वीनवइ वृतांत ॥९॥
सोलह दिन ऊभा रहो, रांमइ मानी वात।
भरत भणी मूंक्या तुरत दूत चल्या परभात ॥१०॥
तुरत अयोध्या ते गया, भरत नइ कियो प्रणाम।
सगली वात तिणइ कही ते ते नाम नइ ठाम ॥११॥

१—राव

तेह विसल्या कन्यका, तिहां आवी ततकाल।
लखमण नइ जीवाडियो, काढी सकति कराल ॥१२॥
लखमण रावण मारीयो, मुँकी पाछो चक्र।
सीता सु सुख भोगवइ, रामचंद जिम शक्र ॥१३॥
विद्याधर राजा तणी, कन्या स्त्री सिरताज।
परणी राम नइ लखमणइं, भोगवइं लंका राज ॥१४॥
भरत दूत नइ ले गयो, माता पासि उल्हास।
तिहां पिणि वात तिका कही, लाधी लील विलास ॥१५॥
दूत भणी माता दीया, रतन अमूलिक चीर।
अति संतोष्यो दूतनइं, वेगा आवो वीर ॥१६॥
भरत राम भइया[2] तणो, सुणि आगमन आवाज।
पइसारो करिवा भणी, सजइ सामग्री साज ॥१७॥

॥ सर्वगाथा २२६ ॥

ढाल ६

॥ राग मल्हार ॥

बधावारी ढाल

भरत महोछव माडियउ, बुहरावी हे गली नगर मझारि।
अयोध्या राम पधारिया, पधारया हे वलि लखमण वीर ॥अ०॥
गंधोदक छांटी गली, विखेरया हे फूल पच प्रकार ॥१॥ अ०
केसर रइ गारइ करी, लीपाव्या हे मंदिर तणा बार।
मोती चउक पूरावीया, बारि बाध्या हे तोरण तिण वार ॥२॥ अ०

२—भाया

घरि घरि गूडी ऊछलइ, हाट छाया हे पञ्चवरण पटकूल।
ऊरध बाजार छायाविया चदूआ हे चिहुंदिसि बहुमूल ॥३॥ अ०
बांध्या मोती झूंबखा मणि माणक हे रतनां तणी माळ।
खडी धजी फरहरी ठाम ठाम हे वसि लाख परवाळ ॥४॥ अ०
केठि थांभा ऊंचा किया, सोना ना हे तिहां कळस विसाळ।
घनरमाळ बांधी भली लोक मोहइ हे आयो पृथिवी नो पाळ ॥५॥ अ०
इण अवसरि विद्याधरे, आवीनइ हे विभीषणनइ आदेश ॥ अ० ॥
रतनवृष्टि कीधी घणी घरे घरे हे त्रिक चउक प्रवेस ॥ अ० ६ ॥
चउंग तोरण देहरा अति ऊ चाहे अष्टापद गिरि जेम।
कंचणमय कीधा तिहां कोसीसा हे मणि रतन ना तेम ॥ ७ ॥ अ०
जिन मंदिर महोछव घणा, मंडाव्या हे पूजा सतरप्रकार।
नगरी अयोध्या एहवी सिणगारी हे सुरपुरी अवतार ॥ ८ ॥ अ०
हिव दिन सोळा गयेंहुते लंकाथी हे चाल्या श्रीराम।
सीता विसल्या साथिए, महोदर हे लखमण अभिराम ॥ ६ ॥ अ०
सहु परिवार ले आपणो चढी बइठा हे राम पुष्प विमान।
साकेत साम्हा चालिया विद्याधर हे साथि अति सोभमान ॥१ ॥अ०
हय गय रथ वाहन चढ्या विभीषण हे हनुमंत सुग्रीव।
राम संघातइ चालिया देखता हे गिरि वन पुर दीव ॥११॥ अ०
राम दिखाडइ हाथ सुं कलत्रनइ हे आपणा अहिठाण।
इहां सीतानइ अपहरी पडिक्राम्या हे इहां साधु सुजाण ॥ १२ अ० ॥
आव्या आकास मारगइ खिणमाहे हे निज नगर मांफेत।
चतुरंगिणी सेना सझी साम्हो आयो तिहां हे भरत सुदेत ॥१३॥ अ०

सुभट विद्याधर सहु मिल्या, सहु हरष्या हे नगरी नर नार।
ढोल दमामा दुडबडी, भेरि वाजइ हे भला भुगल सार ॥ १४ ॥ अ०
ताल कंसाल नइ वासुली, सरणाई हे चह चहइ सिरिकार।
सर मंडल मादल घुमइ, वीणा वाजइ हे झालरि झणकार ॥ १५ ॥ अ०
बत्रीस बद्ध नाटक पडइ, गीत गायइ हे गुणियण अतिचग।
वंदी जण जय-जय भणइ, रुडी बोलइ हे विरुदावली रग ॥१६ ॥ अ०
आकास मारिग आवता, देखीनइं हे लोक हरप अपार ।
पूरणकुभ ले पदमिनी, वधावइ हे गायइ सोहलउ सार ॥ १७ ॥ अ०
गउख ऊपरि चडी गोरडी, कहइ केई हे देखउ ए रामचंद।
ए लखमण केई कहइ, ए सुग्रीव हे ए विभीषण नरिंद ॥ १८ ॥ अ०
ए हनुमत सीता सती, विसल्या हे ए लखमण नारि।
वडवखती केई कहइ, वे भाई हे राम लखमण वलिहारी ॥ १९ ॥ अ०
अटवी मइ गया एकला, पणि पामी हे रिधि एह अनंत।
के कहइ सीता सभागिणी, चूकी नहि हे रावण सु एकंत ॥ २० ॥अ०
धन्य विसल्या केई कहइ, जीवाड्यो हे जिण लखमण कत।
हनुमत धन्य केई कहइ, सीता नइ हे कह्यो प्रियु विरतंत ॥२१॥ अ०
पुष्पविमान थी ऊतरी, साभलता हे इम जन सुवचन्न।
पहुता माता मंदिरइ, मा दीठा हे वेउ पुत्र रतन्न ॥ २२ ॥ अ०
सौमित्रा अपराजिता, केकई हे थयो आणंद ताम।
ऊठीनइ ऊभी थई, पुत्रे कीधउ हे माता चरण प्रणाम ॥ २३ ॥ अ०
माता हियडइं भीडिया, वेटा नइ हे पुचकारया वोलाइ।
वहू सासू ने पगे पडी, कहइ सासू हे पुत्रवती तूं थाइ ॥ २४ ॥ अ०

भरत सत्रुघन आविनइ, बेऊ माई हे नम्या अधि बहु प्रेम।
मात पूछी मा पाधिली, ते दासी हे सहु थई जिम तेम ॥ २५ ॥ भ०
स्नान मज्जन भोजन भला सीमाल्या हे ऊपर दीधा तंबोल।
परि परि रंग वधामणा राज माहे इ थया अधि रंगरोल ॥ २६ ॥ भ०
सीतादिक स्त्रीनइ दिया, रहिवानइ ह रुडा कनक आवास।
दासी दास दीया घणा, मणि माणिक हे सहु लील विलास ॥२७॥ भ०
इम माता बांधव प्रिया, परवार ना हे पुरवइ मनकोडि।
मन वंछित सुख भोगवइ, श्रीराम नइ हे लखमण तणी जोडि ॥२८॥भ०
इक दिन भरत मइ ऊपनो मनमाहें इ वारू अधि वयराग।
करजोडी कहइ रामनइ सुणि वीनति हे तुम्हें सुणो महाभाग ॥२६॥भ०
पइ तुम्हे राज भोगवो, हुँ लेइसि हे संयम तणो भार।
ए संसार असार छइ, मइ जाण्यो हे बहु दुख भंडार ॥ ३० ॥ भ०
पहिली पणि मुझ नइ हुतो, दीक्षा नो हे मनोरथ अतिसार।
दसरथ राजा राम नइ, छोडी नइ हे लीधो संयम भार ॥ ३१ ॥ भ०
पणि आपणी आग्रह करी राज दीधो हे मइ तो मन विण एह।
हिव ए राज मइ त्यज तुम्हें, अम्हारउ हे मनि परम सनेह ॥ ३२ ॥भ०
राजलीला सुख भोगवउ, मन मान्या हे करउ वंछित काज।
राम कहइ बापइ दीयो काइ छोडउ हे भाई भरत ए राज ॥ ३३ ॥भ०
वृद्धपणइ संयम ग्रहे, सुवानी हे साहे सहि मत लाग।
इ छी वमनी दोहिला वहि दोहिलो हे सहु स्वाद नो त्याग ॥३४॥ भ०
भरत कहइ भाई सुणो संयम हे दोहिलो कह्यो तेह।
वृद्धपणइ पणि नादरइ भारी कमा हे भर संयम एह ॥३५॥ भ०

तरुणा केइ हलुकमा, व्रत आदरइ हे आपणइं उछरंग ।
ते भणी मुझ आदेस द्यौ, मन मान्यो हे अम्ह संयम रंग ॥३६॥ अ०
आदेस लीधो राम नो, तिण वेला हे तसु भाग संयोग ।
श्रीकुलभूषण केवली, पधास्था हे गयो वादिवा लोग ॥३७॥ अ०
भरत नरेसर भावसु, व्रत लीधो हे नृप सहस सघाति ।
सामग्री सवली सजी, राम कीधो हे महुछव वहु भांति ॥३८॥ अ०
तप संयम करउ आकरा, सुध साधइ हे राजरिषि सिवपथ ।
आप तरइं अउरा तारवइं, नित वांदु हे ते हुँ भरत निग्रंथ ॥३९॥ अ०
छट्ठी ढाल पूरी थई, राम लाधा हे अयोध्या सुख लील ।
भरतइं दीक्षा आदरी, समयसुंदर हे कहइ धन पालइ जे सील ॥४०॥अ०
सर्वगाथा ॥२६६॥

दूहा १२

इण प्रस्तावइं वीनव्यो, राम नइं राज्य निमित्त ।
सुग्रीव प्रमुख विद्याधरे, ते कहइ राम तुरन्त ॥ १ ॥
राज्य द्यउ लखमण नइं तुम्हें, वासुदेव छइ एह ।
तिण पाम्यइं मइं पामियो, मुझ पद प्रणमइं तेह ॥२॥
सहु राजा सहु मत्रवी, सहु अधिकारी लोक ।
मिली महोछव मांडियो, मेलया सगला थोक ॥ ३ ॥
गीत गान गाईजते, वाजंते वाजित्र ।
वलि चामर वींजीजते, सिरि ऊपरि धरि छत्र ॥४॥
कनक पदम[1] वइसारि नइ, बे बांधव सुसनेह ।
कनक कलस जलसुं भरी, मिल्या विद्याधर तेह ॥ ५ ॥

१—पट्ट

तिण कीधो अभिषेक तिहां, राम हुवा बलदेव।
पटराणी सीता सती, लखमण पणि वासुदेव ॥ ६ ॥
पटराणी लखमण तणी थई विसल्या नारि।
लोक सहु हरषित थया, वरत्या जय जयकार ॥ ७ ॥
राम विभीषण नइ दियो लंकानगरी राज।
कीधो किंकिंध नो धणी, सुग्रीव सहु सिरताज ॥ ८ ॥
हनुमंत नइ श्रीपुर धणी, कीधो मया करि राम।
चंद्रोदर सुत नइ दियो, पाताल लंका ठाम ॥ ६ ॥
रतनजटी नइ थापियो, गीतनगर रो राय।
दक्षिण श्रेणि वैताढ्य मइ भामंडल सुपसाय ॥ १० ॥
यथायोग बीजा भणी दीधा देस नइ गाम।
विद्याधर सतोषीया सीधा वंछित काम ॥ ११ ॥
अर्ध भरत साधी करी, भरि वसि करि आवास।
लखमण राम वे भोगवइ नगर अयोध्या राज ॥ १२ ॥

सर्वगाथा ॥१८७॥

ढाल ७

राग सारग

॥ आंबो मउर्यो हे विण सजन प मीहनी चाल ॥

सीता दीठउ हे सुहणउ, अन्य दिवस परभात।
पति पासइ गई पाधरी सहु कही सुपन नी वात ॥ १ ॥ सी० ॥
सामी सींह मइ देखीयो अगइ अधिक बढाइ।
ते ऊतरतो आकास थी पइसतो मुख मझ आंहि ॥ २ ॥ सी० ॥

वलि हुं जाणु विमानथी, धरती पडी धसकाय ।
झबकि जागी नइ हुं झलफली, कहउ मुझ कुण फल थाय ॥३॥सी०॥
राम कहइं सुणि ताहरइ, पुत्र युगल हुस्यइ सार ।
पणि तुं पडी जे विमान थो, ते कोइ असुभ प्रकार ॥ ४ ॥ सी० ॥
ते तू उपद्रव टालिवा, करि कोइ धरम उपाय ।
प्रियु पासइ इम साभली, सीता चिंतातुर थाय ॥ ५ ॥ सी० ॥
सीता मन मांहे चिंतवइं, अहो मुझ दुख नउ अंत ।
अजि लगि देखो आयइ नही, पोतइ पाप दीसंत ॥ ६ ॥ सी० ॥
रे देव कां तूं केडइ पड्यो, कुण मइ कीयो अपराध ।
त्रिपतउ न थयो रे तु अजी, बन्दि पाडी दुख दाध ॥ ७ ॥ सी० ॥
अथवा स्यउं दोस दैवनो, अपणा करमनो दोस ।
भव माहे भमतां थकां, सुख तणो किसो सोस ॥ ८ ॥ सी० ॥
इम मन मांहे विमासता, आयो मास वसंत ।
कुयल छबीला रंगइं रमइं, गुणियण गीत गायंत ॥ ९ ॥ सी० ॥
केसर ना करइ छांटणा, ऊडइं अबल अबीर ।
लाल गुलाल ऊछालियइं, सुन्दर सोभइ सरीर ॥ १० ॥ सी० ॥
नरनारी तरुणी मिली, खेलइ फूटरा फाग ।
झीलइ नीर खडोखली, रमलि करइ धरि राग ॥ ११ ॥ सी० ॥
लखमण राम तिणइ समइ, क्रीडा करण निमित्त ।
अन्तेउर परिवार ले, पहुता बाग पवित्त ॥ १२ ॥ सी० ॥
सीता सु रमइ रामजी, विसल्या सु वासुदेव ।
एक सीता सेती मोहीया, राम रमइ नितमेव ॥ १३ ॥ सी०

पेखी सउकि प्रभावती, प्रमुख धरइ मनि द्वेष ।
सीता बसि कीया वाल्हो अम्हनइ नजरि न देख ॥ १४ ॥ सी० ।
सउकि मिली मनि चींतव्यउ, ए दुख सह्यउ रे न जाय ।
चित्त उतारिस्यां एहवी करि कोइ दाय उपाय ॥ १५ ॥ सी० ॥
रमति करी धरि आवीया, इक दिन महुल मझारि ।
सउकि मिली सहु एकठी सीता तेडी समारि ॥ १६ ॥ सी० ॥
आदर मान देई करी, पूछी सीता नइ वात ।
कहो रावण हुंतो केहवो, दससुख जेह कहात ॥ १७ ॥ सी
परसमाधी मइ बइठां थकां, सीताजी तुम्हें तेह ।
रावण अविसि दीठो हुस्यइं, रूप अधिक तसु देह ॥ १८ ॥ सी० ॥
तेहनउ रूप लिखी करी, देखाडउ अम्ह आज ।
कहइ सीता मइ दीठउ नही, जिणसुं नहि मुझ काज ॥ १९ ॥ सी० ॥
मइं रोती ते जोयो नही सउकि कहइ वलि साम ।
तउ पणि अंग उपांग को जे दीठो अभिराम ॥ २० ॥ सी० ॥
ते देखाडउनइ सामिनी कहइ सीता सुविवेक ।
मइ नीचइ मुखि निरखीउ, रावण पदयुग एक ॥ २१ ॥ सी० ॥
बीजो कयु मइ दीठो नही तउ चकती कहइ तेह ।
पग पणि अम्हनइ दिखाडि तू अम्हनइ मनोरथ एह ॥ २२ ॥ सी० ॥
तब सीतायइ आलिखीया रावण ना पग बेउ ।
सोकि गई घरे आपणे, रावण ना पग लेउ ॥ २३ ॥ सी० ॥
अन्य दिवस मिली एकठी, कह्यो श्रीराम नइ एम ।
तुम्ह सरिखा पणि रावणी रावइ कारिमइ प्रेम ॥ २४ ॥ सी० ॥

लपटाणा प्रेम जेहसु, जिण तुम्हनइं वसि किद्ध ।
ते सीता तुम्हे जाणीज्यो, रावण नइं प्रेम विद्ध ॥२५ ॥ सी० ॥
राम कहइ किम जाणियइ, अस्त्री कहइं सुणि देव ।
रांवण ना पग माडिनइ, ध्यान धरइं नितमेव ॥ २६ ॥ सी० ॥
दीठी वार घणी अम्हे, पणि चाडी कुण खाइं ।
आज कही अम्हे अवसरइं, अणहुती न कहाय ॥ २७ ॥ सी० ॥
अस्त्री चरित विचारियइं, अस्त्री चंचल होइ ।
अन्य पुरुष सुं क्रीडा करइ, चित्त अनेरडउ कोइ ॥२८ ॥ सी० ॥
अन्य पुरुष सु साम्हो जोवइ, अनेरा नो ल्यइ नाम ।
दूषण द्यइ अवरां सिरइ, कूड कपट नो ए ठाम ॥२९॥ सी० ॥
जो ए वात मांनो नहीं, तो देखो पग दोय ।
राम विमास्यु ए किम घटइ, दूधमइं पूरा न होइ ॥ ३० ॥ सी० ॥
किम वरसइ आगि चन्द्रमा, किम चालइ गिरि मेर ।
किम रवि पच्छिम ऊगमइ, किम रवि राखइ अंधेर ॥ ३१ ॥ सी० ॥
जो सीता पणि एहवी, तब स्त्री केहो वेसास ।
ते भणी सडकि असांसती, कहइ छइ कूडी लवास ॥ ३२॥ सी० ॥
पणि ए सीता सती सही, राम नइ पूरी प्रतीति ।
सातमी ढाल पूरी थई, समयसुन्दर भली रीति ॥ ३३ ॥ सी० ॥
सातमो खंड पूरो थयो, साते ढाल रसाल ।
समयसुदर सीलवंतना, चरण नमइ त्रिण्हकाल ॥ ३४ ॥ सी० ॥

सर्वगाथा ॥३१२॥

इति श्री सीताराम प्रबन्धे रावणवध, सीतापश्चादानयन ।
श्रीरामलखमणायोध्याप्रवेश, सीताकलंकप्रदान वर्णनोनाम सप्तम खण्ड ॥

॥ खण्ड ८ ॥

दूहा १४

आठ प्रवचन माता मिल्यो, सूधउ संयम होइ।
आठमो खण्ड कहूं इहां सम्भइ सीख स कोइ ॥ १ ॥
इम चितवतां राम नई, अन्य दिवस मस्ताचि।
सीता डोहलो ऊपनउ, गरभ तणइ परभावि ॥ २ ॥
जिनवर नी पूजा करूं, दीना मइ धू दान।
सुत सिद्धन्त हे सांभलुं साधु नइ धू सनमान ॥ ३ ॥
तिण डोहलइ अणपूरवतां, दुर्बल थई अपार।
रामइ आंमणदूमणी, दीठी सीता नारि ॥ ४ ॥
रामइ पूछ्यो हे रमणि, तुम्हनइ दूहवी केण।
किवा रोग को ऊपनो कइ कारणि अवरेण ॥ ५ ॥
जे कइ बात ते मुज्झ कहि, कह्यो सीता विरतंत।
पहुचउ डोहलउ ऊपनो, ते पहुचावो कंत ॥ ६ ॥
राम कहइ हु पूरिसु म करे तुसु झिगारहे।
तुरत मडावी देहरे, पूजा सतर प्रकार ॥ ७ ॥
देवो दान दीनां मणी, मुनि वांदिवा निमित्त।
अंतेवर सुं चालियो राम भरम धरि चित्त ॥ ८ ॥
देहरे देव जुहारि करि, पूजा करी प्रधान।
गुरु वांदी घरि आवीया राम सीता बहुमान ॥ ६ ॥
सीता डोहलउ पूरीयो परम सम्भवी तेह।
सुख भोगवइ संसार ना राम सीता सुसनेह ॥ १० ॥

एहवइ सीता नारि नी, फुरकी जिमणी आखि ।
कहिवा लागी कंतनइं, मुख नीसासा नांखि ॥ ११ ॥
कहइं प्रीतम ए पाडुई, असुभ जणावइ एह ।
एह उपद्रव जिम टलइ, करि उपचार तु तेह ॥ १२ ॥
तीर्थस्नान करि दान दे, भजि भगवंत अभिधान[1] ।
सीता सगलो ते कियो, पणि ते करम प्रधान ॥ १३ ॥
अस्त्री माहे ऊछली, एहवी सगलइ वात ।
पूर्वकर्म प्रेरी थकी, सीता नी दिन-राति ॥ १४ ॥

ढाल १

॥ राग मारुणी ॥

अमां म्हांकी चित्रालकी जोइ । अमां म्हांको ।
मारुइ मइवासी को साद सुहामणो रे लो ॥ ए गीत नी ढाल ॥

सहिया मोरी सुणि सीता नी वात । सहिया मोरी ।
आपणडइं घरि रावण राजीयइ रे लो ॥ स० ॥
ते कामी कहवाइ ॥ स० ॥
ते पासइ बइठा पणि लोक मइं लाजीयइ रे लो ॥ १ ॥ स० ॥
सीता सतीय कहाइ ॥ स० ॥
पणि रावण भोगव्यां विण सहो मुकइ नही रे लो ॥ स० ॥
भूख्यो भोजन खीर ॥ स० ॥
विण जीम्या छोडइ नही इम जाणउ सही रे लो ॥१॥ स० ॥

१—नउ नाम

स० तिरस्यो न छोडइ नीर ॥ स० ॥
पंडित सुभाषित रसियो किम तजइ रे छो ॥ २ ॥ स० ॥
दरिद्री लाधो निधान ॥ स० ॥
किम छोडइ आपणइ इम वलि नहि संपजइ रे छो ॥ ३ ॥ स० ॥
स० तिण सु निरभय जाणि ॥ स० ॥
भोगवि नइ मुकी परही सीता रावणइ रे छो ॥ स० ॥
रामइ कीधउ अन्याय ॥ स ॥
सीता नइ आपणइ घर माहि आणिनइ रे छो ॥ ४ ॥ स९ ॥
स० लोकां मइ अपवाद ॥ स० ॥
सगलइ ही सीता श्रीरामनो विस्तर्यो रे छो ॥ स० ॥
स० प्रतिहर परिवार ॥ स० ॥
बीहते लोके इम कह्यो तेने मनइ धर्यो रे छो ॥ ५ ॥ स० ॥
स० एक दिवस एक ठामि ॥ स० ॥
नगरी मइ महिला ना टोळ मिल्या घणा र छो ॥ स० ॥
तिहां एक बोली नारि ॥ स० ॥
अस्त्री मइ सबळा पुण्य आज सीता तणा रे छो ॥ ६ ॥ स० ॥
स० देषी नइ दुरलभ ॥ स० ॥
ते रावण राजा सु सीता सुख भोग्यो रे छो ॥ स० ॥
स० सीता सतीय कहाय ॥ स० ॥
ए न घटइ एवडी वात इम बीजी कह्यो रे छो ॥ ७ ॥ स० ॥
एक कहइ वलि एम ॥ स० ॥
अस्त्री नो सील तांलगि कहियइ सावता रे छो ॥ स० ॥

जां लगि कामी कोइ ॥ स० ॥
प्रारथना न करइं वहुपरि समभावतो रे लो ॥ ८ ॥ स० ॥
एहनइ रावणराय ॥ स० ॥
वीनति नव नव वचने वसि कीधी घणु रे लो ॥ स० ॥
राची अस्त्रा रंगि ॥ स० ॥
तन मन धन सगलो आपइ आपणु रे लो ॥ ६ ॥ स० ॥
एक कहइ वलि एम ॥ स० ॥
सीता नइ जाणो तुम्हे जगि सोभागिणी रे लो ॥ स० ॥
नारी सहस अढार ॥ स० ॥
मंदोदरि सारिखी सहु नइ अवगणी रे लो ॥ १० ॥ स० ॥
लंकागढ नो राय ॥ स० ॥
सीता सु लपटाणो राति दिवस रह्यो रे लो ॥ स० ॥
मनवांछित सुख माणि ॥ स० ॥
सीता पणि कीधो सहु जिम रावण कह्यो रे लो ॥ ११ ॥ स० ॥
साचो ते सोभाग ॥ स० ॥
सीलरतन साचइ मन पूरउ पालीयइ रे लो ॥ स० ॥
न करइ वचन विलास ॥ स० ॥
पर पुरुषां संघातइं परचउ टालियइ रे लो ॥ १२ ॥ स० ॥
जुगति कहइं वलि एक ॥ स० ॥
कुसती जउ सीता तउ किम आणी धणी रे लो ॥ स० ॥
कहइ अपरा वलि एम ॥ स० ॥
अभिमानइं आंणी रमणी आपणी रे लो ॥ १३ ॥ स० ॥

कहइ कामिणी वलि काइ ॥ स० ॥
आणीतउ मानी को राम सीता मणी रे लो ॥ स० ॥
कहइ वलि बीजी कोइ ॥ स० ॥
सीता सुं पूरवली प्रीति हुंती घणी रे लो ॥ १४ ॥ स० ॥
जे हुयइ जीवन प्राण ॥ स० ॥
ते मांणस मूंकतां जोव बहइ नहीं रे लो ॥ स० ॥
अपजस सहइ अनेक ॥ स० ॥
प्रेम तणी बाइयइ किम वात किणइ कही रे लो ॥ १५ ॥ स० ॥
एक कहइ हित वात ॥ स० ॥
लोकां मइ अन्याई[1] नृप राम कहीजीयइ रे लो ॥ स० ॥
कुल नइ होइ कलंक ॥ स० ॥
ते रमणी रखी पणि किम राखीयइ रे लो ॥ १६ ॥ स० ॥
इत्यादिक कहइ लोक ॥ स० ॥
पेठइ को पाकइ नहीं अति वाल्ही छुरी रे लो ॥ स० ॥
राम नइ जुगतउ एम ॥ स० ॥
घर मइ थी सीता नइ काढइ बाहिरी रे लो ॥ १७ ॥ स० ॥
सेवके पहुंती वात ॥ स० ॥
नगरी मइ सांभलिनइ राम आगइ कही रे लो ॥ स० ॥
राम थया दिलगीर ॥ स० ॥
पहुंती किम अपजसनी वात आपइ सही रे लो ॥ १८ ॥ स० ॥

१—न्याई ।

अन्य दिवस श्रीराम ॥ स० ॥
नष्ट चरित नगरी मइं रातइं नीसस्या रे लो ॥ स० ॥
किणही फाल्यारि ॥ स० ॥
छाना सा ऊभा रहि कांन ऊंचा धस्या रे लो ॥ १६ ॥ स० ॥
तेहवइं तेहनी नारि ॥ स० ॥
बाहिरथी असूरी आवी ते घरे रे लो ॥ स० ॥
रीस करी भरतार ॥ स० ॥
अस्त्रीनइ गाली दे ऊठ्यउ बहुपरे रे लो ॥ २० ॥ स० ॥
रे रे निरलज नारि ॥ स० ॥
तु इतरी वेला लगि बाहिर किम रही रे लो ॥ स० ॥
पइंसिवा नहि घु माहि ॥ स० ॥
हु नहिं छु राम सरिखउ तु जाणे सही रे लो ॥ २१ ॥ स० ॥
सुणि कुवचन श्रीराम ॥ स० ॥
चिंतविवा लागा मुझ देखोयें मेहणो रे लो ॥ स० ॥
खत ऊपरि जिम खार ॥ स० ॥
दुखमाहे दुख लागो राम नइ अति घणो रे लो ॥ २२ ॥ स० ॥
राम विचास्यो एम ॥ स० ॥
अपजस किम लोका मांहि एहवउ ऊछल्यो रे लो ॥ स० ॥
सीता एहवी होइ ॥ स० ॥
सहु कोई बोलइ लोक कुजस टोले मिल्यो रे लो ॥२३ ॥ स० ॥
पर घर भजा लोक ॥ स० ॥
गुण छोडी अवगुण एक बोलइं पारका रे लो ॥ स० ॥

भाउणि महदउ मुंकि ॥ स० ॥
आवी नइ पूछा देखाडइ असारका रे को ॥ २४ ॥ स० ॥
ते को नहीय उपाय ॥ स० ॥
दुसमण नउ किणही परि चित्त रंजीजीयइ रे को ॥ स० ॥
सुरिज पणि न सुहाइ ॥ स० ॥
पुण्य नइ रातई केही परि कीजीयइ रे को ॥ २५ ॥ स० ॥
सींच नो पाळण आगि ॥ स० ॥
तापस नो पणि पाळण ताढी छाहडी रे को ॥ स० ॥
तरस नो पाळण नीर ॥ स० ॥
आपस ना अवेसास पाळण बांहडी रे को ॥ २६ ॥ स० ॥
सहु ना पाळण एम ॥ स० ॥
पणि दुरजण ना मुखनो पाळन को नही रे को ॥ स० ॥
साचउ साचइ[1] झूठ ॥ स० ॥
मइ मइओ माहरो कुळ वंस किमो सही रे को ॥ २७ ॥ स० ॥
कुवस कर्ळक्यो आप ॥ स० ॥
अकीर्ताई सीता नइ छोडु तउ भली रे को ॥ स ॥
इम चिंतवतां राम ॥ स ॥
इण अवसरि आम्या तिहां लखमण मन रली रे को ॥ २८ ॥ स० ॥
चिंतातुर श्रीराम ॥ स० ॥
देखीनइ दुख कारण लखमण पूछीयइ रे को ॥ स० ॥

१—भावइ।

तुम्ह सरिखा पणिसूर ॥ स० ॥

सोचा नइं चिंता करि मुख विलखो कियो रे लो ॥ २६ ॥ स० ॥

कहिवा सरिखउ होइ ॥ स० ॥

तउ मुझनइं परमारथ बाधव दाखीयइ रे लो ॥ स० ॥

राम कहइ सुणि वीर ॥ स० ॥

तेस्यु छइ जे तुम्ह थी छानो राखियइ रे लो ॥ ३० ॥ स० ॥

लोग तणउ अपवाद ॥ स० स० ॥

सीतानो सगली वात ते रामउ कही रे लो । स०

रावण लंपट राय ॥ स० स० ॥

सीता तिहां सीलवंती कहि ते किम रही रे लो ॥ ३१ ॥

एहवी साभलि वात ॥ स० स० ॥

कोपातुर लखमण कहइ लोको सांभलो रे लो । स० ।

सीता नउ अपवाद ॥ स० स० ॥

जे कहिस्यइ तेहनउ हुं मारि त्रोडिसी तलो रे लो ॥३२॥ स०

राम कहइ सुणि वच्छ ॥ स० स० ॥

लोकां ना मुहडा तउ बोक समा कह्या रे लो । स० ।

किम बुदीजइ तेह ॥ स० स० ॥

कुवचन पणि लोकां ना किम जायइं सह्या रे लो ॥३३॥ स०

सुणउ लखमण कहइ राम ॥ स० स० ॥

झख मारइ नगरी ना लोक अभागियो रे लो । स० ।

साचउ सीता सील ॥ स० स०॥

ए वात नउ परमेसर थास्यइ साखियो रे लो ॥ ३४॥ स०

जस पणि वात छइ एम ॥ स० स० ॥
तउ पणि विण छोड़या मुझ अपजस नूतरइ रे लो । स० ।
इण परि चित्त विचारि ॥ स० स० ॥
वात सहु न्याई राम मुणिज्यो जे करइ रे लो ॥१५॥
पहिली ढाल रसाल ॥ स० स० ॥
सांभलतां सुणतां मन हीयडइ गहगहइ रे लो । स० ।
कीधा करम कठोर ॥ स० स० ॥
विण वेयां छूटइ इम समयसुंदर कहइ रे लो ॥ १६ ॥ स०
सर्वगाथा ॥१०॥

दूहा २६

लखमण तउ पाछा वल्या, पणि म रह्या श्रीराम ।
सुरत बोलायउ सारथी वचन कहइ सुख माम ॥१॥
रे रे मुणि तुं सारथी सीता बहिलि बइसारि ।
छोडि आवि तुं परबत अटवी अंधाकार ॥२॥
लोक मांहि तुं इम कहे डोहला पूरण काजि ।
तीरथनी जात्रा भणी ले आव्यउ आज ॥३॥
राम वचन मांनी करी, सारथि सीता पासि ।
आवी नइ इम वीनवइ, देवि सुणउ अरदास ॥४॥
मुझ आदेश दियउ इसो श्रीरामइ सुणि मात ।
सीता डोहलो पूरि तूं तीरथ जात्र सुहात ॥५॥
रथ बइसउ तुम्हे मातजी, सीता गुणि नवकार ।
रथ बइसी चाली तुरत छे अरिहंत आधार ॥६॥

सारथि थयउ उतावलो, खेड्यो पवन नइ वेगि।
सीता समझि पडइ नहीं, पणि मन मइं उद्वेग ॥७॥

आगइ जातां देखीयो, सूका रूंख नी डालि।
कालउ काग करुंकतो, पांख बे ऊँची वालि ॥८॥

नारी वलि निरखी तिहा, करति कोडि विलाप।
रवि साम्ही ऊभी रही, छूटे केस कलाप ॥९॥

फेकारी पणि बोलती, सुणि सीतायइं कानि।
अशुभ जणावइ अपशकुन, निरती वाद निदान ॥१०॥

भवितव्यता टलिस्यइ नहीं, किसी करुं हिव सोच।
गाम नगर गिरि निरखती, चली चित्त संकोच ॥११॥

पहुती सीता अनुक्रमइ, अटवी मांहि उदास।
अंब कदंबक आंबिली, ऊँचा ताल आकास ॥१२॥

चांपउ मरुयउ केवडउ, कुंद अनइ मचकुंद।
खयर खजूरी नारियल, बकुल अनइ अरविंद ॥१३॥

भार अढार वनस्पति, गुहिर गभीर कराल।
सीह बाघ नइ चीतरा, भीषण शबद भयाल ॥१४॥

एहवी अटवी देखती, कहइ सारथि नइं एम।
किम आंणी मुझ एकली, राम न दीसइं केम ॥१५॥

नहिं पूछइ परिवार को, ए कुण बात विचार।
कहइ सारथि पूठइ थकी, आविस्यइ तुझ परिवार ॥१६॥

मत पिता करइ मातजी, इणि परि धीरप देइ।
नदी छोडि पइसइ तटइ, गयो सीत नइ लेइ ॥१७॥
रथ थी उतारी करी, कहइ सारथि कर जोडि।
आंखें आंसू नाखतो, बइसि इहां रथ छोडि ॥१८॥
हीन भाग्य सीता निसुणि वात किसी कहुं तुज्झ।
रामचंद्र रुठइ थकइ, हुकम कीयो ए मुज्झ ॥१९॥
सीता नइ तुं छांडिजो, अटवी दंडाकार।
सीता एह वचन सुण्यो, लागो वज्र प्रहार ॥२०॥
मुरछागत धरणी पड़ी वलि खिण थई सचेत।
कहि रे सारथि मुज्झ नइ इहां आणी किण हेत ॥२१॥
कहि रे अयोध्या केतलइ कई नइ आपु साथ।
सारथि कहइ अछगी रही राम नी विरुई वात ॥२२॥
राम कृतांत बिमइ सुण्यो म सुयइ सामहउ तुज्झ।
कठिन करम आया उदय तुं छोडी वन मज्झि ॥२३॥
हुं निरदय हुं पापीयो, जे, करु एहवो काम।
कीधा विण पणि किम सरइ सामि रीसायइ राम ॥२४॥
चाकर कूकर सारिखा, धिग ए सेवा वृत्ति।
सामि हुकम मारइ सजण बाप मई बांधव मित्ति ॥२५॥
सीता छोडी रांन मइ सारथि पाछउ जाइ।
विरह विलाप सीता किया ते केतला कहवाय ॥२६॥

सर्वगाथा ॥७४॥

ढाल बीजी

॥ राग मारुणी ॥

झांखर दीवा न वलइ रे कालरि कमल न होइ।
छोरि मूरिख मेरी वांहडिया, मींया जोरइंजी प्रीति न जोइ।
कन्हइया वे यार लवासिया, जोवन जासिया वे, वहुर न आसिया।
ए गीतनी ढाल। ए गीत सिंध माहे प्रसिद्ध छइ।

सीता विलाप इसा करइ रे, रोती रान मझारि।
विण अपराध का वालहा, मुँनइ छोडी डडाकार ॥१॥
पियारा हो वाल्हेसर रामजी, इम किम कीजयइ हो,
छेह न दीजयइ ॥ आकणी ॥
हा वल्लभ हा नाहला रे, हा राघव कुलचंद।
मुझ अबला नइ एवडउ, तइ का दीधउ दुखदंद ॥२॥ पि०
विण पति विण परिवार हुँ रे, किम रहुँ अटवी मांहि।
कुण सरणो मुझ नइं हिवइ रे, जा रे जीवित जाहि ॥३॥ पि०
सावासि लखमण तुझ नइ रे, कां तइ उपेक्षा कीध।
तु माहरो सील जाणतो कां, राम नइं हटकि न लीध ॥४॥ पि०
भउजाई नइं वालहो रे, देउर हासा ठाम।
तुझ सु पणि कहि मइं कदे रे, हासो कीधो सकाम ॥५॥ पि०
हे तात तइं राखी नहीं रे, हे भामडल भाइ।
सासरइ पहिड्यइ पावरी रे, अस्त्री पीहरि जाइ ॥६॥ पि०
तउ पणि तात राखो नहीं रे, नाण्यो पुत्री सनेह।
पहिड्यां पीहर सासरा रे, मुझ संकट पड्यो एह ॥७॥ पि०

स्नेह भंग कीधउ नहीं रे, अविनय न कीयउ कोइ ।
सरदहनै मत सुंदरणइ, पियु सील खण्या पणि होइ ॥८॥ पि०
अथवा कंत तुम्हे कहे रे, विण अविचार्यो काज ।
कीधो नहिं पणि माहरा के पाप प्रगट थया आज ॥६॥पि०॥
अथवा मइ भवि पाछिलइ रे, व्रत भांगा थिर पाखि ।
रतन उदाल्यो केहनउ के मां थो विछोह्या बाल ॥१०॥पि०॥
अथवा किणही साध नइ रे दीधो कुडउ आल ।
अस्त्री नइ भरतारसु मइ, पाड्या विछोहउ विचाल ॥११॥पि०॥
एहवा पाप कीधा घणारे, तिण ए आवरया आय ।
नहिं तरि मुझनइ बालहउ किम, छोडइ विण अपराध ॥१२॥पि०॥
अथवा दोस देऊं किसा रे, नहिं छइ केहनो दोस ।
दोस छइ माहरा कम्म नो, हिव रांम सु केहो रोस ॥१३॥पि०॥
कीधा करम न छूटीयइ रे, विण भोगव्या कदेय ।
तीर्थंकर चक्रवर्ति पणि सहु भोगवि छूटा तेय ॥१४॥पि०॥
सुख दुख केहनइ को न थाइ रे छइ आपना किया कर्म ।
दोस नहीं हिव केहनो रे पाव तणो ए मर्म ॥१५॥पि०॥
धन धन नारी ते भली रे तेहनो जनम प्रमाण ।
बालपणइ सयम लीयो जिण छोड्या प्रेम बधाण ॥१६॥पि०॥
प्रेम कारम मूता नहीं रे, विषय थकी मन वालि ।
काज समारयों आपणां रे, तेहनइ वांदु त्रिकाल ॥१७॥पि०॥
इम विलाप करतो थकी रे सीता रांम सभार ।
तिहां बीहती थकी रही र समरती नउकार ॥१८॥पि०॥

पुंडरीकपुर राजीयो रे, वज्रजंघ जसु नाम।
गज झालण तिहां आवियो रे, तसु नर आया तिण ठाम ॥१६॥पि०॥
तिण दीठी रोती तिहा रे, सीता दुखिणी नारि।
पणि रूपइ अति रूयडी रे, झरंती लावण्य धार ॥२०॥पि०॥
देखी सीता ते चिंतवइ, किं इंद्राणी एह।
किंवा पाताल सुन्दरी रे, किंवा अपछर तेह ॥२१॥ पि०॥
किंवा कंद्रप नी प्रिया रे, अचरजि थयो अपार।
जई राजा नइं वीनव्यो रे, सीता सकल प्रकार ॥२२॥पि०॥
सुणि राजा चाल्यो तिहा रे, सबद सुण्यो आसन्न।
कहइ राजा काईक छइ रे, एतो नारि रतन्न ॥२३॥पि०॥
राजा नी अतेउरी रे, गर्भवती छइ काइ।
स्वर लक्षण करि अटकली रे, किणि कारण इहा आइ ॥२४॥पि०॥
इम कहिनइं नृप मूकिया रे, निज नर सीता अति।
ते देखी नर आवता रे, सीता थई भयभ्रंति ॥२५॥पि०॥
थरहर लागी कापिवा रे, आभ्रण दूरि उतारि।
मत छिवजो मुझ नारि नइं रे, इम कहइ सीता नारि ॥२६॥पि०॥
ते कहइ आभ्रण को न लयइ रे, नहिं को केहनइ काम।
अम्हनइं वज्रजंघ मुकिया रे, कुण ए किम इण ठाम ॥२७॥पि०॥
कुण तुं केहनी कामिनी रे, किम एकली रही ऐथि।
इम पूछतां आवियो रे, वज्रजंघ पणि तेथि ॥२८॥पि०॥
देखी विसमय पामीयो रे, ऐ ऐ रूप अपार।
हा हा किम ए कामिनी रे, दुखिणी एण प्रकार ॥२६॥पि०॥

कहइ राजा जे पापीयो रे अस्त्री पइ रवन्न ।
इहां मुकीनइ घरे गयो रे वज्रमय तेहनो मन्न ॥३०॥पि०॥
राजा बहसी पूछीया रे, किण छोडी इण ठाम ।
तई अपराध किसो कियो रे, कहि आपणो तुं नाम ॥३१॥पि०॥
सोकातुर बोलइ नहीं रे, सीता नारि सिंगार ।
मतिसागर प्रधानो कहइ रे, सुणि सुंदरि सुविचार ॥३२॥ पि०॥
सोक मुंकि तु सवथा रे, ए संसार असार ।
खिणभगुर ए भाव छइ रे जीवित अथिर अपार ॥३३॥पि०॥
छलमी पणि चंचल घणु रे जाणे गग तरंग ।
भोग संयोग ते सुहणो रे, विहडइ प्रीतम संग ॥३४॥पि०॥
भव मांहे ममता थका रे, केहनइ दुख न होइ ।
केहनइ रोग न ऊपजइ रे वाल्हउ विहडइ सोइ ॥३५॥पि ॥
सुख दुख सउ नइ सरिखा रे, म करि तु दुख सिगार ।
धीरपणो मन मइ धरी रे, योछि तु बोल विचार ॥३६॥पि०॥
सामी एह छइ माहरो रे, वज्रजंघ जसु नाम ।
पुंडरीकपुर राजीयो रे, जिन धरमी अभिराम । ३७॥पि०॥
पर उपगार सिरोमणी रे महाभाग दातार ।
दृढ समकित धर दृढमती रे अति उत्तम आचार ॥३८॥पि०॥
ए अति उत्तम साहमी रे, साहमीवच्छल एह ।
एहनी संगति तुम्हनइ रे, थासियइ दुखु तउ छेह ॥३९॥पि०॥
स भणी एहसुं बोलि तु रे, कहि अपणी तु बात ।
इम मत्री समझावता रे सीता ऊपमी सात ॥४०॥पि०॥

साहमी सवद सुणी करी रे, हरपी हीयडइ मुज्झ।
कर जोडी सीता कहइ रे, साहमी वंदना तुज्झ ॥४१॥पि०॥

सीता वात सहु कही रे, अपनी आमूल चूल।
जिम रावण गयो अपहरी रे, राम हुवो प्रतिकूल ॥४२॥पि०॥

सउकि लोक अपजस सुणी रे, राम मुकी वनवास।
वात कहइ रोती थकी रे, नाखंती नीसास ॥४३॥पि०॥

वात सुणी सीता तणी रे, वज्रजघ कहइ एह।
हे रमणी तुं रोइ मां रे, कारिमो कुटम सनेह ॥४४॥पि०॥

कहि संसारमइ कुण सुखी रे, नारिकि ना दुख होइ।
कुभीपाक पचावणो रे, ताडना तर्जना जोइ ॥४५ ॥पि०॥

तिरजच दुख सहइ वापडा रे, भूख त्रिपा सी ताप।
भार वहइ परिवस पड्या रे, करता कोडि विलाप ॥४६॥पि०॥

देवता पणि दुखिया कह्या रे, विरह वियोग विकार।
एक एकनी अस्त्री हरइ रे, मुहकम मारामारि ॥४७॥पि०॥

मनुष्यतणी गति मइं कह्या रे, विरह वियोग ना दुक्ख।
जनम मरण वेदन जरा रे, ताडन तर्जन तिक्ख ॥४८॥पि०॥

आप थकी तुं जोइनइं रे, सुख दुख हुयइ जग माहि।
भव वन महि भमता थका रे, कदि तावड कदि छाह ॥४९॥पि०॥

ए संसार सरूप छइ रे, जाणिनइं तुं जीव वालि।
धरम बहिनि तुं माहरइ रे, सील सधइ मनि पालि ॥५०॥पि०॥

चालि नगर तु माहरइ रे, हुकम बकउच देहि।
विनभ्रम करि बइठी थकी रे, मरमवनो फल लेहि ॥५१॥पि०॥
पक्षइ करे तु ताहरइ रे, जे मनि मानइ तेह।
सीता बांधव आणि मइ रे इम बोलइ सुसनेह ॥५२॥पि०॥
हे बांधव तुं माहरउ रे, मइ तुम्ह सरणो कीध।
वज्रजंघ नृप पालखी रे तुरत मंगावी दीध ॥५३॥पि०॥
पइसारो सबलो करी रे, पुंडरीकपुर माहि।
सीता आणी आवासमइ रे, मंगल अधिक उछाह ॥५४॥पि०॥
बीजी ढाल पूरी थई रे आठमा खंडनी एह।
समयसुन्दर कहि कारिमो रे, अस्त्री पुरुष नो नेह ॥५५॥पि०॥

सर्वगाथा ॥ १११ ॥

दूहा १५

नगर लोके सीता तणो, देखी रूप उदार।
अचरजि पामी चित्त मइ बोलइ विविध प्रकार ॥१॥
के कहइ गुण अवगुण तणों भेद न जाणइ राम।
दुरलभ देवां नइ जिका ते सीता तजी आम ॥२॥
पुण्यहीन पामी थकी भोगवि न सकइ ऋद्धि।
रतन रहइ किहांयी घरे, आभरणहार अलद्धि ॥३॥
के कहइ अस्त्री पदवो रे रे दैव सुजेह।
जउ थइ मान्यो रूप तो तो सीता सरिखो देह ॥४॥
दूषण संभावीजतो नहि कइ इण मइ कोइ।
पिण दुसमण किणही दीयो आल इसो चित्र जोइ ॥५॥

वज्रजंघ राजा घणो, दीधो आदर मान।
स्नान मज्जन भोजन भला, सतोपी सुविधान ॥६॥

महुल दीयो रहिवा भणी, धण कण रिद्धि समृद्धि।
दासी दास दीया घणा, रहइ तिहा सुप्रसिद्ध ॥७॥

भाग्यवंत जायइ जिहा, रान वेलाउल तेथि।
पुण्य किया पहडइ नही, सुख लहइ सीता एथि ॥८॥

हिव कृतात मुख सारथी, सीता नइं वन छोडि।
रामचंद आगइ कही, वात सहू कर जोडि ॥९॥

नदी लाघि जिम ऊतरया, जिम छोडी वन माहि।
जिम मुरछांणी जिम थई, वली सचेत निरुछाह ॥१०॥

रोती मृग रोवरावीया, वलि तुम्ह नइ कह्यो एम ॥
सीता ना मुखथी कहु, भूठ कहुं तो नेम ॥११॥

जेम परीक्षा विण कीयां, मुम्ह नइ छोडी रत्न।
तिम मत छोडे कंत तुं, श्री जिन धरम रतन्न ॥१२॥

वलि अपराध अजाणती, मइं कोइ कीधो होइ।
मिलियइ कइ मिलियइ नही, प्रीतम खमिजो सोइ ॥१३॥

रामचंद इम साभली, सीता तणा वचन्न।
गुण ग्रहतो गहिलो थयो, रामचंद नो मन्न ॥१४॥

वज्राहत धरणी पड्यो, मूर्छागत थयो राम।
विरह विलाप करइ घणा, थयो सचेतन जाम ॥१५॥

सर्वगाथा ॥१४६॥

ढाल त्रीजी

॥ नोखा रा गीत नी जाति ॥

मारवाड़, ढूंढाड़ मइ प्रसिद्ध छइ

राग—मल्हार

हा चंद्रवदनी हा मृगलोयणी, हा गोरी गजगेलि।
चतुर सुजाण रे सीता नारि, कनक कमल जिसा ॥
पयोधर जुग जिसा हा। मनमोहनि वेलि ॥१॥
चतुर सुजाण रे सीता नारि, महल पधारो रे सी०।
विरह निवारो रे सी०।
निसि सुखनींद नावइ दिवसइ अन्न न भावइ।
तु मुझ जीवन प्राण ॥च०। सी०।
केसरि कटि लंकाळी कामिनी वचन सुधारस रेलि। च०।
अपछर साक्षात पद मोहन सुं सुसनेह ॥ च०
गुण ताहरा चीतारु केता हाकति चाकति केलि ॥२॥ च०
प्रियभाषिणी प्रीतम गुणरागिणी, सुभद्र घणु सुविनीत। च०
नाटक गीत विनोद सहु मुझ तुझविण नावइ चीत ॥३॥ च०
सपने रंभा विलासी गृहकाम काज दासी माता जविहइ नेह।
मंत्रिणी बुद्धि निधान।
धरित्री क्षमा निधान सकल कला गुण गेह ॥४॥ च०
गुण ताहरा चीतारु केता तुझ सम नहि को संसारि। च०
हा हुं हिव कहउ कवि देखिसि सीता मुख सुखकार ॥५॥ च
अस्त्रीरतन बिहा रहइ माहरइ हा हा हुं पुण्यहीन। च
तुझ विण सूनो राज अम्हारो वचन कहइ मुख दीन ॥६॥ च०

धिग-धिग मूढ सिरोमणि हु थयो, दुख तणी महाखाणि । च०
दुरजण लोके तणे दुरवचने, हुई हासी वरि हाणि ॥७॥ च०
हा हा रतन पड्यो हाथा थी, किम लाभइं कहउ एह । च०
जे नर लोक तणइं कहइं लागइं, हाथ घसइ पछइ तेह ॥८॥ च०
ते रूप ते सील ते गति ते मति, ते विनय विवेक विचार । च०
सीता माँहि जिके गुण दीठा, ते नहीं किहा निरधार ॥९॥ च०
कदि जीवती सीता नइ देखिसि, धन वेला घडी साइ । च०
किम एकली रहती हुस्यइ रन मइ, कोइ जीव नाखिस्यइ खाइ ॥१०॥च०
स्वापद जीव थकी जो जीवति, छूटिस्यइ सीता नारि । च०
तो पणि माहरो विरह मारिस्यइ, जीविस्यइ केण प्रकारि ॥११॥च०
इम विलाप करता तिहा आयो, लखमण राम नइं पासि ।
दुखु म करि धरि धीरप बांधव, सुणि मोरी अरदास ॥१२॥ च०
जिण जीवनै सरिज्यो हुयइ जे दुख, ते दुख तेहनइ होइ । च०
छट्ठी राति लिख्या जे अक्षर, कुण मिटावइ सोइ ॥१३॥ च०
इण परि अति समझाव्यो लखमण, अलप सोग थयो राम ।
नगरी दुखु करइ सीता नइं, समरि समरि गुण ग्राम ॥१४॥ च०
फिट-फिट देव विधाता तुझ नइं, कुण कीधो ए काम । च०
का तइं कष्ट सती सीता नइं, इवडो दीधो आम ॥१५॥ च०
नगर माहि अस्त्री नो मंडण, रूप सील अभिराम । च०
सीता एक हुती ते काढी, कुण कीधो तइ काम ॥१६॥ च०
नगरी लोक निषेध्या सगला, गीत विनोद प्रभूत । च०
राम कहइ लखमण करो सगलो, सीता प्रेत कतूत ॥१७॥ च०

वेष पूछो मुनिवर नइ वांदो, सोग मूँको परहो आज। च०
सीता गुण समरंतउ बरतइ, रामचंद करइ राज ॥१८॥ च०
कितरेके दिवसे पछ्यो ओछो, सीता ऊपरि राग।
पांच दिवस हुवइ प्रेम नो रणको पछइ दरसण लगि लाग ॥१९॥ च०
त्रीजी ढाल पूरी थई इणरइ आठमा खंड नी एह। च०
समयसुंदर कहइ ते सुख पामइ, जे करइ अधिक सनेह ॥२०॥ च०
सर्वगाथा ॥१९९॥

दूहा २३

वज्रजंघ राजा घरे, रहती सीता नारि।
गर्भलिंग परगट थया, पांडुर गाल¹ प्रकार ॥१॥
थण मुखि श्याम पणो थयो, गुरु नितंब गति मंद।
नयन सनेहाला थया, मुखि अमृत रस बिंद ॥२॥
सुपन भला देखइ सदा, पेखइ पंजर सींह।
गर्भ प्रभावइ ऊपजइ, सुभ डोहला सुदीह ॥३॥
पूरे मासे जनमिया पुत्र युगल अति सार।
वेली देवकुमरि जिसा हरखी सीता नारि ॥४॥
वज्रजंघ राजा किया वधावणा प्रगट्ट।
वडव महोच्छव अति घणा, गीत गान गहगट्ट ॥५॥
सहु कुटंब संतोषीयो भोजन भगति जुगत्ति।
सणगार वसुठण तिहां राजा यथा सकत्ति ॥६॥

१—गालमी। २—भाल।

अनंगलवण एहवो दीयो, प्रथम पुत्रना नाम
मदनांकुस वीजा तणो, नाम दीयो अभिराम ।।७।।
माता माथइं मुकिया, सरसव रक्षा काजि ।
सुखइ समाधि वधइ तिहा, वे भाई बहु साजि ।।८।।
इण अवसरि तिहा आवीयो, विद्या वल सपन्न ।
नाम सिद्धारथ जोतिपी, खुल्लक अति सुप्रसन्न ।।९।।
तीरथ चैत्य जुहार नइं, आवइ निज आवास ।
खिण माहे साधक खरउ, ते ऊडइ आकास ।।१०।।
ते आयो भिक्षा भणी, सीता मंदिर माहि ।
करि प्रणाम पडिलाभियो, आणी अधिक उछाह ।।११।।
भली परइठ भोजन कियो, खुसी थयो सुविशेप ।
सीतानइं पूछइ इसुँ, वेटा वेउं देखि ।।१२।।
कहि वालक ए केहना, कहइ सीता विरतांत ।
आँखे सांसू नाखती, जिम छोडी निज कात ।।१३।।
म करि दुखु खुल्लक[1] कहइ, बखतवंत ए पुत्र ।
तु पणि सुख पामिसि सही, सगलो हुस्यइ ससुत्र ।।१४।।
जाण प्रवीण कुमर थया, बहुत्तरि कला निधान ।
सूरवीर अति साहसी, सुदर रूप जुवान ।।१५।।
वज्रजंघ राजेन्द्र पणि, निज कन्या सुजगीस ।
दीधी लवणांकुस भणी, ससिचूलादि बत्रीसि ।।१६।।

१—लिगार तु ।

मदनांकुस पाणिग्रहण, मकरो करण निमित्त।
मुंकयो दूत उतावलो, पृथिवीपुर सपत्त ॥१७॥
पृथु राजा तिहां राजीयो, कनकमाला तसु धूय।
वज्रजंघ मांगइ नृपति, अंकुस नइ कइइ दूय ॥१८॥
वचन सुणी राज्या कुल्यो, कहइ सांभलि रे दूत।
कुल अगन्यात नइ कुण दियइ, निज कन्या रजपूत ॥१९॥
तुम्ह मइ इम कहतइ मकई, जीभ छेदण नो दंड।
पणि अवध्य कह्या दूत नर, पहवी नीत अखंड ॥२०॥
पोठइ मारगि घा परो कहि सामी नइ जाइ।
पृथु पुत्री आपइ नहीं, करि तुम्ह थी जे थाय ॥२१॥
वज्रजंघ राजा भणी, कह्यो दूत विरतांत।
आगउ तेहना देस नइ, लूण मणी अभ्रांत ॥२२॥
सुणी देस निज भांजतो, मुंकयो वज्ररथ राय।
वज्रजंघ ते बांधीयो बिढवो साम्हो धाय ॥२३॥

सर्वगाथा ॥१५८॥

ढाल ४

चउपई नी

पृथु राजा साममी मेलि रण निमित्त चाल्यो तिण वेलि।
वज्रजंघ सुत तेडावीया, ते पणि तुरत उठी धावीया ॥१॥
रण निमित्त मच्छराबी भरि, सुभट मिल्या सब चिहुं दिसि घेरि।
लवण अंकुस पणि माल्या माथि सूरवीर नहीं किण ही रह हाथि ॥२॥

१—देव। २—पंथ

कहइ मात बालक छो तुम्हे, तुम्ह आधार वइठां छा अम्हे।
चउकडिया गाडा नो भार, वछडा किम निरवहइ निरधार ॥३॥
तिण कारण तुम्हे वइठा रहउ, मातो नो जीवित निरवहउ।
कहइ पुत्र तूं बोलइ किसु, एहवु वचन दयामणि जिसुं[1] ॥४॥
वडा लहुडा नो किसो विचार, लहुडा पणि करइं काज अपार।
अंकुस लघु पणि गज वसि करइ, लहुडउ वज्र पणि गिरि अपहरइ ॥५॥
दीवउ लहुडो पणि तम हरउ, साप भ्रुवइ तो माणस मरउ।
गज भाजउ हरि नो छावडो, तेज प्रताप वडो देवडो ॥६॥
पुत्र तणी सुणि एहवी वात, आसीस दीधी पुत्र नउं मात।
करि संग्राम नउं जस पामिज्यो, कुसले खेमे घेरि आविज्यो ॥७॥
कुमरे स्नान मज्जन सहु कीया, भोजन करि आभ्रण पहिरीया।
जरह जोन नइ सिरि ऊपरि टोप, रण चढता रो बाध्यो कोप ॥८॥
माता नइं कीधो परणाम, लीधो सिद्धि तणो वलि नाम।
रथ ऊपरि बइठा ते सूर, वजडाया चढता रण तूर ॥९॥
दिवस अढी ना चाल्या गया, वज्रजंघ नइं भेला थया।
अणीए अणी कटक बे मिल्या, माहोमाहि सुभट ऊछल्या ॥१०॥
सबल थयो भारथ सग्राम, तेह मइ वर्णव्यो घणी हि ठाम।
त्रुटि पड्या लव अंकुस बेइ, सत्रु सु सबलो वेढि करेइ ॥११॥
सिहनाद नासइ गज घटा, तिम नाठा वयरी उतकटा।
अज्ञात वंस बल देखी रही, कुमर कहइ का जावउ वही ॥१२॥

१—इसु।

सकल कटक भागो देखियो, कुमर पराक्रम थी चमकीयो ।
पृथु राजा आवी नइ मिलियो, सहु संताप हिव अलगो टलियो ॥१३॥
निज अपराध खमावइ राय प्रौढ़ पराक्रम वंस कहाय ।
उत्तम कुलि उपन्ना तुम्हे ए वात जाणी निश्चय अम्हे ॥१४॥
वज्रजंघ नइ पृथु राजान, माहोमांहि मिल्या बहु मान ।
एहवइ नारद रिषि आवियो, सगलांही नइ मनि भावियो ॥१५॥
वज्रजंघ पूछी उत्पत्ति, कुमर तणी नारद कहइ झत्ति ।
सूरिज वंसी एह कुमार सीता राम तणो अवतार ॥१६॥
निकलंक सीता नइ आल, लोके दीधो थयो भजाल ।
अपजस राखण भणी अपार, रामइ मुंकी उजाकार ॥१७॥
एहवा कुमर तणा अवदात सहु हरखित थई नइ कहइ वात ।
सीहणि ना सीह एहवा होइ जुगत पराक्रम एहनो जोइ ॥१८॥
रिषि नइ पूछयो कुमर हजूरि, नगरी अयोध्या केती दूरि ।
सो जोयण छे इहां थी होइ कहइ नारद जाणइ सहु कोइ ॥१९॥
जिहां तुम्ह पिता रहइ श्रीराम काको लखमण पणि तिण ठाम ।
कुमर वात सुणी कोपीया जाणिज बाप तणा लोपीया ॥२०॥
मात अम्हारी छोडी राम कुण अजुगत कीधो इण काम ।
वज्रजंघ सुणो वीनती इम कहइ सज्ज थाओ अम्ह वती ॥२१॥
नगर अयोध्या जास्यां अम्हे भरत अम्हारी करिज्यो तुम्हे ।
तुरत करी नइ लेस्यां नयर, आगमो को लोपइ नहीं वयर ॥ २२ ॥
वज्रजंघ कहइ प्रस्तावि सर्व हुस्यइ सुसतो समभावि ।
एहवइ पृथु पुत्री आपणी कनकमाला दीधी कुस भणी ॥ २३ ॥

१—सम संसदइ समाधि ।

परणावी आडम्बर घणइं, केइक दिवस रह्या सुखपणइं ।
इहांथी चाल्या कुमर अबीह, साहसीक सादूला सीह ॥ २४ ॥
देस प्रदेस तणा राजान, हटकि मनावी अपणी आण ।
गंगा सिंधु नदी ऊतरी, साध्या देस दिसोदिस फिरी ॥ २५ ॥
कासमीर काबलि खंधार, गिरि कैलास तणा वसणार ।
जवन सबर बब्बर सकराय, सहु साध्या वज्रजंघ सहाय ॥ २६ ॥
सगले ठामे जय पामीया, कुसले खेमे घरि आवीया ।
पइसारो कीधो परगट्ट, नगर माहि थया गहगट्ट ॥ २७ ॥
माता नइं कीधो परणाम, हीयडइ माता भीड्या ताम ।
पाछली सगली पूछी वात, वज्रजंघ कह्या अवदात ॥ २८ ॥
हय गय रथ पायक परवार, तेह तणो लाभइ नहिं पार ।
राजा चाकरी करइ हजूर, कुस लव केरो प्रबल प्रडूर ॥ २९ ॥
रूपवंत नइं रलियामणा, कुस लव बेऊं सोहामणा ।
राज रिद्धि गई अतिहि वाधि, बे भाई रहइ सुखइ समाधि ॥ ३० ॥
आठमा खंड नी चउथी ढाल, कह्यो कुस लव संबन्ध विचाल ।
समयसुंदर कहइ हुयइ जो पुण्य, राजरिद्धि पामीयइ अगण्य ॥ ३१ ॥

सर्वगाथा ॥२२०॥

दूहा १८

वलि आव्यो नारद तिहां, अन्य दिवस रिषिराय ।
आदर मांन घणो दीयो, कुस लव ऊभे थाय ॥ १ ॥
इम नारद आसीस द्यइ, सीझो वंछित काज ।
लखमण राम तणा तुम्हें, लहिज्यो अविचल राज ॥ २ ॥

कुमर कहइ नारद कहउ, कुण ते लखमण राम।
वली वात कहि पाछिली नगरी नाम नइ ठाम ॥ ३ ॥
कुमर वेउ कोपइ चड्या, करिस्यां रांम सुं वेढि।
छेस्यां वयर माता तणो, रण मइ नाखिस्यां रेढि ॥४॥
वज्रजंघ नइ सहु कह्यो अम्ह आवां छां तेथि।
कहइ वज्रजंघ भय पामि मई वहिला आविज्यो एथि ॥ ५ ॥
तुरत भेरि वजवाइ नइ, कुमर चड्या कोपाल।
हय गय रथ सेना सजी मिल्या सीमाल भूपाल ॥ ६ ॥
आडम्बर सु चालतां सुणि सीता निज वात।
रांमचन्द्र प्रियु गुण समरि मन मइ दुख न मात ॥ ७॥
सीता रोती इम कहइ, अनरथ होस्यइ एह।
सिद्धारथ कहइ भय नहीं गुण ऊपजिस्यइ छेह ॥ ८ ॥
कुमर कहइ माता प्रतइ कां रोवइ हे माय।
दीसइ दीन दयामणी, विलखइ वदन विछाय ॥ ९ ॥
तुमनइ कहि किण दूहवी, अथवा वेदन व्याधि।
अम्हथी अविनय को हुवो, अथवा काई उपाधि ॥ १० ॥
कहइ सीता जे ये कह्या कारण नहिं ते कोइ।
पणि तुम्हो छो बाप सूं प मुझ नइ दुख होइ ॥ ११ ॥
बाप केरा विहु मांहि जे, भाजइ मरइ संग्राम।
जिम तिम दुख मुझ नइ, कुवग पड्यो प काम ॥ १२ ॥
पुत्र कहइ सुणि मातजी म करिसि दुख छिगार।
राम भनइ लखमण प्रतइ, नहिं मार निरधार ॥ १३ ॥

पणि सेना भाजिस सही, करिसि मान नो भंग ।
तुं बइठी आणंद करि, सुणिजे जे करूं जंग ।। १४ ।।
इम माता समझाविनइ, गज ऊपरि चड्या गेठि ।
नगर अयोध्या सामुहा, कुमरे दीधी ठेलि[1] ।। १५ ।।
दस हजार नर विषम सम, धरती करतां जाइ ।
करि कुठार तरु छेदता, पूठइ सेना थाइ ।। १६ ।।
कटक घणो किहा पार नहि, बहुला पडइ बाजार ।
जोयण जोयण अन्तरतरइं[2], थइ मेल्हाण कुमार ।। १७ ।।
नगर अयोध्या ढूकडा, जितरइ गया कुमार ।
तितरइं खबरि किणइ कही, आया कटक अपार ।। १८ ।।

सर्वगाथा ।। २३८।।

ढाल ५

।। राग तिलंग धन्यासिरी ।।

'कोइ पूछो बांमण जोसी रे, हरि को मिलण कदि होसी रे ।। १ ।।
।। एगीतनी ढाल ।।

केइ आया कटक परदेसी रे, राम की अयोध्या लेसी रे ।। १ ।। के०
कोप्यो राम कहइ कोई रे, अकाल मरणहार होई रे ।। २ ।। के०
राम हुकम सेवक नइं दीधो, सिह गरुड वाहन सज कीधो रे ।।३।।के०
सामत भूपाल बोलाया रे, रामचद पासइं मिलि आया रे ।।४।। १०
अति सबल कटक राम पासइ रे, नारद देखी नइ विमासइ रे ।।५।। के०
भामंडल पासइ रिषि जाई रे, सगली युद्ध बात सुणाई रे ।।६।। के०

१—हेलि २—आतरइ ।

जिम रामइ सीता काढी रे बम्भंप सन्तोषी गाढी रे ॥ ७ ॥ के०
जब कुश वे बेटा साया रे, तप तेज प्रताप सवाया रे ॥ ८ ॥ के०
तिण साध्या देस मदेसा रे, पणि माता ना मनि अंदेसा रे ॥ ६ ॥ के०
आपणइ बाप ऊपरि आया रे कल्की करि सामुहा धाया रे ॥१०॥के०
मोटो मत अनरथ थाई रे, समझावइ तिहा कोइ आई रे॥११॥ के०
तुम्हनइ मइ बात बणावी रे तिवइ जुगत कीजइ तिहां आइ रे ॥१२॥
मामण्डल सुणनइ धायो रे, चित माहि अचरज पायो रे ॥ १३ ॥ के०
चल्यउ ते तुरत आकासइ रे, आयो सीता मइ पासइ रे ॥ १४ ॥ के०
बाप बांधव नइ निरखी रे, सीता पणि अति घणुं हरखी रे ॥१५॥
ऊठी मइ साम्ही आवी रे, रोती ते बात जणावी रे ॥ १६ ॥ के०
माता पिता नइ भाई रे कहइ तुम म करि हुँ बाई रे ॥ १७ ॥ के०
तुम अंगज बीपिता जोधइ रे पणि किम राम सुं पहुचइ रे ॥ १७॥ के०
किम मुख सुं जलनिधि तरियै रे आकास अंगुल किम भरियै रे ॥१६॥
मेरुगिरि त्राकडि कुण तोलइ रे, जलनिधि कुण राखइ कचोलइ रे ॥२०॥
चाको आपे तिहां आवो रे, सहु साथ नइ थई समझावो रे ॥२१॥के
सीता मइ विमान बइसारी रे, चाल्यो ते अम्बरचारी रे ॥ २२ ॥ के०
आतां लागी नहि बारी रे, लेई पुत्र नइ पासि बइसारी रे ॥ २३ ॥ के०
जनक राजा वैदेही रे मामंडल सुं ससनेही रे ॥२४॥ के०
सीतादिक सहु को हरख्या रे कुमर मतापी निरख्या रे ॥२५॥ के०
कुमर आदर मांन दीधा रे, सहु को आपणइ पख कीधा रे ॥२६॥ के०
पांचमी ए ढाल मइ भाखी र कहइ सुन्दर ग्रंथ नी साखी रे ॥२७॥के०

सर्वगाथा ॥२६५॥

दूहा ७

एहवइ केसरि रथचड्या, रामचंद रण सूर।
गरुड रथइं लखमण चड्यां, वाजंते रणतूर ॥१॥
विद्याधर वलि वन्हिसिख१, वालिखिल्ल२ वरदत्त३।
सीह्योदर४ सीह विक्रमी, कुलिस६ श्रवण७ हरदत्त८ ॥२॥
सूरभद्र९ विद्रूम१० प्रमुख, पाच सहस झूझार।
सुभट मुगटमणि अति सवल, निज-निज रथ परिवार ॥३॥
पांच सहस ते सुभट सु लखमण नइं श्रीराम।
नगरी वाहिर नीसर्या, मेघ घटा जिम स्याम ॥४॥
ते दल देखी आवतो, लवणांकुस पणि वेउ।
सूरवीर साम्हा थया, सुभट नइं साथइं लेउ ॥५॥
अग१ कलंग२ जलंधरी३, सिंहल नइं४ नेपाल५।
पारस६ मागध७ पाणिपथ८, वब्बरदेस९ भूपाल ॥६॥
इत्यादिक अति सुभट नर, साथइं सहस इग्यार।
अणिए अणि आवी मिला, जुद्ध करइं झूझार ॥७॥

सर्वगाथा ॥२७२॥

ढाल ६

॥ राग खभाइती ॥

"सूवरा तुं सुलताण, वीजा हो। वीजा हो थारा सूवरा ओलगू हो०"
ए गीत नी ढाल, जोधपुर, नागोर, मेडता, नगरे प्रसिद्ध छइ।

लागो सवल संग्राम, वेदल हो, वेदल झूझइ नगरी वाहिरइं हो ॥
वहइ गोला नालि[२] तीरे हो तीरे हो, वरसइ मेह तणी परइ हो ॥ १ ॥

माला मारइ भीम मा० भेदइ हो।
भे० बगधर टोप विहुं गमा हो॥
करि झपंकइ' करिवाळक क० काळइ हो।
काळइ भामइ घोमखि ऊपमा हो॥२॥
ऊबइ छोड़ेवे अगि। ऊ० हाथी हो।
हा० पाडइ चीस विहुं दिसा हो॥
हाक घूंब हुंकार। हा० सुभटा हो।
सु० ऊपर सुभट पडइ घस्या हो॥ ३॥
अंधारउ आकास। अ० छाया हो।
छा० रवि ससी पहुली रज करो हो॥
घूडा रुधिर प्रवाह। घू० माल्या हो।
माल्या माप्यास तिरवंच बहुपरी हो॥ ४॥
पडइ दमामां रोल। प० पक्खर हो।
पक्खर पाई वाजइ ऊठावली हो॥
सिंधुडइ वळि राग। सिं० सरवि हो।
स० सरणाई वहघडइ भली हो॥ ५॥
परती नर सम्प्राम। प० गयणे हो।
ग० खेचर संग्राम तिम थयो हो॥
धार्मडल भूपाल। मा० कूंयरी हो।
कु० वेरी मोर करन गया हो॥ ६॥
विद्युत्प्रभ समीप। वि० महापक हो।
म० राजा पवनवेग खेचरा हो॥

१—झपकइ।

सुणि कुस लव उतपत्ति। सु० हूवाहो।
हू० उदासीन वृत्ति अनादरा हो॥ ७॥
सुरसेलादिक भूप। सु० सीता हो।
सी० देखी सन्तोष पामिया हो॥
अचिरजि देखई आइ। अ० निज सिर हो।
नि० सीताचरणे नामिया हो॥ ८॥
एहवइ कुस लव वेउ। र० ऊठ्या हो।
ऊ० संग्राम करिवा साहसी हो॥
लखमण राम नइं देखि। ल० ऊपरि हो।
ऊ० वेउ तूटि पड्या धसी हो॥ ९॥
आया देखी राम। आ० मूकइ हो।
मूं० तीर सडासडि सामठा हो॥
कीधो लेव पणि कोप। की० तीरे हो।
ती० ओड्या राम ना कामठा हो॥ १०॥
रथ कीधो चकचर। र० बीजा हो।
बी० लीधा धनुष नइं रथ वली हो॥
ते पणि भागा तेम। ते० विसमय हो।
वि० पाड्यो राम महावली हो॥ ११॥
तिम लखमण सु जुद्ध। ति० लागो हो।
ला० कुस नइं काकल पाधरइ हो॥
वज्रजंघ करइ भीर। व० लव नी हो।
ल० कुस नी भामडल करइ हो॥ १२॥

रे सारथि कहइ राम। रे० साम्हा हो।
सा० घोडा रथ नाखेवि तू हो॥
अरि नाखु हलेवि। अ० सारथि हो।
सा० कहइ राजेन्द्र म छेडि तू हो॥ १३॥
तीरे मार्या अश्व। ती० म बहइ हो।
न० माहरी बे पणि बांहडी हो॥
कहि इमहिज श्रीराम। क० माहरा हो।
मा० हल मुसल थया खाकडी हो॥ १४॥
हुवा सहु हथियार। हु० देवता हो।
देवताधिष्ठित पणि निफळ सहु हो॥
लखमण राम ना सर्व। ल० लखमण हो।
ल० सांसइ माहि पड्यो बहु हो॥ १५॥
रूपाडी सिलकोडि। रू० रावण हो।
रा० मारयो लखा गल मीयो हो॥
हिवणां हाल केम। हि० कुल नउ हो।
कु० मारण निज चाक मूंकियो हो॥ १६॥
ते गयो कुमरनइ पासि। ते० दीधी हो।
दी० चाक त्रिण्हि प्रदक्षिणा हो॥
पाछो आयो वेगि। पा० प्रभम्यव हो।
प्र० नहि ते सगपण अति घणा हो॥१७॥
सुभट कहइ सहु एम। सु० वाणी हो।
वा० खोटी साधुतणी हुई हो॥

ए होस्यइ वासुदेव । ए० लखमण हो ।
ल० हुवो दिलगीरी अई अई हो ॥१८॥
बलदेवनइ वासुदेव । ब० बीजा हो ।
बी० केई भरतमइ अवतस्या हो ॥
सिद्धारथ कहइ आई । सि० लखमण हो ।
ल० दीसउ का ' चिंता भस्या हो ॥१९॥
तु साचो वासुदेव । तु० बलदेव हो ।
ब० साचो राम जाणो सही हो ॥
साची साधनी वाणि । सा० गोत्रमई हो ।
गो० कईयइ चक्र प्रभवइ नहीं हो ॥२०॥
कहइ लखमण ते केम । क० नारद हो ।
ना० सिद्धारथ ते सहु कहइ हो ॥
ए श्री रामना पुत्र । ए० कुश लव हो ।
कु० सीताना पुत्र गहगहइ हो ॥२१॥
राम तज्या हथियार । रा० पाछिली हो ।
पा० वात सभारी सीतातणी हो ॥
आणंद अंगि न माय । आ० साम्हो हो ।
सा० चाल्या पुत्र मिलण भणी हो ॥२२॥
कुश लव पणि सुणि वात । कुस० रथथी हो ।
र० उतरि साम्हा आवीया हो ॥
प्रणम्या रामना पाय । प्र० हियडइ हो ।
हि० भीडी सतोष पामिया हो ॥२३॥

राम करइ पछताप । रा० धिग धिग हो ।
धि० सीता छोडी निरामया हो ॥
गर्भवती गुणवंत । ग० सेहमी हो ।
से० कूखि पुत्ररतन थया हो ॥२४॥
धन धन वज्रजंघ राय । ध० सीता हो ।
सी० आणी निज आपणे घरे हो ॥
बहिन करी बोलावि । व० राखी हो ।
रा० कहइ जीव तणी परे हो ॥२५॥
माहरइ पोसइ पुण्य । मा० सुन्दरी हो ।
सु० सरीखा पुत्र सकज हसा हो ॥
कहुस सीता नी वात । क० जिणपरि हो ।
जि० रहइ छइ हिव आगी दिशा हो ॥२६॥
सब कहइ जेहवइ वात । ज० तेहवइ हो ।
ते० लखमण तिहां आव्या वही हो ॥
कुस लव कीधो प्रणाम । कु० जईनइ हो ।
ल० लखमण मिळियो गहगही हो ॥२७॥
बरस्या जय जय कार । ब० वागा हो ।
वा० वाजित्र तूर सोहामणा हो ॥
मगम्यो आणद पूर । म० विहुंदळि हो ।
वि० माहे रंग वधामणा हो ॥२८॥
सीता सुण्यो मेळाप । सी० वेग हो ।
वे मिळीया बापमइ रंगइ रळी हो ॥

थइसी दिव्य विमान। व० पहुती हो।
प० सीता तिण नगरी वली हो ॥२९॥
आठमा खंडनी एह। आ० छट्ठी हो।
छ० ढाल रसाल पूरी थई हो॥
समयसुंदर कहइ एम। स० चिंता हो।
चि० आरति सहु दूरइ गई हो ॥३०॥

सर्वगाथा ॥३०२॥

दूहा ६

हिव श्री राम सुपुत्रनो, मेलापक सुख खाणि।
लखमण सु हरखित थया, वजडाया नीसाण॥१॥
रलीरग वद्धावणा, वागा नंदी तूर।
दल बेउ भेलाथया, प्रगट्या आणंद पूर॥ २॥
राम भामंडल वे कहइ, वज्रजघनइ एम।
तुं बाधव तुं मित्र तुं, तूं वाल्हेसर प्रेम॥ ३॥
ए तंइ कुमर उछेरिया, मोटा कीधा आम।
अम्हनइ आंणी मेलीया, सीधा वंछित काम॥ ४॥
सहजइ पणि होवइ सुहद, चंद सूर जिम केइ।
अंधकार दूरइ हरइ, जग उद्योत करेइ॥ ५॥
महोच्छव मोटो मांडियो, नगर अयोध्या माहि।
कुश लव कुमर पधारिया, गीतगान गहगाहि॥ ६॥

सर्वगाथा ॥ ३०८ ॥

ढाल ७

॥ राग खमायती सोहलानी जाति ॥

देशी—"अम्मा मोरी मोहि परणाविहे।
अम्मा मोरी जेसलमेरो जादवा हे॥
जादव मोटाराय, जादव मोटाराय हे।
अम्मा मोरी कलिमोडी नइ घोडइ चढइ हे॥"

ढाल ए गीतनी

सुण सखी मोरी वात हे सुण सखी। कुस लव बेउ कुमार पधारिया हे।
चाको चोवा काजि, चा० सु०। सहर सकल सिणगारिया हो ॥१॥
बांध्या तोरण बारि हे, बां सु० लवक ढोकाई देखण मइ गई हे।
बइठा कुमर विमान च० सु० दरसण देखी अति हरषित थई हे॥२॥
लखमण नइ श्रीराम ल० सु० कुमर संघातइ विद्याधर घणा हे।
अपछर देखइ आवि। अ० सु० रूप मनोहर कुमर सोहमणा हे॥३॥
नारी निरखण रूप। ना० सु० काम अपूरा मुंकी ऊकली हे।
काचित मुंकी बाल। का० सु० आधइ भोजन कीधइ मऊकली हे॥४॥
काचित एकइ आंखि। का सु० काजल आंजी नारि नीसरी हे।
काचित रोती बाल। का० सु० दूध पावती बण भी परिहरी हे॥५॥
काचित छूटे केस। का सु० नमदल पासइ सिर गुंथावती हे।
काचित एकइ बांहि। का० सु० पहिरी कंचुकी नीसरि भावती हे॥६॥
काचित उलटउ चीर। का सु० पहरी आडणा लीधो हाथमइ हे।
काचित कुंडल एक। का० सु० काने घाल्यो बीजउ हाथमइ हे॥७॥

काचित खांडती सालि। का० सु० मूसल मुकी ऊखल ऊपरइ हे।
काचित ऊफणतो दूध। का० सु० ऊभो मुकी द्रोडी वहु परइ हो ॥८॥
काचित घरनो वार। का० सु० मुंकी ऊघाडउ गई देखण भणी हे।
काचित त्रुटोहार। का० सु० जाणइ नही हलफली अति घणी हे ॥६॥
इम धसमसती नारि। इ० सु० गउखि चडी के के गलिए रही हे।
देखई कुमर सरूप। दे० सु० अचिरजि आणी हीयडइ गहगही हे ॥१०॥
कहइ वलि केई एम। क० सु० धन्य सीता जिण एहवा जणमीया हे।
धन्याकन्या पणि एह। ध० सु० जि०। चउरी चडिकर मेलाविया हे ॥११॥
इम सलहीता तेह। इ० सु० वाप काका सु चिहुदिस परिवर्या हे।
पहुता निज आवासि। प० सु० सकल कुटुव केरा मन ठस्या[1] हे ॥१२॥
गया अंतेउर माहि। ग० सु० हेजइ अतेऊरी सहू आवी मिली हे।
दे आलिंगन गाढ। दे० सु० रंग वधामण पुगी मनरली हे ॥१३॥
आठमा खंडनी एह। आ० सु० ढाल थई ए पूरी सातमी हे।
कही कुमरनी बात। क० सु० समयसुदर कही मुफ मनरमी हे ॥१४॥
एतउ आठमउ खंड। ए० सु० पूरे कीधो इणपरि अति भलउ हे।
साचउ सीता सील। सा० सु० समयसुदर कहिस्यइ मामलउ हे ॥१५॥

सर्वंगाथा ॥३२३॥

इति श्री सीताराम प्रवधे सीता परित्याग १ वज्रजंघगृहानयन कुश लव युद्ध कुशलव कुमारायोध्याप्रवेशादि वर्णनोनाम अष्टम खड[1] सम्पूर्णं.।

१—उछर्या।

॥ खण्ड ९ ॥

दूहा १०

हिव नवमी खड बोलिस्युं नवरस मिस्यो निधान ।
मन वंछित सुख पामियइ निरमल मवे निधान ॥१॥
धन्य दिवस श्री रामनइ जपइ बे कर जोडि ।
सुग्रीव विभीषण प्रमुख हिव कहतां नहि खोडि ॥२॥
पुडरीक नगरी रहइ, सीता दुखिणी खामि ।
पतिमइ पुत्र वियोगिनी किम राखइ मन ठामि ॥३॥
राम कहइ सुणि सुग्रीवा, सीता विरहो थाय ।
दुख घणो वामई होयो, पणि कुणि करै उपाय ॥४॥
मइ छोडी वल्लभ थकी लोक कुबस भइबाय ।
तुम्हे मिलीनइ तिम करउ जिमचलइ सथवाय ॥५॥
श्राय उपाय करो तिको, मिलइ सीता जिम मुज्झ ।
कलक सीताना ऊतरइ सहु जिम पड़ह समज्झि ॥६॥
राम वचन इम सांभली मारंमइ सुं नेह ।
सुग्रीव विभीषण प्रमुख विद्याधर सुमनेह ॥७॥
सीता पासि गया तुरत कीधउ चरण प्रणाम ।
आगइ बइठा आविनइ तिन बोलाया ताम ॥८॥
कर जोडी मइ ते कहइ सांमलि सीता वात ।
आवउ नगरी आपणी राम दुखी दिन राति ॥९॥
तुम्ह दरस देखण मणी अति ऊमाहा लोक ।
तरसई मेहरणी परइ वलि दिनकर जिम कोक ॥१ ॥

ढाल १

॥ तिल्लो रा गीतनी ॥

॥ मेडतादिक नगरे प्रसिद्ध छइ ॥

हो सुग्रीव राजा सुणो मोरी वात,
गदगद स्वरि सीता कहइ रे लाल। हो सु०।
दुखु सचलउ मुझनइ दहइ रे लाल ॥१॥ हो सु०।
विण अपराध मुझनइं तजी रे लाल। हो सु०।
ते दुखु मुझ सालि अजी रे लाल ॥२॥ हो सु०।
हु दुख नी दाधी घणुं रे लाल। हो सु०
काम कहु आवण तणउ रे लाल ॥ ३ ॥ हो सु०।
नगरी अयोध्या मालिए रे लाल। हो सु०।
प्रिय सु न वइसु पटसालिए रे लाल ॥४॥ हो सु०।
अथवा तिहा एकइ कामइ आवणो रे लाल। हो सु०।
करि धीज साच दिखाडणो रे लाल ॥५॥ हो सु०।
कलंक उतारूँ तिहा आपणो रे लाल। हो सु०।
पछइ करूँ धर्म जिन तणो रे लाल ॥६॥ हो सु०।
चालो तुम्हारा बोल मानिया रे लाल। हो सु०।
सीता साथि ले चालिया रे लाल ॥७॥ हो सु०।
आणी अयोध्या उद्यानमइ रे लाल। हो सु०।
मुकी सीता सुभ ध्यानमइ रे लाल ॥८॥ हो सु०।
रातिगई प्रह फूटियो रे लाल। हो सु०।
अंतराई क्रम त्रुटियो रे लाल ॥९॥ हो सु०।
आवी वनमइं अतेउरी रे लाल। हो सु०।
आगति स्वागति तिण करी रे लाल ॥१०॥ हो सु०।

तिण अवसरि राम आवीया रे लाल। हो मु०।
निज अपराध खमाविया रे लाल ॥११॥ हो मु०।
प्रियुडा सुणि मोरी अरदास सीता कहइ पाए पडी रे लाल। हो प्रि०।
कर जोडी आगइ खडी रे लाल ॥१२॥ हो प्रि०।
तुम्हनइ दूषन हुं किसा कहुं रे लाल। हो प्रि०।
विरह वियोग घणा सहुं रे लाल ॥१३॥ हो प्रि०।
तु सुराखिण झलानिलो र लाल। हो प्रि०।
तु बहुल सहस्रइ भलो रे लाल ॥१४॥ हो प्रि०।
परदुख कातर तु सही रे लाल। हो प्रि०।
तुम्ह गुण पार पामु नही रे लाल ॥१५॥ हो प्रि०।
को नहि प्रियु तुम्ह सारिखो रे लाल। हो प्रि०।
पणि न कीयो तुम्ह पारिखो रे लाल ॥१६॥ हो प्रि०।
तइ मुनइ छोडी रानमइ रे लाल। हो प्रि०।
विण गुनहइ भ गिणी गानमइ रे लाल ॥१७॥ हो प्रि ।
अपराधइ दड दीजियइ रे लाल। हो प्रि०।
ते विण इम किम कीजीयइ रे लाल ॥१८॥ हो प्रि०।
अपराध भेहलउ आणीयउ र लाल। हो प्रि०।
पाय धीजे परमाणियइ रे लाल ॥१९॥ हो प्रि०।

१—"नगाद जानकी किम पंचकं स्वीकृतं मया
प्रविशामि वन्हो भवतो मद्वाक्यम् पटुताम्"
गुप्तं तमापि रोहामित तरा धीर्ष पिबाम्य वा
मद्वापि जिह्वाग्रासं च तुलरो चटेवर
तुम्मं पघघटिमे नवम नमें

आगि पाणी धीज जागता रे लाल। हो प्रि०।
संदेह मनना भागता रे लाल ॥२०॥ हो प्रि०।
ते धीज तइं न कराविया रे लाल। हो०
मुझ तजता प्रेम नाविया रे लाल ॥ २१ ॥ हो०
तइं तो कठोर हियो कीयो रे लाल। हो०
तइं मुझनइ विछोहउ दीयो रे लाल ॥ २२ ॥ हो०
जो वन माहे सीह मारता रे लाल। हो०
तउ तेहनइ कुण वारता रे लाल ॥ २३ ॥ हो०
ध्यान भुडइ हुं मुई थकी रे लाल। हो०
दुरगति जाती हु ठावकी रे लाल ॥ २४ ॥ हो०
तइं कीधो तेन को करइ रे लाल। हो०
पणि खूटी विण किम मरइ रे लाल ॥ २५ ॥ हो०
दोस किसो देउं तुज्झनइं रे लाल। हो०
दैव रूठो एक मुज्झनइं रे लाल ॥ २६ ॥ हो०
आपदां पड्या न को आपणो रे लाल। हो०
कुण गिणइ सगपण घणो रे लाल ॥ २७ ॥ हो०
दुख समुद्रमइं तइ धरी रे लाल। हो०
पणि पूरव पुण्यइं करी रे लाल ॥ २८ ॥ हो०
पुडरीकपुरनो धणी रे लाल। हो०
मिलियो परिवाधव तणी रे लाल ॥ २९ ॥ हो०
तिण राखी रूडी परइ रे लाल। हो०
वलि सुग्रीव आणी घरइ रे लाल ॥ ३० ॥ हो०

पीयकर कहइ आकरो रे लाल । हो०
निरमल कुल पीहर सासरो रे लाल ॥ ३१ ॥ हो०
एही वात सीता कहइ रे लाल । हो०
रामचन्द्र सहु सरदही रे लाल ॥ ३२ ॥ हो०
पाछली ढाल पूरीथई रे लाल । हो०
समयसुंदर आरति गई रे लाल ॥ ३३ ॥ हो०

सर्वगाथा ॥ ४१ ॥

दूहा ८

आंखे आंसू नांखतो राम कहइ सुमनेह ।
तुं कहइ ते साचो सहू तिणमइ नहि सन्देह ॥ १ ॥
हुं जाणुं तुं ताहरो, सील सुध कुल सुद्ध ।
प्रेमपणो मुझ उपरइ ए सहु वात प्रसिद्ध ॥ २ ॥
पणि तुझ अपवास ऊछल्यो, किणही कर्म विरोध ।
ते न सकुं सबणे सुणी नयणे न सकुं देखि ॥ ३ ॥
तिणमइ तुम्हनइ परिहरी, करुणा नाणी चित्त ।
दोस नहीं को ताहरउ तुं मइ सील पवित्त ॥ ४ ॥
जिम अटवी संकट टल्यो सीलइ तणइ परभावि ।
तिम वस वास्यइ ताहरउ, धीरज तणइ सभावि ॥ ५ ॥
सबली आगिमइ पइसिनइ मीसरि तुं निस्संक ।
इसतणी पर हे प्रिय, करि आपस निकलंक ॥ ६ ॥
तुझ कलंकपिण ऊतरइ, तुम्हनइ आणंद पूर ।
लोक कहइ धनधन्य ए, वाजइं मंगलतूर ॥ ७ ॥

१—सभावि

एहवा वचन श्रीरामना, साभलि सीता नारि ।
हरख सु आगि ना धीजनो, कीधउ अंगीकार ॥ ८ ॥

सर्वगाथा ॥५१॥

ढाल बीजी

॥ राग मारुणी ॥

गलियारइ साजण मिल्या । मारुराय । दो नयणा दे चोट रे । घणवारी लाल ।
हसिया पण बोल्या नहीं । मारूराय । काइक मनमोहे खोट रे।१। घणवारी लाल ।
आज रहउ रंगमहलमइ । मा०॥ ए गीतनी ढाल ॥

हिव श्रीराम हुकम करइ । सीतानारि । निज पुरुषा नइ एह रे ।
धन सीता नारि । जावो खणावो वावडी । सीता नारि ॥
सउ हाथ दीरघ तेहरे ॥ १ ॥
वन सीतानारि । धीज करइ जे आगिनी । सीता नारि ॥ आ० ॥
अगरचन्दनने इंधणे । सी० । पूरी काठी भरीज रे । पू० ।
आगि लगावो चिहुंगमा । सी० सीता करिस्यइ धीज रे ॥२॥ ध०
राम कह्यो ते तिम कियो । सी० सेवके सगली सवील रे । ध०
ते वात सगले साभली । सी० वात परंतां न ढील रे ॥ ३ ॥ ध० धी०
हा हा रव करतो थको । सी० लोक आयो मिलि तेथि रे । ध०
आणि जिहा झाले बलइं । सी० सीता ऊभी जेथि रे ॥ ४ ॥ ध० धी०
लोक कहइ राम साभलो । सी० धीज अजुगतो आम रे । ध०
काइ करावा माडियो । सी० सीतासीलइं अभिराम रे ॥५॥ ध० धी०

---

* इत्युक्त्वा खानयद्रामो गर्त्तहस्त शतत्रय ।
पुरुषत्रयं दघ्न च पूरयच्चंदनैंधनै । १६७। (पद्मचरिते ६मे सर्गे)

सील गुणे रही सीलवती । सी० अटवी संकट माहि रे । भ०
ए परसीलि नाणी सुम्हें । सी० राखो सीलवानइ साहि रे ॥ ६ ॥ भ०
सिद्धारथ पणि आवीयो । सी० मुनिवर कहतो निमित्त रे । भ०
रोमप्रतइ पहुतो कहइ । सी० सीतासील पवित्त रे ॥ ७ ॥ भ० सी०
जउ पातालि पइसइ कहे । सी० मेर खिहां सुर कोडि रे । भ०
समुद्र कहे मोखीजियइ । सी० तो सीतानइ खोडि रे ॥८॥ भ० सी०
जउ झूठो बोलुं कहे । सी० तो मुझनइ सीम मात रे । भ०
पांच मेरे देव वांदिमइ । सी० पारणो कह्न परमाथ रे ॥ ६ ॥ भ० सी०
ते पुण्य मुझनइ म आइज्यो । सी० झूठ कहुं जउ कोइ रे ।भ०
मनवचने कायाकरी । सी० सीता महासती होइ रे ॥ १० ॥ भ० सी०
ए वालमो ए पारिखो । सी० ए भाखुं छुं निमित्त रे । भ०
अगनि माहे जलिस्यइ नहीं । सी० जलण हुस्यइ जलम्झति रे ॥११॥ भ०
सिद्धारथ वाणी सुणी । सी० विद्याधर ना वृंद रे । भ०
कहइ सहुको तइ भलो कियो । सी० साच कह्यो मुखकंद रे ॥१२॥ भ०
सकलभूषण मीसाधनइ । सी० उपसर्ग थया असमान रे । भ०
तिण अवसरि तिहां ऊपनो । सी० निरमल केवलग्यान रे ॥१३॥ भ०
ते मुनिवरनइ वांदिवा । सी० आविनइ इंद्रमहाराज रे । भ०
वात सीतातणी सांभली । सी० धीरमा मोकल्या साज रे ॥१४॥ भ०
हरणेगमेषी मइ कह्यो । सी० इन्द्र तेडीनइ एम रे ।भ०।
धीज करावण मांडियो । सी० कहइ सीतानइ केमरे ॥१५ भ०
त्रिकरण शुद्ध सीता सती । सी० तेहनइ करे तुं सहाज रे ।भ०।
हूं आवु छु उतावलो । सी० मुनि वांदण महा काज रे ॥१६॥ भ०

इन्द्र आदेश लेई करी। सी० हरिणेगमेपी देवरे।ध०।
तुरत सीता पासे गयो। सी० सीतानी करिवा सेवरे॥१७॥ ध०
तेहवइ राम ने सेवके। सी० आवीनइ कह्यो एमरे।ध०।
वावि लगाया ईंधणा। सी० ढीलि करो तुम्हे केमरे॥१८॥ ध०
वलती आगि देखी करी। सी० राम थयो दिलगीर रे।ध०।
हाहा कष्ट मोटो पड्यो। सी० किम सहिसइ ए सरीर रे॥१६॥ ध
आगि नही कदे आपणी। सी० दुसमन जिम दुखदाय रे।ध०।
कलंक उतारयो जोइयइ। सी० बीजो न सूझइ उपाय रे॥२०॥ ध०
लोक तो बोक समा कह्या। सी० कुण राखइ मुख साहि रे।ध०।
अपजस अणसहती थकी। सी० सीता बली आगी माहि रे॥२१॥
हाहा कदाचि सीता वली। सी० तो वलि कदि देखीस रे।ध०।
जो सूधी धीजइं करी। सी० तउ लहिस्यइ सुजगीस रे॥२२॥ ध०
रामनइं एम विमासता। सी० आगि वधी सुप्रकास रे।ध०।
झालो झाल मिली गई। सी० धूम छायो आकास रे॥२३॥ ध०
धग धग सबद बीहामणो। सी० अगनिनो ऊछल्यो ताम रे।ध०।
एक गाऊनो चांद्रणो। सी० चिहुँदिसि थयो ठाम ठाम रे॥२४॥ ध०
वाय डंडुल[1] वायोवली। सी० जे बाली करइं खंभरे।ध०।
कायरना काप्या हिया। सी० सुननर पाम्या अचंभ रे॥२५॥ ध०
तिण वेला आवी तिहां। सी० मीता वावडी पासि रे।ध०।
स्नान करी परिघल जलइ। सी० अरिहंत पूजी उल्हासि रे॥२६॥ ध०
सिद्ध सकल प्रणमी करी। सी० आचारिज उवझाय रे।
साध नमी तीरथ धणी। सी० मुनिसुव्रतना पाय रे॥२७॥ ध०

१—दंदोल।

वछली आगि पासइ रही । सी० सुर नर मारी समखि रे ।प०।
सीता कहइ सुणिज्यो तुम्हे । सी० ओ लोकपाल प्रत्यखि रे ।।२८।। प०
मइ श्रीराम विना कदे । सी० पुरुष अनेरउ कोइ रे ।प०।
मन माहि पिण वांछ्यउ हुवइ । सी० राग्य साम्हो जोयो होइ रे ।।२६।।
तउ आगि मुझ नइ बाळिज्यो । सी० नहितर सीलइ थाउ रे । प०।
आगि म्हारी केहनीं सगी । सी० नहि सगो बंधुवा बाय रे ।।३०।। प०
इम सीता कहती थकी । सी० समरंती नोकार रे ।प०।
जिलउ सीता झंपावली । सी० पइसइ आगि मझारि रे ।।३१।। प०
तितरइ बाप थंभी रही । सी० छूटा पाणी प्रवाह रे ।प०।
लोक सहुनइ देखतां । सी० ऊंचो वाध्यो अथाह रे ।।३२।। प०
लोक लागा जल बूडिवा । सी० हुयो हाहाकार रे ।प०।
विद्याधर ऊंचा गया । सी० भूचर करइ ते पोकार रे ।।३३।। प०
राखि राखि सीता सती । सी० थुं सरणो तुं त्राण रे ।प०।
इम विलाप लोकांतणी । सी० सीता सुणत प्रमाण रे ।।३४।। प०
करि करुणा निज पाणि सुं । सी० थंभ्यो पाणि प्रवाह रे ।प०।
वावि रही पाणी भरी । सी० पसर्यो अंगि उछाह रे ।।३५।।
लोक लागा सहु देखिवा । सी० बुरी थका ते वाविरे ।प०।
निरमल नीर भरी तरी । सी० हंस सेवा करि आवि रे ।।३६।।
मणिमय बरडी मोकली । सी० पावडी कनक प्रकार रे ।प०।
वावि विधि कीधी देवता । सी० सहस कमल दल सार रे ।।३७।।
सिंहासन मांड्यो तिहां । सी० सीता बइसारी आणि रे ।प०।
आभ्रण वस्त्र पहिरावियां सी० अप्सरी नाठी आणि रे ।।३८।। प०

देवता वाई दुंदु भी । सी० कीधी कुसुमनी वृष्टि रे ।ध० ।
सूधी सूधी सीता सती । सी० कहइ सहु को अभीष्ट रे ॥३६॥ ध०
नाटक माड्यो देवता । सी० करइं सीता गुण ग्राम रे ।ध०।
सील सीताना सारिखो । सी० नहि जगमइ किणठाम रे ॥४०॥ध०
सतीया मो सीता लही । सी० रेखा जगत प्रसिद्ध रे । ध०
आगिमइं पइसि दीखाडीयो । सी० साच जीणइ सुविसुद्ध रे ॥४१॥
चमतकार उपजावियो । सी० सुरनर नइ पणि जेण रे । ध०
कीधा कुल बे ऊजला । सी० निरमल सील गुणेण रे ॥४२॥ ध०
सोभ चडावी रामनइं । सी० पुत्रनइं कीधो प्रमोद रे । ध०
लखमण लाधो पारिखो। सी० थयो आणंद विनोद रे ॥४३॥ ध०
तेहवइ कुश लव आवीया। सी० आणिंद अंगि न माय रे । ध०
सीताना चरणो नम्या । सी० हीयडइ भीड्या माय रे ॥४४॥ ध०
सीतानी महिमा करइ । सी० देवता राम ते देखि रे । ध०
अति हरखित हुंतो कहइ । सी० पामी प्रीति विशेषि रे ॥४५॥ ध०
हे प्रिये तुझ थायो भलो । सी० तु जीवे चिरकाल रे । ध०
सुख भोगवइ निज कंत सु । सी० राजरिद्धि सुविसाल रे ॥४६॥ ध०
एक गुनह ए माहरो । सी० खमि तु सदाखिण नारि रे । ध०
आज पछी हुं नहि करूं । सी० अपराध इण अवतारि रे ॥४७॥ध०
थासुप्रसन हसि बोलि तु । सी० तू मुझ जीव समान रे । ध०
सोलह सहस अंतेउरी । सी० ते मांहि तु परधान रे ॥ ४८ ॥ ध०
तुझ आगन्या लोपु नही । सी० इम विनवइ श्रीराम रे । ध०
पणि सीता मानइ नही । सी० कहइं मझ धम सं काम रे ॥४९॥ ध०

नवमा खंडतणी भणी । सो पीजो ढाल विसाल रे । प०
समयसुंदर कहइ वदना । सी० सीतासतीनइ त्रिकाल रे ।।६ ।। प०
सवगाथा ।।१ १।।

दूहा १३

कहइ सीता प्रीतम सुणो तुम्हे कह्या ते तेम ।
पणि हु भोगथी ऊभगी चित्त अम्हारो एम ।। १ ।।
प्रेमइ ऊपन्राणी हु ती पहिली तुम्ह सुं कत ।
पणिवइ तुम्हनइ परिहरी ल सामरइ वृतांत ।। २ ।।
दुष्कर दुख ससारना, दुख घणो दीसंत ।
सरसव मेरु पर्वतरइ कहो मन किम हीसंत ।। ३ ।।
तिण सापुरिसे परिहरथा कुटम्बतणो प्रतिबंध¹ ।
अंतकालि दुख ऊपजइ प्रीतम प्रेम सम्बन्ध ।। ४ ।।
हा हा पछतावो करइ अब पहिलो मति प्रेम ।
छाड्यो हु त तो तुम्हनइ ए दुख पड़ता केम ।। ५ ।।
भोग घणेही भोगवे जीवनइ त्रिपति न होइ ।
सुपन सारीपा सुख ए, दुरगति दुख थाइ सोइ ।। ६ ।।
ते सुखनहिं चक्रवर्तिनइ जे सुख सामनइ जाणि ।
मइ मनि वाल्यो माहरो, स कहिसि तुम्हनइ ताणि ।। ७ ।।
इम कहती सीता सती, कीधो मस्तक लोच² ।
केस कलेस दूरइ किया सहु टली मननी सोच ।। ८ ।।

१—परिबन्ध । २—राघो ।

१—इत्युक्त्वा मैथिली केशानुच्चखान स्वमुष्टिना ।
रामस्याप्यथमास राघवेन विनिर्गत: ।। (पद्मचरित्रे नवम् सर्गो)

राम देखि सीता तणा, स्याम भमरते केस ।
मूरछागत धरती पड्या, आणी मन अंदेस ।। ९ ।।
चदनपांणी छाटिनइ, घाल्या सीतल वाय ।
वांह झालि वइठा कीया, राम कहइ हाय हाय ।। १० ।।
तेहवइ तिहा आयोवही, सर्वगुप्ति मुनिराय ।
तिण दीक्षा दीधी तुरत, सीतानइ सुखदाय ।। ११ ।।
चरणसिरी तिहा पहुतणी, तेहनइ सुपी एह ।
सीता पालइ साधवी, संयम सूधो जेह ।। १२ ।।
पांचसुमति त्रिण्ह गुपति सु, निरमल ग्यान चरित्र ।
साधइं सीता साधवी, ईरत अनइं परत ।। १३ ।।

सर्वगाथा ।।११४।।

ढाल ३

।। राग कनडो ।।

'ठमकि-ठमकि पायनेउरी वजावइ, गजगति वांह ग० लुडावइ ।।१।।
रगीली ग्वालणि आवइ ।।' ए गीतनी ढाल ।।

रामचदन देखइ सीता, नयणे नीर । न० वरसीता ।। १ ।।
मोहि सीता नारि मेलावो, विरही राम करइ पछतावो ।
सीतानइ । सी० समझावो । मो० आं० ।।
कुण पापी सीता गयो लेई, कुण गयो, कु० दुख देई ।।२।। मो०
दीखइं नहीं सीता किम नयणे, बोलइ नहीं, बो० किमवयणे ।।३।। मो०
लोच कीयो केणि पाछी आणो, कुणलेणहारा, कु० पिछाणो ।।४।। मो०
देवतणो देवदत्तण फेडु, राजा मारि उथेडु ।।५।। मो०

भूतारो कुण गयो भूतरी, त कहो, त० नाम खरी ॥६॥ मो०
कोइ अपहरि गयो कपट विशेषइ, पणि हुई साधवी वेषइ ॥७॥ मो०
पाछी आणि रालिसि मरमाहे देपिसि दे० दृष्टि तमाहे ॥८॥ मो०
इम विलाप सुणि तिहां आवइ, लखमणि पणि ल० समझावि ॥९॥ मो०
म कहि वचन पहवा तु माई, तडवमी मुज्झवड भजाई ॥१०॥मो०
हिव वेलास किर्या क्या होई मूकि गिलइ, मू० नहि कोई ॥११॥ मो०
धन सीता जिण संयम लीधो तुरत जउसहि दीधो ॥१२॥ मो०
आप तरइ अवरांनइ तारइ, कठिन क्रिया क० व्रत धारइ ॥१३॥मो०
पहनइ हिव परणाम करीजइ, भव समुद्र भ० तरीजइ ॥१४॥मो०
इम रामचन्द भणी समझायो, राम संवेग रा० मइ आयो ॥१५॥ मो०
कुरा अब सोपर साथइ लेई लखमण राम ल० पवेई ॥१६॥ मो०
गवि भवि गया मनमइ उल्लासइ, सकलभूषण स० मुनि पासइ ॥१७॥
नवमा खंडतणी ढाल त्रीमी सुणत सभा सहु रीझी ॥१८॥ मो०
समयसुंदर कहइ सीता साची मंद पुराणे रे वाची ॥१९॥ मो०
सर्वगाथा ॥११३॥

दूहा १०

सकलभूषण श्री केवली साध गुणे अभिराम।
पंचाभिगमन साचवी तेहनइ कियो प्रणाम ॥१॥
आगइ बइठा आविनइ लखमण राम सकोइ।
तिहां बइठी थकी ओलखी सीता साधवी होइ ॥२॥
तहवइ केवली देमना देवा मांडी लेवि।
लखमण राम सुग्रीव सहु परपदा बइठी जेवि ॥३॥

राग द्वेष वाह्या थका, विषय सुख आसक्त।
अस्त्री काजइं अधमनर, वा मारइ आरक्त ॥४॥
माहो माहे मारिनइ, मूढ भमइं संसारि।
दुख देखइं दुरगति गया, पाडंता पोकार ॥५॥
राग द्वेष मुकी करी, सुधो आदरइ धम्मं।
पाप अढारह परिहरइं, भाजइ मिथ्या भर्म ॥६॥
संयम पालइं तप तपइं, साधनइ श्रावक जेह।
पुण्य तणइं परभाव थी, सुभगति पामइ तेह ॥७॥
इत्यादिक ध्रम देसणा, सुणि परिहरि परमाद।
प्रसन विभीषण नृप करइ, भगवन करउ प्रसाद ॥८॥
राम अनइ लखमण तणइ, रावण सु रण एम।
सीता सम्बन्धइ थयो, कहउ ते कारण केम ॥९॥
सकलभूषण श्री केवली, भाषइ न्यान अनन्त।
राम अनइं रावण तणो, पूरव भव विरतत ॥१०॥

सर्वगाथा ॥१४३॥

ढाल ४

॥ राग हुसेनी धन्यासिरी मिश्र ॥

दिल्ली के दरबार मइ, लख आवइ लख जाइ।
एक न आवइ नवरंगखांन, जाकी पघरी ढलि ढलि जावइवे ॥१॥
नवरंग वइरागीलाल। ए गीतनी ढाल।

क्षेमपुरी नगरी हुतो, व्यापारी नयदत्त॥
तास सुनंदा भारिजा, सुविवेक कला सुपवित्त वे ॥१॥

पूरव भव सुणिज्यो एम, राग द्वेष जइ पातुया ।
विहबामो लेओ नेम वे ।। पू० आं० ।।
पुत्र थया वे तेहनइ, धनदत्त अनइ वसुदत्त ।
तेथि वसइ विवहारियो वलि कोसासागरदत्त वे ।।२।। पू०
रतनामा तसु भारिजा कन्यारूपइ करि रंभ ।
गुणवती नामइ गुणभरी देखंता थायइ अचंभ वे ।।३।। पू०
बाप दीधी वसुदत्त नइ गुणवती कन्या यह ।
द्रव्यतणइ लोभइ करी माता वलि दीधी तेहवे ।।४।। पू०
तिण नगरी विवहारियउ वळ अन्य हुंता श्रीकंत ।
ब्राह्मण मित्र अइ कह्यो, वसुदत्त नइ विरतंत वे ।।५।। पू०
वात सुणी नइ कोपियउ निजकर कोपउ करवाल ।
प्रहार दियउ श्रीकंत नइ वसुदत्तइ अइ ततकाल वे ।।६।। पू०
श्रीकंतइ पणि ले छुरी भरतइ मारि तसु पेटि ।
इम बेऊ विहता थका मारी ता मुया नेटि वे ।।७।। पू०
वे वनमइ गज रूपना देखी नइ जाग्यो कोप ।
एकमेकनइ मारियो, विहीपणि थयो निर्लोप वे ।।८।। पू०
महिष वृषभ वानर थया द्वीपी मृग अनुक्रमि जेह ।
माहामांहि विहीमुंया सहु कामतणा फळ तेह वे ।।९।। पू०
इम जळचर थळचर भवे भमते दीठा बहु दुख ।
वयर विराध महादुरा, किहांथी पामीजइ सुख वे ।।१०।। पू०
हिव धनदत्त भाई हुंता ते बांधव तणइ वियोग ।
अति दुखियो भमतो थको सहतो सनापनइ सोग वे ।।११।। पू.

साध समीपइ ते गयो, तिहा साभल्यो धर्म विचार।
व्रत पाली श्रावक तणा, ते पहुतो सरग मझार वे ॥१२॥ पू०
देवतणा सुख भोगवी, महापुर नगरी अवतार।
नाम पद्मरुचि ते थयो, तिहा सेठ तणो सुत सार वे ॥१३॥ पू०
गोयलमइ गयो एकदा, तिहा मरतो एक बलद।
देखीनइं संभलावियो, तेहनइ नोकार सबद वे ॥१४॥ पू०
नउकारना परभाव थी, ते बलद जीव तिण ठाम।
राजा छत्रपती भलो, तसु छत्रछिन्न ए नाम वे ॥१५॥ पू०
श्रीकाता तसु भारिजा, ते वृषभ थयो तसु पुत्र।
नामइं वृषभ सभावते, आचार विचार विचित्र वे ॥१६॥ पू०
कुयरपणइ गोयलि गयो, तिहां दीठी तेहिज ठाम।
जातीसमरण ऊपनो, ते साभस्यो ठामनइ गाम वे ॥१७॥ पू०
भूष त्रिषा जे तिहा सही, मुझनइ दीधो नउकार।
बोधि बीज तिहा पामीयो, पणि किण कीधउ उपकार वे ॥१८॥पू०
(पिण) तेहनइ ऊलखिवा भणी, मडाव्यउ देहरउ तेण।
पूरव भव चीतरावियो, अपणो सगलो कुमरेण वे ॥१९॥ पू०
निज सेवकनइ इम कह्यो, जे देखइ ए चित्राम।
परमारथ कहइ पाछिलो, ते मुझनइ कहिज्यो ताम वे ॥ २० ॥
ते सेवक ततपर थका, रहइ देहरा माहे नित्त।
कुमर पद्मरुचि आवियो, तिहा वंदन करण निमित्त वे ॥ २१ ॥
घणीवार चित्रामनइ, ते पद्मरुचि रह्यो जोइ।
नउकारजदीधो तेहनइ, ए राजा वृपभ तिकोइ वे ॥ २२ ॥

जातीसमरण पामीयो तिण वयरसणो अवसार ।
नृप कुंमरनइ वीतरागियो इम चिंतवइ चित्तमझार वे ॥ २३ ॥
देहवइ तिण पुरुषो तिहां, ते दीठउ सेठ अमूढ ।
राजा कुमरनइ काई कह्यो, ते आमो गजआरूढ वे ॥ २४ ॥
जिन प्रतिमा प्रणमीकरी निरखमउ ते पदमकुमार ।
वणगारी गुरु आगिनइ, प्रणम्यो चरणे त्रिणवार वे ॥ २५ ॥
प्रणमंतो तिणवारियो तुं राजकुमर नरराम ।
कुंमर कहइ तुं माहरउ गुरु धरमाचारिज नाम वे ॥ २६ ॥
तुम्ह प्रसाद चिरजीव हुं थयउ छत्रपतिनो पुत्र ।
तु कहइ से हिव हुं करु तुं परउपगार पवित्र वे ॥ २७ ॥
कहइ श्रावकनउ धर्मकरि जिम पामइ भवनिस्तार ।
श्रावकनो भ्रम आदर्‌या, ते पालइ निरतीचार वे ॥ २८ ॥
श्रावकना भ्रम पालिनइ ते बिहु कीधउ काल ।
बीजइ देवलोकि ऊपना ते बेउ सुर सुविसाल वे ॥२९॥
पदमरुपी तिहां थी चवी नंदाश्रत गामनरिंद ।
मयोसर खेचर तणो ययोनंदन नयणाणंद वे ॥ ३० ॥
राजलीला सुख भोगवइ संयम लीधो अतिसार ।
चउथइ देवलोकि ऊपनो थयो देवतणो अवतार वे ॥ ३१ ॥
महाविदेह मइ अवतर्‌या तिहां थी चविनइ ते तत्र ।
क्षेमपुरी नगरी भली तिहां विपुलवाहन नो पुत्र वे ॥ ३२ ॥
श्रीचन्द्रकुमर सोहामणो बहु भोगवइ सुख संपत्ति ।
तिण अवसरि तिहां आवीया, श्रीसुरि समाधिगुपत्ति वे ॥ ३३ ॥

तसु पासइ ध्रमसाभली, तसु आयोमनि वयराग ।
संयममारग आदस्यो, तपकरि कीधो तनु त्याग वे ॥ ३४ ॥
पाचमइ देवलोक ऊपनो, ते इन्द्रपणइं आणंद ।
दससागरनइ आयुषइं, आगइ अपछरना वृन्द वे ॥ ३५ ॥
तिण अवसरि ते गुणवती, कन्याना वयर विशेपि ।
वसुदत्त श्रीकंत वे जणा, हरिणादिभवे देखु देखि वे ॥ ३६ ॥
भवमाहे भमता थका, किणही ते पुण्य प्रभावि ।
नगर मृणालतणो धणी, वज्रजंबू सरल सभाव वे ॥ ३७ ॥
हेमवती तसु भारिजा, हिवतेहनी कुखि तेह ।
श्रीकंतनो जीव अवतस्यो, अभिधान सयंभू जेह वे ॥ ३८ ॥
प्रोहित एक तिहां वसइं, शिवसमे दयाल सदीव ।
श्रीभूत नामइ[1] सुत थयो, ते वसुदत्त तणो ते जीव वे ॥ ३९ ॥
जिनधरमी श्रीभूत ते, तिणरइ घरि सरसति नारि ।
गुणवती कन्या जे हुती, ते लहि मृगली अवतार वे ॥ ४० ॥
भूरि ससार माहे भमी, वलि आवी नरभव तेह ।
तिहांथी मरिथई हाथिणी, खूती तसु कादम देह वे ॥ ४१ ॥
चारण श्रवण मुनीसरइं, मरती दीधो नउकार ।
श्रीभूतिनी पुत्री थई, नउकारनी महिमा सार वे ॥ ४२ ॥
मा बाप दीधो तदा, वेगवती अभिधान ।
एक दिवस तिहा आवियो, अतिमलिन वस्त्र परिधान वे ॥ ४३ ॥
हीला करती साधनी, बापइ वारी ततकाल ।
पूजनीक एक साधछइं, ए जीवदया प्रतिपाल वे ॥ ४४ ॥

१—सुत थयो तेहनो ।

बापवचन मुणि उपसमी करिवा मांड्यो प्रमसार।
रूपवन्त देखी करइ प्रारथना रामकुमार वे ॥ ४५ ॥
मिथ्यामति ते मोहियो तिण तेहनइ बापन देइ।
सयमु कुमर कामी थको ते कुमरीनइ निरखेइ वे ॥ ४६ ॥
एक दिवस तिहां' आइनइ, रातइ मार्यो श्रीभूति।
ते कन्या वांछइ नहीं, सो पणि लागोयइ भूत वे ॥ ४७ ॥
वेगवती रोती थकी तिण भोगवी अधमकुमार।
तिण सराप दीधो तिहां, तुं सुणि बाप विचार वे ॥ ४८ ॥
मारयो बापतइ माहरो, मुझनइ तइ कीधो एम।
ताहरी मारणहु हुज्यो जनमतरि वयर ज्युं प्रेम वे ॥ ४९ ॥
इम कहती मुंकी तिणइ मनमइ आयो संवेग।
संयम मारग आदर्यो भ्रमकरता टाल्यो उद्वेग वे ॥ ५० ॥
तपजप करिनइ ऊपनी ते पंम विमाणा देवि।
भव अनेक भमतो थको ते सयमुकुमर तिण टेव वे ॥ ५१ ॥
करमतणइ उपसम करी तिण आयो नरभव सार।
विजयसेन मुनिवर तणइ, पासइ सुण्यो धरम विचार वे ॥ ५२ ॥
दीक्षा ले नइ चालिया समेतसिखरनी जात्र।
कनकप्रम मारग मिल्यो विद्याधर ऋद्धिनो पात्र वे ॥ ५३ ॥
रिद्धि देखि अति स्यकी, मीयाणो कीधो पछ।
ध्रमनो फल जइ हो हुज्यो मुझ एहवी रिद्धिनइ देह वे ॥ ५४ ॥
सुगति सुं काम कोइ नहीं इम कारणि हारी कोडि।
त्रीजइ देवलोकि ऊपनो पणि नेटि नियाणा ज्यादि वे ॥ ५५ ॥

१—तिण

तिहा थी चविनइ ते थयो, राणो रावण परिसिद्ध ।
धनदत्तनोजी पाचमइं, सुरलोकि हुंतो समृद्ध वे ।। ५६ ।।
ते तिहा चविनइ थयो, दसरथ नदन श्रीराम ।
श्रीभूतिजीव देवी हुतो, ते वभविमाणा नाम वे ।। ५७ ।।
ते चविनइ सीता थई, श्रीरामचन्दनी नारि ।
सीलगुणे सलहीजीयइ, जे सगलइ ही संसारि वे ।। ५८ ।।
गुणवती भवि भाई हुतो, गुणधर एहवइ अभिधान ।
सीतानो भाई थयो, भामण्डल विद्यावान वे ।। ५९ ।।
वसुदत्तनइ बांभण हुतो, जे यज्ञवल्क वलि तत्र ।
राय विभीषण तुं थयो, ते जाण प्रवीण बिचित्र वे ।।६०।।
प्रतिबूधो नउकार थी, तिहा बलद 'तणो' जे जीव ।
उपगारी सहुनइं थयो, ते राजा तुं सुग्रीव वे ।।६१।।
इम पूरव भव वयर थी, ए सीता नारि निमित्त ।
मरण थयो रावण तणो, ए करमनी वात विचित्रवे ।।६३।।
सीतावेगवती भवइं, जे साधनइ दीधो आल ।
सती थकी सिरि आवियो, ते कलंक सबल चिरकाल वे ।।६३।।
वलि तिण कलंक उतारिया, ते साधतणो सुध भावि ।
सुजस वली सीता लह्यो, ते धीजतणइ प्रस्तावि ।।६४।।
सकलभूषण इम केवली, कह्या करमना कठिन विपाक ।
कलंक न दीजइं केहनइ, बरजय मारि नइ हाक वे ।।६५।।
नवमां खंड तणी भणी, ए चउथी मोटी ढाल ।
समयसुदर कहइ सांभलो, हिव आगलि वात रसाल वे ।।६६।।

सर्वगाथा ।। २०६।।

दूहा ६

केवली वचन सुणी करी सहु पाम्या संवेग।
सव कुश कुमर कृतांतमुख, ल्यइ दीक्षा अतिवेग ॥१॥

लखमण राम विभीषणादिक विद्याधर वृन्द।
सीता पासि आई करी प्रणमइ पय अरविंद ॥२॥

निज अपराध खमाविनइ, पांमी आणंद पूर।
आप आपणे घरि सहु गया, भोगवइ राज पडूर ॥३॥

हिव ते सीता साधवी पालइ संयम सार।
सूत्र सिद्धांत भणइ गुणइ, पालइ पंचाचार ॥४॥

करइ वेयावच नइ विनय किरिया करइ कठोर।
तपइ वली तप आकरा, ब्रह्मचर्य पणि घोर ॥५॥

सूधउ संयम पालिनइ, अणसण कीधो अंति।
पाप आलोई पडिकमी सरणा च्यार करंति ॥६॥

काल करीनइ समरी सीता धरि सुभध्यान।
देवलोकि ते बारमइ बावीस सागर मान ॥७॥

पहुचइ लखमण राम ते, नगर अयोध्या मांहि।
प्रेमइ अपणाणा रहइ, भोगवइ राज उछाहि ॥८॥

मनइ मनोरथ पूरवा प्रजा तणा प्रतिपाल।
सुख भोगवता वेहनइ, गयो घणो तिहां काल ॥९॥

सर्वगाथा ॥ २१८ ॥

ढाल ५

॥ राग गउडी जाति जकडीनी ॥

"श्री नउकार मनि ध्याईयइ ॥ एगीतनी ढाल ॥

एक दिन इन्द्र कहइ इसउ, देवता आगइ किवारो ।
मोहिनी जीपता दोहिली, सहु करमा सिरदारो जी ॥
सिरदार सगला करम माहे, मोहिनी वसि जे पड्या ।
ते जाणता पिण धर्म न करइ, नेह बंधण मइ अड्या ॥
संसार एह असार जीवित, चपल जल बिंदु जिसो ।
सपदा सध्याराग सरिखी, एक दिन इन्द्र कहइ इसउ ॥१॥

मरणो तो पगमइं वहइं, कारिमी काया एहो जी ।
विषयारस लुवधा थका, पोपइ करिमी देहो जी ॥२॥
कारंमी देह समारि सखरी, नरनारी राता रहइ ।
पणि धन्य ते जे छोडि माया, सुद्ध संयम नइ ग्रहइ ॥
वलि विषय सुख थी जेह विरम्या, धन्य-धन्य सको कहइं ।
चक्रवर्ति सनतकुमारनी परि, मरणो तो पगमइ वहइं ॥२॥

इन्द्र वचन इम साभली, इंद्राणी कहइ एमोजी ।
बारबार कहइ तुम्हे, दोहिलो छोडता प्रेमोजी ॥
छोडतां दोहिलो प्रेम प्रीतम इन्द्र कहइं साभलि प्रिया ।
नगरी अयोध्या मांहि लखमण राम बाधव निरखीया ॥
ए प्रेम लपटाणां रहइ जीवइ नही (जिम) जल माछली ।
ते विरह छोडइ प्रांण अपणा इन्द्र वचन इम सांभली ॥३॥

इन्द्रना वचन सुणी करी, कौतुक आणी चित्तोवी ।
तुरत अयोध्या नगरमइ दो देवता सपत्ता जी ॥
संपत्त दो देवता तिहां कपि रामनइ घरि आवीया ।
देवनी माया केलवी नइ अंतेउर रोवरावीया ॥
ते करइ हाहाकार सगली रामनी अंतेउरी ।
हा राम प्रीतम किम हुओ तु इन्द्र ना वचन सुणी करी ।।४।।
हाहाकार लखमण सुणी, धाई आयो पासो जी ।
कहइ मुझ बांधवकिणइ हुओ, राणी रोयइ उदासो जी ॥
उदास राणी केम रोयइ इम कहतो लखमण तदा ।
बांधव तणो अति दुख करतो पड्यो जाणि हण्यो गदा ॥
अण बोलतो रह्यो आंखि मीची मुयो जाण्यो मणी ।
पछताव करिवा देवलागा हा हा कार वचन सुणी ।।५।।
अविचार्यो अम्हे कीयो ए कौतुकनो कामोवी ।
अम्हे लखमणना मरणना हेतु थया इण ठामो जी ॥
इण ठामि लखमण मरण पाम्यो पाप लागो अम्ह भणी ।
हासा थकी ए थई देपासी वात थायी अति घणी ॥

१—मयेऽस्मिन्नेव सुरत कीतो भ्रातृस्नेहोऽनुमा ।
तदाप्य सुपर्ण सौमारेषुपागाज्वरतो गत ॥१॥
रावणं मंडलिते भत्तारिंशद्व दिव्यपे ।
पर्यैकायत सहसाधर्मारोहमेऽस्मयधि च ॥२॥
हाहयाम्ब सहसापि सर्वमापुरितिक्रमा ।
पपाति हन्तैव कैकर्ण मरकापतम् ॥३॥
इति पद्मचरित्रे दशमसर्गे लक्ष्मणापुः ॥१॥

हुणहार वात टलइ नहि जिण जीवे जेह निवधीयो।
ते सुखु नइ दुखु लहइ तिमहिज अविचार्यो अम्हे कीयो ॥६॥

इम चिंतवता वहुपरी जीवाडण असमत्थो जी।
देव गया देवलोकमइं जिहाथी आया तेथो जी ॥
आया जिहाथी तेणि अवसरि मिली सहु अंतेउरी।
अम्ह कंत स्नेहकरी रीसाणो मनावइ पाए परी ॥
जे किणइ भोली कह्यो काइ ते खमिज्यो किरपा करी।
करि जोडि करिनइ पगे लागी इम चिंतवता वहु परी ॥७॥

इण परि विविध वचन कह्या, सहु अंतेउरी तासो जी।
मृतक कलेवर आगलइ, निफल थयो ते निरासो जी ॥
नीरास सहु अंतेउरी थई, तिण समइ तिहां आविया।
श्रीराम हाहा रव सुणी नइ, पासेवाण पूछाविया ॥
आज काइ वदन विछाय दीसइ, सहोदर अवचन रह्या।
किण रूसव्यो मुझ प्राणवल्लभ इण परि विविध वचन कह्या ॥८॥ ✓

किम साम्हउ जोवइ नही, किम ऊठइ नही आजो जी।
किम कोप्यो मुझ ऊपरइं, किम लोपी मुझ लाजो लो ॥
किम लाज लोपी माहरी इम कही सिर सु चुंवियो।
वोलि तु बाधव बाह झाली, हीयासेती भीडियो ॥
को कियो मुझ अपराध खमि तु, तुझ विना न सकुं रही।
मुझ प्राण छूटइं तुज्झ पाखइं किम साम्हउ जोवइ नहीं ॥ ६ ॥

रांमइ मुयो जाणी करी, लागो वज्र प्रहारो जी।
धसडि पड्यो धरणीतलइं, मूर्छित थयो निरधारो जी ॥

निरधार सीतल पवन योगइ चेतना पामी वळी ।
मोहिनी करम सनेह बांध्यो ऊठियो वलि मळफळी ॥
आपणा हाथ सुं देह फरसी चिकित्सा करि बहु परी ।
वलि मुंयो जाणिनइ थयो मुरछित रामइ मुयो जाणी करी ॥१०॥

वलि रामइ चेतन लही करिवा मांड्या विलापो जी ।
हा वछ हा बांधव मुझ, मुझनइ देहि अलापो जी ॥
अलाप मुझनइ देहि तुझ विण प्राण छूटइ माहरा ।
बोलावि मुझनइ वली बांधव विरह न खमुं ताहरा ॥
लखमण जती तुं किम न बोलइ, किम रह्यो तुं हठ ग्रही ।
इम रामचन्द्र विलाप कीधा वलि रामइ चेतन लही ॥ ११ ॥

इम हाहारव सांभळी, लखमण केरी नारी जी ।
एकठी मिळी आवी तिहां करइ आक्रंद पोकारो जी ॥
पोकार करतां हीयो फूटइ हार त्रोडइ आपणा ।
आभरण देहथकी उतारइ झरइ आंसु अतिघणा ॥
वलि पडइ धरती लुलु करती थई आकुल व्याकुली ।
हा नाथ हा प्रीतम गयो किहां इम हाहारव सांभळी ॥ १२ ॥

हे प्रियु का दीसइ नही निरखत नयणानन्दो जी ।
घइ दरसण दसरथसुत राघव वंस दिणंदो जी ॥
दिणंद सुंदर रूप ताहरा सूरवीरपणो किहां ।
गण ताहरा केमेन दीसइं, प्राणजीवन जग इहां ॥
किम अपहर्‍यो तुम्हनइ ते दुष्ट दइव देखता पापी सही ।
इणपरि विलाप अनेक कीधा हे प्रियु का दीसइ नही ॥ १३ ॥

रामइ राजन छोडीयो, व्याप्यो मोहिनी कम्मों जी।
जीवरहित लखमणतणो, देह आलिंगइ पड्यो भम्मों जी ॥
पड्यो भर्म देह उपाडि ऊंचउ, वइसारइं खोलइ वली।
करजोडी वीनति करइ एहवी, वात करि मुझ सु मिली ॥
पणि ते कलेवर केम बोलइ रामनो सूनो हियो।
मोहिनी करम विटंब सगलो रामइ राजन छोडीयो ॥ १४ ॥

एहवी बात सुणी सहु, ते विद्याधर राजो जी।
सुग्रीवराय विभीषण, प्रमुख मिली हितकाजो जी ॥
हित काज ते आया अयोध्या, राम नइ प्रणमी करी।
करइ वीनती तु मुॅकि मृतकनइ सोग चिंता परिहरी ॥
तु जाणि बांधव मुयो माहरो अथिर आऊषो बहु।
तिण धरम उद्यम करि विशेषइ एहवी बात सुणी सहु ॥ १५ ॥

राय विभीषण इम कहइ, सुणि श्रीराम निसको जो।
सहुनइ मरणो साधरण, कुण राजा कुण रंको जी ॥
कुण रंक तीर्थंकर किहा गणधर किहा चक्रवति किहा।
वासुदेवनइ बलदेव छत्रपति कुण मुयो नहि कहि इहां ॥
जउ तुम्ह सरिखा महापुरुष पणि एम सोगातुर रहइ।
तउ अवर माणस किसी गणणा राय विभीषण इम कहइ ॥१६॥

तिणकारणि सोग मुकिनइ, करउ लखमण संसकारो जी।
एह वचन सुणी कोपीयो, राम कहइ अविचारो जी ॥
अविचार राम कहइ सुणो रे दुष्ट पापिष्टो तुम्हे।
बलो आपणो कुटम्ब बालो कहु छु तुम्हनइ अम्हे ॥

निरधार मीवळ पवन योगइ चेतना पामी वळी ।
मोहिनी करम सनेह आम्यो ऊठियो वळि मलफळी ॥
आपणा हाथ सुं देह फरसी चिकित्सा करि बहु परी ।
वळि मुंयो जाणिनइ थयो मुरछित रामइ मुयो जाणी करी ॥१०॥

वळि रामइ चेतन लही करिवा मांड्या विलापो जी ।
हा बंधु हा बांधव मुझ, मुझनइ देहि अलापो जी ॥
अलाप मुझनइ देहि तुझ बिण प्राण छूटइ माहरा ।
बोलावि मुझनइ करी बांधव विरह न खमुं ताहरा ॥
लखमण अबी तुं किम न बोलइ, किम रह्यो तुं हठ ग्रही ।
इम रांमचन्द्र विलाप कीधा वळि रामइ चेतन लही ॥ ११ ॥ ✓

इम हाहारव सांभळी लखमण केरी नारी जी ।
एकठी मिळी आवी तिहां करइ आक्रंद पोकारी जी ॥
पोकार करता हीयो फूटइ हार त्रोडइ आपणा ।
आभरण देहथकी उतारइ मरइ आंसु अतिघणा ॥
वळि पडइ धरती लुळु करती थई आकुळ व्याकुळी ।
हा नाथ हा प्रीतम गयो किहां इम हाहारव सांभळी ॥ १२ ॥

हे प्रिय का दीसइ नहीं निरखत नयणानंदो जी ।
थइ बरसण बसरथसुत राघव वंस दिणंदो जी ॥
दिणंद सुंदर रूप ताहरो सूरवीरपणो किहां ।
गुण ताहरा केथेन दीसइं, प्राणजीवण जग इहां ॥
किम अपहर्यो तुझनइ ते कुम कइ देवता पापी सही ।
इणपरि विलाप अनेक कीधा हे प्रिय का दीसइ नहीं ॥ १३ ॥

रामइ राजन छोडीयो, व्याप्यो मोहिनी कर्म्मो जी ।
जीवरहित लखमणतणो, देह आलिंगइ पड्यो भर्म्मो जी ॥
पड्यो भर्म देह उपाडि ऊंचउ, वइसारइ खोलइ वली ।
करजोडी वीनति करइ एहवी, वात करि मुझ सु मिली ॥
पणि ते कलेवर केम बोलइ रामनो सूनो हियो ।
मोहिनी करम विटंब सगलो रामइ राजन छोडीयो ॥ १४ ॥

एहवी बात सुणी सहु, ते विद्याधर राजो जी ।
सुग्रीवराय विभीपण, प्रमुख मिली हितकाजो जी ॥
हित काज ते आया अयोध्या, राम नइ प्रणमी करी ।
करइ वीनती तु मुॅकि मृतकनइ सोग चिंता परिहरी ॥
तु जाणि बांधव मुयो माहरो अथिर आऊपो वहु ।
तिण धरम उद्यम करि विशेषइ एहवी बात सुणी सहु ॥ १५ ॥

राय विभीपण इम कहइ, सुणि श्रीराम निसंको जी ।
सहुनइ मरणो साधरण, कुण राजा कुण रंको जी ॥
कुण रंक तीर्थंकर किहा गणधर किहा चक्रवति किहा ।
वासुदेवनइ वलदेव छत्रपति कुण मुयो नहि कहि इहा ॥
जउ तुम्ह सरिखा महापुरुष पणि एम सोगातुर रहइ ।
तउ अवर माणस किसी गणणा राय विभीषण इम कहइ ॥१६॥

तिणकारणि सोग मुकिनइ, करउ लखमण संसकारो जी ।
एह वचन सुणी कोपीयो, राम कहइ अविचारो जी ॥
अविचार राम कहइ सुणो रे दुष्ट पापिष्टो तुम्हे ।
बलो आपणो कुटम्ब बालो कहु छु तुम्हनइ अम्हे ॥

कठिनइ थापे आइसो कोइ न कइ कुवचन थकिनइ ।
तिण इसिनइ परदेस भमस्यां तिण कारण सांग मूकिनइ ॥ १७ ॥
इम खेचर निभरछिया, ले लखमणनी देहा जी ।
कांमइ पाछी नीसरयो, वलि बइसाड्यो तेहो जी ॥
बइसारि मज्जण पीढ ऊपरि अनेरी ठामइ सही ।
न्हवरावीयो भल कनक कलस कलेवर सुसवइ थई ॥
वलिवस्त्र उत्तम सरस आभ्रण लखमणनइ पहिराविया ।
भोजन भला मुखमांहि घाल्या इम खेचर निभ्रंछिया ॥ १८ ॥
इणपरि राम सेवा करइ लखमण मृतकनी नितो जी ।
मोहनी करम बाह्यो थको परिहर्या राज कहतो जी ॥
परिहर्या राजकलत्र सगला मास छ गया जेहवइ ।
संबुक खरदूषण तणो सुद्यो वयर अवसर तेहवइ ॥
सेहनापुत्रादिक विद्याधर कटक करिनइ नीसरइ ।
ततखिण अयोध्या नगरि आवइ इण परि राम सेवा करइ ॥ १६ ॥
राम वृतान्त ते जाणिनइ लखमणनइ ठवि तेह्यो जी ।
धनुष चडावि सामहो थयो, विद्याधर रिपु जेह्यो जी ॥
रिपु जेमि कोपारुण थईनइ क्रूरदृष्टि करी यदा ।
सुरवर जटायुध कृतांतमुखनो कोपियो आसन तदा ॥
तिण आवि रामनइ दियो साहिज कटक सबलो आणिनइ ।
आकास मारगि ते विकुरव्या राम वृतांत ते जाणिनइ ॥ २० ॥
सुर बलि थाट सबल करी विद्याधरमा मुन्यो जी ।
ततखिण ते नासी गया जीतो आरामचंदो जी ।

रामचंद जीतो देव आगइ विद्याधर नर किम रहइ।
ते हारि मानी गया नासी आप आपणपइ कहइं॥
वलि राम प्रतिबोधण भणी उपाय माड्यो बहुपरी।
ते देव वेउं करइ उपक्रम सुर वलि चोट सबल करी॥ २१॥

सूको सर सींचीजतो, देखाडइ ते देवो जो॥
वलद मुयो हल जोतर्यो, कमल सिलातलि टेवो जी॥
तटिटेव घाणी माहि वेलू पीलती गिरि ऊपरइं।
गाडलो चाडइ ते देखाडइ देवता तिण ऊपरइं॥
कहइ राम मूरिख तुम्हे दीसो काम ऊंधो कीजतो।
किम सिद्धि थास्यइ तुम्हे जोयो सूको सर सींचीजतो॥२२॥

ते कहइं सुणि महापुरुप तुं, पगमइ बलती ते कोयोजी।
देखइं दूरि बलती सहू, हृदय विचारी जोयोजी॥
हृदय विचारी जोइनइ तुं मुयो किम जीवइ वली।
का भमइं मृतक उपाडि काधइ अकलि दीसइ छइ चली॥
तुं जाणि लखमण मुयो निश्चय मृतकनइं स्यु करिस तुं।
को लोक मांहे लहइ हासी ते कहइ सुणि महापुरुप तुं॥२३॥

राम कहइ अमंगल तुम्हे, का कहो मूरिख थायो जी।
मुझ बाधव जीवइ अछइ, रह्यो मुझथी रीसायोजी॥
मुझथी रीसाय रह्यो बांधव इम कदाग्रह ले रह्यो।
वलि सुर जटायुध मनि विमासइं राम मानइ नहि कह्यो॥
वलि करू कोइ उपाय बीजो राम समझइ जो किम्हे।
एकनर दिखाड्यो मडइ लीधइ, राम कहइ अमगल तुम्हे॥२४॥

कठिनइ आपि आइसो कोइ न कह कुवचन भाकिनइ ।
तिण देसिनइ परदेस भमस्या तिण कारण सोग मूकिनइ ॥ १७ ॥

इम लेचर निभरंछिया, ले लखमणनी देहो जी ।
कांमइ पाणी नीसरयो, वलि वइसाड्यो तेहो जी ॥
वइसारि मज्जण पीठ ऊपरि अनेरी ठामाई थई ।
न्हवरावीयो वछ कनक कलस कलेवर सुसतइ थई ॥
वलिवस्त्र उत्तम सकार आभ्रण लखमणनइ पहिराविया ।
भोजन भला मुखमांहि घाल्या इम लेचर निर्भ्रछिया ॥ १८ ॥

इणपरि राम सेवा करइ लखमण मृतकनी नितो जी ।
मोहनी करम बाध्यो थको परिहर्‌या राज कलत्तो जी ॥
परिहर्‌या राजकलत्र सगळा मास छ गया जेहवइ ।
सबुक खरदूषण तणो छयो ववर अवसर तेहवइ ॥
वेहनापुत्रादिक विद्याधर कटक करिनइ नीसरइ ।
एतलिण अयोध्या नगरि आवइ इण परि राम सेवा करइ ॥ १६ ॥

राम वृतान्त ते जाणिनइ लखमणनइ ठवि सेव्यो जी ।
धनुष चढावि साम्हो धयो विद्याधर रिपु भेव्यो जी ॥
रिपु भेवि कोपारुण थईनइ क्रूरदृष्टि करी यदा ।
सुरवर जटामुष इन्द्रमुखना कांपियो आसण तदा ॥
तिण आवि रामनइ दियो साहिज कटक सबलो आविनइ ।
आकाश मारगि ते विकुरव्या राम वृतांत ते जाणिनइ ॥ २० ॥

सुर वलि चोट सबल करी विद्याधरना वृन्दो जी ।
एतलिण ते नासी गया जीतो श्रीरामचंदो जी ।

रामचंद जीतो देव आगइ विद्याधर नर किम रहइ।
ते हारि मानी गया नासी आप आपणपइ कहइं ॥
वलि राम प्रतिबोधण भणी उपाय माड्यो वहुपरी।
ते देव वेउं करइ उपक्रम सुर वलि चोट सबल करी ॥ २१ ॥

सूको सर सींचीजतो, देखाडइ ते देवो जो ॥
वलद मुयो हल जोतर्यो, कमल सिलातलि टेवो जी ॥
तटिटेव घाणी माहि वेलू पीलती गिरि ऊपरइं ।
गाडलो चाडइ ते देखाडइ देवता तिण ऊपरइं ॥
कहइ राम मूरिख तुम्हे दीसो काम ऊंधो कीजतो।
किम सिद्धि थास्यइ तुम्हे जोयो सूका सर सींचीजतो ॥२२॥

ते कहइं सुणि महापुरुष तुं, पगमइ बलती ते कोयोजी ।
देखइं दूरि बलती सहू, हृदय विचारी जोयोजी ॥
हृदय विचारी जोइनइ तुं मुयो किम जीवइ वली।
का भमइं मृतक उपाडि काधइ अकलि दीसइ छइ चली ॥
तुं जाणि लखमण मुयो निश्चय मृतकनइं स्यु करिस तुं ।
को लोक मांहे लहइ हासी ते कहइ सुणि महापुरुष तुं ॥२३॥

राम कहइ अमंगल तुम्हे, का कहो मूरिख थायो जी।
मुझ बाधव जीवइ अछइ, रह्यो मुझथी रीसायोजी ॥
मुझथी रीसाय रह्यो बांधव इम कदाग्रह ले रह्यो।
वलि सुर जटायुध मनि विमासइं राम मानइ नहि कह्यो ॥
वलि करू कोइ उपाय बीजो राम समझइ जो किम्हे ।
एकनर दिखाड्यो मडइ लीधइ, राम कहइ अमंगल तुम्हे ॥२४॥

मुलकमइ वेतो कउडीयो राम पूछ्यो तेहोजी।
फिट मुंडा तु जाणइ नही, किम जीमइ मझ्र पहोजी ॥
किम मझो कीम कहइ ते नर मुझ नारी बाल्ही।
मुझथी रीसाणी ए न बोलइ दुसमण लोक मुंई कही ॥
तेहना वणसहइउ वचन हुं तुम्ह पासइ आवियो।
जेहवो हुं तेहवो तु पणि सुवक नइ वेतो कउडीमो ॥२६॥
सरिसा नर सरिसेण तु, राजइ कुण थइ सीलाजी।
आपे बे जाहा पणुं मइ तुम्ह कीधी परीखो जी ॥
कीधी परीक्षा ताहरी मइ हुं तुम्ह पासि रहिसि कहइ।
रामचंद आदर घणो दीधो एकठा बेउ रहइ ॥
एक दिवस ते बेउ मझाना मुंकिना हरिसेण सुं।
गया केलि केलि ठामइ जनेरइ सरिसा नर सरिसेण सु ॥२६॥
पाछे वसन्ते सामसुन्दर, देवनी माया मेल्योजी।
सामसण नारि सुं बोल्यो, करतो कामिनी बेल्योजी ॥
कामिनी करतो केलि दीठो रामसइ सुरवर कहइ।
तुम्ह वधु महापापिष्ठ माहरी नारिसुं हसवो रहइ ॥
तुम्ह नारि पणि अतिचपल चंचल मइ हिवइ इम अटकल्यो।
कुण काम इणसुं आपणइ हिव पाछे वसन्ते सामसुन्दर ॥२७॥
राम बोल्यो कां थइ आपणो ए बांभण नइ कासो जी।
बोलाया बोलइ नही न गिणइ कामको कासोजी ॥
न गिणइ ए कामको काज आपणो इक पखो नेहो किसो।
संभारि श्री वीतराग देवनो वचन अमृत रस जिसो ॥

संसार एह असार कारिमो राग सकल कुटंब तणो ।
स्वारथ तणो सहु को मिल्या तिण राज छोड्यो कांतइं आपणो ॥२८

मात पिता बांधव सहू, भारिजा भगिनी पुत्रोजी ।
मरणथी को राखइ नही, नहि ईरत नइं परत्रो जी ॥
ईरत परत्त राखइ नहि को, करि आतमहित तुं हिवइं ।
तुं छोडि राजनइं रिद्धि सगलो जिम लहइ सुख परभवइ ॥
जिम तुज्झ बाधव मुयो तिम कुण तुज्झनइ राखइ पहू ।
तु चेति चेति हो चतुर नरवर मात पिता बाधव सहू ॥२९॥

इम सांभलता रामनइं, नाठउ मोह पिसाचो जी ।
अध्यवसाय आयो भलो, सउ ए कहइ छइ साचो जी ॥
सहु साच कहइ छइ एह मुझनइं बंधु प्रेम उतारियउ ।
संसार दुखु मझार ए सहि मुयो लखमण जाणियउ ॥
मुझ कही वात तुम्हे तिकातो माहरा हित कामनइं ।
दुरगति पडतो तुम्हे राख्यो इम साभलता राम नइ ॥३०॥

कुण उपगारी छउ तुम्हे, किहा थी आया एथोजी ।
उपगार किम मुझनइ कीयो, किम भाइ मुयो तेथोजी ॥
किम भाई मुयो माहरो इम पूछता प्रगट कीयो ।
देवता केरो रूप कुंडल चलत आभरण अलंकियो ॥
श्रीराम सांभलि तुज्झनइ प्रतिबोधिवा आया अम्हे ।
कहइं आपणी ते वात सगली कुण उपगारी छउ तुम्हे ॥३१॥

तेह जटायुध पंखीयो, तुझ नउकार प्रभावोजी ।
चउथंइ देवलोकि ऊपनो, सीताहरण प्रस्तावो जी ॥

मृतकनइ देवा कलकीया राम पूछ्यो तेहोजी।
फिर मुंडा तु जाणइ नही किम जीमइ मडक पड़ोजी ॥
किम मडा जीम कहइ ते नर मुरूख नारी पाखण्डी।
मुरूखी तीसाणी ए न बोलइ दुरसण लोक मुई कही ॥
तेहना अणसहइतइ वचन हुं तुम्ह पासइ आवियो।
तेह्वो हुं तेह्वो तु पणि मृतक नइ देतो कलकीयो ॥२५॥
सरिसा नर सरिसेण तु, रायइ कुण पाइ सीखोजी।
आपे वे डाहा थयुं मइ तुम्ह कीधी परीखो जी ॥
कीधी परीक्षा ताहरी मइ हुं तुम्ह पासि रहिसि कहइ।
रामचंद आदर घणो दीधो एकठा बेउ रहइ ॥
एक दिवस ते बेउ महानइ मुक्किनइ हरिसेण सुं।
गया केलि केणि ठामइ अनेरइ सरिसा नर सरिसेण तु ॥२६॥
पाछे बलदे सोभलाइ देवनी माया मेरुपोजी।
दुसमण मारि सु बोलतो करतो कामिनी केल्पोजी ॥
कामिनी करतो केलि दीठो राममइ सुरवर कहइ।
तुम्ह बधु महापापिष्ट माहरी नारिसुं हसतो रहइ ॥
मुझ मारि पणि अविवेकस बोलइ मइ हिवइ इम अटकल्यो।
कुण काम हमसुं आपणइ हिव पाछे बलदे सोलख्यउ ॥२७॥
राम कह्यो का तइ आपणा ए बांधव नइ काचो जी।
बोल्यापा बोलइ नही म गिणइ कायरो काचोजी ॥
म गिणइ ए कायरो काज आपणो इक लणो नेहो किसा।
संसारि मी वीतराग देवनो वचन अमृत रस जिसो ॥

संसार एह असार कारिमो राग सकल कुटंब तणो ।
स्वारथ तणो सहु को मिल्या तिण राज छोड्यो कातइं आपणो ।।२८

मात पिता बाधव सहू, भारिजा भगिनी पुत्रोजी ।
मरणथी को राखइ नही, नहि ईरत नइं परत्रो जी ।।
ईरत परत्त राखइ नहि को, करि आतमहित तुं हिवइं ।
तुं छोडि राजनइं रिद्धि सगलो जिम लहइ सुख परभवइ ।।
जिम तुज्भ बाधव मुयो तिम कुण तुज्भनइ राखइ पहू ।
तु चेति चेति हो चतुर नरवर मात पिता बाधव सहू ।।२६।।

इम सांभलता रामनइं, नाठउ मोह पिसाचो जी ।
अध्यवसाय आयो भलो, सउ ए कहइ छइ साचो जी ।।
सहु साच कहइ छइ एह मुझनइं बंधु प्रेम उतारियउ ।
संसार दुखु मझार ए सहि मुयो लखमण जाणियउ ।।
मुझ कही बात तुम्हे तिकातो माहरा हित कामनइं ।
दुरगति पडतो तुम्हे राख्यो इम साभलता राम नइ ।।३०।।

कुण उपगारी छउ तुम्हे, किहा थी आया एथोजी ।
उपगार किम मुझनइ कीयो, किम भाइ मुयो तेथोजी ।।
किम भाई मुयो माहरो इम पूछता प्रगट कीयो ।
देवता केरो रूप कुंडल चलत आभरण अलंकियो ।।
श्रीराम सांभलि तुज्भनइ प्रतिबोधिवा आया अम्हे ।
कहइं आपणी ते वात सगली कुण उपगारी छउ तुम्हे ।।३१।।

तेह जटायुध पंखीयो, तुम्भ नउकार प्रभावोजी ।
चउथंइ देवलोकि ऊपनो, सीताहरण प्रस्तावो जी ।।

प्रस्तावि सीताहरण करइ ए पणि लेखक तुम्ह तणो ।
कृतांतमुख जे हुंतो तिण चारित्र पाल्यो अति घणो ॥
रूपनो ए पणि तेण ठामइ अवधिज्ञान प्रयुंजीयो ।
दीठी अवस्था एहवी तुम्ह तेह अढामुख पतीयो ॥१२॥

तुं लखमणनइ मुया थको, मोह कीधइ भमइ तेहो जी ।
तिण तुम्हनइ प्रतिबोधिवा, माया केलवी एहा जी ॥
केलवी माया अम्हे सगली, तुम्हनइ प्रति बूझव्यो ।
पणि कहइ तुं ते कह अम्हे पह अवसर साचव्यो ॥
कहइ राम तुम्हनइ बहु कीधा दीधो प्रतिबोध ठावको ।
आपणी ठामइ तुम्हे पहुतो तुं लखमण मइ मुयो थको ॥१३॥

लखमणनइ संसकारिनइ, राम चारित्र वयरागो जी ।
कामनइ भोगथी ऊभग्यो, राजतणउ करइ त्यागो जी ॥
करइ राजरिद्धिनो त्याग चारित्र लेवानइ उछक हुया ।
कहइ सत्रुघननइ राजल्यइ तुं मइ दियो तुम्हनइ हुवो ॥
हुं महिसि चारित्र तप तपीनइ पाप करम निवारनइ ।
मासता पामिसि सुख सुगतिना लखमण मइ संसकारि नइ ॥१४॥

सत्रुघन वलतो भणइ राम सुणो नहि पाहोजी ।
तिण कारणि बोलयो तुम्हे पर सुख नरकनो तेहो जी ॥
पर दुख नरक नो पणि लखमण तणो दुख घणो पणो ।
तिण रामरिद्ध पनी सहोदर ऊभगा मन अम्हतणो ॥
(हुं) पणि तुम्हा सुं लेइसि चारित्र सुद्ध संवेगइ पणइ ।
श्रीराम जाण्यो सुगत कहइ घइ सत्रुघन वलतो भणइ ॥१५॥

राम अनंगलवण तणइं, वेटानइ दीयो राजोजी।
सुग्रीवराय विभीषण, प्रमुख खेचर शुभ काजो जी॥
सुभ काज खेचर राजदेई, आपणा वेटा भणी।
चारित्रलेवा भणी आया उतावलि करि अतिघणी॥
एहवइ श्रावक तिहा आवी अरहदास इसु भणइ।
सुनि वीनती श्रीराम मोरी राम अनंगलवण तणइं॥३६॥
श्रीमुनिसुव्रत स्वामिनो, तीरथ वरतइं एहोजी।
चारण श्रमण मुनीसर, सुव्रतनाम छइ जेहो जी॥
नाम छइ सुव्रत जेहनउ ते साधु संप्रति छइ इहां।
तासु पासि दीक्षा ल्यउ तुम्हे तो वात जुगती छइ तिहा॥
सावासि श्रावक तुज्झनइं तइं, कह्यो वचन प्रस्तावनो।
दीक्षातणो महोच्छव माडियो श्री मुनिसुव्रत स्वामिनो॥ ३७॥
सकलनगर सिणगारिया, देहरे पूजा स्नात्रो जी।
अट्ठाई महुच्छव भला, नाचइ नटुया पात्रो जी॥
नाचइ ते नटुया पात्र सगलइं, संघ पूजा कीजीयइं।
जीमाडियइ भोजन भली परि, वस्त्र आभरण दीजीयइं॥
अतिघणा दीननइ दान देई सुजस जग विस्तारिया।
श्रीराम चारित्र लेण चाल्या सकल नगर सिणगारिया॥ ३८॥
आडंबर सुं आवीया, सुव्रत मुनिवर पासो जी।
विधि सु कीधी वंदना, आपणइ मनमइ उलासो जी॥
उल्लास मननइ रामचंदइ आदरी सयम सिरी।
सुग्रीव[1] प्रमुख विद्याधरे पणि रामनी परि आदरी।

१—शत्रुघ्न सुग्रीव विभीषण विराधित प्रमुख षोडश सहस्र नृपै।
सम रामोव्रत जगृहे सप्तत्रिंशत्सहस्राणि नारीणा नाभिश्च राम॥१॥

प्रस्तावि सीताहरण केरइ ए पणि सेवक तुम्ह तणो ।
कृतान्तमुख जे हुतो तिण चारित्र पाल्यो अति घणो ॥
ऊपनो ए पणि तेण ठामइ अवधिज्ञान प्रयुञ्जीयो ।
दीठी अवस्था एहवी तुम्ह देह जटायुध पखीयो ॥२०॥

तु लखमणनइ मुयो थको, कीध लीधइ ममइ नेहो जी ।
तिण तुम्हनइ प्रतिबोधिवा, माया केलवी एहा जी ॥
केलवी माया अम्हे सगली, तुम्हनइ प्रति बूझव्यो ।
वलि कहइ तु ते करु अम्हे एह अवसर साचव्यो ॥
कहइ राम तुम्हनइ सहू कीधो दीयो प्रतिबोध ठावको ।
आपणी ठामइ तुम्हे पहुचो तु लखमण नइ मुयो थका ॥२१॥

लखमणनइ ससकारिनइ, राम थयो वयरागी जी ।
कामनइ भोगथी ऊभग्यो, राजतणउ करइ त्यागो घी ॥
करइ राजरिद्धिनो त्याग चारित्र लेणनइ उमाह हुयो ।
कहइ सत्रुघननइ राजल्यइ हुं मइ दियो तुम्हनइ हुयो ॥
हुं महिसि चारित्र तप तपीनइ पाप करम निवारनइ ।
सासता पामिसि सुख सुगतिना लखमण नइ संसकारि नइ ॥२२॥

सत्रुघन चल्यो भणइ राज रूडो नहि पहाली ।
तिण कारणि छोडयो तुम्हे एह दुख नरकनो तेहो थी ॥
एह दुख नरक मा पडिय लखमण तणो दुख थयो घणो ।
तिण राजरिद्ध थकी सहोदर ऊभगो मन अम्हतणो ॥
(हुं) पणि तुम्हा सु लेइसि चारित्र सुगुरु संयोगइ चपइ ।
श्रीराम जाण्यो सुगत कहइ तइ सत्रुघन चल्यो भणइ ॥२३॥

बसुदत्तादि पूरव भवइं, मुझ हुतो अति नेहो जी।
सत्रुनइ मित्र सरिखा हिवइं, तिणमइं छोड्यो नेहो जी ॥
मइ छोडियो हिव नेह सगलो इम विमासी उपसमइ।
आहारपाणी सूझतो ल्यइं गोचरी नगरी भमइं ॥
वलि रहइ अटवी माहि अहिनिसि अपछरा गुण संस्तवइं।
बसुदत्तादि पूरव भवइ ॥ ४३ ॥
एक दिन विहरतो आवियो, कोडि सिलातल रामो जी।
करम छेदन काउसगि रह्यो, एक मुगति सु कामो जी ॥
एक मुगतिसेती काम तेहनइ ध्यांन निरंजण ध्यावए।
भावना सूधी चित्त भावइ, करम कोडि खपावए ॥
पाचमी ढाल ए जाति जकडी, राग गोडी बाधियो।
रामनइ प्रणमइ समयसुन्दर एक दिन विहरतो आवियो ॥ ४४ ॥
सर्वगाथा ॥ २६२ ॥

दूहा ३७

कोडिसिला काउसगि रह्यो, राम निरुधी योग।
सीतेन्द्रइ दीठो तिहा, अवधिज्ञान उपयोगि ॥ १ ॥
प्रेमरागमनि ऊपनो, मूढ विमास्यो एम।
योग ध्यानथी चूकवु, रामनइं हु जिमतेम ॥ २ ॥
क्षपक श्रेणिथी पाडिनइ, नीचे नाखु राम।
जातो राखु मुगति थी, जिम मुझ सीझइ काम ॥ ३ ॥
मुझ देवलोकइ ऊपनइ, माहरो थायइ मित्र।
प्रेमइं लपटाणा थका, अम्हे रहं एकत्र ॥ ४ ॥

पारित्र पालइ दोष टालइ सुगति सुं मन लाविया ॥
मोटामिश्चद महामुनीसर आइपर सुं आवीया ॥ ३६ ॥
जीवतणी यतना करइ बोलइ सत्य वचन्नो जी ।
अदत्त न ल्यइ मेथुन तजइ नहि परिग्रह धनधन्नो जी ॥
परिग्रह न राखइ नहिय माया अकुटी रहणी रहइ ।
आतपना करइ उष्णकालइ सीतकालइ मी सहइ ॥
कूरमतणी परिगुप्त काया, बरसालइ तप आदरइ ।
अप्रमत्त संयम राम पालइ जीवतणी यतना करइ ॥ ४० ॥
सुग्रीव प्रमुख विद्याधरा मोक्षसहस राजानो जी ।
राम सघाटइ सयम लीया मनिधर निरमल ध्यानो जी ॥
मनिधरी निरमल ध्यान सयम पालता ते तप तपइ ।
सत्तावीस सहस अंतेउरी पणि लेइ सयम जप जपइ ॥
सहु साधुनइ साधवी अपणा अरथ साधइ तनपरा ।
तरइ आपनइं तारइ बीजानइ सुग्रीव प्रमुख विद्याधरा ॥ ४१ ॥
सुग्रवसूरिसा पवनसी करइ एकल्ल विहारो जी[१] ।
नाना विधि अभिग्रह करइ रहइ गिरि अटवी मझारोजी ॥
अटवी मझारइ तपस्या अवधिज्ञान ते ऊपनो ।
विपक्षरी आव्यो बधुनइ प नरकनो दुख सपनो ॥
मनचिंतवइ लक्ष्मण सरीखा अरधचक्री दुखसी ।
मागवी सुखुनइ पाम्यो नरकइ सुग्रवसूरि मा पय नमी ॥ ४२ ॥

१—पञ्चम्या पुष्पाद्यान्ते तपस्तत्त्वा रामः ।
एकाकी सर्व पूर्वांग मृतभावितः सत्रपि व्यहार ॥

वसुदत्तादि पूरव भवइं, मुझ हुतो अति नेहो जी।
सत्रुनइ मित्र सरिखा हिवइं, तिणमइं छोड्यो नेहो जी ॥
मइ छोडियो हिव नेह सगलो इम विमासी उपसमइ।
आहारपाणी सूझतो ल्यइं गोचरी नगरी भमइं ॥
वलि रहइ अटवी माहि अहिनिसि अपछरा गुण संस्तवइं।
वसुदत्तादि पूरव भवइं ॥ ४३ ॥
एक दिन विहरतो आवियो, कोडि सिलातल रामो जी।
करम छेदन काउसगि रह्यो, एक मुगति सु कामो जी ॥
एक मुगतिसेती काम तेहनइ ध्यांन निरंजण ध्यावए।
भावना सूधी चित्त भावइ, करम कोडि खपावए ॥
पाचमी ढाल ए जाति जकडी, राग गोडी बांधियो।
रामनइ प्रणमइ समयसुन्दर एक दिन विहरतो आवियो ॥ ४४ ॥
सर्वगाथा ॥ २६२ ॥

दूहा ३७

कोडिसिला काउसगि रह्यो, राम निरुधी योग।
सीतेन्द्रइ दीठो तिहा, अवधिज्ञान उपयोगि ॥ १ ॥
प्रेमरागमनि ऊपनो, मूढ विमास्यो एम।
योग ध्यानथी चूकवु, रामनइं हु जिमतेम ॥ २ ॥
क्षपक श्रेणिथी पाडिनइ, नीचे नाखु राम।
जातो राखु मुगति थी, जिम मुझ सीझइ काम ॥ ३ ॥
मुझ देवलोकइ ऊपनइ, माहरो थायइ मित्र।
प्रेमइं लपटाणा थका, अम्हे रहुं एकत्र ॥ ४ ॥

इम चितविनइ ऊतरयो मरग मको सीतेन्द्र ।
कामरहित श्रीराम जिहां, तिहां आवियो अर्विद्र ॥ ५ ॥
राम ऊपरि फूलातणो गधोदकनी वृष्टि ।
कीधी सीतेन्द्रइ तिहां, धारी रागनी दृष्टि ॥ ६ ॥
सीता रूप प्रगट करी, दिव्य विकुर्वी रिद्धि ।
रामचंद आगइ कोया, नाटक बत्रीसवद्ध ॥ ७ ॥
नृत्य करइ अपछर१ तिहां गायइ गीत रसाल ।
हाव भाव विभ्रम करइं वारू नयन विसाल ॥ ८ ॥
सीता कहइ थावो तुम्हें मुम ऊपरि सुप्रसन्न ।
साम्हो जोयो हे प्रिय् मुझि बोला सुवचन्न ॥ ६ ॥
आलिंगन द्यइ आविनइ मुकन्इ आपणी बाहि ।
बिरहानल मुझ थारि तु हे जीवन हे प्राण ॥ १० ॥
ए विद्याधर कन्यका रूपइ रम्भ समान ।
तुम ऊपरि मोही रही द्यइ तेहनइ सनमान ॥ ११ ॥
प्रीतम करि पाणिग्रहण भरजोबन ए नारि ।
भोगवि भोग ममागिया स्यइ जोबन फलसार ॥ १२ ॥
भरम करीइइ सुखमणी ते सुख भोगवि एह ।
कर आशा सुख को लही प्रीतम पछइ सन्देह ॥ १३ ॥
वचन सराग सीता कह्या इम नाना परकार ।
बीजा मर चूकइ तुरत वचन सुणी सविकार ॥ १४ ॥

१—विनय ।

पणि श्रीराम मुनीसरू, रह्या निश्चल काउसग्ग ।
रामराय चूका नहीं, जिमि गिरि मेरु अडिग्ग ॥ १५ ॥
राम क्षपक श्रेणइ चडी, धस्यो निरंजन ध्यान ।
च्यारि करम चूरी करी, पाम्यो केवल ग्यान ॥ १६ ॥
केवलि महिमा सुर करइं, कंचण कमल ठवेइ ।
पद वदइ सीतेन्द्र पणि, त्रिण्ह प्रदक्षिणा देइ ॥ १७ ॥
करजोडीनइ गुणस्तवइ, तु मोटो अणगार ।
अपराध खामइ आपणो, पगे लागि बहुवार ॥ १८ ॥
कमल ऊपरि बइसी करी, केवली धर्म कहेइ ।
सीतेन्द्रादिक तिहां सहु, सूधइ चित्त सुणेइ ॥ १६ ॥
ए संसार असार छइ, दुखु तणो भण्डार ।
मधुबिन्दु दृष्टान्त जिम, नहि को सुखु लिगार ॥ २० ॥
मोक्ष तणो मारग कह्यो, सूधो साधनो धर्म ।
वीजो श्रावकनो धरम, त्रीजो सगलो भ्रम ॥ २१ ॥
साभलिजे सीतेन्द्र तुं, राग द्वेष ए बेय ।
पापमूल अति पाडुया, दुखु नरगना देय ॥ २२ ॥
राग-द्वेष छोडी करी, करि श्री जिनवर धम ।
सुखु पामइ जिम सासता, बात तणो ए मर्म ॥ २३ ॥
प्रतिबूधो सीतेन्द्र पणि, पहुतो सरग मझारि ।
केवलन्यानी पणि करइं, वसुधा मांहि विहार ॥ २४ ॥
अन्य दिवस सीतेन्द्र वली, दीठा उपयोग देइ ।
त्रीजी नरक मइ ते पड्या, लखमण रावण बेइ ॥ २५ ॥

बहुली नरकनी वेदना छेदन भेदन दुख ।
कुंभीपाक पचावणो, ताडन तणा तिक्ख ॥ २६ ॥
दयादुख मनि ऊपना, हा हा करम विचित्र ।
जुग ठकुराई भोगवी, संकट पड्या परत्र ॥ २७ ॥
लखमण रावण पणि तिहां, सीता करइ अरदास ।
हा हा करम कियो नहीं जे भाख्यो भगवंत ॥ २८ ॥
अम्हनइ नरकना दुख पड्या, एतो न्यायम होइ ।
ए लखण समकित तणो मरदहिज्यो सहु कोइ ॥ २६ ॥
लखमण रावण सांभलो कहई सीतेन्द्र सुभास ।
तुम्ह नइ काढी[१] नरग थी सरगमाहि छे वासि ॥ ३ ॥
चितामत करिज्यो तुम्हें सगली देव सगत्ति ।
देखी न सकुं दुखिया भली करूं भगत्ति ॥ ३१ ॥
इम कहिनइ ऊपाडिया लखमण रावण बेइ ।
हाथांमइ आवइ गली मांखण बन्हि विलेइ ॥ ३२ ॥
ते कहइ सुणि सीतेन्द्र तुं, मुंकि मुंकि अम्ह देह ।
अम्हे दुख पामुं अधिक, तेह तणउ नहि छेह ॥ ३३ ॥
देव अनइ दानव तणो इहां चालइ नही जोर ।
नरकथकी छूटइ नहीं कीधा करम कठोर ॥ ३४ ॥
पइ वात इसहिज अछइ, कहइ सीतापणि तोइ ।
समकित सूधो सरदहो जिम निस्तारो होइ ॥ ३५ ॥
सीता वचन सुणी करी ग्रह समकित बया तेह ।
वयर विरोध खम्या तुरत, पूरब भवना जेह ॥ ३६ ॥

१—नरक की खाड़ी ।

लखमण रावण बे जणा, आणी उपसम मार ।
काल गमाडइ आपणो, रहता नरक मझार ।।३७।।

सर्वगाथा ।।२६६।।

ढाल ६

।। राग केदारा गउडीमिश्र ।।

"वीरा हो थारइ सेहरइ मोह्या पुरुषवियार । लाडण वी०
।। ए वीवाह रा गीतनी ढाल ।।

एक दिवस आवी करी, रामनइ प्रदक्षिणा देइ । केवली ।
विधिसेती वादी करी, सीतेन्द्र प्रसन करेई ।।१।। के०
आगिल्या भव उम कहइ, श्रीरामचद मुणिद ।।के०।। आं०
कहो सामी ए नरक थी, नीसरि उपजिस्यइ केथि ।।के०।।
मुगति लहिस्यइ किण भवइ, मिलिस्यइ वली मुझ केथि ।।२।। के०
मुझनइ मुगति कदे हुस्यइ, ते पूज्य करो परसाद । के०
श्रीराम बोल्या केवली, सीतेन्द्र सुणि तु अतंद्र ।।३।। के०
लखमण रावण वे जणा, नरगथी नीसरि तेह । के०
विजयनगर[1] श्रावक कुलइ, अवतार लेस्यइ एह ।।४।। के०
नद[2] नारिनंदन हुस्यइ, अरहदास[3] १ श्रीदास[4] ।।२।। के०
श्रावकनो धरम समाचरी, लहि सरग लील विलास ।।५।।के०
वलि देवलोक[5] थी चवी, नगरी[6] तिणइ नर होइ। के०
दानना परभाव थी, हुस्यइ युगलिया[7] वलि सोइ ।।६।। के०

१—पूर्व विदेह २—रोहिणी ३—जिनदास ४—सुदर्शन ५—प्रथम
६—विजय ७—हरिवर्ष

बहुली नरकनी वेदना छेदन भेदन दुख।
कुंभीपाक पचावणो, ताडन तर्जण विरूख ॥ २६ ॥
दयाकुल मनि ऊपना, हा हा करम विचित्र।
कुण ठकुराई भोगवी, सकट पडया परत्र ॥ २७ ॥
लखमण रावण पणि तिहां, सोचा करइ अत्यंत।
हा हा धरम कियो नहीं जे भाख्यो भगवंत ॥ २८ ॥
अम्हनइ नरकना दुख पडया एहो न्यायज होइ।
ए लक्षण समकित तणो सरदहिज्यो सहु कोइ ॥ २९ ॥
लखमण रावण सांभली, कहइ सीतेन्द्र सुभास।
तुम्ह नइ काढी नरग थी सरगमाहि ले जासि ॥ ३० ॥
चितामत करिज्यो तुम्हें सगली देव सगत्ति।
देखी न सकूं दुखिया, भली करूं भगत्ति ॥ ३१ ॥
इम कहिनइ ऊपाडिया लखमण रावण बेइ।
हाथांमइ आयइ गली मांखण वन्हि विछेइ ॥ ३२ ॥
ते कहइ सुणि सीतेन्द्र तूं, मुंकि मुंकि अम्ह देह।
अम्हे दुख पामु अधिक, तेह तणउ नहि छेह ॥ ३३ ॥
देव अनइ दानव तणो इहां चालइ नहीं जोर।
नरकथकी छूटइ नहीं कीधा करम कठोर ॥ ३४ ॥
एह वात इमहिज अछइ कहइ सीतापणि ताइ।
समकित सूधो सरदहो, जिम निस्तारो होइ ॥ ३५ ॥
सीता वचन सुणी करी दृढ समकित थया तेह।
वयर विरोध तज्या तुरत पूरव भवना जेह ॥ ३६ ॥

१—नरक थी बहरी।

केतलाएक भव करी, पुष्करद्ध श्रीजद्द दीप। के०
महाविदेह माहे तिहा, पुर पदम[1] सुरपुर जीपि ॥१७॥ के०
तिण नगरी चक्रवर्ति हुस्यइ, सुख पामिस्यइ तिहा सोय। के०
तीर्थङ्कर पणि तिण भवइं, पामिस्यइ पदवी दोय ॥१८॥ के०
इम केवलि वाणी सुणी, करि जोडि करि परणाम। के०
हियइ अति हरषित थई, सीतेंद्र गयो निज ठाम ॥१९॥ के०
श्रीरामचद मुगतइं गया, पामियो अविचल राज। के०
सुख लाधा अति सासता, सारीया आतम काज ॥२०॥ के०
लखमण नइं रावण भणी, ए कही छट्ठी ढाल। के०
समयसुदर वदना करइ, तीर्थङ्कर नइं त्रिकाल ॥२१॥ के०

सर्वगाथा ॥३२०॥

दूहा ८

हिव सीतेंद्र तिहा रहइं, सुख भोगवतो सार।
बावीस सागर आउपु, पूरुं करइं अपार ॥१॥
तीर्थङ्कर कल्याणके, आवी करइ अनेक।
उच्छव महुच्छव अतिघणा, वारू चित्त विवेक ॥२॥
तिहाथी चवि नइ पामिस्यइं, उत्तम कुलि अवतार।
तीर्थङ्कर वसुदत्त तसु, देस्यइ दीक्षा सार ॥३॥
गणधर थास्यइ तेहनो, सुर नर नइं वंदनीक।
सिव सुख लहिस्यइ सासता, प्रथम इहां पूजनीक ॥४॥

१—रतनचित्रा।

जुगलिया हरिवर्षना, हुस्यइ देव वलि तेह । के०
तिहांथी वलि चविनइ हुस्यइ, विजनगरी नृप पुत्र एह ॥७॥ के०
जयकंत १ जयप्रभ २ एहवा तिहुं बांधवनो हुस्यइ नाम । के०
चारित्र लेई तपतपी हुस्यइ लांतक सुर अभिराम ॥८॥ के०
इण अवसरि सीतेन्द्र तुं सुख भोगवि सुरलोकि । के०
तिहांथी चवि चक्रवति[1] थई पामिसि सगला थोक ॥९॥ के०
ते सुर लांतक थी चवी ताहरा थास्यइ पुत्र ।
ते रावण थास्यइ तिहां इन्द्ररथ[2] आचार पवित्र ॥१०॥ के०
इम समकितपरि सुर हुस्यइ अपछरा करिस्यइ सेव ।
किणही भवि नरभव लही, थास्यइ तीर्थंकर देव ॥११॥ के०
चउसठ इन्द्र मिली करी पूजिस्यइ पय अरविंद । के०
अनुक्रमि तीरथ थापनो प्रवर्तावस्यइ ते जिणंद ॥१२॥ के०
तुं चक्रवति नइ भव तिहां चारित्र पाली सार । के०
वैजयंत विमानना, सुख लहिसि तुं श्रीकार ॥१३॥ के०
तेत्रीस सागर आउखो भोगवि पूरू तेथि । के०
तिहांथी चविनइ तु वली आविसि नर भव एथि ॥१४॥
रावण जीव जिणिंदनइ तुं गणधर थाइसि मुख्य । के०
करम चूरि केवल लहि तुं पामिसि मोक्षना सौख्य ॥१५॥ के०
लखमण नो जीव जे हुस्यइ चक्रवर्ति सुत सुकुमाल । के०
भोगरथ नामइ भलो ते पणि आगामी कालि ॥१६॥ के०

१—भरतक्षेत्र सर्वरत्नमति नीमा २—इन्द्रायुध मेघरथो ३—इन्द्रायुध।
४—लीलावतीपत्र पुत्र । ५—मेघरथ ।

केतलाएक भव करी, पुष्करद्ध त्रीजइ दीप। के०
महाविदेह माहे तिहा, पुर पदम[1] सुरपुर जीपि ॥१७॥ के०
तिण नगरी चक्रवर्ति हुस्यइ, सुख पामिस्यइ तिहा सोय। के०
तीर्थङ्कर पणि तिण भवइं, पामिस्यइ पदवी दोय ॥१८॥ के०
इम केवलि वाणी सुणो, करि जोडि करि परणाम। के०
हियइ अति हरषित थई, सीतेंद्र गयो निज ठाम ॥१९॥ के०
श्रीरामचंद मुगतइं गया, पामियो अविचल राज। के०
सुख लाधा अति सासता, सारीया आतम काज ॥२०॥ के०
लखमण नइं रावण भणी, ए कही छट्ठी ढाल। के०
समयसुंदर वंदना करइ, तीर्थङ्कर नइं त्रिकाल ॥२१॥ के०

सर्वगाथा ॥३२०॥

दूहा ८

हिव सीतेंद्र तिहा रहइं, सुख भोगवतो सार।
बावीस सागर आउपु, पूरुं करइं अपार ॥१॥
तीर्थङ्कर कल्याणके, आवी करइ अनेक।
उच्छव महुच्छव अतिघणा, वारू चित्त विवेक ॥२॥
तिहाथी चवि नइ पामिस्यइं, उत्तम कुलि अवतार।
तीर्थङ्कर वसुदत्त तसु, देस्यइ दीक्षा सार ॥३॥
गणधर थास्यइ तेहनो, सुर नर नइं वंदनीक।
सिव सुख लहिस्यइ सासता, प्रथम इहा पूजनीक ॥४॥

१—रतनचित्रा।

ए नवखंडनी वात सहु कही गौतम गणधार।
श्रेणिक राजा आगलि आणी मनि उपगार ॥ ५ ॥
परमारथ ए मीठड्यो, किणहीनो कूड़ो आठ।
सीलइ नहि, वसि पालियइ,—सील वरत सुरसाल ॥६॥
सीलइ सकट सवि टलइ मीलइ सपत्ति थाय।
प्रह उठिनइ प्रणमीयइ, सोळवंत ना पाय ॥ ७ ॥
सतीयां माहे सलहीयइ, सीता नामइ नारि।
सीता सरिपा को नहीं सहु जोता ससारि ॥ ८ ॥

सर्वगाथा ॥१२५

ढाल ७

॥ राग धन्यासिरी ॥

ढाल—सील कहइ जगि हु वडो ए सवाकुलक नी बीजी ढाल अथवा—
पास जिणंद जुहारियइ ॥ ए ढालनी ढाल ॥

सीतारामनी चउपई जे चतुर हुवइ ते वाचो रे।
राग रतन जवहर तणो कुण भेद लहइ जे काचो रे ॥१॥ सी०
नवरस पोष्या मइ इहां ते सुघड़ो समझी लेज्यो रे।
जे जे रस पोष्या इहां ते ठाम दीखाड़ी देज्यो रे ॥ २॥ सी
के के ढाल विषम कही ते दूषण मति द्यो कोई।
स्वाद सावूनी जे हुवइ ते खिरंगड कह्ये न होइ रे ॥ ३ ॥ सी
जे दरबारि गयो हुस्यइ पुंगलि मेवाड़िनइ दिल्ली रे।
गुजराति मारुयाड़ि मइ, ते कहिस्यइ ढाल ए भल्ली रे ॥४॥ सी

मत कहो मोटी का जोडी, वाचन्ता स्वाद लहेस्यो रे।
नवनवा रस नवनवी कथा, साभलता सावासि देस्यो रे ॥५॥सी०
गुण लेज्यो गुणियण तणो, मुझ ममकति साम्हो जोज्यो रे।
अणसहता अवगुणग्रही, मत चालणि सरिखा होज्यो रे ॥६॥ सी०
आलस अभिमान छोडिनइं, सूधी प्रति हाथे लेई रे।
ढाल लेज्यो तुम्हे गुरु मुखइ, वलि रागनो उपयोग देई रे ॥७॥सी०
सखर सभा माहे वाचिज्यो, विजणा मिली मिलतइं सादइं रे।
नरनारी सहु रीझिस्यइं, जस लहिस्यो सुगुरु प्रसादइं रे॥८॥ सी०
आदर मान घणो हूस्यइ, वलि न्यान दरसणनो लाभो रे।
वाचणहारा तणो जस, विस्तरिस्यइ जिम जल आभो रे ॥९॥ सी०
नवखण्ड पृथिवी ना कह्या, तिण चउपई ना नवखण्डो रे।
वाचणहारानो तिहां, पसरो परताप अखण्डो रे ॥ १० ॥ सी०
सीतारामनी चउपई, वाचीनइ ए लाभ लेज्यो रे।
साभलणहारानइ तुम्हें, काइ सीलव्रत सुंस देज्यो रे ॥ ११ ॥ सी०
जिन सासन शिवसासनइं, सीताराम चरित सुणीजइ रे।
भिन्न २ सासन भणी, का का वात भिन्न कहीजइं रे ॥१२॥ सी०
जिन सासन पणि जू जुया, आचारिजना अभिप्रायो रे।
सीता कही रावण सुता, ते पदमचरित कहवायो रे ॥ १३॥ सी०
पणि वीतराग देवइ कह्यो, ते साचो करि सरिदहिज्यो रे।
सीताचरित थी मइं कह्यो, माहरो छेहडो मत ग्रहिज्यो रे ॥१४॥
हु मतिमूढ किसु जाणु, मुझ वाणी पणि निसवादो रे।
पणि जे जोडमइ रस पड्यो, ते देवगुरुनो परसादो रे ॥१५॥ सी०

ए नवखंडनी वात सहु कही गौतम गणधार।
श्रेणिक राजा आगलि जाणी मनि उपगार॥ ५॥
परमारथ ए शीलस्यो, जिनहीना कूडो आल।
शीलइ नहि, नहि पालियइ,—शील वरत सुरसाल॥६॥
शीलइ संकट सवि टलइ शीलइ संपत्ति थाय।
शइ कठिनइ मणमीयइ, शीलवंत ना पाय॥ ७॥
सतीयाँ माहे सलहीयइ सीता नामइ नारि।
सीता सरिषा को नहीं सहु जातीं संसारि॥ ८॥

सर्वगाथा ॥१९५

ढाल ७

॥ राग धन्यासिरी ॥

ढाल—शील कहइ जगि हु वडो ए संवादशतक नी बीजी ढाल प्रमाण—
पाल जिनंद जुहारियइ ॥ ए ढालनी ढाल ॥

सातारामनी चउपई जे चतुर हुयइ ते वांचो रे।
राग रतन जवहर तणो कुण भेद लहइ जो काचो रे॥१॥ सी०
नवरस पोष्या मइ इहाँ ते सुधड़ा समझी लेज्यो रे।
जे जे रस पोष्या इहाँ ते ठाम दीखाडी देज्यो रे॥ २॥ सी०
के के ढाल विषम कही ते दूषण मति द्यो काइ।
स्वाद सापूनी जे हुयइ ते खिईगर करे न ढाइ रे॥ ३॥ सी
जे दरबारि गयो हुयइ ढुंढाढि मेवाडिनइ दिल्ली रे।
गुजराति मारुयाडि मइ ते कहियइ ढाल ए मल्ली रे॥४॥ सी

ए गुरूनइ सुपसाउलइं, ए चउपई चडी प्रमाणो रे।
भणता सुणतां वाचतां, हुयइ आणंद कोडि कल्याणो रे ।।२७।। सी०
सर्वगाथा ।।३५५।।

इति श्री सीताराम प्रबधे सीतादिव्यकरण १ सीतादीक्षा २ लक्ष्मणमरण ३
रामनिर्वाण ४ लखमण रावण सीतागामिभवपृच्छा
वर्णनोनाम नवम• खण्ड• समास

प्रथम खंडे ढाल ७ गा० १४६ द्वितीय खडे ढाल ७ गा० १६२
तृतीय खंडे ढाल ७ गा० १६८ चतुर्थ खंडे ढाल ७ गा० २२८
पचम खंडे ढाल ७ गा० २४८ षष्ठ खडे ढालं ७ गा० ४४४
सप्तम खंडे ढाल ७ गा० ३१२ अष्टम खडे ढाल ७ गा० ३२३
नवम खडे ढाल ७ गा० ३५५

सर्वढाल ६३ सर्वगाथा ।।२४१७।। ग्रन्थ सख्या ३७०४

[कवि के स्वयलिखित पत्र १११ की प्रति (अनूप स० लाइब्रेरी) से मिलान किया।]

।। इति सीताराम चउपई सपूर्णाजज्ञे ।।

प्रति लेखनप्रशस्ति •—सवत् १७३८ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ले पक्षे २ तिथौ बुधवासरे श्री कान्हासर मध्ये भट्टारक श्री जिनचंदसूरि विजयमानराज्ये। श्री सागरचदसूरि संतानीय वा० श्री सुखनिधान गणि तच्छिष्य प० श्री श्री श्री १०८ गुणसेनगणिगजेन्द्राणामन्तेवासी पं० यशोलाभ गणिनालेखि।

वाच्यमान चिरंनद्यात् भद्र भूयात्।
तैलाद्रक्षे जलाद्रक्षेत्रक्षे शिथिल बधनात्।
परहस्तगता रक्षेदेव वदति पुस्तिका ।।१।।

श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् श्री जिनकुशलसुरि प्रसादाच्छ्रेयोस्तु

हु सीलवंत नहीं तिसो मुझ पोसइ बहु संसारो रे।
पणि सीलवंतमा सखइवां मुझ थासी सही निस्तारो रे ॥१६॥ सी०
चपल कवीसरना कह्या एक मननइ ए वचन एवेइ रे।
कवितकल्लोल मणी कहइ, रसना साह्या पणि केइ रे ॥ १७ ॥ सी
कह्यो अधिको मइ कह्यो कोई विरुध वचन पणि होई रे।
तो मुझ मिच्छामि दुक्कड सप सांभलिज्यो सहु कोई रे ॥१८॥सी०
त्रिण्हि हजारनइ सातसइ, मानइ ग्रन्थनो मानो रे।
✓लिखतां नइं लिखावतां पामीजइ ग्यान प्रमाणो[1] रे ॥१६॥ सी०
श्री खरतरगच्छ मांहिदीपता मेड़तानगर मझारो रे।
गोत्र गोलछा गहगहइ सामसीमइ सिरदारो र ॥ २० ॥ सी
नगर मटइ घणो मामगउ, अतवार घणइ दरबारइ रे।
गुरुगच्छ मा रागी घणुं उत्तम धरनो आचारो रे ॥ २१॥ सी०
पुत्ररतन रायमलतणा ते ग्यड़ जगसी नइ छाहो रे।
अमीपालन्द नेतसी, मकड़ मत्रीज राजसी माहो रे ॥२२॥ सी०
सीतारामनी चउपई पहनइ आग्रह करि कीधी रे।
देसप्रदेस विस्तरी ग्यान वृद्धि लिखवंता लीधी र ॥ २३ ॥ सी
श्री खरतरगच्छ राजीया श्रीयुगप्रधान जिनचन्द्रो रे।
प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना गणिसकलचंद मुसकंदो रे ॥ २४ ॥ सी०
समयसुंदर शिष्य तेहना श्री उपाध्याय कहीजइ रे।
तिण ए कीधी चउपई सांभण सानस सखहीजइ रे ॥२५॥ सी
वर्तमान गच्छना धणी भट्टारक श्री जिनराजो रे।
जिनसागरसूरीसरू आचारिज अधिक दिवाजो रे ॥२६॥ सी

१—प्रमानी रे।

ए गुरूनइ सुपसाउलइं, ए चउपई चढी प्रमाणो रे।
भणता सुणतां वाचता, हुयइ आणंद कोडि कल्याणो रे ॥२७॥ सी०
सर्वगाथा ॥३५५॥

इति श्री सीताराम प्रबधे सीतादिव्यकरण १ सीतादीक्षा २ लक्ष्मणमरण ३
रामनिर्वाण ४ लखमण रावण सीतागामिभवपृच्छा
वर्णनोनाम नवम खण्ड. समाप्त

प्रथम खंडे ढाल ७ गा० १४६ द्वितीय खडे ढाल ७ गा० १६२
तृतीय खंडे ढाल ७ गा० १६८ चतुर्थ खंडे ढाल ७ गा० २२८
पचम खंडे ढाल ७ गा० २४८ षष्ठ खडे ढालं ७ गा० ४४४
सप्तम खडे ढाल ७ गा० ३१२ अष्टम खडे डाल ७ गा० ३२३
नवम खडे ढाल ७ गा० ३५५
सर्वढाल ६३ सर्वगाथा ॥२४१७॥ ग्रन्थ सख्या ३७०४

[कवि के स्वयलिखित पत्र १११ की प्रति (अनूप स० लाइब्रेरी) से मिलान किया।]

॥ इति सीताराम चउपई सपूर्णाजश्चे ॥

प्रति लेखनप्रशस्ति —सवत् १७३८ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ले पक्षे २ तिथौ वुधवासरे श्री कान्हासर मध्ये भट्टारक श्री जिनचदसूरि विजयमानराज्ये। श्री सागरचदसूरि सतानीय वा० श्री सुखनिधान गणि तच्छिष्य प० श्री श्री श्री १०८ गुणसेनगणिगजेन्द्राणामन्तेवासी पं० यशोलाभ गणिनालेखि।

वाच्यमान चिरंनद्यात् भद्र भूयात्।
तैलाद्रक्षे जलाद्रक्षेत्रक्षे शिथिल बधनात्।
परहस्तगता रक्षेदेव वदति पुस्तिका ॥१॥

श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् श्री जिनकुशलसूरि प्रसादाच्छ्रेयोस्तु

सीताराम चौपई में प्रयुक्त देसी सूची

खण्ड १

खण्ड २

खण्ड ३

खण्ड ४

खण्ड ५

खण्ड ६

पृष्ठ ८

खण्ड ६

शुद्धि पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	बाहै	बाक	४२	१७	तुसैं	तुर्भे
७	१६	मधूपिमरु	मधुपिमरु	५१	२	बिटवा	बिटवा
१६	७	सेवा	सेती	५४	१	कापल चकचर	कीमत चकपूर
१७	२२	पुर्ण	पशु	६२	२१	पयप	पूमप
१६	४	स्वापउ	आप्मउ	६४	१५	बित	बित
२	१	बरी	बरी	६४	२१	पूपिपि रब	पिपि पूरब
२१	२	घर	घर	६४	२१	बिब मदिर	बिब मंदिर
२१	११	मछुप	मछुवा	७७	१६	सयिनी	सयिनी
२६	५	नवी मत	मवी मत	७६	११	बोमन	बोमन
२६	१६	बरि	परि	८	४	ममी	भमी
२७	१	बखिमउ	बखिमउ	८	११	बोपे	बापे
२७	४	बाप	बाप	८५	१२	बिगि	बिगिह
२७	६	नाना	नानी	८६	७	बिगहि	बिगिह
२८	११	हीममउ	हीयडउ	८६	१५	बरबाइ	बरबाइ
२८	११	बेसाखउ	बेसाखउ	९	९	बति	बति
१	१	बेटा	बेटा	९५	४	पाखउ	पाम्पउ
१८	१२	मम ध्या	मबोध्या	९५	२	ठ्या सोबा	छयासीमा
११	११	रकमा	किया	९६	१२	ममइ	ममइ
१६	१५	नीसरवा	नीसरता	९६	१२	मइरे	मईबी
१६	१६	बापे	बापे	१	८	बिर	बिर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०२	४	विपलाप	विलाप	१७१	१	वार्लि	वर्लि
१०२	१५	दीठा	दीठो	१७६	१९	झूमइ	झूझइ
१०२	१८	मुझनइ	मुझनइ	१७७	१	महेशस्त्र	महेशास्त्र
१०३	४	भझारि	मझारि	१८५	११	फाटी	फीटी
१०५	२१	सोम्हो	साम्हो	२२३	७	घरि	घरि
११६	१०	झठो	झूठो	२२८	१२	माणास	माणस
११७	२१	वाख्यो	वाख्यो	२२८	२१	सग्रीव	सुग्रीव
११७	२२	गर्व	गर्व	२२९	१५	चकचर	चकचूर
१२२	१२	कोद्र दंलावइ	कोद्रव दलावइ	२३१	९	गोत्रमई	गोत्रमइ
१२४	१५	अगति	अगनि	२४२	९	थाइच्यो	थाइज्यो
१४१	२१	विरोघ	विरोध	२४५	५	मो	मा
१४१	२२	गव	गर्व	२६२	१	चकिनइ	चूकिनइ
१४३	५	विलंव	ग्लिव	२६८	६	आतपना	आतापना

शुद्धि पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	९	बाएँ	बाऊ	४२	१७	दुसरें	दूसरे
७	१९	मँधुपिंगल	मधुपिंगल	५१	२	मिठया	मिठवा
१६	७	सेठा	सेठी	५४	१	कामद चककर	कीमत चकचूर
१७	२२	पुणं	पणु	६१	२१	धमण	धूमण
१९	४	अपावत	आम्मव	६४	१५	विष	विष
२०	१	मरी	मरी	६४	२१	पूमिपि रम	पिपि पूरम
२१	२	भर	घर	६४	२१	शिव मदिर	शिव मंदिर
२१	११	मधुप	कुमुवा	७७	१९	मंगिनी	भगिनी
२६	५	नवी मव	नवी नव	७९	११	बोभव	बोभव
२९	१९	घरि	घरि	८	४	ममी	ममी
१७	१	बलियव	बलियव	८	११	बोपे	बापे
२७	४	बाप	बाप	८६	१२	भिहि	भिम्हि
२७	६	नाणा	माथी	८९	७	भिषहि	त्रिम्हि
२८	११	हीवमव	हीवडठ	८९	१५	बरमर	बरथार
२८	११	बेठावव	बेठाराठ	९	९	बीत	बीत
१	१	पेटा	बेटा	९४	४	पावत	पारमय
१८	१२	अथ ध्या	अयोध्या	९५	२	उदा सीपा	उदासीना
११	११	लखा	किया	९६	१९	ममह	ममह
१६	१५	नीलरवा	नीलरगा	९६	१२	महरे	अर्हमो
१९	१६	बावे	बापे	१	८	विह	बिह